।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

हमारे समाज में प्रचलित रीति परम्परा, व्रत–त्यौहार एवं संस्कार एवं गीत

(दिनांक 31 मार्च 2021 तक प्राप्त जानकारी का संकलन)

1. संस्कार एवं गीत
2. हिन्दू माह अनुसार व्रत एवं त्यौहार
3. मुख्य–मुख्य व्रत एवं त्यौहार, संस्कार एवं सोलह श्रृंगार
4. बजाज गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
5. चांडक परिवार के रीति–रिवाज एवं त्यौहार
6. झंवर गौत्र की रीति परम्परा, त्यौहार एवं गीत
7. काबरा गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
8. लाड़ गोत्र के प्रमुख रीति रिवाज एवं गीत
9. मूंदडा गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
10. सोमानी गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
11. बाहेती गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
12. भंसाली गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
13. भट्टड़ गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
14. बजाज (करोडी) गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
15. डागा गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
16. धारवां गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
17. गगरानी गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
18. गट्टानी गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
19. कासट गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
20. मालपानी गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
21. मनिहार गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
22. मोहता गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार
23. नागोरी गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार

24. राठी गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार

25. तापड़िया गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार

26. टुवानी गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार

27. मनिहार गोत्र के रीतिरिवाज त्यौहार

28. कुलुम गोत्र के रीतिरिवाज

अखिल भारतीय (धा.) माहेश्वरी सभा

केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति 2016–18

।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

संस्कार एवं गीत

सातवे महीने की रस्म :–

ज़ब बच्चा गर्भ में आता है तब हमारे यहॉ पर सातवें महीने में गोद भराई की रस्म होती है सातवें महीने मे किसी भी दिन शुक्ल पक्ष में अच्छा मोहरत देखकर गोद भराई करते है, बहु को सोलह श्रृंगार कर के पालने में बैठाया जाता है पालने के अभाव में चौकी या पटे पर बैठाया जाता है, बहु के पीहर से मिठाईया, मेवे, फल एवं कपड़े आते है चार सुहागिने गोद भराई की रस्म करती है, घेवर, नारियल से बधाइयॉ बांटी जाती है।

- गीत – 01

गोद भराई के गीत –
मेरा जिया लगे है भारी – भारी
मोहे जामुन मंगा दो कारी – कारी
दो बार.....
ससुर जी से कहू वो भी ना सुने,
सासुजी से कह कर हारी
मुझे जामुन.....
जेठजी से कहू वो भी ना सुने ,
जेठानी से कहकर हारी
मुझे जामुन.....
इसी प्रकार पूरे परिवार का नाम जोड़ना

- गीत – 02

राजा पहलो मास जब लागियोजी अवल
भवल मन जाय भंवर केला लावजोजी
सारी इंदोर माय हम फिरयाजी कही नई
पायो केला रूख मारोनी हढ छोड़ दो जी.....

दूसरो मांस जब लागियोजी थूकतड़ा मन जाय....
भंवर केला लावजोजी.....

सारी भोपाल माय हम फिरयाजी कही नई
पायो केला रूख मारोनी हठ छोड़ दो जी.....

तीसरो मांस जब लागियो जी आम इमलिया
मन जाए भवंर केला लावजोजी
सारी सिहोर माय हम फिरयाजी कही नई
पायो केला रूख मारोनी हठ छोड़ दो जी.....
चौथो मास जब लागियोजी दूध थूली पर
मन जाय जी भंवर केला लावजोजी
सारी खंडवा माय हम फिरयाजी कही नई
पायो केला रूख मारोनी हठ छोड़ दो जी

पांचवो मास जब लागियो जी, मेवा मिठाई मन जाय
भंवर केला लावजोजी
सारी इच्छावर माय हम फिरयाजी, कही नई पायो
केला रूख मारोनी हठ छोड़ दो जी.....

छठवों मास जब लागियो जी, खारक खोपरा
मन जाय भंवर केला लावजोजी.....
सारी बूंदनी माय हम फिरयाजी कही नई पायो
केला रूख मारोनी हठ छोड़ दो जी.....

सातवों मास जब लागियो जी, पियरिया मन जाय
मन भंवर केला लावजोजी.....
सारी नरसिंहगढ़ माय हम फिरयाजी कही नई पायो
केला रूख मारोनी हठ छोड़ दो जी.....

आठवों मास जब लागियो जी, ओवरिया मन जाय
मन भंवर केला लावजोजी.....
सारी रेहटी माय हम फिरयाजी कही नई पायो
केला रूख मारोनी हठ छोड़ दो जी.....

नौवो मास जब लागियो जी, दाई माई पर मन जाय
भंवर केला लावजोजी.....

जब बच्चा पैदा हो जाता है तब तीसरे दिन प्रसूति स्नान कराया जाता है।

प्रसूति स्नान – जच्चा, बच्चा को नहलाकर घर की साफ सफाई कर सूर्य की पूजा कर जच्चा को भोजन दिया जाता है।

छठी पूजन – पांच लड्डू, बच्चे के कपड़े, एक कोरा ताव, कलम, रोली, चावल हल्दी दीपक लगाकर पूजा करके कोरा ताव और कलम जच्चा के पलंग के नीचे रख दिया जाता है, कहते है रात मे विधाता बच्चे का भाग्य लिखते है,

सूतक उठाने के गीत –

लिपनिया पुतनिया चोक चंदनिया हो,
आज म्हारा आओ, सब कोई जेठानी म्हारी गोतनि
या सास घर भेजूंगी, नाऊआ ननद के घर बमना हो
जिठानी के यहॉ तुम पिया जाओ जिठानी म्हारी गोतनिया
सासुजी आई हरकती ननदी मलकती, जिठानी
तो आई मुख मोड, जिठानी म्हारी गोतनिया
सासु बिकाऊ चदरिया, ननद गोदड़िया हो जिठानी
के जाजम बिछाओ तो वे मेरी गोतनिया

सूरज पूजा का गीत

म्हारा माथा ने टीको घड़ाओ केशरिया लाल
हा ओ पातलिया लाल जब जाई सूरज जुआराजी

म्हारा काना ने झाला घड़ाओ केशरिया लाल
म्हारा गलीछी ने हरवा घड़ाओ, केशरिया लाल
हा ओ पातलिया लाल जब जाई सूरज जुआराजी

मैने दाई दाई कर लालन जायो राज
पिया तो नींद भर सोयाजी
इसी तरह सब गहनों को जोड़ना है।

जलवाय पूजन
जलवाय पूजन में जच्चा को सोलह श्रृंगार कर कुए पर ले जाकर साथ में दो गगरी ले ली जाती है कुंए का पूजन कर गगरी भर कर साथ में लाती है। ये गगरी देवर जी उतारते है उनको नेक दिया जाता है इसी दिन कुआं पूजन के साथ ही चूल्हा पनिहारा झूला खिलौने आदि की रस्में पूरी कर दी जाती है जब बच्चा आठ या नौ माह का हो जाता है तब अन्न प्रासन या (बुटाना) जमाल आदि की रस्म भी पूरी कर दी जाती है।

जलवाय पूजन का गीत –

गीत नं – 01

तांबा की घड़वो हो सीतालंकी पानी मत
जाओ हो, पीयर पूरी पानी मत जाओरी
बादल ऊनियों
इतना तो आदर म्हारा पिऊजी, सासुजी का
करजो हो हंजा मारू सासुजी का करजो हो
बादल ऊनियो

सासुजी का जाया हो मृगानैनी भाई किवासा
हो सीतालंकी भाई किवासा हो बादल ऊनियों
इतना तो आदर म्हारा पिऊजी जेठानी का करजो
जिठानी का जाया हो सीतालंकी भतीजा किवासा हो
बादल ऊनियों
इतना तो आदर म्हारा पिऊजी ननदी का करजो
ननदी का जाया हो सीतालंकी भाडिज किवासा हो
बादल ऊनियो
कुक का जाया म्हारी सीतालंकी अपना किवासा
हो पियूर पूरी नाम लिगसिया हो बंश बडासिया हो
बादल ऊनियो

गीत नं – 02

हथई बिठांता हो ससुरजी बालुड़ा ने राखो समझाया
यशोदा जलवाय पूजी आये .....
भैंस दुहता हो जेठजी बालुडा ने राखो समझाया
यशोदा जलवाय पूजी आये.....
हमारा समझाया बालुड़ा ने समझे तुम्हारा तो
तुम ही समझाओ, यशोदा जलवाय पूजी आये.....
घोड़ीला फिरंता हो देवरजी बालुड़ा ने राखो समझाय,
यशोदा जलवाय पूजी आये.....
फाग खेलंता नंदोई जी बालुड़ा ने राखो समझाय
यशोदा जलवाय पूजी आये.....
सार खेलता साहिबाजी बालुड़ा ने राखो समझाय
यशोदा जलवाय पूजी आये.....
हमारा समझाया बालुड़ा ने समझे, तुम्हारा तो तुम ही समझायो,
यशोदा जलवाय पूजी आये.....

घुंघरू गीत

नाना का दादाजी दिशावर गया रे नाना गया
हे गढ़ गुजरात, चतुर नाना लाड़ला, थारे घुंघरू मंगा दऊजी
घुंघरू से घुघंरू जडयारे नाना डंडी में जडोरे
जडाव चतुर नाना लाडला थारे घुंघरू मंगा देऊजी.....
पापा, चाचा, मामा, आदि सभी को जोडना है।

पालना गीत

नाना थारो पालनो बंधा देऊ सामे वारने
आवतड़ा थारे जावतड़ा दादाजी झूला देरे

पापाजी झूला देवे रे, झूल रे नाना
झूल रे तु दूध बताशा पीरे
धारी रेशम लंबी डोर लालजी आंगन नाचे मोर रे
भाई, मामाजी, जीजाजी, फूफाजी आदि के नाम जोडना है ।

जच्चा गीत

गीत नं – 01
कवला ऊबी कुल बहुजी, राजा आई कमर माय पीड़
हमारी चिंता कौन करे जी .....
ससुर हमारा राजमीजी, सासूजी है अरत भंडार
हमारी चिंता कौन करे जी .....
जेठजी हमारा चौधरी जी, जेठानी लगा लूती नार
हमारी चिंता कौन करे जी .....
देवर हमारा लाड़लाजी, देवरानी गौना आई नार
हमारी चिंता कौन करे जी .....
ननद हमारी सासरेजी, नंदोई है पराया पूत
हमारी चिंता कौन करे जी .....
ओवरा माय की ओवरी जी, जहां सूता ननद
बाई का वीर, हमारी चिंता कौन करे जी .....
अंगूठो मोड़ जगाई जी, जागो जागो
ननद बाई का वीर खाली, कर दो ओवरीजी
लट पट पागा सावरियो जी राजा हंस कर
खोसा है पेच यह लो सुंदर ओवरीजी
हिचर पिचर जिवड़ो करेजी राजा धीय
जना की यो पूत चिंता हमारी कौन करेजी
धीय जनता को कलमलोजी
गेरी पूत जना तो सुख होय, ये लो सुंदर ओवरी
जनम्या पुत्र सो लेखनाजी, होजी जीती
केशरिया से होड़, बधाई सुंदर हम बांटाजी
दादाजी रा वंश बड़ाओ, बधाई सुंदर हम बाटाजी।।

गीत नं – 02

सुनोजी पिया मोहे मोटर मंगा दो
मेरी दुखन लागी कमरिया, हो मेरी दुखन लागी कमरिया (दो बार)
मैने दाई बुलाई वो न आई, प्यारी सिस्टर को दे दो खबरिया
हो मेरी दुखन लागी कमरिया.....
मैने सासु बुलाई वो न आई, मेरी माता को दे दो खबरिया
मेने जेठानी बुलाई वो न आई, मेरी भाभी को दे दो खबरिया
आगे ननद, देरानी, पडोसन के नाम जोडना है ।।

लड्डु गीत

मेरे मायके से आये पचास लड्डु सोठन के
आंगन ढांडे ससुर राजा मांगे लड्डु आधासा
लड्डु चखाव, आधा तोडू तो मेरे हाथ दुखत है
पूरा दिया ही ना जाय लड्डु सोठन का
आंगन मे ढांडे जेठजी (इसी तरह नाम जोडना है)

लडके की सगाई –

पहले देवता के नारियल रख कर पूर्वजो को सुमर कर फिर लडके को चौक पर बैठाकर नारियल झिलाकर कपड़े आदि देकर गोद भरी जाती है।
इसी प्रकार लड़की की भी गोद भराई जाती है।

चौक के गीत

कहॉ का आया रे हंजा नारिला, कहॉ का पान पचास तो चौक ने बैठेरी हंजो अड़ी करे।
जनकपुर से आया रे हंजा नारिला, अयोध्या का पान पचास तो चौक बैठेरी हंजो अड़ी करे।
कैसे के झेलूरे हंजा नारेला, कैसे के पान पचास, चौक बैठेरी हंजो अड़ी करे।
हंस हंस झेलूरे हंजा नारेला गावत पान पचास तो चौक ने बेठेरी हंजो अड़ी करे ।
कहॉ उतारू रे हंजा नारेला कहॉ ते पान पचास तो चौक ने बेठेरी हंजो अड़ी करे ।
अंगना उतारू हंजा नारेला महलो में पान पचास तो चौक ने बेठेरी हंजो अड़ी करे ।
केशो के मिलियोरे बेटा दायजो केसा सरूप घर की नार तो चौक ने बेठेरी हंजो अडी करे।
समुंदर मिलियो री माता सासरो सात साला के री जोड़ तो चौक ने बेठेरी हंजो अडी करे।
चरूआ तो हंडा माता दायजो बहुत सरूप घर की नार चौक ने बेठेरी हंजो अडी करे।

लगन लिखाई की रस्म –

लगन लिखाई की रस्म में लडकी के घर पर व्यवस्था होती है इसमे ब्राम्हण को बुलाकर दोनो पक्ष बैठ कर शादी की तारीख पक्की करते है।

इसमे दो कोरे ताव, कलम, रोली, चावल, हल्दी, नाड़ा, दीपक गोल सुपारी लड़की, लडके के कपडे आदि लगते है। दो ताव पर पूरी शादी का प्रोग्राम लिखकर एक – एक कॉपी दोनो पक्षो को दे दी जाती है इसी के अनुसार दोनो तरफ प्रोग्राम होते रहते है तथा इसी दिन से घर मे मंगल गीत शुरू हो जाते है

जैसे – गणेश गीत, मामेरा गीत, प्रभाती गीत (कूकड़ा), घोड़ी गीत, सांझोली गीत, सहेरा गीत, सुहागा कामन

लगन लिखाई के गीत

राजा दशरथ जी फूले न समाय
लगन आई मोरे अंगना
राजा भी फूले उनकी रानी भी फूले
कैकई, सुमित्रा भी फूले न समाई लगन आई
मोरे अंगना.....
रामा भी फूले लक्ष्मण भी फूले,
भरत शत्रुघन भी फूले न समाई लग्न आई
मोरे अंगना.....
दादाजी भी फूले दादीजी भी फूले,
बड़े भैया भी फूले न समाय लगन आई
मोरे अंगना.....
इस प्रकार सभी के नाम जोड़ना

माता शीतला पूजन
घर की साफ सफाई आदि करके शुक्ल पक्ष में अच्छा दिन देखकर बड़े महीने में पूजन किया जाता है
रात में राती जोगा करके अछूता पीस कर भोजन बनता है भात अठवई माता का श्रृंगार मेवा, नारियल ध्वजा आदि अलग–अलग परिवार में अपनी अपनी रीति से पूजन होती है। क्योकि कभी – कभी अलग से मान भी कर ली जाती है।

माता शीतला पूजन के गीत –

खोलो किवाड़ी मैया देखू धारी बाड़ी
दर्शन के बलिहारी
कुम्हार को बेटो भैया थारी सेवा आयो
कलशियो लाई ने बेगो आयो टेक
सुतार को बेटो भैया थारी सेवा आयो
बाजूर लाई न बेगो आयो टेक.....
कब की हो ऊबी मैया, कब की हो थाड़ी
तोईयन खोली किवाड़ी, खोलो किवाड़ी भैया
देखू तुम्हारी बाड़ी दर्शन की बलिहारी
बनिया, दर्जी, माली सबका जोडना

गीत नं –02

माताजी की ऊॅची हो मेढ़ा, नीची हो मेढ़ा

अम्बर झलका मारे हो माय, पैरो री जोरावर रानी बिजासन रानी,
बालूड़ा रखवाली हो माय
माताजी की ऊँची हो मेढ़ा, नीची हो मेढ़ा
झूमकी झलका मारे हो माय, पैरो री जोरावर रानी
बिजासन रानी बालूड़ा, रखवाली हो माय
इस प्रकार सभी के नाम जोड़ना

मोहरत तथा खल मिट्टी लाने के नियम

शादी का मोहरत करना एवं खन मिट्टी लाना जिस दिन लगन पाति मे निरचित होता है उस दिन शादी का मोहरत होता है इसमें सामान नारियल, पॉच या सात हल्दी की गॉठ, रोली, चावल, दीपक, गेहूँ, मूंग, चना सभी अनाज धो कर साफ कर चार सुहागिने झाड़ने, बीनने, पीसने आदि का शुभ आरंभ कर देती है।

हल्दी पीसकर दीवार पर माड़ने आदि जिसमे गणेश सिलक, कवली आदि का शुभ आरंभ हो जाता है शाम को खल मिट्टी लाते है जिसके लिए पांच या सात बांस की डलिया पर नई साड़ी डाल कर आंगन में चौक पूर कर रखकर जंगल मे ले जाकर रोली चावल नारियल सूआ, नाडा, गेहूँ की घूंघरी से पूजा कर मिट्टी खोदकर लाते है। इस मिट्टी से चूल्हा, कोठी, सिगड़ी, थाली आदि बर्तन बनाकर माता पूजन गणेश पूजन मे खाना बनाने मे इस्तेमाल किये जाते है।

खल मिट्टी का गीत

भंवरा पहलो बंधाओ म्हारा आईयो
भंवरा मोखलो म्हारा ससुरा री पोल बाड़ी रा
भंवरा दाख मीठी रस से भरी
भंवरा ससुरा ने रंग से बधाइयों
भंवरा सासु ने लियो गोदी झेल बाडी रा
भवरा दाख मीठी रस से भरी
भंवरा दूसरो बंधाओ म्हारा आइयो
भंवरा मोखलो म्हारा जेठ जी री पोल
बाडी रा
भंवरा जेठजी ने रंग से बधाईयो
भंवरा जेठानी ने लियो गोदी झेल
बाडी रा भंवरा
इसी प्रकार सब के नाम जोड़ना

गणेश गीत

(1) चलो गजानन जोशी खा चला तो अच्छी अच्छी लगना जचावो गजानंद, कोठारी गादी पे नोबत बाचे, नोबत बाचे इन्द्रगढ़ गाजे तो झनन झनन झालर बाजे गजानंद ————
चलो गजानंद माली खा चला
चलो गजानंद सोनी खा चला
तो अच्छा अच्छा सेहरो ले आओ
तो अच्छा अच्छा गहन ले आओं गजानंद कोठारी गादी पे ————————
इस प्रकार बजाज, दर्जी, बनिया आदि को जोड़ना –

(2) ऊबा ऊबा ईश्वर राजा अरज करें पांच लाडू पांगा धरे,
ऊबा ऊबा वासुदेव अरज करे पांच लाडू पांगा धरे,
असो म्हारो गणपत नाचेगो, पाव का नेवर बाजेगा,
ऊबी ऊबी लाड़ी बहू अरज करे छेब छोड़ी पागा लगे
ऊबी ऊबी नागन बहू अरज करे छेब छोड़ी पागा लगे
ऊबा ऊबा सुनिल कुमार अरज करे पांच लाडू पांगा धरे,
ऊबी ऊबी लाड़ी बहू अरज करे छेब छोड़ी पागा लगे,
असो म्हारो गणपत नाचेगो, पाव का नेवर बाजेगा,
आगे परिवार वालो के नाम लेना है।

(3) चिंता हरो रे चिंतामण गणेश तुम बिन घड़ी न सरे,
तुम खे ईश्वर राजा मनावे गणेश बहू गोरा पांव पड़े,
तुम खे वाशुक देव मनावे गणेश बहू नागिन पांव पड़े,
तुम तो मानो म्हारा गोरा गणेश तुम बिन घड़ी न सरे,
तुम खे राजा किशन मनावे गणेश बहू लाड़ी पावं पड़े,
तुम खे रामगोपाल मनावे गणेश बहू लाड़ी पावं पड़े,
तुम तो गोरी का पुत्र गणेश मनाया क्योंनी मनो –
तुम तो मानो म्हारा गोरी गणेश तुम बिन घड़ी न सरे,

इसी प्रकार सभी घर वालो के नाम लेना

प्रभाती कूकड़ा :–

(1)
उठो म्हारी बालक बन्नी हुओरी सबेरो,
हुओरी बियानो आंगन मेहतर झाडू दई गयो,
मेहतर का से की जो हमारी सुशीला बाई का,
दास, राधेश्याम जमाई झाडू दई गया,

उठो म्हारी बालक बन्नी हुओरी सबेरो,
हुओरी बियानो आंगन ढाली ढोल बजाई गयो
ढोली का से की जो हमारी राधा बाई का
दास श्री कृष्ण जमाई ढोल बजाई गया

उठो म्हारी बालक बन्नी हुओरी सबेरो,
हुओरी बियाना आंगन सोनी गहनो लई आयो
सोनी का से की जो हमारी सीता बाई राक्षसी
रामजी जमाई गहनो लई आया
उठो म्हारी ——————————————

इसी प्रकार दर्जी, माली, बजाज, का नाम जोड़ना

(2) केशर कस्तुरी का आंगन का कीचड़ मच्यो वे तो आवता
से दादाजी रपट पड़या
थमो – थमो हो दादाजी कैसे गिरय/ बेटी तुम्हारा जो
ब्याह की फिकर पड़ी ऊनी फिकर का मारे रपट पड़या
गौरी लाड़ी ने पकड़ी बांह
हरि बोलो दयालजी का कूकड़ा

केशर कस्तुरी का आंगन का कीचड़ मचयो वे तो
आवता से पिताजी रपट पड़या
थमो – थमो हो पिताजी कैसे गिरया,
गौरी लाड़ी ने पकड़ी बांह
हरि बोलो दयालजी का कूकड़ा
केशर कस्तुरी का आंगन का कीचड़ मचयो वे तो
आवता से काकाजी रपट पड़या
थमो – थमो हो काका कैसे गिरया/ भतीजी तुम्हारा जो
ब्याह की फिकर पड़ी ऊनी फिकर का मारये रपट पड़या
गौरी लाड़ी ने पकड़ी बांह
हरि बोलो दयालजी का कूकड़ा,

इसी प्रकार भाई, मामा, मोसा, जीजा के नाम जोड़ना

(3) सूरज ऊग योरी बड़लारी कराड़ सूरजमल उगियो
तुम जागो हो हमारा ईश्वर राय सूरजमल ऊगियो
देवता तुम घर हो कैसी आवे नींद
सूरजमल उगियो

देवता तुम घर हो प्रजा को ब्याह सूरजमल उगीयो,
झन झन झारी ही देवता लीजो हाथ सूरजमल उगीयो,
दातून करणो ही तुलसी क्यारा पास सूरजमल उगीयो,
नाम लीजो हो श्री कृष्ण को नाम सूरजमल उगीयो,
दान दीजो हो अच्छो कंचन दान सूरजमल उगीयो,

तुम जागो हो दादाजी सहाब सूरजमल उगीयो,
दादा तुम घर हो कैसी आवें नींद सूरजमल उगीयो,
दादा तुम घर ही नाति को ब्याह सूरजमल उगीयो,
झन झन झारी हो दादा लीजो हाथ सूरजमल उगीयो,
दातून करणो ही तुलसी क्यारा पास सूरजमल उगीयो,
नाम लीजो हो श्री कृष्ण को नाम सूरजमल उगीयो,
दान दीजो हो अच्छो कंचन दान सूरजमल उगीयो,

इसी प्रकार काका, मामा, पापा का नाम जोड़ना

साझोली गीत दीपक का गीत
ईश्वर राय की लम्बी पटसार तो बहू हो गोरा ने दिवलो जोयो
दिवलो जोता हुई बड़ी देर चमकती आवे सांझोली जी
सांझोली का ओछ लंबा केश तो सुहानी लागे सांझोली जी
सांझोली से पाओ काचो दूध चबाओ नागर बेल
सुहानी लागे सांझोली जी –
दशरथ जी की लंबी पटसार तो बहू हो कौशल्या ने दिवलो जोयो
दिवलो जोता हुई बड़ी देर चमकती आवे सांझोली जी
सांझोली का ओछ लंबा केश तो सुहानी लागे सांझोली जी
सांझोली से पाओ काचो दूध चबाओ नागर बेल
सुहानी लागे सांझोली जी –
सभी परिवार के सदस्यो का नाम जोड़ना –
लाडू :–
गाड़ा भर भर लाडू आया लाडू आया बार
आंगन गंज दिवई दी जोजी
लाडुरा चोर अनिल कुमार भांडे आया सुनील कुमार
भाड़े आया लाडूरा चोर खड़ा करो जी
लाओ रे नाड़ा, बांधो अंगाड़ी बांधो पीछाड़ी
लाडूरा चोर खड़ा करो जी
हाथ जोड़ी न राधा बाई बिलमें माया बाई बिलमें
म्हारा दादाजी चोर छुड़ाई दी जो जी
लो म्हारा छंद छुड़ाओ उनका बंद म्हारा
काकाजी चोर छुड़ई दी जो जी
लो म्हारी रोटी छुडाओ उनकी चोरी म्हारा पापाजी
चोर छुडाई दीजो,
लो म्हारी साड़ी छुड़ाओ उनकी गाड़ी म्हारा वीराजी
चोर छुड़ाई दीजो,
लो म्हारा हत्तोड़ा छुड़ाओ उनका घोड़ा म्हारा मामाजी
चोर छुड़ाई दीजो जी,
वीरा गीत :–
वीरा से पहले तोहे नोतियो, वीरा कहाँ रे
लगाई बड़ी देर फूल योरी फूल गुलाब की
वेन्या थारी भावज ने भाड़यो रूसनो,
समझावत, लागी बड़ी देर फूल योरी फूल गुलाब की
वीरा माथा ने भमर घड़ावजो
जेको टीको रतन जडाओ फूल योरी फूल गुलाब की
वीरा काना ने झालज घड़ावजो
जेको झुमकी रतन जडाओ फूल योरी फूल गुलाब की
वीरा सब से पहले तोहे नीतियो, वीरा कहाँ रे
लगाई बड़ी देर फूल रयोरी फूल गुलाब को
आगे गहनो के नाम जोड़ना

(2) भावज मेरी अपने पिया को समझा रही
पिया जाओ क्यो नही बाई सा जोवे तुम्हारी बाट
गोरी जावा कैसे पैसा नही है हमारा पास
राजा म्हारो टीको ले जाओ, टीका से भरि आओ भात
भावज मेरी अपने पिया को समझा रही
पिया जाओ क्यो नही बाई सा जोवे तुम्हारी बाट
गोरी जावा कैसे पैसा नही है हमारा पास
पिया झुमकी ले जाओ झुमकी से भरी आओ भात
भावज मेरी अपने पिया को समझा रही
पिया जाओ क्यो नही बाई सा जोवे तुम्हारी बाट

इसी प्रकार गहनो के नाम जोड़ना
(3) आज तो सावलियों वीरो म्हारो मायरो ले आयो री
आज तो गिरधारी वीरो म्हारो मायरो ले आयो री
पायल भी लायो वीरो म्हारो चूदंड भी
लायो पीला का कारण वीरो म्हारो बजाजी
बनकर आयो री आज तो ——————————
टीको भी लायो वीरो म्हारो बिंदी भी लायो
गहना का कारण वीरो म्हारो सोनी बनकर आयो री
रूपयो भी लायो वीरो म्हारो नोट भी लायो
रेजगी का कारण वीरो म्हारो सेठ बनकर आयो री
आज तो ——————————
घोड़ी गीत :–

(1)
घोड़ी का उर खुर बाजना घोड़ी मेहंदी रचाई
हम तुमने पूछ चतुर लाड़ला रे घोड़ी कहाँ से बुलाई

अपना शहर में काछी बसीरे, घोड़ी वहाँ से बुलाई
दादी रानी पूछे चतुर लाड़ला रे घोड़ी कहाँ से बुलाई
हमारा दादाजी की बात घनी घोड़ी इंदौर से आई

बैठो बैने रे कुंवर लाडला रे देखा चतुराई
आगे चले चतुर लाड़ला रे पीछे सब भाई

मम्मी रानी पूछे चतुर लाड़ला रे घोड़ी कहाँ से बुलाई
काकी रानी पूछे चतुर लाड़ला रे घोड़ी कहाँ से बुलाई

हमारा पापा की बात घनी घोड़ी भोपाल से आई
हमारा काकाजी की बात घनी घोड़ी सिहोर से आई

बैठो बैने रे कुंवर लाडला रे देखा चतुराई
आगे चले चतुर लाड़ला रे पीछे सब भाई
सब के नाम जोड़ना है,

(2)
देखो बन्ने की घोड़ी पे कैसी बहार
कभी त्तुरकी सी चाल कभी मुरकी सी चाल
तमाशियो ने घेरा है मीना बाजार

बन्ने के दादाजी लूटा रहें हीरा जवाहर
दादी रानी से कह दो करें दूना लाड़ देखो बन्ने ———————
बन्ने के पापा लुटावे हीरा जवाहर
मम्मी रानी से कह दो करें दूना लाड़ देखो बन्ने ———————
बन्ने के काकाजी लुटावे हीरा जवाहर
काकी रानी से कह दो करें दूना लाड़ देखो बन्ने ———————
बन्ने के भैया लुटावे हीरा जवाहर
भाभी रानी से कह दो करें दूना लाड़ देखो बन्ने ———————
इसी प्रकार जोड़ना
(3)

रंगीली घोड़िया ठुमकारे से चलती आई
बन्ना तेरे काका ले आये सजा धजा कर घोड़ी
बन्ना तेरे दादा ले आये सजा धजा कर घोड़ी
काकी रानी के प्यारे चढ़ो करो मत देरी
दादी रानी के प्यारे चढ़ो करो मत देरी
समय अब हो रहा ससुराल घर जाने का रंगीली ——————
बन्ना तेरे पापाजी ले आये सजा धजा कर घोड़ी
बन्ना तेरे भैया ले आये सजा धजा कर घोड़ी
मम्मी रानी के प्यारे चढ़ो करो मत देरी
भाभी रानी के प्यारे चढ़ो करो मत देरी
समय अब हो रहा ससुराल घर जाने का रंगीली घोड़िया ——————
सब के मामा, फूफा के नाम जोड़ना

सहेरा गीत

(1)
दादाजी की अलिया गलिया मालन बेचन आई जी
पापाजी की अलिया गलिया मालन बेचन आई जी
दादी रानी पूँछे मालन कई कई सोदो लाई जी
मम्मी रानी पूँछे मालन कई कई सोदो लाई जी

हार हमेल चम्पा की कलिया सेबरियो गुथ लाई जी
ये तो सेबरियो म्हारा राई भर ने सोहे जी
ये तो सेबरियो म्हारा चंचल वर ने सोहे जी
काकाजी की, वीराजी की अलिया गलिया मालन बेचन आई जी
काकी बाई, भाभी बाई रानी पूँछे मालन कई कई सोदो लाई जी
हार हमेल चम्पा की कलिया सेबरियो गुथ लाई जी
ये तो सेबरियो म्हारा राई भर ने सोहे जी
ये तो सेबरियो म्हारा चंचल वर ने सोहे जी
इसी प्रकार सब के नाम लेना है।

(2)

आज की रात अयोध्या में गुथांया सेहरा
दादा राजा ने खड़े होके गुथांया सेहरा
दादी रानी ने कलेजे से लगाया सेहरा
आज——————————
पापा राजा ने खड़े होके गुथांया सेहरा
मम्मी रानी ने कलेजे से लगाया सेहरा
काका राजा ने खड़े होके गुथांया सेहरा
काकी रानी ने कलेजे से लगाया सेहरा
भैया राजा ने खड़े होके गुथांया सेहरा
भाभी रानी ने कलेजे से लगाया सेहरा
आज की रात अयोध्या में गुथांया सेहरा

इसी प्रकार नाम जोड़े
मंडप गीत :–

तुम तो जाओ ईश्वर जी अमझरे रे
तुम तो जाओ वासुकदेव जी अमझरे रे
तुम तो लाओ कच्चा पक्का पान
पटोली छायो मांडवो रे
हमने अनबाड़ी पनबाड़ी सब ढूडी रे हमने कही नही
पाया नागर बेल पटोली छायो मांडवो रे

उनी धार का आगे केवड़ो रे ऊना केवड़ा पे छाई
नागर बेल पटोली छायो मांडवो रे

तुम जाओ सुनीलकुमार अमझरे रे
तुम लाओ काचा पाका पान

पाटोली छायो मांडवो रे
हमने अनबाड़ी पनबाड़ी सब ढूढें रे हमने कही नही
पाया नागर बेल पटोली छायो मांडवो रे (टेक)
आगे जवाई (दामाद) का नाम लेना
तुम जाओ जवाई राजा अमझरे रे
तुम लाओ काचा पाका पान
पाटोली छायो मांडवो रे
हमने अनबाड़ी पनबाड़ी सब ढूढें रे हमने कही नही
पाया नागर बेल पटोली छायो मांडवो रे (टेक)

पहलो खंब रोली भरियो, दूसरो खंब चावल भरियो,
तीसरो खंब हल्दी भरियो, चौथे खंब मेहंदी भरियो,
पांचवो खंब नारियल भरियो,
गड़ गया पांचो ही खभं चौरसी दिया जले
ईश्वर राय से गोरा बाई यू कहे
स्वामी हमें मंडप बताओ, मंडप हम देखांगा
गोरी मंडप को कई देखनो लग गया चौसठ खंभ चौरासी दिया जले
अक्षय कुमार से बहू लाड़ी यू कहे
स्वामी हमें मंडप बताओ, मंडप हम देखागा
गोरी मंडप को कई देखनो लग गया चौसठ खंभ चौरासी दिया जले
जमाई जी से राधा बेटी यू कहे
स्वामी हमें पियरिया पहुचाओ मंडप हम देखांगा
गोरी मंडप को कई देखनो लग गया चौसठ खंभ चौरासी दिया जले
इस प्रकार नाम जोड़ना

गणेश पूजन की विधि :–

गणेश पूजन का भोजन – चावल, मूंग की दाल, खाजा, पूड़ी, लाप्सी के लड्डू, घूंघरी बाखला चार, आटे के दीपक, एक लाड़न दीपक

पूजन की थाली में रोली, चावल, हल्दी, मेहंदी, सुपारी, पान, कपूर, नारियल,
पूजन स्थान पर पटा या चोकी बिछाकर लाल कपड़ा सवा पाव चावल की मुढ्ढी रखकर उसके ऊपर पान तथा पान पर गणेश जी बैठाकर पैसा, सुपारी, गुड़ की खोडी, नारियल भेंट नौ खाजा सामने पांच लड्डू रखकर
चारो कोने पर चार चार पुरी
चारो कोने पर दो दो खाजा और
चारो कोने पर आटे के दीपक
दीपक लगाकर बगल में मिट्टी की कोठी रखकर कोठी पर लाल कपड़े में नो खाजे पांच लड्डू, नारियल भेंट गुड़ की डल्ली रखकर
सभी परिवार पूजन आरती करते है

कुल देवी पूजन की तैयारी :–

जमीन पर सवा किलो चावल की एक ढ़ेरी उसी के पास एक तरफ सवा किलो गेहूँ की एक ढ़ेरी लगाकर दोनो तरफ चार चार मिट्टी के कलश तथा उनके ऊपर एक एक दिया रखकर वे भरी जाती है तथा एक पाई पर सामने बड़ा दीपक तेल भरकर बत्ती लगाई जाती है।

फिर दुबारा सवा सवा किलो चावल तथा गेहूँ उसी ढ़ेरी में मिलाकर सामने बत्तीस मिट्टी के दिये उल्टे रखकर उस पर बांस का छटारना रखकर बत्तीस जुड़े रोटी के तथा खाजे रखकर उसके ऊपर बत्तीस दिये आटे के उस पर घी की बत्ती लगाकर रखे जाते है,
दीवार पर कुलदेवी माता की चित्र सफेद कपड़े पर बनाकर लगाया जाता है।

चित्र हल्दी से बनाया जाता है

बन्ने को या बन्नी को नहलाया जाता है उबटन से तेल हल्दी से चार सुहागने चार करवा में पानी भरकर बन्ने की आँख बंद करवाकर चारो करवे से पानी डालती है फिर चावल से पसी भरा कर मामा घर की साड़ी या धोती पहना करणिया जी गोद में बैठाकर माताजी के सामने बैठा देते है। माता के पास बन्ने बन्ना के माता पिता बैठते है जब बन्ना या बन्नी आंख खोलता है तो सबसे पहले मम्मी पापा का चेहरा देखता है फिर कुलदेवी की जोत का दर्शन करता है, फिर बन्ना या बन्नी माताजी का पूजन करते है फिर पूरा परिवार माताजी का पूजन करता है।

मंडप की रस्म :–

मंडप में जमाई लोग चार खंबे गाड़ कर आम के पत्तो से वंदन बार बना कर चारो और बांधकर व चारो कोनो पर चार चार पूरिया बांधकर व बीच में एक दीपक में छेद कर नाड़ा से बांधते है।

घर की महिलाये नंनदोईजी को भेंट देकर पीठ पर हल्दी के हाथ लगाती है।

फिर बन्नी को कंगन बांधने की रस्म करते है

इसके बाद मण्डप लिपकर पूर्वजो को न्यौता देते है, न्यौता मे मानक खंब बना कर मंडप में रखकर काकड़ा, हल्दी, रोली, चावल, घी, शक्कर, पापड़, दीपक आदि से पूजन कर निमंत्रण दिया जाता है।

निमंत्रण का गीत :–

श्री राम दाजी निवतो यो झेलो हो तुम घर
नातनी को ब्याह हो रामकुंवर दादाजी निवतो
ये झेलो हो तुम घर नातनी को ब्याह है
ब्याह रच्चयो तो भले करो हमारो तो आवनो न होय हो –
जड़ लिया वघर किवाड़ हो साकल सारी है लोहा की जी
इसी प्रकार परिवार के पूर्वजो का नाम जोड़ना है।

तेल चढ़ाने का गीत :–
वे सुनिल कुमार जवाई जी पुछे बालरिया,
गोंरी चूदड़ चिकनी कहाँ हुई है,

राजा बनड़ी को तेल चढ़ावत थी,
म्हारी चूदड़ चिकनी वहाँ हुई थी,
बेटी जमाई के नाम लेना है।

मामेरा की रस्म

बन्ने या बन्नी के माता पिता कुटुम्ब के साथ मण्डप में बैठते है मामा पक्ष अपने सामर्थ के अनुसार कपड़े करते है।

नहलाने का गीत

लाओ म्हारी दादीजी उबटनो, राय चमेली को
तेल री हरियाली बन्नी बेठोरी उबटनो
लाओ म्हारी मम्मीजी उबटनो, राय चमेली को
तेल री हरियाली बन्नी बेठोरी उबटनो
इसी प्रकार नाम लेना

गाजो ने गरजो मेरी माई मेवलोजी बरसो री
आंगन कीचड़ मेरी माई क्यो मच्यो

आज हुकमचंद जी की नातिन नहावन बैठीरी सपड़न बेठी री
आंगन कीचड़ मेरी माई यू मच्यो

इसी प्रकार सब के नाम लेना

बन्नी :–

बरसो से था अरमान दीदी मेरी दुल्हन बने (2 बार)
शीष बन्नीजी को टीका सोहे बिंदी का था अरमान
दीदी मेरी दुल्हन बन

बरसो से था अरमान दीदी मेरी दुल्हन बने (2 बार)
शीष बन्नीजी को झुमका सोहे लड़ियो का था अरमान
दीदी मेरी दुल्हन बन

बरसो से था अरमान दीदी मेरी दुल्हन बने (2 बार)
शीष बन्नीजी को हरवा सोहे चैनो का था अरमान
दीदी मेरी दुल्हन बने

इसी प्रकार जोड़ना

सुहाग :–

सुहाग बन्नी तेरा डिबियन में
बन्नी के दादाजी सुहाग लाये डिबियन में
दादी रानी ने भर दिया मंगियन में
सुहाग बन्नी ————————
बन्नी के पापाजी सुहाग लाये डिबियन में
मम्मी रानी ने भर दिया मंगियन में
सुहाग बन्नी ————————
बन्नी के काकाजी सुहाग लाये डिबियन में
काकी रानी ने भर दिया मंगियन में

सुहाग बन्नी ————————
इसी प्रकार जोड़ना

बारात की तैयारी :–

(1)
माता पूजन एवं मामेरा के पश्चात बन्ने को तैयार करके जियाजी सेहरा साफा माला कपड़े आदि से सजाकर तैयार करते है, इसके बाद बरनी काशी रस्म होती है।
माता पिता पड़छन करते है सब परिवार के लोग मिलते है, शुभ मोहरत मे बन्ने को घर से निकालकर घोड़ी चड़ाते है, बन्ने की मम्मी घोड़े को चने की दाल खिलाती है भाभी काजल लगाती है बन्ने को सब परिवार की भाभियां लगाम पकड़कर घोड़ी को चलने से रोकती है। बन्ना भाभियो को नेक देता है फिर आगे बड़ता है।
(2)

बन्नी को ससुराल से गहने, जोड़ा सुहाग पहनाकर तैयार करते है,
जब बारात घर के सामने लगती है तब बन्नी को दूल्हा दिखाते है बन्नी बन्ने को देखकर कुछ मीठा खिलाते है कुछ मीठा बन्ने के ऊपर फेक कर बन्ने का स्वागत किया जाता है। द्वार पर दुल्हे को सास तिलक लगाकर गोद भरकर स्वागत करती है। फिर बरछोटे की रस्म होती है बरछोटे की रस्म में दूल्हे को नारियल, वस्त्र, आभूषण आदि देते है सुहागिन महिला सगुन के लिए कलश लेकर खड़ी हो जाती है, वरपक्ष उसको नेक देते है। इसके बाद दूल्हे का वधु के मंण्डप में पडछन होता है। वरमाला और लग्न की रस्म होती है। लग्न के बाद चौरी फेरे की रस्म होती है फिर बिदाई हो जाती है। फिर वधु का ग्रह प्रवेश होता है। ग्रह प्रवेश अपनी अपनी रीति रिवाज के हिसाब से किया जाता है।

प्राणी का जब अंत समय आ जाता है तब कुछ प्रति क्रिया ये होती है कोई समझ पाते है कोई देर से समझाता है।

प्राणी की सांस मे परिवर्तन आ जाता है ऐसा लगे उस समय जगह को गोबर से लीपकर शुद्ध कर जौ तिल काले हो तो अच्छा बिखेर कर कुशा की चटाई पर लिटा देना चाहिए पास ही घी का दीपक जला कर तुलसी की छाया कर देना व गीता रामायण का पाठ व सालीगराम भगवान की मूर्ति ऐसे स्थान पर रखना कि प्राणी पर उसकी छाया पड़े हो सके तो वेद पाठी ब्राह्मण को बुलाकर वेद मंत्रो का जाप दान पुण्य करना चाहिए, हमारे यहॉ मुँख में गंगाजल तुलसी पत्र सोना चांदी मूंगा मोती पान मलाई का लड्डू आदि मुंह में रखना चाहिए ऐसा रिवाज है।

प्रातः के बाद नहलाकर साफ नये वस्त्र पहनाये जाते है चार पिंड बनाकर चार जगहो पर पिंड दान किया जाता है दोनो हाथो में एक एक रूपया और लड्डू रखकर कपड़े से बांध

देते है ताकि लड्डू गिरे नही कुर्ते की जेब में कुछ पैसे रखे जाते है, महिला के पल्लू मे पैसे रखते है बाकी कपड़े गहने पहनाकर चलना करते है बाद में सब निकाल लेते है अग्नि दाह संस्कार के बाद घर पर जो भी खाना बनता है उसका कोर रखकर पहले दाह संस्कार करने वाला खाता है फिर परिवार के लोग खाते है।

तीसरे दिन उठावना करते है सभी परिवार के लोग श्मसान में जाकर वही सफाई कर सारी समेट कर दाह संस्कार करने वाले से दीपक लगाकर तीन टापू बनाकर वहाँ पर कण्डे पर धूप छोड़कर आते है कुछ हड्डिया (फूल) लाकर घर में कही भी अच्छी जगह पर रख देते है वही हड्डिया उज्जैन इलहाबाद ले जाकर प्राणी का क्रिया कर्म करते है।

साफ सफाई कर दसवे दिन सभी परिवार का मुण्डन होता है ग्यारहवे दिन बेटा उज्जैन इलहाबाद में करता है।

घर पर धूप छोड़ते है पकवान में खीर, पूडी, भजिये, उड़द के बडे, चावल, खाजा पापड़, मुंग की दाल, नौ पकवान बनाकर धूप ड़ाल कर पंडित पिंड दान करवाते है इसी प्रकार बारहवे की रस्म होती है। त्तेरहवे के दिन गरूड़ पुरान की पूजा,ब्रह्माण भोजन आदि किया जाता है।

पंद्रह दिन बाद सवा महीने की धूप देते है उसमें ब्राह्माण को जीमाकर उनको लोटे दिये जाते है लोटे में पैसा, सुपारी, लोंग, इलायची, नारियल रखकर देते है इसी प्रकार 6 महीने की धूप करते है उसमें 6 श्रहग जिमाते है फिर ग्यारह साड़े ग्यारह महीने में बरसी का कार्यक्रम करते है बारह ब्राम्हण तथा कुटुम्ब परिवार समाज जिनको जिमाना है जिस रूप में करना चाहे करें।

संकलनकर्ता

श्रीमती जीवनलता गुप्ता
रेहटी

।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

हिन्दू माह अनुसार व्रत एवं त्यौहार

चैत्र

चैत्र सुदी एकम को गुड़ी पड़वा का त्यौहार मनाया जाता है। हिन्दुओं का नया वर्ष भी इसी दिन शुरू होता है, इस दिन लक्ष्मी जी का पूजन किया जाता है। तथा पूरन पूड़ी का भोग लगाया जाता है हिन्दी संवत भी इसी दिन बदलाया जाता है तथा नया वर्ष शुरू होता है।

चैत्र सुदी तीज को गणगौर का त्यौहार मनाते है, गणगौर सुहागिनों का त्यौहार है, इस दिन सब बहू, बेटियां लाल पीले वस्त्र तथा गहनें पहनकर गणगौर माता की पूजन करने जाती है। पूजन में आटी, मेहंदी, रोली, चावल, हल्दी, गुलाल, तथा बेसन के सोर गंहने व मीठे, चरके गुना बनाकर चढ़ाये जाते है, गणगौर पूजने के बाद सब गौर–गौर गोमती बोलती है तथा कहानी सुनती है।

चैत्र सुदी एकम से नौ रात्रै शुरू हो जाते है, सभी घरों में अष्टमी पूजन होता है। तथा नौमी को राम नवमी राम जन्मोत्सव मनाया जाता है, वैशाख की पूर्णिमा को हनुमान जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है, हनुमान जयंती के रूप में ।

वैशाख

वैशाख लगते ही चतुर्थी को गणेश चतुर्थी का व्रत आता है। इस दिन सुहागन औरते सिर धोकर उपवास रखती है, तथा शाम को गणेश जी तथा चौथा माता का पूजन कर चन्द्रमा जी को अरग दे कर कहानी सुनकर भोजन करती है। वैशाख सुदी तीज को अक्षय तृतीया कहते है, अक्षय तृतीया के दिन कुम्हार के यहॉ से कलश मंगवाकर उस पर खरबूजा या कोई फल रखकर ब्राम्हण को देतें है। इस दिन गेहूँ का खिचड़ा तथा सतू खाने का महत्व है। वैशाख सुदी चौदस को भगवान नरसिंह का जन्मोत्सव मनाया जाता इस दिन भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार लेकर हिरण्य कश्यप को मारा था तथा प्रहलाद को बचाया था।

ज्येष्ठ

ज्येष्ठ महीने में जो अमावस्या आवे तथा पूर्णिमा को वट सावित्री करते है, किसी प्रातः में अमावस्या को पूजन करते है, तथा किसी प्रातः में पूर्णिमा को पूजन करते है। इसमें वट वृक्ष का पूजन करते है। पूजन में लगने वाली सामग्री आटी, मेहंदी, रोली, चावल, हल्दी, गुलाल, चना भिगोकर फल फूल दक्षिणा तथा कच्चा सूत लपेटकर परिक्रमा कर कहानी सुनते है। ज्येष्ठ सुदी दशमी को गंगा दशहरा आता है। इस दिन गंगा जी का पूजन करना चाहिये तथा दूध, पताशा चढ़ाकर आरती कर भोजन करना चाहिये।

ज्येष्ठ में निर्जल ग्यारस आती है। यह वृत निराहार रह कर करना चाहिये इसी ग्यारस से 24 ग्यारस का वृत शुरू होता है।

आषाढ़

यदि आषाढ़ मास में अधिक मास (या दो आषाढ़) आते है, तब कोकिला वृत किया जाता है। इसमें चांदी की कोयल बनाकर पूजन करते है। तथा कोयल की आवाज सुनकर एक टाईम भोजन करते है, वृत पूरा होने पर इसका उद्यापन करते है तथा चांदी की कोयल बनाकर दान करते है। आषाढ़ सुदी दूज को जगदीश रथ यात्रा का उत्सव मनाया जाता है तथा जगदीश मंदिर में दर्शन करना चाहिये, ग्यारस से चर्तुमास शुरू हो जाता है यह ग्यारस देवशयनी एकादशी कहलाती हैं। आषाढ़ सुदी पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन अपने अपने गुरू की पूजन करना चाहिये इसी दिन सभी घरों में भेरू महाराज का पूजन करते है। पूजन में दाल, बाटी, चावल, घूगरी, बाखला का भोग लगाया जाता है।

श्रावण

श्रावण महीने से चार महीने के वृत शुरू से जाते है चार महीने जो स्त्रियां एक टाईम भोजन करती है तथा चार महीने में चार चीज छोड़े सावन में साग, भादों में दही, क्वार में दूध तथा कार्तिक में दाल जो महीनें में जो चीज छोड़े उसी का दान करने के बाद ही खावे, श्रावण के सोमवार करने का भी बड़ा महत्व है श्रावण पंचमी को नाग पंचमी का त्यौहार मनाते है। दीवार पर नाग भगवान का चित्र बनाकर पूजन करते है इसके बाद अमावस्या को हरियाली अमावस्या का चित्र बनाकर पूजन करते है। अमावस्या के बाद छोटी तीज का त्यौहार मनाया जाता है इसमें सुहागन औरते तीज माता का पूजन करती है, तथा झूला झूलती है। श्रावण पूर्णिमा को रक्षा बंधन का त्यौहार मनाया जाता है उस दिन सभी भाई अपनी बहन को बुलाते है तथा राखी बंधवाते है रक्षा बंधन वैदिक स्वरूप यही है इस दिन बहने भाई को सूत की राखी बांधकर अपनी जीवन रक्षा का दायित्व उन पर सौंपती है।

भादों

भादों की दूज को सिजारा होता है इस दिन सभी औरते सिर धोती है मेहंदी लगाती है ओर सत्तू पिंडा बनाती है। दूसरे दिन तीज का व्रत रखती है, रात को पूजन करती है, चन्द्रमा जी देखकर पिंड़ा पा से इसका उद्यापन करें उद्यापन में सत्रह पिंडा करे तथा सत्रह औरतो को देवे पूजन के बाद कुलपना निकाले सत्तू ब्लाऊज पीस सासुजी को देवे, तीज की कहानी सुने

तीज के बाद चतुर्थी आती है यह व्रत भी सभी सुहागन औरते रखती है, शाम को चौथ माता तथा गणेश जी का पूजन करके कहानी सुने चन्द्रमा जी को अरग देकर फिर भोजन करें भादों कृष्ण पक्ष की बारस को गाय का पूजन करना चाहिये तथा ज्वार, बाजरा, मक्का, का भोजन करना चाहिये, कलपना निकालना चाहिये। इसका उद्यापन भी करना चाहिये 13 औरतो को भोजन करा कर के यथा शक्ति सामान देना चाहिये इस बारस को बछ बारस कहते है, पूजन के बाद कहानी सुनना चाहिये। भादो अष्टमी को कृष्ण जन्माष्टमी होती है, इस दिन श्री कृष्ण का जन्म कंस के बन्दी ग्रह मथुरा में रात को 12 बजे हुआ था कृष्ण जन्म के दिन सभी प्रकार की पंजीरी जैसे राजगिरा, धना, अजवाइन तथा मेवा की पंजीरी बनाकर रात को 12 बजे आरती करना चाहिये तथा भोग लगाना चाहिये।

भादों सुदी तीज को हरतालिका तीज आती है, इस दिन सभी औरते व्रत रखती है पानी भी नहीं लेती, इसका उद्यापन भी करें, यह व्रत जीवन पर्यन्त नही छूटता बालू रेत के महादेव जी पार्वती जी बना कर विधि विधान से पूजन करना चाहिये। 32 तरह की पत्तियां फल फूल चड़ाना चाहिये रात को जागरण करना चाहिये सुबह मूर्ति विसर्जन कर व्रत खोलना चाहिये पहले ककड़ी कापसाद लेना चाहिये। दूसरे दिन गणेश चतुर्थी होती है इस दिन सभी अपने अपने घरो में गणेश जी की स्थापना करते है। पंचमी के दिन ऋषि पंचमी आती है इस दिन सभी बहू बेटियां ऋषि जी का पूजन करती है तथा मोरधान का

फलहार करती हैं इसी महीने डोल ग्यारस आती है, डोल ग्यारस को माता यशोदा जी ने कृष्ण जन्म के बाद जलवा पूजन किया था इस ग्यारस को जल झूलनी ग्यारस सभी कहते है।

बारस के दिन वामन द्वादशी होती है इस दिन भगवान विष्णू ने वामन रूप रखकर राजा बलि से 3 पग भूमि मांगी थी।

चौदस को अंनत चतुर्दशी आती है चतुर्दशी को अंनत भगवान का पूजन करते है तथा हाथ में अंनत का डोरा बांधते है। मंदिर जाकर कहानी सुनना चाहिये तथा ब्राम्हण को दक्षिणा देना चाहिये।

क्वार

क्वार शुरू होते ही श्राद्ध पक्ष शुरू होता है तथा इन दिनों में अपने पितरो को याद किया जाता है तथा उनका श्राद्ध किया जाता है। श्राद्ध करने का अधिकार बड़े बेटे तथा पोते का होता है। श्राद्ध में ब्राम्हण को भोजन कराया जाता है तथा दक्षिणा दी जाती है। पितृ पक्ष में पितरो की मरण तिथि पर ही उनका श्राद्ध किया जाता है। तथा गया में भी श्राद्ध करने का बड़ा महत्व है।

क्वार सुदी एकम से नौ रात्रै शुरू हो जाते है इस दिन माताजी की घट स्थापना करते है तथा गेहूँ के जवारे बोते है। तथा नौ दिन तक उपवास करते है कोई एक टाइम भोजन करते है दुर्गा अष्टमी को माता दुर्गा जी का पूजन सभी घरों में किया जाता है तथा नौमी को पूजन कर पाटा उठाया जाता है।

दशमी को दशहरा का त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्रीराम ने रावण को मारा था इस दिन गिलकी के भजिये खाने का बड़ा महत्व है। शाम को सारे पुरूष रावण मारने जाते है। घर आकर अपने बुजुर्गो से आशीर्वाद लेते है। तथा पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा त्यौहार मनाते है। शाम को सब लोग केशर इलायची का दूध या साबूदाने की खीर बनाकर भगवान को चन्द्रमा की रोशनी में भोग लगाते है। तथा आरती उतारते है तथा भोग लगाकर प्रसाद वितरण करते है।

कार्तिक

यह व्रत कार्तिक पूर्णिमा से पूर्णिमा तक एक महीने यह व्रत किया जाता है औरते सुबह पांच बजे 30दिन तक तारो की छावं में ठंडे पानी से स्नान करती है अगर कही गंगाजी, यमुनाजी, शिप्रा या नदी, तालाब हो वहा पर स्नान करना चाहिये वही पर पांच पत्थर रखकर पथवारी माता का पूजन कर घर आकार राधा दामोदर भगवान आवंली, पीपल, तुलसी, केल, आदि की पूजन करना चाहिये परिक्रमा करें, शाम को दीपक जलावे तथा कथा सुने।

पूजन सामग्री :– रोलो, चावल, हल्दी, गुलाल, मेहंदी, आटा, पान सुपारी, पैसा, अगरबत्ती, दूध, दही लेवे कार्तिक की कहानी, तुलसी की कहानी, पथवारी माता की कहानी तथा गणेश जी की कहानी गावे कार्तिक पूरा होने पर ब्राम्हण भोजन करावे तथा यथा शक्ति कपडे रूपये आदि देवे।

शरद पूर्णिमा के बाद चतुर्थी का व्रत किया जाता है इस चतुर्थी को करवा चौथ कहते है।

इस दिन कुम्हार के यहाँ से करवा मंगवाकर जल से भरे तथा उसमें पैसा, सुपारी, लोंग, इलायची, नई गन्ना, मूंगफली, सिंगाणा आदि डाले शाम को करवा, गणेशजी, चौथ माता का पूजन करें रात को चन्द्रमा जी का दर्शन कर भोजन करें।

कार्तिक अमावस्या के बाद अष्टमी को गोपाष्टमी का व्रत किया जाता है इसमें शाम को गाय माता का पूजन कर भोजन करते है। नवमी के दिन आवंली के पेड का पूजन करते है तथा आवंली के पेड के नीचे बैठकर भोजन करते है। पूजन सामग्री रोली आदि आवले फल चड़ाने का बड़ा महत्व है। कार्तिक सुदी तेरस का धनतेरस का त्यौहार होता है, इस दिन भगवान धनवंतरी का पूजन करते है, तथा तेरह दिये जलाते है, चौदस को रूप चौदस का त्यौहार मनाते है, इस दिन लक्ष्मी जी, सरस्वती जी का पूजन करते है तथा चौदह दीये जलावे अमावस्या के दिन दीपावली का त्यौहार मनाते है, यह त्यौहार इसलिए मनाया जाता है कि इस दिन भगवान राम अयोध्या लोटे थे, इसलिये सारे घर को दीप मालाओं से

सजाया जाता है तथा शाम को सपरिवार लक्ष्मी जी का पूजन करते है पूजन का सामान रोली, चावल, खडा धना, हल्दी, कमल गट्टा, लाल सफेद कपडा, अगरबत्ती, पंचामृत, फल, पताशा मिठाई, झाडू, सांठा (गन्ना), गेहूँ आदि पंद्रह दिया जलाकर पूजन करे, पटाखे छोड़े यह त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाना चाहिये। दीपावली के दूसरे दिन गोर्वधन पड़वा आती है इस दिन औरते गोबर के गोर्वधन भगवान बनाकर पूजन करती है, इसी दिन भगवान गोर्वधन का अन्नकूट महोत्सव भी मनाया जाता है, इसमें सभी प्रकार 56 छप्पन भोग बनाये जाते है तथा भगवान का भोग लगाया जाता है।

नोट :– गोपाष्टमी आवंला नौमी दीपावली के बाद आती है।

गोर्वधन पूजन के दूसरे दिन भाई दूज का त्यौहार होता है, इस दिन को यम द्वितिया भी कहते है। इस दिन बहन अपने भाई को बुलाकर तिलक लगाती है तथा मिठाई तथा भोजन कराती है, यम द्वितिया को भाई बहन का हाथ पकड़ कर यमुना जी में स्नान करने से (सच में डुपकी लगाना चाहिये) यम की यातना नही भोगना पड़ता है।

अगहन

अगहन महीने में गीता जयन्ती तथा दत्त जयन्ती मनाई जाती है।

पौष

पौष के महीने में अलूणा (बिना नमक का भोज करते है) हर रविवार को भगवान की पूजा आरती करके बिना नमक का भोजन करते है जैसे पूरण बनाकर या मीठे चावल दही पूरी आदि मकर सक्रांति भी कभी पौष में तथा कभी माघ के महीने आती है।

सक्रांति पर 13 चीजे बाटना चाहिये अपनी इच्छानुसार ब्राम्हण को चावल, मूंग दाल खिचड़ी दान करना चाहिये साथ में तिल्ली के लड्डू भी रखना चाहिये।

माघ

माघ महीना शुरू होते जो चतुर्थी आती है उसको माई चौथ कहते है इस दिन सभी सुहागन औरते व्रत रखती है, दिनभर कुछ नही खाती है तथा शाम को तिल्ली का तिलकुट्ट गुड़ मिलाकर बनाती है, फिर चौथ माता, गणेश जी का पूजन करती है तथा रात को चन्द्रमा जी को अरग देकर भोजन करती है।

भोजन करने से पहले कहानी सुनती है। माघ शुक्ल पंचमी को बसंत पंचमी आती है इस दिन भगवान को आम के मौर, तथा गेहूँ की बाली चढ़ाई जाती है। तथा भगवान को सफेद वस्त्र धारण करना चाहिये।

फाल्गुन

फाल्गुन महीने में चौदस को शिवरात्रि का त्यौहार मनाया जाता है कहा जाता है कि इस दिन भगवान शंकर तथा पार्वती का विवाह हुआ था इस दिन सब उपवास रखते है पूजन अर्चना करते है।

फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन होती है। गोबर के भरूले की माला बनाकर होली पर चढ़ाई जाती है पूरी हलुआ पूजन का सामान ले जाकर जहाँ होली बनाई जाती है वहां जाकर पूजन करते है।

सुबह – सुबह होलिका दहन होता है कहा जाता है हिरण्य कश्यप एक राक्षस था वह भगवान विष्णु का बड़ा दुश्मन था योग से उसके यहां विष्णु भक्त प्रहलाद का जन्म हुआ, हिरण्य कश्यप ने अपनी बहन होलिका की गोद में प्रहलाद को बैठाया होलिका जलकर भस्म हो गई, तथा प्रहलाद बच गये इसी दिन भगवान विष्णु ने नरसिह अवतार लेकर हिरण्य कश्यप को मारा था होलिका दहन के दूसरे दिन रंग गुलाल का कार्यक्रम होता है। तथा सातवे दिन सीतला सप्तमी होती है। उस दिन ठंडा भोजन करते है। एक दिन पहले पूड़ी, भजियें, चावल लापसी बनाकर रखते है। तथा सप्तमी के दिन सीतला माता

का पूजन करते है फिर ठंड़ा भोजन परिवार सहित करते है। पूजन सामग्री हल्दी, रोली, मेहंदी, आटा, वस्त्र, पान, सुपारी, पैसा, नारियल,चावल का रेपन।

संकलनकर्ता

श्रीमती पुष्पलता गुप्ता (नागौरी)
नरसिंहगढ़
मोबाईल नं – 8989618568

।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

मुख्य–मुख्य व्रत एवं त्यौहार, संस्कार एवं सोलह श्रृंगार

व्रत एवं त्यौहार

अक्षय तृतीया – इस दिन पानी से भरी मटकी और खरबूजा तथा गेहूँ पूजकर मंदिर में रख आते है। या ब्राम्हण को भेंट कर देते है।

इस दिन गेहूँ का खिचड़ा और सत्तु खाने का महत्व है।

वट सावित्री पूजा

जेठ माह की पूर्णिमा के दिन बड़ के पेड़ की पूजा की जाती है। वट वृक्ष पर धागा लपेट कर पूजा की जाती है। तथा परिक्रमा की जाती है। पूजन में लगने वाली सामग्री रोली, चावल, नाड़ा की आटी, मेंहदी, हल्दी गुलाल, फल, फूल, चने भीगे हुऐ कच्चा धागा।

गुरू पूर्णिमा – आषाढ़ सुदी पूर्णिमा

इस दिन सभी को अपने अपने गुरू की पूजन करना चाहिए। इसी दिन भेरू महाराज की भी पूजा होती है। पुजन में दाल, बाटी, घूगरी बाखला, का भोग लगाया जाता है।

नाग पंचमी

यह त्यौहार श्रावण माह में आता है, इस दिन दीवार पर नाग का चित्र बनाकर (चावल के आटे से)। नाग महाराज की पूजन कर दुध पिलाते है।

तीज माता की पूजन

तीज माता की पूजन श्रावण माह मे आती है। राखी बाद इस दिन तीज माता के मुखोटे साथ मूर्ति बनाई जाती है। तथा दोहिन तक तालाब के किनारे ले जाकर पूजन करते है, जुवारे लगाऐ जाते है।

पूजन में – गुलाल, अबीर, कंकू, हल्दी, सिन्दूर, उडद, फूल, बेलपत्ती चढाई जाती है।

भोजन – घूगरी, गुड़, दूध, घी।

रक्षाबन्धन

रक्षाबन्धन श्रावण माह का त्यौहार है, इस दिन बहन अपने भाई को कलाई पर रक्षासूत्र बांध कर उसकी चुरमा का अनुरोध करती है। भाई अपनी श्रद्धा अनुसार बहन को भेंट कर उसकी रक्षा का वचन देता है। यह त्यौहार दुनिया का सबसे श्रेष्ठ त्यौहार है।

हरतालिका व्रत

इस दिन समस्त महिलाएँ निर्जला व्रत रखती है। बालू रेत के शिव पार्वती जी की मूर्ति बनाना चाहिऐ विभिन्न प्रकार की पत्तियाँ फूल चडाना चाहिए, पूर्व रात्रि में ककडी खाकर व्रत प्रारंभ करना चाहिए। रात जागरण करना चाहिए, सुबह मूर्ति विसर्जन के बाद भोजन करना चाहिए।

ऋषि पंचमी

इस दिन सभी बहू बेटियो को ऋषि जी का पूजन करना चाहिए। मोरधन का फलाहार करना चाहिए।

अनंत चतुर्दशी

इस दिन भगवान अनंत की पूजन कर हाथ में डोरा बांधना चाहिए। इस दिन बिना नमक का भोजन लेना पड़ता है।

शरद पूर्णिमा

शरद पूर्णिमा कुवांर माह में आता है। इस दिन पूर्ण चन्द्रमा के दर्शन होते है। ऐसी मान्यता है कि रात्रि को खुले में चलनी से ढ़क कर खीर रखी जाती है। इस खीर के सेवन से श्वास रोग दूर हो जाता है। सभी लोग यहा खीर रात्रि बारह बजे के बाद खाते है और बाटते है।

संक्रांति पर्व

मकर संक्रांति पर्व 14 जनवरी को आता है। कभी कभी तिथि का अन्तर होने एक दिन आगे पीछे भी हो जाती है।

इस दिन परम्परा कोई पुरानी डलियाँ, चटाई आदि को जलाकर तापते है।

सभी महिलाएँ सुहाग की वस्तुऐ आपस में बाटती है। जिनकी संख्या 13 होती है। ब्राम्हण का सम्मान कर खिचड़ी, मूंगदाल, एवं चावल की भेंट दी जाती है। घर में भी आज खिचड़ी बनाकर खाई जाती है, केवल खिचड़ी का ही महत्व है।

बसंत पंचमी

बसंत पंचमी माघ शुक्ल पंचमी को बसंत पंचमी मनाई जाती है। इस दिन भगवान की पूजन कर आम की मोर तथा गेहूँ की बाली चढाई जाती है, तथा भगवान को सफेद वस्त्र पहनाना चाहिए।

शीतला सप्तमी

शीतला सप्तमी होली के बाद सातवें दिन यह आती है, इस दिन जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि शीतला तो एक दिन पहले बना भोजन सभी प्रकार का खाया जाता है। इस दिन चूल्हा

नही जलाया जाता है। शीतला माता की पूजन की जाती है, पूजन सामग्री हल्दी, रोली, कंकू, गुलाल, चावल एवं एक सफेद ताव रखा जाता है।

बछ बारस

ऐसी कहावत है कि सास और बहू के गलत कहने सुनने पर गाय बछड़े वध कर उसका भोजन बना लिया गया।

जब यह भोजन परोसा गया तो सासु ने पूछा की बहू यह क्या बनाया है बहू ने कहा जो आपने कहा वही तो बनाया है। सॉस को बहुत क्रोध आया और कहा कि यह सब तुम्हारी भूल के कारण हुआ है। यह सब लेजाकर के फेंक दो।

ओर प्रण लिया कि आज के दिन से गेहूँ का उपयोग आज के दिन बंद रहेगा।

इसी कारण आज जुवार, मक्का की रोटी बनाई जाती है, तथा दाल, सब्जी से खाई जाती है। शाम को पश्चाताप के कारण गाय बछड़े की पूजन की जाती है। ओर उन्हें भोजन स्वरूप जुवार की रोटी खिलाई जाती है।

करवा चौथ

सुहागिन महिलाओं का सबसे महत्वपूर्ण व्रत है। अपने पति की लम्बी आयु के यह व्रत रखा जाता है। पूरे दिन महिलाएँ निर्जला व्रत रखती हैं पूजन पाठ करती है, संध्या समय जल के किनारे दीपक लगाती है, तथा पानी में दीपक छोडती है। चन्द्रमा दर्शन चलनी में करती है। फिर पति का दर्शन भी चलनी से करती है, पति को पूर्ण सम्मान देकर पूजन पूर्ण करती है। पति देव को भोजन कराकर स्वयं भोजन करती है। इस दिन बहुए सास जी को कपड़े एवं जेवर भेंट करती है, और उनका आशीर्वाद लेती है। इस त्यौहार से सारा परिवार जुड़ जाता है, तथा सभी परिजन एक दूसरे के प्रति मान सम्मान तथा अपनत्व प्रदर्शित करते है। इस अवसर पर वधुएं सोलह श्रृगांर कर सबका आशीर्वाद लेती है।

आँवला नवमी

इस दिन आवले के पेड़ को पूजन की जाती है। यह आवला हमारे स्वस्थ के लिए एक उत्तम औषधि है।

घर से सभी प्रकार के व्यंजन बनाकर जहाँ आवले का पेड़ होता है, वहा जाकर वृक्ष की पूजन की जाती है। पूजन सामग्री रोली, मेहन्दी, हल्दी, गुलाल, चावल तथा धागा चढाया जाता है।

वही पेड़ के नीचे बैठकर भोजन किया जाता है, पूजन एवं भोजन से निपट कर फिर सब मिल घर को आती है।

देव उठनी ग्यारस

इस दिन गोधुली में चौक मांड कर भगवान शालिग्राम तथा माता तुलसी की पूजा की जाती है। गन्ने की झोपड़ी बनाई जाती है, उसके महत्व में तुलसी गमला तथा भगवान को

विराजमान किया जाता है, पूजन मे बोर, भाजी, आवंला चड़ाया जाता है। 'बोर, भाजी, आवंला उठी देव सावला' का उच्चारण किया जाता है। आषाढ़ में गुरू पूर्णिमा के दिन भगवान शयन को चले जाते है। इस दिन से सभी विवाह आदि कार्य बन्द हो जाते है। देव उठनी ग्यारस के दिन पूजन के बाद सभी भगवान जागृत हो जाते है, तथा सभी शुभ कार्य प्रारंभ हो जाते है।

गणगौर

चेत सुदी तीज के दिन गणगौर का त्यौहार मनाया जाता है, गणगौर सुहागिन औरतो का त्यौहार है। इस दिन सब बहू बेटियां लाल पीले वस्त्र तथा गहने पहनती है, सोलह श्रृंगार कर गणगौर माता की पूजन करने जाती है। पूजन सामग्री नाड़े की आटी, मेहंदी, हल्दी, रोली, गुलाल, बेसन के चरके तथा मीठे गढिऐ बनाकर ले जाते है। पूजन के बाद "गोर गोर गोमती" बोलती है, तथा कहानी सुनती है।

होली

यह त्यौहार वेसे भी शूद्रों का त्यौहार कहा जाता है। इस भक्त प्रहलाद को भगवान के प्रति आस्था तथा उसकी होलिका के दहन की घटना है। सभी प्रातः ब्रम्ह मुहुर्त में होलिका की पूजन को जाते है। नारियल होलिका में फेकते है, कृषक वर्ग गेहूँ की बालय सेकते है। तथा नमक भी सेकते है, घर में बनाएँ "मडले" गोबर से बनाऐ गोल चक्र भी चडाऐ जाते है।

सभी नगर ग्राम वासी जिन घरो मे मौत हुई हो वहा गुलाल चढाने जाते है।

इसके पश्चात् सभी मिल होली के रंग गुलाल मनाते है, एक दूसरे पर रंग डालते है, गुलाल उड़ाते है, महिला एवं पुरूषो में समान उत्साह होता है। तरह तरह गीत भजन गाए जाते है। इस प्रकार यह वर्ष भर के गम को भुला कर खुशी मनाते है।

सौलह संस्कार

गर्भाधान संस्कार – जिससे हमे योग्य गुणवान और आदर्श सन्तान प्राप्त होती है, शास्त्रो में मनचाही संतान प्राप्त करने के लिए गर्भधारण संस्कार किया जाता है। इसी संस्कार से वंश वृद्धि होती है।

पुंसवन संस्कार – गर्भस्थ शिशु के बौद्धिक और मानसिक विकास के लिए यह संस्कार किया जाता है। पुंसवन संस्कार का लाभ यह है कि इससे स्वस्थ, सुंदर, गुणवान की प्राप्ति हो।

सीमन्तोन्नयन संस्कार – यह संस्कार गर्भ के चौथे, छठवें और आठवें महीने में किया जाता है। इस समय गर्भ में पल रहा बच्चा सीखने के काबिल हो जाता है। इसके लिए मां उसी प्रकार आचार– विचार, रहन सहन और व्यवहार करती है।

जातकर्म संस्कार – बच्चे के जन्म लेते ही इस संस्कार को करने से शिशु के कई दोष दूर होते है। इसके अंतर्गत शिशु को शहद और घी चटाया जाता है। साथ ही वैदिक मंत्रो का उच्चारण किया जाता है। ताकि बच्चा स्वस्थ और दीर्घायु हो।

नामकरण संस्कार – शिशु कि जन्म के बाद 11वें दिन नामकरण संस्कार किया जाता है। ब्राम्हण द्वारा ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बच्चे का नाम तय किया जाता है।

निष्क्रमण संस्कार – निष्क्रमण का अर्थ है, बाहर निकालना। जन्म के चौथे माह मे यह संस्कार किया जाता है। हमारा शरीर

अन्नप्राशन संस्कार – यह संस्कार बच्चे के दांत निकालने के समय अर्थात छह सात महीने की उम्र किया जाता है। इस संस्कार के बाद बच्चे को अन्न खिलाने की शुरूआत हो जाती है।

मुंडन संस्कार – यह संस्कार जब बच्चे की आयु एक वर्ष हो गयी है। तब या तीन वर्ष के या सातवे वर्ष की आयु में बाल उतारे जाते है। जिसे मुंडन संस्कार कहा जाता है। इस संस्कार से बच्चो का सिर मजबूत होता है। तथा बुद्धि तेज होती है। साथ ही शिशु के बालो में चिपके कीटाणु नष्ट हो जाते है। शिशु को स्वास्थ लाभ प्राप्त होता है।

विद्या आरंभ संस्कार – इस संस्कार के माध्यम से शिशु को उचित शिक्षा दी जाती है। शिशु को प्रारंभिक स्तर से परिचित कराया जाता है।

कर्णवेध संस्कार – इस संस्कार में कान छेदे जाते है। इसके दो कारण है, एक आभूषण पहनने के लिए। दूसरा कान छेदने से एक्यूपंक्चर होता है। इससे मस्तिष्क तक जाने वाली नसों में रक्त प्रवाह ठीक होता है। इससे श्रवण शक्ति बढ़ती है और कई रोगों की रोकथाम हो जाती है।

उपनयन या यज्ञोपवित संस्कार – उप यानी पास और नयन यानी ले जाना। गुरू के पास ले जाने का अर्थ है उपनयन संस्कार आज भी यहा परंपरा है। जनेऊ यानि यज्ञोपवित में तीन सूत्र होते है। ये तीन देवता– ब्रम्हा, विष्णु, महेश के प्रतीक हैं। इस संस्कार से शिशु को बल, उर्जा और तेज प्राप्त होता है।

वेदारंभ संस्कार – इसके अंतर्गत वेदों का ज्ञान दिया जाता है।

केशांत संस्कार – केशांत संस्कार का अर्थ है। बालो का अन्त करना उन्हे काटना विद्या प्रारंभ से पूर्व भी केशान्त किया जा सकता है। ऐसी मान्यता है कि गर्भ से बाहर आने के बाद बालक के सिर पर माता पिता के दिये बाल ही रहते है। इन्हें काटने से शुद्धि होती है। शिक्षा प्राप्त करने से पहले कटाई जरूरी है।

समावर्तन संस्कार – इस संस्कार का अर्थ है, फिर से लौटना आश्रम या गुरूकुल से शिक्षा प्राप्ति के बाद व्यक्ति को फिर से संसार में लाने के लिए यह पर संस्कार दिया जाता है। इसका आशय है, ब्रम्हचारी व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से जीवन के संघर्ष के लिए तैयार किया जाना।

विवाह संस्कार – यह धर्म का साधन है, यह संस्कार सबसे महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है, इसके अंतर्गत वर वधु दोनो साथ रहकर धर्म के पालन का संकल्प लेते है। विवाह के

द्वारा सृष्टि के विकास में योगदान दिया जाता है इस संस्कार से व्यक्ति पितृऋण से मुक्त होता है।

अंत्येष्टी संस्कार –

सोलह श्रृंगार

1 बिन्दी	8 नथ	15 बिछूड़ी
2 सिन्दूर	9 कर्णफूल	16 पायल
3 काजल	10 हार	
4 मेंहदी	11 बाजूबंद	
5 गजरा	12 कंगन चूड़ी	
6 शादी का जोड़ा	13 अंगूठी	
7 मांग	14 कमर बंद	

संकलनकर्ता

श्री महेशचन्द्र प्रगट
मोबाइल नम्बर – 6260700965

।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

बजाज गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार

शादी की देवी

गणेश पूजन के दिन

गणेश पूजन से पहले दरवाजो के दोनो साइड दो कवलिया (कवलिया (कौले)) गेरू से पोतते है। अपने उल्टे हाथ के कवलिया (कवलिया (कौले)) पर गणेश जी खडु से और अपने सीधे हाथ के कवलिया (कवलिया (कौले)) पर खडु से बोटे दो अंगुलियो से अपने लगाते है। फिर उसके नीचे की कवलिया (कवलिया (कौले)) खडु से पोतते है।

इस तरह चित्र मे बताया गया है।

चित्र

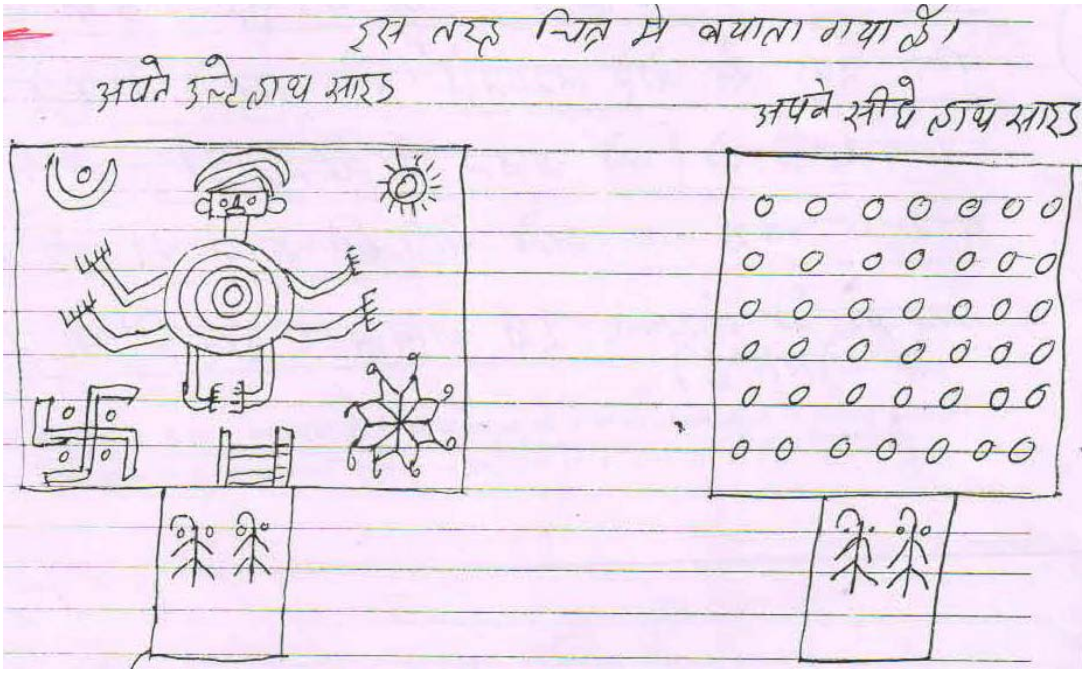

खडू से कवलिया (कौले) पोतने के बाद कंकु से मांडते है। जैसा चित्र में दर्शाया गया है। इसे वर की माँ मांडती है। इस कवलिया (कौले)ी की पूजा जब लग्न की देवी पूजा जाती है, उदो–उदो (3 बार) हो जाता है, थाल 05 बार फिर जाता है। उसके पश्चात दूल्हे की माँ इस कवलिया (कौले) को पूजती है। पूजा की आरती में जल, कंकु, चावल और गुड़

रखते है। पहले पूजा कर लेते है फिर गुड का भोग लगाते है फिर दीपक बताते है। दोनो और की कवलिया (कौले) की पूजा करके दीपक बताते है। अगर मंडप एक दिन पहले होता है और लग्न की देवी दूसरे दिन पूजते है तो इस कवलिया (कौले) की पूजा भी दूसरे दिन ही होती है।

जहॉ देवी बैठाते है, वहॉ गैरू से पोतते है, फिर खडु से बोटे लगाते है और उसमे बीच मे एक चौकोर हिस्से को चावल से पोतते है इस चावल को पानी मे भींज कर उसमे थोडी सी हल्दी की गांठ गीली कर मिक्सर मे पीसकर इस चावल से इस चौकोर हिस्से को पोतते है।

चित्र

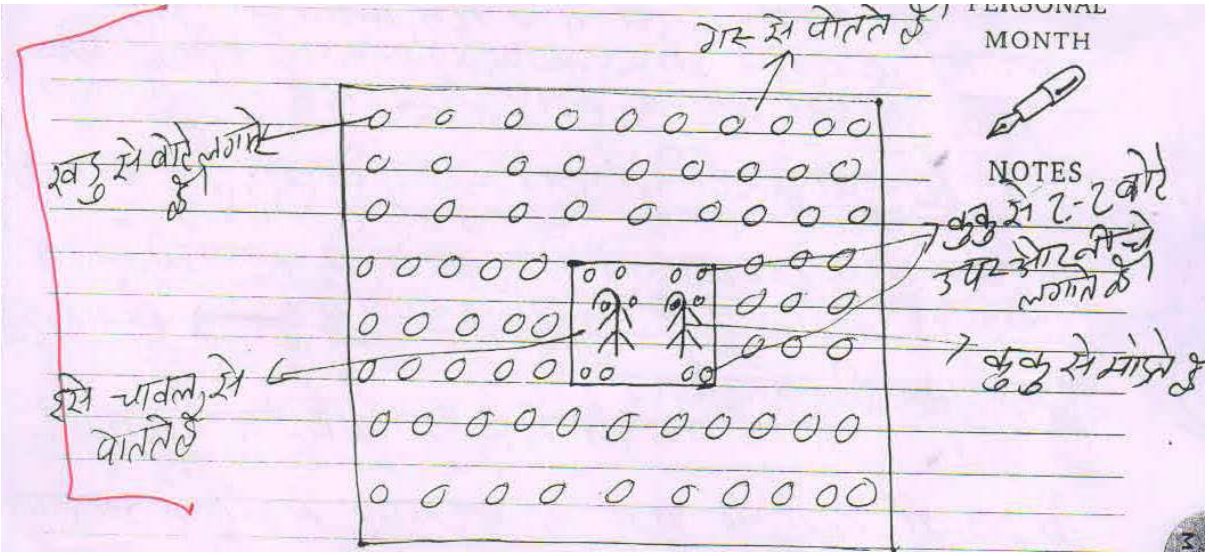

गणेश पूजन

सर्वप्रथम जहा देवी पूजन होता है, वहॉ कवलिया (कौले) गेरू से पोत कर खडु से बाटे लगाते है और बीच का चौकोर भाग चावल से पोतते है। इस चौकोर भाग पर मंडप की आखामाया भरने के बाद कंकु से माताजी बनाते है। इस तरह

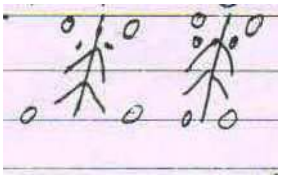

(यह माताजी वर के पिताजी बनाते है।)

यह माताजी लग्न वाले दिन बनाते है अगर मंडप पहले दिन और लग्न दूसरे दिन के है तो यह चौकोर खाना मंडप वाले दिन खाली रहता है। स्पा हल्दी के पूजा करने के बाद आखामाय भरने के बाद यह चौकोर खाने मे माताजी लग्न की देवी पूजने वाले दिन बनाते है, अगर दूसरे दिन लग्न है तो दूसरे दिन यह माताजी बनायेगे।

अगर एक ही दिन का सारा कार्यक्रम है, तो स्पा, हल्दी की पूजा के पश्चात मंडप की आखामाय भरेंगें फिर उसके पश्चात, यह माताजी बनायेगे। फिर लग्न की देवी पूजेगे, (यह चौकोर सफेद भाग पर माताजी वर के पिता बनाते है। और वर की माताजी बाहर की कवलिया (कौले) बनाती है।) अगर एक दिन पहले मंडप हो रहा हो। और दूसरे दिन लग्न हो तो मंडप की आखामाय मंडप वाले दिन सब परिवार जन भर देते है, और थोडी सी

खिचडी बचा लेते है जिसे दूल्हा या दूल्हन और उनके माता – पिता दूसरे दिन लग्न की देवी पूजन के पूर्व भरते है।

यह भरने के बाद जो चौकोर खाना चावल से पोता हुआ है उसमें माता जी बनाते है और इससे उपर माता का पद चिपकाते है।

अब 2015 में (सृष्टी की शादी में) ऐसा चालू कर दिया है कि अगर एक दिन पहले मंडप करते है तो पूरी खिचडी एक दिन पहले ही भर देते है। लग्न वाले दिन के लिये खिचडी नही बचाई ।

खिचडी भरने के पश्चात दूसरे दिन तक वह खिचड़ी ऐसी ही रखी रहती है। बस भगवान को उठाकर अलग तखाने मे नहलाकर फिर से वही बैठा देते है, और खिचडी वैसी ही रखी रहती है। (दूसरे दिन तक) अब लग्न की देवी पूजते है।

रूपा हल्दी के दिन

अब पूजा के स्थान पर पहले कंकु से डबल साती मांडते है। उस पर पटिया रख कर उसमे गणेश जी बैठाते है। (रूपा हल्दी की एक आरती तैयार करते है उसमे कंकु, चावल,जल और नेवैद्य का गुड रखते है)

रूपा हल्दी से गणेश जी की पूजा करते है।

अब मंडप की देवी पूजते समय से गणेशजी के साथ में वही पाटे पर ठाकुर जी रखते है, पहले गणेश जी की पूजा कर ली फिर रूपा का जो भोजन बनाया वह वहॉ भोग लगाते है फिर हल्दी का जो भोजन तैयार करते है उसका भोजन का भोग लगाते है। रूपा हल्दी में माताजी के सामने मसूर का कपडा और तगली भी रखते है। बाहर (दरवाजे के बाहर कवलिया (कौले) पर) जो गणेश जी बनाये है उनकी भी पूजा करते है। रूपा के 02 नारियल चढाते है और उवारते है और हल्दी के 04 नारियल चढाते है और उवारते है रूपा और हल्दी दोनो के भोजन 02 लेडिस अलग–अलग बनाती है। रूपा मे भी चावल और पूरी बनती है। इसकी पूजा करने के पश्चात् पूरी चावल का भोग लगाते है। फिर हल्दी का भोजन उसमे भी पूरी और चावल बनाते है। इसका भी भोग लगाते है। रूपा हल्दी के नारियल भी 02 लेडिस अलग अलग उवारती है। हल्दी का नारियल वर की माँ उवारती है। और रूपा का नारियल परिवार की ही कोई लेडिज उवारती है। रूपा के जो दो नारियल चढते है उसमें से एक नारियल उठाकर कमरे में रख देते है। और हल्दी के जो चार नारियल चढते है उसमें से भी एक नारियल उठाकर कमरे में रख देते है। इन दोनो नारियल को देवी उठती है उस दिन देवी उठाने के बाद फोडते है बचे नारियल या तो उसी दिन भी फोडकर सबको प्रसाद बांट सकते है।जो नारियल उवारते है उसे उसी वक्त फोड कर दुल्हे के चारो ओर चार चिटक फेंक देते है फिर सबको प्रसाद बांट देते है।नारियल उवारते समय पेट से (क्लाक वाइस) लेकर सीर से होता हुआ, पेट पर वापस ला कर छोड़ते है। (एक बार)

मंडप के दिन की देवी पूजा

कंकु से डबल सातिया बनाते है, उस पर पटिया रखते है। पटिये पर तरवाना भी रख सकते है या तो तरवाने मे भगवान रख सकते है या तो पटिये मे भी भगवान रख सकते है। पटिये पर भगवान गणेश जी और ठाकुर जी रखते है। उसके पीछे लाल रंग का

ब्लाउस पीस तिकोना घडी करके रखते है। पीस को दीवार से सटाकर पटिये पर रखकर भगवान उसके आगे रखते है। (मतलब भगवान के पीछे ब्लाउस पीस को तिकोना घडी करके रखते है) फिर पीस के सामने सोजन की लकडी रखते है।मंडप की देवी के दिन गणेश जी की और ठाकुर जी की पूजा करते है।

पस से खिचडी से आखामाय भरते है। (इस खिचडी में मुंग की दाल, चावल, 32 सिक्के और 32 सुपारी रखते है) मुंग की दाल की खिचड़ी पस से (05 बार) भरकर गणेश जी ठाकुर जी के सामने चढ़ाते है।

अब आखामाय भरने के बाद मंडपाछादन से पूर्व मंडप का पोछा (मामी से) लगवा कर उसमें कंडे की अग्नी पर घी, गुड़ और गुगल की धूप छोड़ते है। गूगल की धूप छोडने के बाद दुल्हे के पिताजी मानक खंभ ले जाकर मंडप में रखते है। मानक खंभ में हल्दी से भीगी पीली चिंदी में पैसा सुपारी और पीले चावल बांधकर रखते है। मानक खंभ को भी हल्दी से पोतते है। मंडप लीपने के पश्चात चौक मांडकर पाटा बिछाकर उस पर दूल्हे को बैठाते है। एक बहन दूल्हे के सिर पर हाथ रखकर वही मंडप में ही खड़ी रहती है। अब रूखडी न्यूतते है। मंडप की आखामाय भरने के बाद रूखडी न्यूतते में अगर मंडप एक दिन पहले हो गया हो और लग्न दूसरे दिन के हो तो दूसरे दिन नही रूखडी न्यूतते है। मंडप में दूल्हे को तेल भी रूखडी न्यूतते के बाद लगाते है। उसके बाद लग्न की देवी पूजते है।

(लग्न की देवी की रसोई सुबह बनाकर ढ़ाक कर रख देते है।)

लग्न की देवी पूजने की थाली अलग तैयार होती है। उसमें भी जल, कंकु और चावल रखकर आरती तैयार करते है। रूखडी न्यूतते के पश्चात दूल्हे को तेल चढ़ाकर बहने हल्दी लगाकर नहलाती है। फिर इसे मामा ज्योत उठाकर लग्न की देवी पूजने के लिए कोई भी दामाद ले जाते है। दुल्हा लग्न की देवी की जगह तक आंख मिचकर चलकर जाता है। फिर देवी की थाल के दीपक पहले आँख खोलकर देखता है, फिर साईड में बैठे माता–पिता को देखता है। फिर देवी की पूजा करता है।सर्वप्रथम दूल्हा देवी पूजता है, फिर उसके माता–पिता पूजा करते है फिर उसके पश्चात् सभी परिवार देवी पूजा करते है। अब दूल्हे को तेल लगाकर हल्दी (निमित मात्र) लगाकर केवल चार करवे जो मंडप में रखे रहते है बस उनका ही पानी दुल्हे पर डाल देते है बस। उसके पश्चात् दुल्हा इसी तरह मामा ज्योत ओढ़ कर आँखे बंद कर देवी के दर्शन हेतु चला जाता है। फिर देवी पूजा के पश्चात् नहा लेता है। दूल्हे के ऊपर से नारियल हल्दी लगाते समय सिर्फ एक बार शुरू दिन (पहली हल्दी पर) ही उवारती है (उसकी माताजी) दूसरी हल्दी में नारियल नहीं उवारते है।

लग्न की देवी पूजा

देवी के सामने करवे की लाइन (चार–चार करवे की तीन लाइन अपने सीधे हाथ की तरफ उन तीनो लाइनों पर दीपक रखते है।)उसमें से जो बीच का दीपक रहता है उसे जब लग्न लगते है तब जलाते है लग्न लगने से बहु के अपने घर देवी माता के दर्शन करने आने तक वह दीपक जलता रहता है। और आगे पीछे की करवे की लाइन रखा दीपक देवी पूजते समय ही जलाते है। इसी तरह अपने उल्टे हाथ की तरफ 4–4 करवे की दो लाइन रखते है। इन दोनो लाइनो पर भी 1–1 दीपक रखते है। जो माता पूजते समय ही जलाते है। इस तरह माता पूजन के समय चार दीपक जलाते हैं। बीच का दीपक नही

जलाते है। इसमें घी और बत्ती रख देते है लेकिन जलाते (लग्न लगने के समय) ही है। लग्न लगने के समय से बहू के घर आने तक यह दीपक जलता रहता है। इस तरह माता पूजन के समय चार दीपक जलाते है बीच का दीपक नही जलाते है।जो एक छोटी मटकी रहती है उसे चावल से भरकर माता के सामने रखते है।सामने जहॉ गैरू से कवलिया (कौले) पोता गया है उसमे बीच मे चौकोर भाग चावल से पोत कर (उस चावल में थोडी सी हल्दी की गांठ भी डालते है।) देवी के दो पुतले बनाते है। उनके ऊपर नीचे दो अंगुलियों से कंकु के दो बोटे लगाते है।

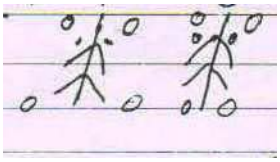

अब इनके ऊपर माता का पद लगाते है माता के पद को टेप से चिपका देते है।

लग्न की देवी पूजा

लग्न की देवी पूजा की थाली अलग तैयार करते हैं। उसमें कंकु, चावल और जल रखते है। पहले गणेश जी ठाकुर जी की पूजा करते है फिर सामने की माताजी की पूजा करते है। फिर जो थाल तैयार है उस पर पानी (3 बार) फेरते है। सब परिवार जब देवी की पूजा कर लें। उसके बाद थाल घुमाते है थाल 05 बार या 03 बार घुमाते है। उदो – उदो तीन बार करते है। उसके बाद वर की माँ कवलिया (कौले) की पूजा करती है। (आरती में कंकु, चावल, जल, दीपक और गुड का भोग रखते है।)पूजा करने के बाद दीपक बताने के बाद गुड का भोग लगाते है। दोनो कवलिया (कौले) की इसी तरह पूजा करते है। (वर की माँ पूजा करती है।)

लग्न की देवी उठाते है उस दिन

देवी माता के स्थान को साफ कर कपडे से साफ करते है फिर कपड़े से पोछा लगाते है। गणपति जी, ठाकुर जी को नहला कर पाटे पर या तरवाने पर बिठा देते है उन्हे कंकुं चावल चढ़ाते है। पहले चावल और दही की राबडी बनाते है। थोडा सा चावल एक कटोरी में बफा लेते है उसमे दही डालकर नमक और जीरा भी डालते है। इस तरह एक कटोरी राबडी बनाकर पहले राबडी का भोग लगाते है। (माताजी को) अब जो सामने माताजी का पद है, उसका एक कोना मोडकर टेप से कोना चिपका देते है। माता का पद तिकोना कर कोना टेप से चिपका देते है। पहले से देवी की रोटी बनाकर रखते है। (10 लडडु, 10 पुरी, 10 दीपक, या इससे भी अधिक बना सकते हैं। 10 रोटी के जुडे मतलब 20 रोटी बनाते है।

अष्टमी – नवमी की देवी

चैत्र की देवी

चैत्र की देवी में अष्टमी के दिन मांडे तुअर, गुड का पानी, अदरक की चटनी और जीरे का नमक, बल्लर की सब्जी और चावल बनाते है। बल्लर की सब्जी में भटा काटकर डालते है। बल्लर की सब्जी और तुअर में बगार (कडछी में घी गरम करके उसमे जीरा तडतडा कर लगाते है। ओर नमक डालते है बस) मतलब बल्लर की सब्जी और तुअर को इसी

तरह बनाते है। (पहले चुरा लेते है फिर इसमे घी में जीरे का तड़का लगा कर डाल देते है बस)

नेवैद्य मे चार 4 जुड़े मांडे के (मतलब 08 मांडे बगैर किनोर टूटी फूटी) तुअर, गुड़ का पानी, चावल, बल्लर की सब्जी, अदरक की चटनी, जीरे का नमक रखते है। एक बडी कासे की थाली में यह सब रखते है। और एक छोटी कासे की थाली में घी और गुड रखते है।

चैत्र की देवी बड़ी होती है इसलिये नई बहु का बोटना इसी देवी में होता है। और बच्चो का बोटना भी इसी देवी में होता है।

अगर बहु डिलिवरी वाली हो तो उसे $1^{½}$ माह हो जाने के पश्चात् बोटना होगा। और बच्चे का जलवाय, सुतकाला अगर 15 दिन में पूजा जाता है तो बच्चे का बोटना 20 दिन में ही हो सकता है।

चैत्र की देवी में अगर बोटना हो तो

अगर बहु का बोटना हो तो बहु के हाथो नारियल चढ़ाते है।

अगर बच्चे का बोटना हो तो

बच्चे के पहनने के चांदी के चार कड़े बनाते है। (दौ पैर के और दौ हाथ के, दो कडे) तांबे के बनाते है। जिसे पैरो में पहनाते है। एक गले मे पहनाने की चाँदी की तागली बनाते है। दो चाँदी की अंगुठी बनाते है जिसे बच्चे की अंगुली में पहनाते है। इसके अलावा एक चाँदी की छोटी तागली बनाते है जो बच्चे के हाथो माताजी को चढ़ाते है।

जब बच्चे का बोटना होता है। तो बच्चे के हाथों एक नारियल और चाँदी की एक तागली माताजी को चढ़ाते है।

अपने घर बच्चे का बोटना होने के पश्चात् ही बच्चे को तिलक लगा सकते है। और कोई रकम भी बच्चे के बोटना होने के पश्चात ही बच्चे को पहनाते है।

एक कांसे की थाली में 04 जुडे मांडे के चावल, तुवर, अदरक की चटनी, बल्लर की सब्जी, जीरे का नमक, गुड का पानी यह सब एक थाली में परोसते है। यह बोटने की थाली होती है। एक थाली कांसे की और परोसते है जिसमें यही सब सामान चावल 04 जुडे मांडे के बल्लर की सब्जी, गुड का पानी, अदरक की चटनी, जीरे का नमक, यही सब परोसते है। इस तरह जब बच्चे का बोटना होता है। तब दो कांसे की थालियों में भोजन परोस कर नेवैद्य बतातें है।

अगर एक से अधिक बच्चो का बोटना होता है तब भी थालिया तो दो ही परोसी जायेगी और नारियल और तागली प्रत्येक बच्चे की अलग– अलग चढ़ाई जायेगी।

जिस देवी में बोटना नही होता है तब एक बड़ी कांसे की थाली में यही भोजन परोसा जाता है। और दूसरी एक छोटी कांसे की थाली में घी और गुड का नेवैद्य लगाते है।

नवमी के दिन

चैत्र की देवी में नवमी के दिन कुछ नहीं बनाते है। भगवान को सिर्फ घी और गुड़ का नेवैद्य बताते है। अष्टमी के दिन पूजा के लिये खड़ी हल्दी कूट कर रखते है। कंकु और चावल को धोकर भीगो देते है।

क्वार की देवी

अष्टमी के दिन – क्वार की देवी में अष्टमी के दिन मांडे, खड़े मुंग, अदरक की चटनी, जीरे का नमक और चावल बनाते है। नेवैद्य में बडी कांसे की थाली में 04 जूडें (मतलब 08 मांडे) मुंग, चावल, अदरक की चटनी, जीरे का नमक रखते है।

अष्टमी के दिन एक मिट्टी का दीपक तेल का आले मे और एक तांबे का दीपक चौका माताजी के पास रखते है। माताजी के पाटे के नीचे आंवला साती बनाते है। (कंकु से)

चित्र –– आंवला साती

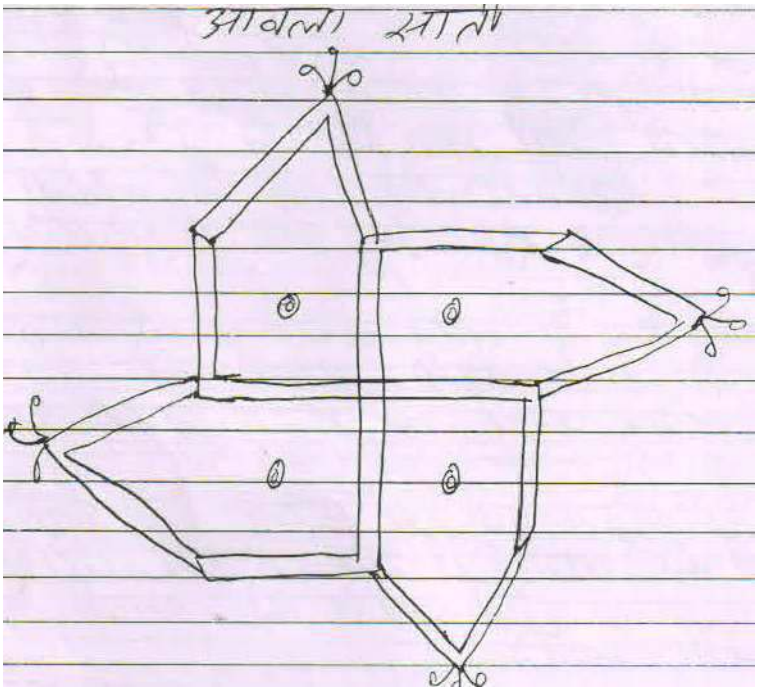

क्वार की देवी – नवमी के दिन

हाथ के आटे के फीके पूए, गुड की खीर, चावल और कदरी की सब्जी बनाते है। कदरी की सब्जी में करेला डालते है, अदरक की चटनी।

नवमी के दिन नेवैद्य में 04 जूडे फीके पूऐ, (मतलब 08 पूऐ दो– दो जुडे जोडकर) चावल, गुड की खीर, और कदरी की सब्जी रखते है। (बच्चो के गले की जेल दुसरे दिन मतलब दसमी के दिन या पूनम के दिन करते है। बारस के दिन जेल नही बनाते है, क्योंकि बारस के दिन श्राद्ध आता है।)

बच्चो की जेल बनाना

सलकनपुर वाली माताजी की फोटो की पूजा कंकु, चावल से कर देते है। सामने कलश की पूजा करते है। एक सूखा नारियल माताजी को चढ़ाते है। गुगल की धूप छोड़ते है। इस गुगल की धूप पर अपने जितनी जेल बनाते है। उन्हे लपेट कर उस धूप पर माताजी

का नाम लेकर घुमा लेते है। जेल में सात गठान माताजी की और एक गठान भैरू बाबा के बनाते है। माताजी का नाम लेते हुए सात गठान बनाते है। फिर एक गठान में भैरू बाबा का नाम लेकर वह आठवी गठान बनाते हैं। इस तरह जेल में आठ गठान बनाते है।

बाल तन :–

अस्पताल में राई के दाने व चाकू (छोटा) ले जाना व बालतन को जब पलंग पर लाये तब राई के दाने पलंग पर डालना व तकिये के नीचे चाकू रखना फिर 10 रू. माताजी के नाम का रखना व नाडे में 7 गठान बांधकर बिजासन माताजी का नाम लेकर बच्चे को अस्पताल में ही बांधना। इसके पश्चात् जच्चा जितनी नहावन नहाती है। उतनी बार इसी तरह 8 गठान बांधकर सात माताजी के नाम की और एक भैरू बाबा के नाम की लेकर हर नहावन के बाद बच्चे को नई जेल बताकर पहनाते है।

नहावन :– 1. सुतकाला पूजन के दिन (नला खिरे उस दिन)

2. 15 दिन वाली

3. पौने माह की

4. 1¼ माह की

5. 1½ माह की

काडा :– लेडी पीपल, वायवडिंग, पीपल मोर

जच्चा :– अजवाइन, गुड, हल्दी, इनको उबाल कर काडा बनाना।

1. छानकर उसमें घी डालकर सुबह खाली पेट गरम गरम ही जच्चा को तीन दिन तक देना।
2. तीन माजूफल को बारीक पीसकर तीन पुडिया बनाकर काडे के बाद, खाली पेट दूध के साथ फाकना। पहले काडा पी लिया फिर माजूफल फाक लिया फिर दूध पी लिया।

डिलिवरी वाली बहु के कार्य

पांची व छठी की पूजा

जब बच्चा पांच दिन का होता है, उस दिन (रात में) पांची की पूजा करते है।

पूजन के लिऐ आरती में एक कोरा ताव, एक मिट्टी का तेल का दीपक कंकु, चावल, एक पेन जिसे ताव के ऊपर रखते है। गुड़, अजवाइन, खारिक।

अब जच्चा बच्चे को गोदी मे लेकर खटिया के पास नीचे बैठती है। अपन आरती उसके सामने रखकर पांची पुजाते है।

ताव के ऊपर कंकु, चावल, अजवाइन, गुड चढ़ाती है। तेल का दीपक जलाते है, उसे बच्चे ने नही देखना चाहिए।

पुजन के पश्चात् जच्चा थोडी सी अजवाइन और गुड खाती है।

जो तेल का दीपक जलाते है। उस पर कटोरी मे थोडा सा कोरा काजल पाडते है, और फिर बच्चे को लगाते है। जच्चा को भी काजल लगाते है पाँचवी के दिन से खाना (पाँच चीजे देना) दिन शुरू करते है।

डिलिवरी वाली बहु की नहावन

1. नला खिरे उस दिन नहावन नहलाते है।

2. 15 दिन वाली

3. पौने माह की

4. 1¼ माह की

5. 1½ माह की

छठी पूजन

जब बच्चा छः दिन का हो जाता है। तब छठी की पूजा की जाती है। इसमे भी थाली में कंकु, चावल, मिट्टी का तेल का दीपक, कोरा ताव, पेन, अजवाइन, गुड, खारीक रखते है। यह आरती की थाली दुसरी तैयार करते है। पांची की थाली सुबह खमा देते है। फिर छठी के दिन दुसरी थाली तैयार करते है।

इस दिन भी रात को करीब 9 बजे के करीब जच्चा बच्चे को गोदी में लेकर छठी पूजा करती है।

ताव कि ऊपर कंकु, चावल, अजवाइन, गुड, पूजा में पानी में रखते है। पानी के दो छीठे पहले ताव पर देते है। फिर कंकु, चावल, अजवाइन, गुड, चढ़ाते है। फिर मिट्टी के दीपक पर कटोरी रख कर कोरा काजल पाडते है। आरती की थाली को खटिया के नीचे रख देते है। जलते दीपक को बच्चे को नही देखना चाहिऐ।

सूतकाला पूजन (2016 में)

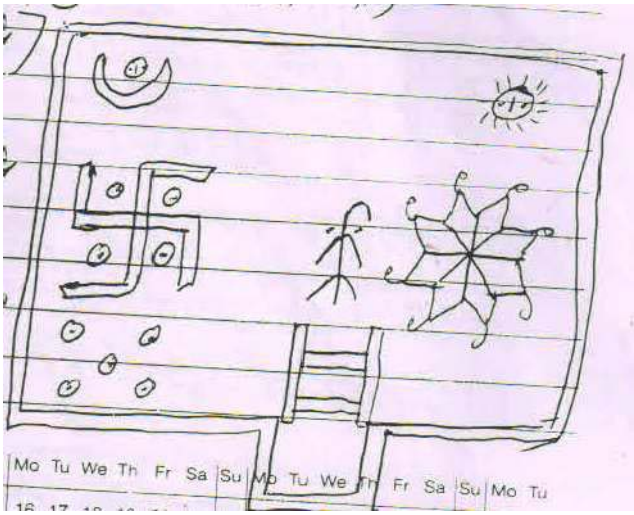

इसे बाथरूम में बनाना कंकु से सुबह ही पूजन नहाने के बाद। जहां नहाना वही बताना सुखा नारियल व धेला सुपारी चढ़ाना व पाँच हाथे मोरी में हल्दी से लगाना, एक ही तरफ (जच्चा से ही लगवा सकते है)

सुखा नारियल चढ़ाना व फोडना चिटक चढ़ाना। 1 थाली में 18 चानकी रखकर उस पर दाल, चावल कवलिया (कौले)–कवलिया (कौले) रखकर पूजा करना। थाली में कुंकु, चावल, हल्दी रखना व पूजा करना थाली में थेला सुपारी रखना व नारियल चढ़ाकर फोडना व चिटक चबाना वही थाली रखकर चानकी की पूजा करना व दूसरे दिन गाय को देना।

सुतकाला पूजन

(सुतकाला पूजन के दुसरे दिन बहु नहाती नही है)

पूजा में आरती में कुंकु, चावल, गुड़, हल्दी की गाठ, तेल का मिट्टी का दीपक, पैसे और नारियल रखते है।

(18 चानकी आटे की (लडका हो तो) अगर लडकी हो तो 14 चानकी आटे की)

तवे पर सेक कर चानकी सुबह ही बना लेते है। और उस पर कवलिया (कौले)–कवलिया (कौले) दाल और चावल रखते है।सुतकाला पूजन के दिन जच्चा सुबह खाना नही खाती है। शाम को उसे हलवा और पुरी बनाकर खिलाते है।(पुरी में नमक और अजवाइन डालकर घी में तलकर बनाते है।जच्चा के पैरो लाल रंग लगाते है। पूजन हल्दी से मांडते है। नीचे फर्श पर बाथरूम में सुतकाला पूजन हल्दी से मांडते है। और सामने दीवार पर ननंद हल्दी से हाथे लगाती है। (अगर बेटा हो तो 7 और बेटी हो तो 5 हाथे लगाती है।

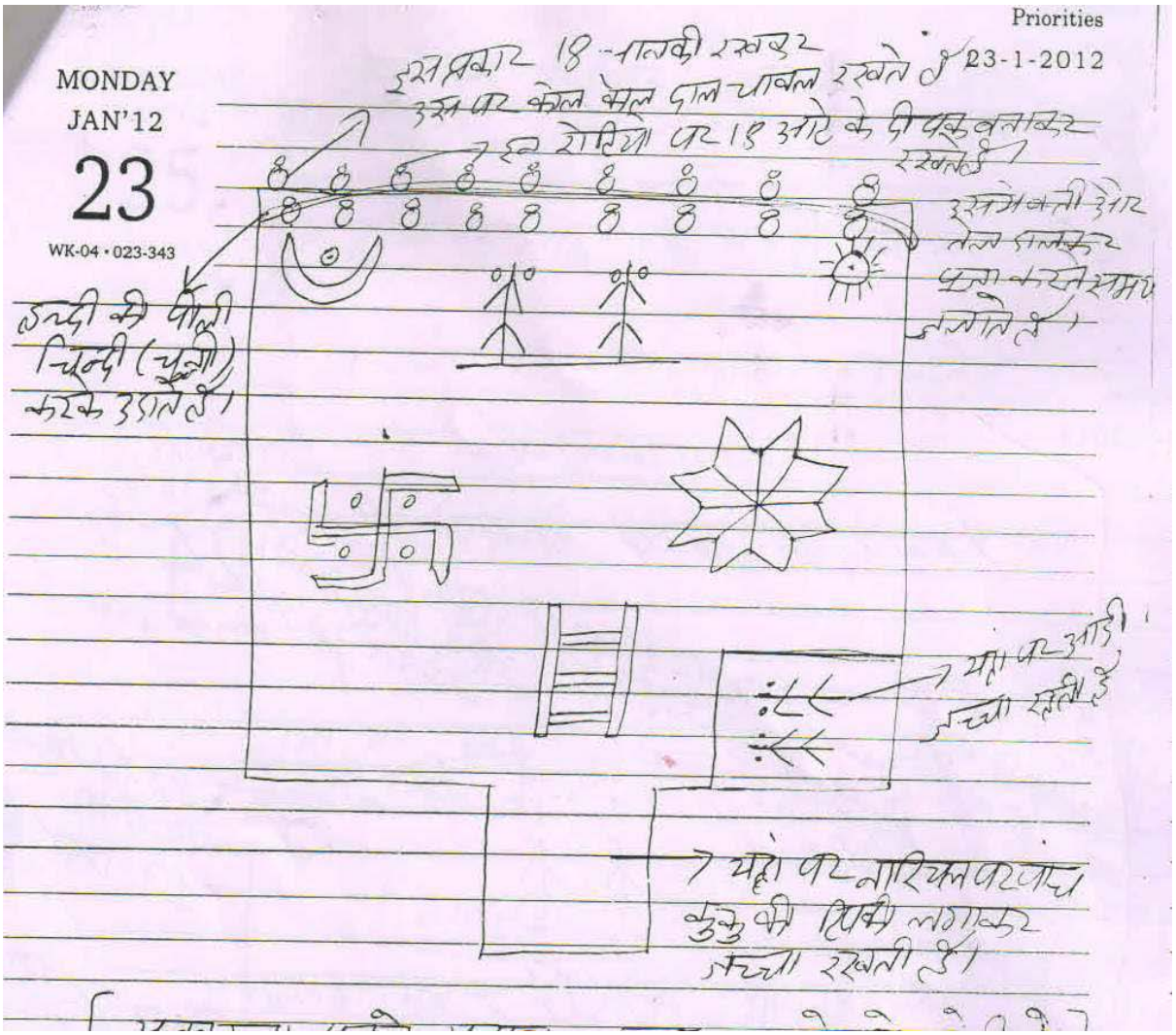

सुतकाला पुजते समय जच्चा बच्चे को गोदी में लेकर बैठती है।

सुतकाला पूजन :– इसे बाथरूम में बनाना कुंकु से, सुबह ही पूजन नहाने के बाद जहां नहलाना वही बनाना। सूखा नारियल व धेला सुपारी चढ़ाना व पाँच हाथे मोरी में हल्दी से लगाना एक ही तरफ।

जलवाय पूजन :– जलवाय पूजन हल्दी से मांडते है।

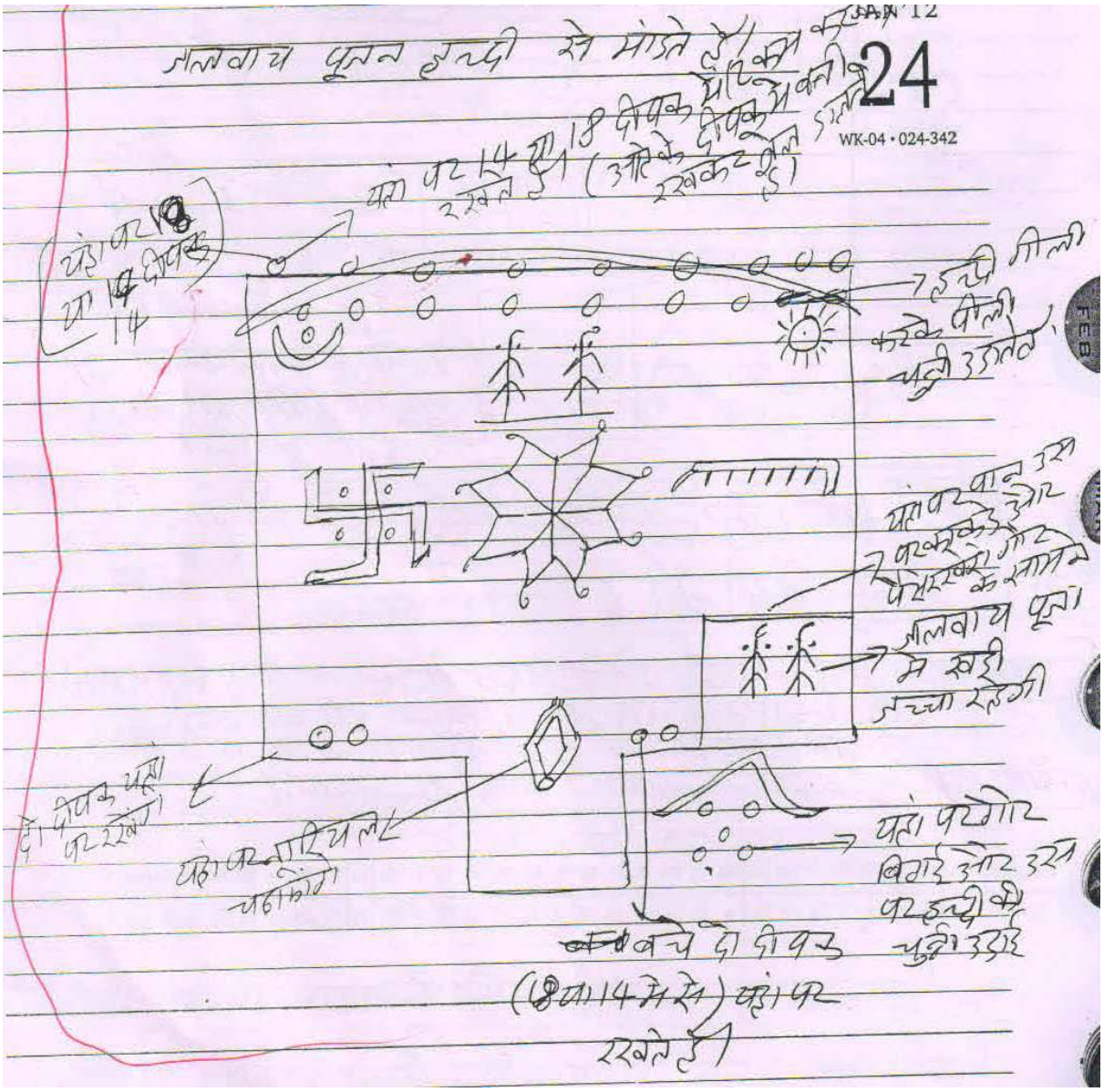

जिस दिन या (वार) बच्चे का जन्म होता है। उस दिन जलवाय नही पूजते है। और जिस दिन बच्चे का जन्म होता है। उस दिन 3 माह तक बच्चे को नहलाते भी नही है। जच्चा की 5 नाहवन नहलाते है। 10 दिन नला खिरे तब, 1 माह की, पौने माह की, 1¼ माह की, फिर 1½ माह की। जलवाय और सुतकाला एक ही दिन भी पूजा जा सकता है। सुबह पहले सुतकाला पूजा लो फिर शाम को जलवाय पूजन कर लो।

जलवाय पूजा :–

जलवाय पूजन के दिन जलवाय पूजन से पूर्व सुबह गक्खी जिमाते है। और उसे साडी करते है।

जलवाय पूजन के दिन पूजा सामग्री :– आरती दूध की, 2 सुपारी, हल्दी, कुंकु, चावल, गुड, कच्चा दूध, जल, पान, काकडे, पैसे, नारियल, 2 खारीक, (जो पूजा के पहले फोडते है। पाँच कंकड (गौर बनाने के लिए) दो पीली चिंदी (अगर सफेद हो तो उसे गीली हल्दी से पीली कर लेते है।) मिट्टी का दीपक तेल का, एक कटोरी में हल्दी लेंगे।

एक दुसरी थाली में आटे के 18 दीपक (अगर बेटा हो तो 18 दीपक और अगर बेटी हो तो 14 दीपक) बनाते है। दीपक में तेल और बत्ती रखकर तैयार रखते है। इन्हे जलवाय मांडने के बाद उस पर जमाते है। और पूजन करते वक्त जलाते है। जच्चा जलवाय पूजने के पहले बच्चे को लेकर डेल के अंदर खडेगी और डेल के बाहर ननंद खडेगी और डेल पर खारिक फोडेगी और जच्चा के चारो और (आगे, पीछे, दायें, बायें) चार टुकडे करके फेकेंगी फिर जच्चा गोदी के बच्चे को किसी और को देकर जलवाय पूजेगी।

(मतलब जलवाय पूजन के समय बच्चा जच्चा की गोदी में नही बैठेगा।)

इस कार्य से पूर्व जच्चा घर के कोरे कपडे पहनेगी।

जलवाय के दिन दोनो पति पत्नी को चौक मांडकर वाले पर बिठा कर घर के कपडे करेंगे क्यो कि घर की कोरी साडी पहनकर बहू जलवाय पूजती है।

ननंद जलवाय मांडती है। (जलवाय हल्दी से मांडते है।) उस पर दीपक जमाकर जलाती है। अब जच्चा पूजा करती है। जच्चा जलवाय पूजन में बच्चे को गोदी में नही लेकर बैठती है। (जब सुतकाला पूजते है तब जच्चा बच्चे को गोदी में बैठती है।) जलवाय पूजन से पूर्व जच्चा बच्चे को गोदी में लेकर पति के साथ पाटे पर बैठेगी उसे ननंद घर के कोरे कपडे करेगी। फिर उस घर की कोरी साडी से जच्चा जलवाय पूजेगी।

जलवाय पूजन :– जलवाय पूजने के पूर्व जच्चा घर की कोरी साडी पहनेगी, फिर बच्चे को लेकर डेल के अंदर और ननंद डेल के बाहर खडेगी खडे होकर खारिक फोडेगी। फिर बच्चे को किसी और को देकर जलवाय पूजेगी। बच्चे को कोई भी लेकर खटिया पर बैठेगी।

पूजा :– दीये लगाने की शुरूआत जच्चा करेगी फिर कोई भी लगावे सब दीये लग जाये तब पहले सब पर पानी के छीटे देना फिर दूध लगाना फिर कुंकु, चावल, चढाना सब पर खली काकडा चढ़ाना शक्कर का नैवेध रखना फिर गोर की पूजा करना। पानी, कुंकु, हल्दी, चावल चढाएगी, जहां जलवाय मांडते है। उस पर सूखा नारियल (उस पर कुंकु की पाँच टिपकी लगाकर चढाऐगी)

फिर जहां गौर बैठी है, उसके सामने पान उस पर काकडे और पैसे रखकर (चढाएगी) फिर गौर के सामने धरती पर दूध चढाएगी फिर उस दूध को धरती से अंगुली से सात बार उगकर जुबान पर चाटेगी। फिर पान का थोडा सा टुकडा लेकर चबाएगी। नारियल फोड कर चार चिटक चारो और डालना।

जलवाय पूजने के बाद जच्चा बच्चे के फालके का चोमल बनाकर उस पर पानी के दो लोटे भरकर रखेगी, (सिर पर रखेगी) और डेल के बाहर खडेगी और ननंद डेल के अंदर खडेगी पानी के एक दुसरे लोटे को लेकर सात बार उस पर (जच्चा पर से) दोनो साइड उतारते हुए और हर बार भरा कि रिता पूछते जायेगी। हर बार जच्चा जवाब देगी भरा। यह पांच बार बोलना। फिर सुपडे का खाल भरना गेहुँ का सात बार भरना व जच्चा हाथ से थोडे से गेहूँ सुपडे मे सात बार डाले।

उसके बाद जच्चा डेल के अंदर आकर दोनो दीवार के दोनो कवली पर 7–7 हल्दी के हाथे लगायेगी (लडके की माँ 7 और लडकी की माँ 5) हाथे नीचे से ऊपर की और लगाती है। दोनो कंवले पर हाथे लगाकर कुंकु के टिपके लगा देगी। इसके बाद ननंद जच्चा की गेहुँ से खोल भरेगी (सात बार) उसके बाद ननंद दोने कवले पर एक पर (आंवला साती) और दुसरे पर काचरा का फूल मांडती है (हल्दी से) जलवाय या सुतकाला पूजन के दुसरे दिन जच्चा नहाती नही है।

जलवाय पूजन के दुसरे दिन बहु को हाथे लगाते है और खाना खाने भेजते है। एक कटोरी में हल्दी घोलकर, थोडा सा कुंकु कागज में लेकर और सुपडे में गेहु लेकर दरवाजे के बाहर बहु को लेजाकर पहले सास बहु की गेहूँ से खोल भर देगी फिर खोल को कमर में खोसकर बहु दीवार के दोनो कोने पर हल्दी से 7 या 5 हाथे लगायेगी फिर उसमें कुंकु की टिपकी लगा देगी उसके बाद बहु घर के अंदर नही आती है और यही हल्दी की कटोरी लेकर जहां खाना खाने जाती है (मायके में) वहां दोनो दीवार पर पहले हाथे लगायेगी फिर घर के अंदर प्रवेश करेगी। जलवाय पुजन के पश्चात् दोनो कवले पर जच्चा हाथे लगाती है। यदि लडकी हो तो सीधा हाथ तरफ सात हाथे और उल्टे हाथ तरफ पाँच हाथे और लडका हो तो सीधे हाथ तरफ नौ और उल्टे हाथ तरफ सात हाथे लगाना।

जच्चा जितनी बार नहावन नहाये उतनी बार ऑठ गठान लगाकर माताजी का नाम (सलकनपुर वाली माता के जय) लेकर जेल बनाना। नहा कर उठे कि बच्चे को जेल बांधना। दरवाजे के दोनो साइड की दीवाल पर अंदर की साइड दीवाल पर

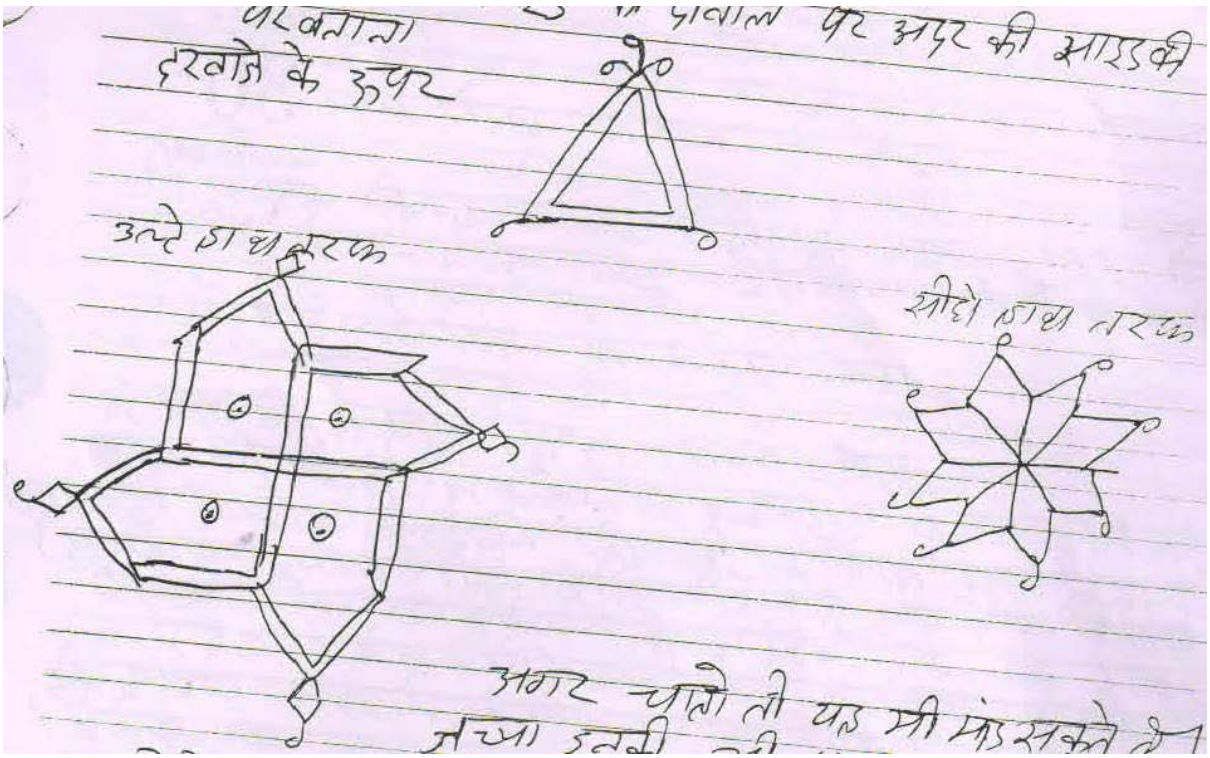

अगर चाहो तो यह भी मांड सकते है। जच्चा इनकी भी पूजा करती है फिर दोनो कंवलो पर हल्दी के हाथे लगाती है।

जमाल में तीन जगह पर (बाबा की दर्गा, दुकान की दर्गा, और घर पर) केडे के उपर लोभान छोडते है।

जमाल पूजन

लडके के जमाल तीसरे साल उतरते है। जमाल के दिन उतरने से पूर्व पीर बाबा की दर्गा पर पूजा करने जाते है।

जमाल पूजन की सामग्री :– चंदन, पानी, कुंकु, चावल, अबीर, गुलाल, हल्दी, गुलाब का फूल, फूल माला प्रसाद के लिए सवा पाव रेवडी या चिरोंजी दाने (1¼ पाव), दक्षिणा, 1 दीपक में घी और बत्ती (मिट्टी का दीपक) अन्तर का रूई का फाया। गलेब या सफेद कपडा (पीर बाबा की दर्गा के लिऐ सफेद कपडा सवा दो मीटर का गलेब) लोमान दीपक में रखकर छोडते है। दक्षिणा के साथ सुपारी भी रखते है। बाबा की दर्गा पर एक नारियल खेलता छोडते है। उस पर दक्षिणा (11रू) रखते है। और एक नारियल फोडते है। यह फूटा नारियल और रेवडी का प्रसाद घर लाते है।

दुकान की दर्गा पर फूल माला अन्तर का फाया, गुलाब जल, गुलाब का फूल, एक हरा कपडा ¼ मीटर (पाव मीटर) दर्गा पर चढ़ाते है। (एक नारियल खेलता नारियल दुकान की दर्गा पर छोडते है।) दो नारियल ले जाते है दुकान की दर्गा पर पूजा करते वक्त बाबा की दर्गा पर जो दर्गा मरी माता के मंदिर के सामने है)

पूजा विधि :– सबसे पहले पानी, गुलाब जल हाथ में लेकर सब दूर छीट देते है। फिर फूल चंदन, कुंकु, हल्दी, अबीर, गुलाल, चावल फूल में लगाकर चढ़ाते है। फिर माला पहनाते है। फिर सफेद गलेब (सफेद कपडा सवा दो मीटर) चढ़ाते है। उसके उपर से भी फूल में सारा पुजावा लगाकर चढ़ाते है। मिट्टी का दीपक जलाकर उसमें लोमान छोडते है। पैसे सुपारी रखकर रेवडी के प्रसाद पर पानी फेरते है। (प्रसाद में रेवडी या चिरोंजी दाने रख सकते है।) रेवडी के प्रसाद की तीन पुडियां बनती है। पहली 1 घर के दत्तातरे भगवान की दुसरी 2 बाबा की दर्गा की तीसरी 3 दुकान की दर्गा की। बाबा की दर्गा पर एक नारियल खेलता छोडते है उस पर दक्षिणा रखते है और एक नारियल फोडते है उसे घर लाकर सबको बाटते है।

अब एक दुसरी आरती तैयार रखी जाती है। उसमे भी चंदन, पानी, कुंकु, हल्दी, अबीर, गुलाल, चावल, फूल, माला यह दुसरी आरती घर पर दत्तातरे भगवान के पूजन के लिए रखी जाती है। घर पर पेडे का प्रसाद/रेवडी और नारियल चढ़ाते है। बाबा की दर्गा पर पूजा के लिए जो आरती ले जाते है वह घर ला कर अलग रख देते है। अब जो दुसरी आरती तैयार करते है। उस आरती से यहां घर की भगवान की फोटो की पूजा करते है। नारियल चढ़ाते है, फिर उसे जमाल उतारने के पश्चात् दुसरे दिन मंदिर में भिजवा देते है। चौक मांड कर पाटे पर बच्चे को बिठाते है। (टीका लगाकर) फिर जमाल उतारते है। जमाल झेलते वक्त एक करवट रोटी (आटा उसन कर रोटी केवल एक करवट ही सेकते है) रोटी के नीचे लाल कपडा रख कर उस पर जमाल झेलते है। जमाल उतारने के पश्चात् बच्चे को तांबे की परात मे बिठा कर नहलाते है। फिर सिर पर थोडी हल्दी लगाकर कुंकु का सतिया बनाते है। फिर बच्चे को घर के नये कपडे पहनाते है। फिर उसे

बिठा कर माँ नारियल उवारती है। 1 नारियल में कुंकु की पाँच टिपकी लगाकर सात बार नारियल उवारते है। इसे भी फोडते है।रेवडी के प्रसाद की तीन पुडियां बनती है, एक घर के दत्तातरे भगवान के सामने एक दुकान की दर्गा पर और एक बाबा की दर्गा पर ले जाते है। यह जो नारियल बच्चे के उपर उवारते है। इसे फोड कर चिटक चारो दिशा में बच्चे के आजू बाजू आगे पीछे फेकते है। फिर तीनो जगह की रेवडी का प्रसाद और दो फोडे गये नारियल (एक बाबा की दर्गा का और बच्चे के उपर से जो उवारते है। इन सबको मिलाकर और जो दत्तातरे भगवान के सामने पेडे का प्रसाद रखते है। ये सब मिलाकर सबको प्रसाद बाट देते है। जमाल के दुसरे दिन खुटे निकालते है, खुटे या तो घर भी निकलवा सकते है। या नाई के पास जाकर भी निकलवा सकते है। खुटे निकालने वाले दिन 1¼ कटोरी या 1¼ ग्लास चावल बनाते है। दुसरे दिन जमाल खमाने भेज देते है।

इस तरह जमाल की सामग्री में 5 नारियल लगाते है। (2 बाबा की दर्गा पर 1 खेलता छोडते है और एक फोडते है।) 1 दुकान की दर्गा पर। 1 दत्तातरे भगवान की फोटो के सामने उसे दुसरे विठठ्ल मंदिर में भिजवा देते है। और एक नारियल बच्चे के उपर से उसकी माँ उवारती है। एक रेवडी का पैकेट बुलवा लेते है उसकी 3 पुडिया बराबर – बराबर बना लेते है। 1 बाबा की दर्गा पर, 1 दुकान की दर्गा पर और, 1 घर के दत्तातरे भगवान के सामने रखते है। दत्तातरे भगवान के सामने एक पाव पेडे का प्रसाद भी रखते है। इस प्रकार घर पर दत्तातरे भगवान के सामने रेवडी (1¼ पाव) 1 नारियल और श्रद्धा अनुसार पेडे का प्रसाद पर पानी फेरते है। दत्तातरे भगवान के सामने घी का दीपक जलाते है, उसे जमाल उतरने तक जलने देते है।

बेटी की चोटी निकालते तब 2015 में श्रष्टी की चोटी का कार्य बाबा की दर्गा, दुकान की दर्गा और घर पर दत्तातरे भगवान की पूजा इसी तरह करते है। फिर घर की पूजा होने के पश्चात् (बेटी के माता पिता दोनो पूजा करते है।) बेटी को तिलक लगाकर (बहन बेटी) पाटे पर बिठा देती है। नाई को भी तिलक लगाते है, उसकी कैंची की भी पूजा करते है। फिर सिर में पीछे के साइड जहां भौरा होता है। वहा के चार बाल नाई कैंची से काटता है। उसे बहन बेटी लाल कपडे के उपर एक करवट रोटी (रोटी का कच्चा भाग उपर रहता है, और सिका भाग कपडे पर रहता है। इस रोटी को उस कपडे के उपर रखी रोटी पर झेल लेती है। अब इस चोटी को रख देते है (कपडे में लपेट कर) इसे आज भी खमाने भेज सकते है। अब दुल्हन को वही एक या आधा लोटा पानी सिर पर डाल कर (जिस स्थान से चोटी निकली है।) थोडी हल्दी गिली कर के लगाते है। फिर कुंकु से साती बनाते है। अब माँ उसके उपर से (5बार) नारियल उवारती है। उसे फोडकर दत्तातरे भगवान के सामने रखते है। (1 चिटक) और चार चिटक बेटी के चारो और फेंक देते है। और उसे घर के कपडे (कोरे) पहनते को दे देते है। फिर वह कोरे कपडे पहन कर आकर फिर पाटे पर बैठती है। फिर जिसे कुछ देना हो तो उसे देते है।

अब या तो चोटी निकलने वाले दिन भी शाम को मुहुर्त कर सकते है। या 1–2 दिन बाद में मुहुर्त कर सकते है।

श्रृष्टी की शादी में 21 ता. को चोटी निकली, 23 ता. का मुहुर्त, 25 ता. को लग्न लगे।

श्रृष्टी की शादी में (21 ता. को चोटी निकली, 23 ता. का मुहुर्त हुआ, 25 ता. को लग्न लगे।) मतलब तीसरे दिन भी (मुहुर्त के) लग्न लगा सकते है।

मार्गदर्शिका

श्रीमती मधुबाई बजाज
खण्डवा
मोबाईल न0 8982501016

संकलनकर्ता

श्रीमती मंजुबाई बजाज
खण्डवा

।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

चांडक परिवार के रीति–रिवाज (त्यौहार)

सर्वप्रथम चैत्र की नवरात्री से प्रथम दिन गुडी पडवा के दिन सुबह पूजन के बाद कड़वा नीम व शक्कर का पानी पीते हैं व घर व भगवान मंदिर में कडवा नीम लगाते हैं। मीठे में पुरन पोली बनती है। गणगौर तीज के दिन जहॉ गणगौर माता की बाडी होती है वहॉ पूजन कर नारियल रखकर नारियल फोडा जाता है। दूसरे दिन गॉधी भवन में जाकर गणगौर माता के दर्शन किये जाते हैं परिवार के साथ। चैत्र की अष्टमी ही पूजी जाती है वो जैसी नवरात्र में। रामनवमी को मीठा भोज लगाकर मंदिर के दर्शन करने जाते हैं। रेणुका चौदस के दिन अलोनी पूरी व हॅलवा का भोग बनाकर रेणुका माता मंदिर पूरे परिवार के साथ जाते हैं व माता की आरती कर भोग लगाते हैं। उस दिन जोगे का आटा पॉच घर में जोगे का आटा मांगकर लाकर बाटी बनाई जाती है बिना नमक के।

अक्षय तृतीया के दिन पानी से भरी मटकी और खरबूजा और गेहूँ पूजा करके मंदिर में रखकर आते हैं।

बड़ पूर्णिमा व्रत के दिन बड़ पेड की पूजा करते हैं घर की सारी महिलाये आम व चने (भीगे हुये) से सुहागन की खोल भरते हैं। गुरू पूर्णिमा को भैरव बाबा का दिन माना जाता है। इस दिन दाल, बाटी, चावल बनता है वह बघार एक दिन पहले कर लिया जाता है उस दिन बघार नहीं होता। गुरू महाराज के दर्शन किये जाते हैं।

नाग पंचमी के दिन दाल (तुअर दाल) व टापू बनने है वह बघार नहीं होता एक दिन पहले किया बघार मिलाकर खाते हैं। नागदेवता की पूजा की जाती है व गुलल (मोटा आटा गुड, घी) बनाकर जीते नाग देवता का पूजन होता है। श्रावण की पूर्णिमा के पहले रविवार को विरपस दी जाती है। बहन बेटी को हम रविवार को सुबह गेहूँ, नारियल का गोटा, हल्दी, कूंकू, साडी या ब्लाउज पीस, व पैसे रखकर भाई बहन के घर जाता है और ससुराल में वह सब देकर आता है।

निरौती के नाग माड़ना

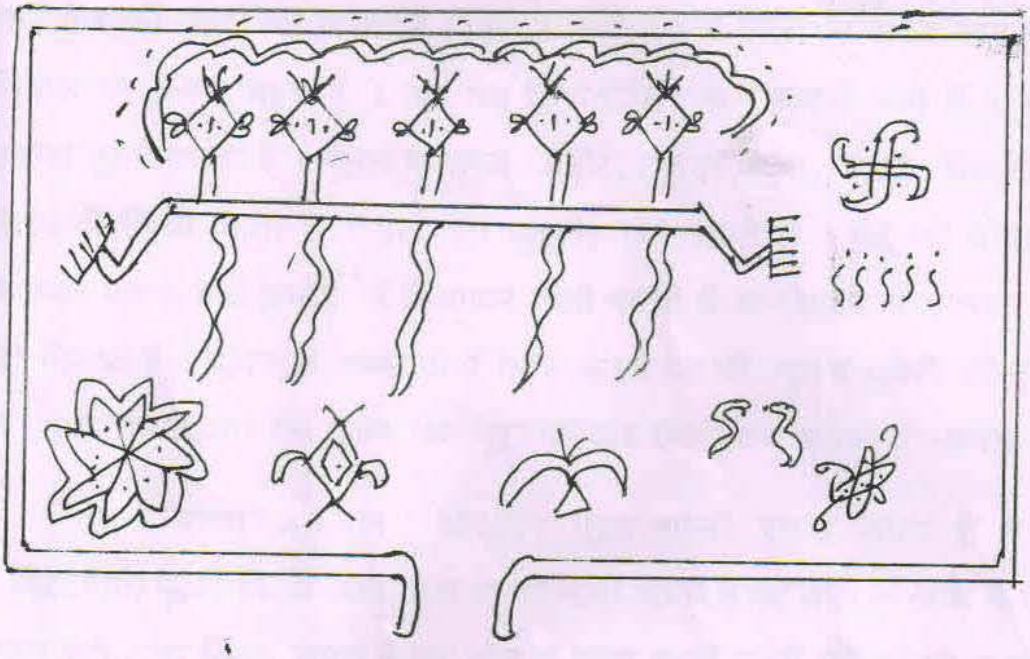

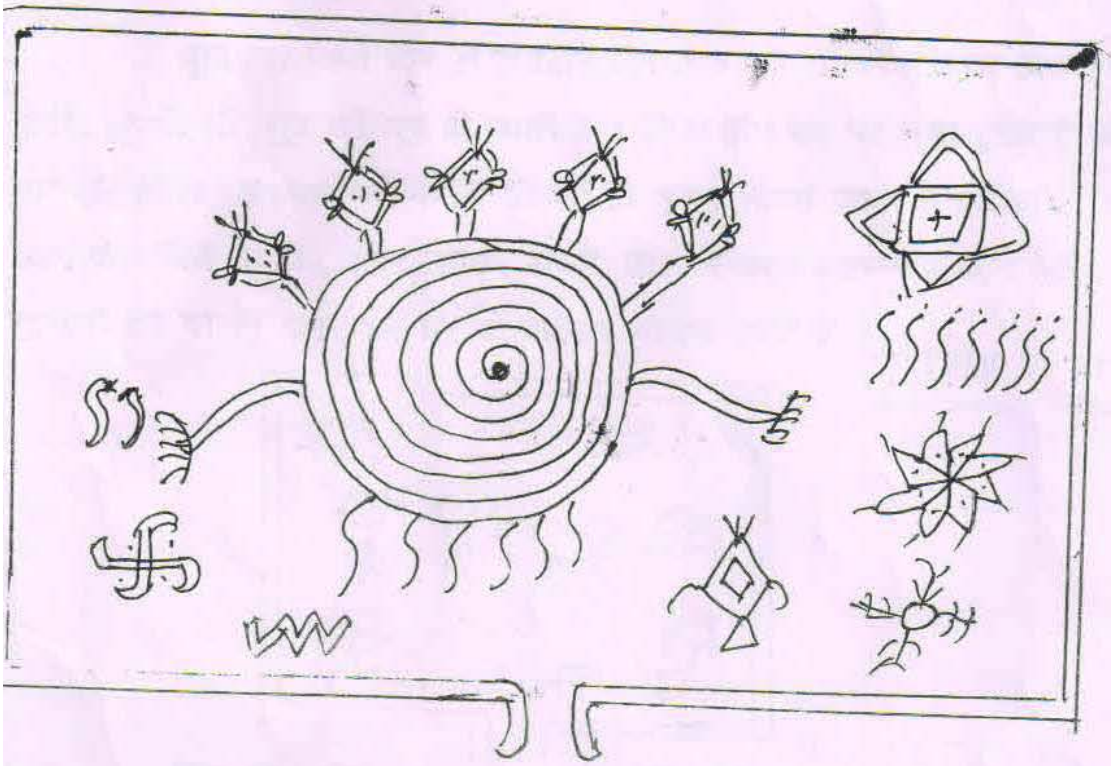

श्रावण की नाग पंचमी को भी दाल, टापू बनते हैं व नाग मांडे जाते हैं यह नारियल की नट्टी को जलाकर पिसकर कच्चे दूध में मिलाकर बनाते है। सफेद खडू को लिपकर दिवाल पर लिपा जाता है। उस पर (जिरौती) बने नाग बनाये जाते हैं। पूरा परिवार इनका पूजन करता है। पूजन में गुलल, अबीर, गुलाल, कुंकू, हल्दी, सिंदूर, गुड, फूल, बेलपत्ती लिया जाता है। इस दिन घुघुरी, फले बनाते है।गेहूँ को धोकर कूकर में रखकर उसके मोटे आटे दूध में मिलाकर फली बनाते हैं और कूकर में डालकर उसमें गुड, घी मिलाते है। पूजन के समय दोनो तरफ कंड्डे पर घी, गुड व घुंघरी की धूप दी जाती है, और नागदेवता का पूजन कर पूरा परिवार एक साथ प्रसाद व भोजन करता है।

पोला अमावस के दिन पूरन पोली बनाई जाती है व बैलों का (मिटटी के) पूजन किया जाना है व राखी बांधी जाती है वह खेत से आये बैलों का पूजन बहन बेटी द्वारा किया जाता है वह खेत में काम करने वालों को भोजन करवा कर नये कपडे दिये जाते हैं।

गणेश चतुर्थी से अंनत चौदस तक का पूजन हमारे परिवार में ओटल होने से नहीं किया जाता।

श्राद पक्ष पहले दिन से आखिर दिन तक पूरा भोजन बनाकर (दाल, चावल, रोटी, सब्जी) घी, गुड की धूप दी जाती है। जिस दिन घर पर श्राध होता है उस दिन पाट पर पितर बनाकर जौ काली तिल्ली से पूजन किया जाता है वह खीर, भजिये, उडद के भजिये, कडी, दाल, नमक, सब्जी, खीर बनाकर ब्राम्हणव बहन बेटी, पितर, गवरनी को भोजन करा कर घर के सदस्य भोजन करते है।

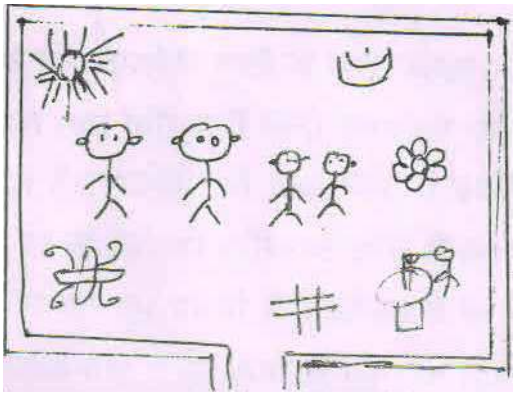

पितृ मोक्ष अमावस्या को आखिर दिन की धूप देकर उसे विसर्जित किया जाता है।

नवरात्री

नवरात्र के पहले दिन से हमारे यहॉ दुर्गा सप्तशती पाठ बिठाते है। घर का मुखिया वरनी देकर पूजन शुरू करवाता है पण्डित द्वारा। घर पर या मंदिर पर। घर पर हो तो अखण्ड दीया जलाते है। अष्टमी पूजन के पहले दिनों घर की साफ सफाई होती है घर के पूरे कपडे धोये जाते हैं तथा घर पर जहॉ माता का भोग बनाते हैं वहॉ जहॉ पूजन करते हैं वहॉ लिपाई पुताई होती है। सप्तमी के दिन देवी का गेहूँ सोले में या कोरे कपड़े पहनकर पिसलाते हैं और उस दिन पूरे घर के सदस्यों के कपडे भीग कर अलग डाले जाते हैं और दूसरे दिन वहीं कपडे पहनकर देवी का पूजन किया जाता है।

अष्टमी के दिन सुबह मंदिर में एक स्थान पर सिंदूर से त्रिशूल बनाकर जय माताजी लिखकर उसके सामने गेहूँ (½किलो), चावल (½किलो), की ढेरी लगाते हैं। नदी से लाई

गई पथवारी धोकर पान पर घी से सिंदूर मिलाकर पथवारी पर भी सिंदूर लगाकर रखते है। मैदा पाती पथवारी पर चढ़ाते है। नाड़े से घर की बड़ी महिला बिना बोले बच्चों की 2–2 बेल व महिलाओं की माता जो शादी में चढाते हैं उसकी पूजा करते हैं घर के सभी सदस्य कूंकू, हल्दी, चावल, सिंदूर, कुल माता जी का पूजन करते हैं कंडडे पर घी, गुड, छाल, छबिला की धूप डालते हैं 2 नारियल देवी को चढ़ाते हैं सभी जन मिलकर आरती करते हैं माताजी की।

माता का भोग में अलोनी बाटी कण्डे पर बनाते हैं चावल भी अलोनी बनाए जाते हैं। दूध + चावल + गुड़ का भोग बनाया जाता है। अलोनी बाटी एक तरफ 8 एक तरफ 9 रखते है।

पूजा के बाद अलोनी बाटी व दूध, चावल भोग के रूप में खाया जाता है। पूरा घर दाल (चने की) बाटी बिना बघारकर खाते हैं शाम को दीया बताकर देवी को ढक देते हैं। नवमी के लिए फिर से सोले में कपड़े डालते हैं। और नवमी के दिन फिर से देवी को खोलकर सोले में उनकी पूजा की जाती हैं। उसी धूप पर दूसरे दिन की धूप डालते हैं। भोजन में बेसन के चरके ताये व आटे के गुड़ के पानी में मीठे ताए बनाए जाते हैं। चावल की खीर बनाई जाती है। भोग के 9 पुऐ अलग बनाते हैं और खीर + पूए (मीठे) का नवैद्य लगाया जाता है। 2 नारियल घर पर पूजन + आरती के बाद फोड़ते हैं। और फिर बच्चे व बड़े हिंगलाज माता मंदिर में नारियल (भैरव बाबा का) व धूप लेकर जाते हैं और आप प्रसाद पाते हैं। भोजन करने के बाद माता जी का दीया लगाकर बेल व माता को निकालकर गेहूँ, चावल अलग रख देते हैं जो बहन बेटी को देते हैं उस जगह पर पानी से पोछा लगाकर सातियॉ माण्डकर दीया जलाते हैं और नौ दिन की धूप + फूल + माता सबका विसर्जन करते हैं फिर घर पर बड़े नीबू की बली देते हैं।

दीपावली पूजन

गोवत्स द्वादशी इस दिन गाय केड़े की पूजा की जाती है। पूजा में अबीर, गुलाल, हल्दी, कुंकू, चावल तथा चौले, ज्वार, गुड़ लिया जाता है। पहले गाय माता का पूजन किए केडे का पूजन किया जाता है। तथा हल्दी से हाथे लगाए जाते है। और गाय को ज्वार की रोटी चौली की सब्जी खाई जाती है।

धनतेरस के दिन पूरन पोली बनायी जाती है। व बहन बेटी को खाना खिलाया जाता है व रात को दुकान पर लक्ष्मी पूजन किया जाता है।

रूप चौदस को सुबह जल्दी उठकर (तिल्ली + हल्दी पिसी हुई) का चिक्सा से नहाया जाता है।

दीपावली के दिन सुबह दुकान पर बही खाते की पूजा होती है। सुबह बहन बेटी चौक मांडती है, रंगोली बनाई जाती है। इस दिन तवा नहीं रखा जाता। अतः दाल दाल + बाटी बनायी जाती है। शाम को घर पर गणेश पूजा की जाता है। इस पूजा में सवा किलो गेहूँ धोकर सूखाकर पिसवाकर रखते हैं इस आटे से खाजे बनाए जाते हैं तथा कसार सेका जाता है। आटे के 16 दीए बनाये जाते हैं। सबसे पहले सुबह भगवान के मंदिर में गेरू दीवाल पर पोता जाता है उस पर चावल को भिगोकर बारीक पीसकर उसमें हल्दी मिलाकर लकड़ी की काडी से गणेश बनाये जाते हैं, गणेश बनाए जाते हैं। शाम को जहॉ गणेश बनाए जाते हैं वहॉ सामने चार लोटों में पानी भरकर चारों तरफ रखकर उसे पर

4–4 खाजे रखे जाते हैं तथा कसार रखा जाता है, और बीच में एक करवा जिस पर पैसा सुपारी डालकर रखा जाता है सातिया बनाकर उस पर दिया जलाया जाता है जो पूरी रात जलता है। तथा दूध में चावल बनाकर कण्डे को जलाकर उस पर घी + गुड़ + दूध + चावल, धानी बतासा, की धूप दी जाती है वह गणेश जी के पेट पर सिंदूर में गुड लगाकर सिक्का चिपकाया जाता है। एक सुपडे पर 16 कोरे मिटटी के दिये, 16 आटे के दिये, जलाकर उनका पूजन किया जाता है। घर के सभी सदस्य पूजा करते हैं, व पूजन वाले दिये पूरे घर में लगाए जाते हैं तथा लक्ष्मी पूजन दुकान पर किया जाता है दुकान पर पंडितजी द्वारा। घर की महिलायें रात को मंदिर में जाकर दिये जलाती हैं।

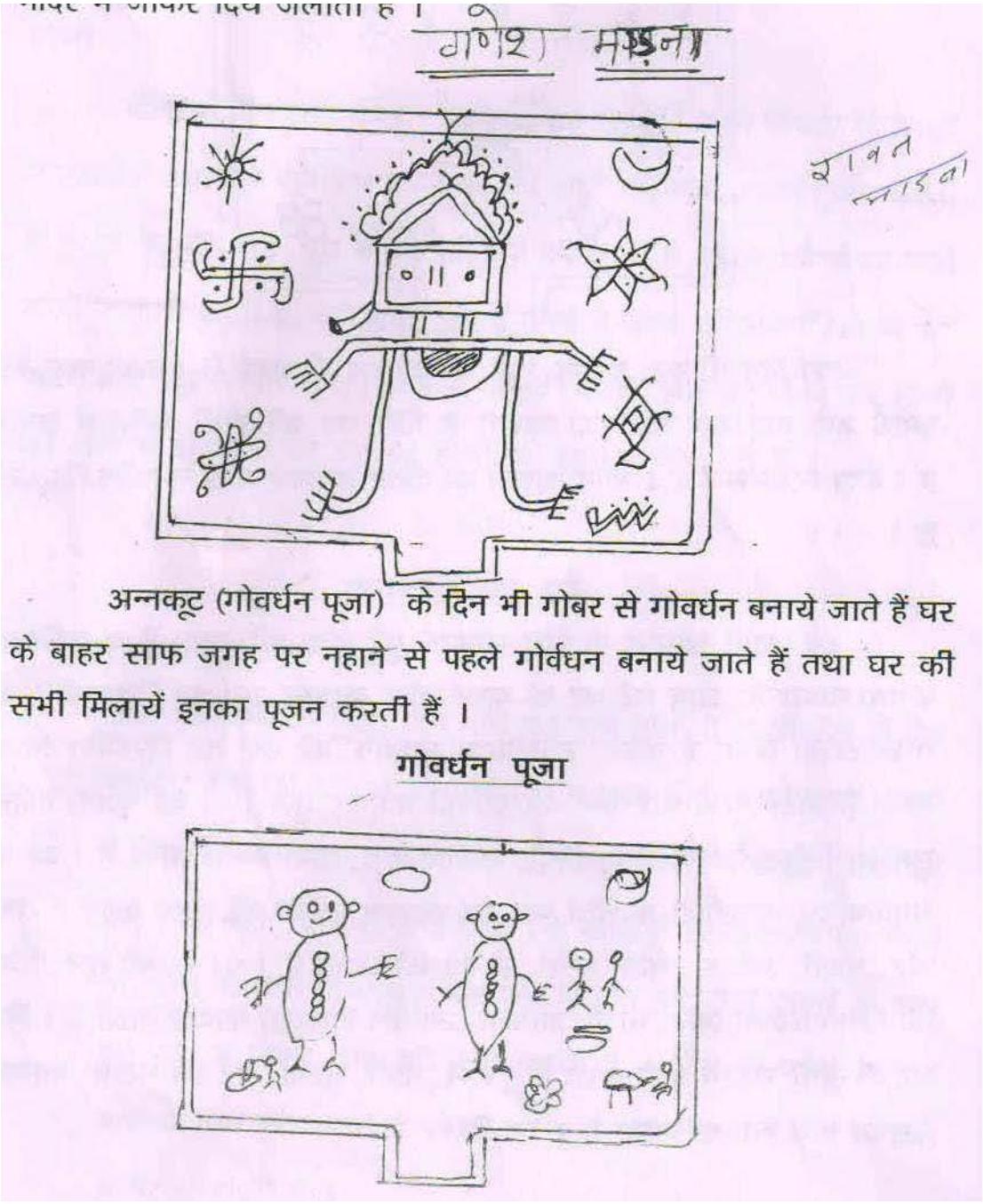

पूजन में चार मिटटी की कुडलई में कच्चा दूध भरकर चारों तरफ रखते हैं। वह उन पर दिपावली पूजन के खाजे व कसार रखते हैं। दूध में चावल बनाकर उस दिन भी कण्डे पर घी, गुड, दूध, चावल, खाजे कसार, धानी बतासे, की धूप देते हैं वह पूजा के समय फटाके फोडते हैं।

अब भाईदूज के दिन भी बिना नहाये भाई दूज बनाये जाते हैं।

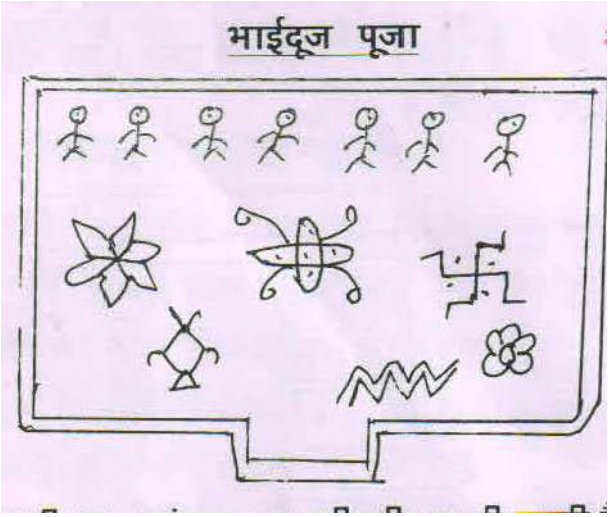

इस दिन भी दूध, चावल, गुड, घी की धूप दी जाती है। पहले बहन बेटी बनाये हुये भाई दूज की पूजा करती है फिर घर की सभी महिलायें करती है। बहन बेटी उसके बाद अपने भाईयों को टीका लगाकर मीठा नमकीन खिलाती है।

देव उठनी ग्यारस

देव उठनी ग्यारस के दिन भगवान की पूजा की जाती है व फरियाल बनाया जाता है, शाम को घर के बाहर चौक बनाकर उस पर तुलसी का गमला रखा जाता है तथा सालीग्राम भगवान को उस पर विराजीत किया जाता है चारों तरफ चार गन्ने की झोपडी बनाकर तुलसीजी का पूजन अबीर, गुलाल, सिंदूर, चावल, कूंकू, हल्दी, शक्कर, फूल द्वारा किया जाता है। घर के भगवान को तुलसीजी के नीचे पाट पर रखकर उनका भी पूजन करते हैं तथा बोर, भाजी, आंवला, भटा, गन्ना से देव को उठाते हैं। घर के बड़े तुलसी जी की पॉच परिक्रमा (बोर, भाजी, आंवला, उठो देव सांवला) कहकर करते हैं। फिर घर के सभी सदस्य पूजा करते हैं। दाल, बाटी, चुरमा, भटे का भरता, बनाकर उसका भोग लगाया जाता है।

तिल संक्रांति :–

तिल संक्रांति के दिन तिल्ली के लड्डू और दाल चावल की खिचडी का दान किया जाता है। पण्डित जी को कपडा पैसे खिचडी लड्डू देकर उनका तिलक किया जाता है। दूसरे दिन सुहागन जो सामान बॉटती है उस पर लड्डू रखकर पानी फेरते हैं उस दिन घर पर फीक खिचडी और टापू बनाये जाते हैं।

होली

होली के दिन शाम को घर पर एक पाठ रखकर उसमें पॉच कण्डे तसले में रखते हैं तथा दूध चावल बनाकर घर की सभी महिलायें उनका पूजन करती हैं कण्डे पर घी, गुड, दूध चावल की धूप की जाती है वह उनको लेकर जहॉ होली जलायी जाती है वहॉ पूजन करके कण्डे व कण्डे की माला रखकर आ जाती हैं। दूसरे दिन सुबह नमक +गेहूँ की बॉली, झारे पर ले जाकर होली की आग में सेकते हैं वह घर पर होली की आग लेकर आते हैं।

जन्म से मरण तक का रिवाज :–

1 बच्चे का जन्म :– जिस दिन बच्चे का जन्म होता है उसी दिन दो बेल बनाकर बच्चे को पहनाते हैं पॉचवे दिन व छटवे दिन छटी पूजा होती है जिसमें कोरा ताव–2 खारिक, 2 बिलावा और पीले धागे (हल्दी में करे हुये) कूंकू, चावल, हल्दी दिया एक थाली में रखकर जच्चा + बच्चा के पलंग के नीचे दिया जलाकर प्लेट में रात को सोते समय मॉ बच्चे को गोद में लेकर ताव की पूजा करती है। दिये से कोरा काजल बनाकर बच्चे को लगाते है। छटी की पूजा कर पीले धागे बच्चे के हाथ व पैर में बांधते हैं।

2 बच्चे का नाला :– बच्चे का नाला खिर जाने पर सूतकाला पूजाते हैं उस दिन जच्चा–बच्चा नहाकर साफ कपडे पहनते हैं। बहन बेटी रिश्तेदार को बुलाकर गीत गाये जाते हैं और सुरज पूजा करते हैं एक पाट पर चौक बनाते हैं जिसमें चांद सूरज बनाते हैं।

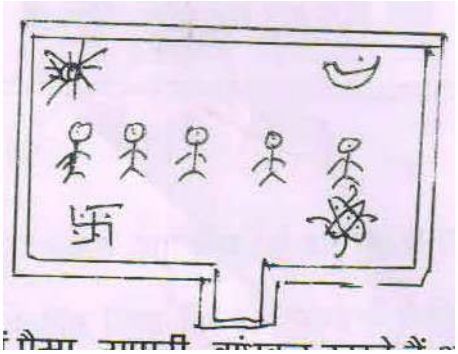

पीली चिंदी में पैसा, सुपारी, बांधकर रखते हैं और सूखा नारियल फोडते हैं, खारिक + हल्दी की गॉठ पूजा में रखते हैं वह बच्चे को घुटी में देते हैं नारियल जच्चा को दे देते हैं। यदि लडकी हुई तो गीली आटे के 14 चॉनकी और लडका हो तो 18 बनाते हैं और आटे के दिये चॉनकी जितने ही बनाये जाते हैं व पाट पर दिये चॉनकी रखकर जच्चा के हाथ से पूजा करवाई जाती है। गीत गाये जाते हैं मिठाई बतासे बॉटा जाता है। हल्दी से हाथ लगाये जाते हैं।

जलवाय पूजन :– जलवाय पूजन में जच्चा बच्चा को नहलाकर बच्चे को लाल कोरा कपडे का झबला, पहनाते हैं। बुलावा कर सभी रिश्तेदारो को बुलाते हैं। शाम को जलवाय पूजन के समय जच्चा सिर पर लोटा (पानी+दूध) रखती है। घर की ढेल के बाहर घडे की पूजा करके चौक बनाकर दोनों को बिठाकर मायके के कपडे करते हैं वह गोद (गेहूँ + नारियल + खारिक और पैसा) गोद भरते हैं गीत गाकर मिठाई बॉटते हैं। पॉच नारियल देवी के रखते हैं अलग। सवा महिने के बाद जच्चा–बच्चा को नहलाकर मंदिर के दर्शन कराकर मायके भोजन के लिये भेजते हैं।

मुण्डन संस्कार :– देवी से से लगाने के बाद पहले या तीसरे साल मुण्डन संस्कार किया जाता है। हमारे यहॉ लडकी की चोटी वह लडके का मुण्डन किया जाता है। मुण्डन पानगुराडियॉ बाबा के दरबार पर निकलते हैं। लाल कपडा आधा मीटर + मोटा आटा + गुड + घी + सिंदूर + सुपारी + कूंकू + हल्दी + चावल + नाडा + छाल छबिला + दिया + अगरबत्ती + दो नारियल + कपूर लेकर जाते हैं। पहले पूरा परिवार सुबह से जाकर वहॉ नहाकर आरती तैयार कर बाबा का पूजन करता है। आटे की रोटी एक तरफ

सिकी हुई, चुरमा (आटा) का गुड और घी मिलाकर बनाते हैं। खाने में दाल बाटी बनती है।

– बच्चे को नये कपडे पहनाकर कैची व नाई की पूजा बहन बेटी जो जमाल झेलती है वह करती है। लाल कपडे में रोटी रखकर उस पर बच्चे के बाल झेलती है। बच्चे को नहलाकर, सिर पर हल्दी लगाकर सातिया बनाकर मामा घर के कपडे पहनाते हैं। चुरमे का भोग लगाकर सब प्रसाद पाते हैं। इसके बाद सलकनपुर वाली माता को ढोक देने पूरा परिवार जाता है। घर आकर तीसरे दिन खूटे निकालते हैं और सवाया चवाल बनाते हैं और उनका भोग लगाते हैं।

मृत्यु :– मृत्यु होने पर बडा या छोटा बेटा अग्नि देता है वह बहू गोबर से जिस जगह पर उनको सुलाया जाता है वहॉ गोबर से रेंकटा खिचती है और बिना पीछे देखे उनके कपडे लेकर सबसे पहले चलती है। वह कुयें पर कपडे गिले कर नहाती है और वही कपडे लेकर उसी जगह पर रख देती है वहॉ पर मायके से आये चावल + घी + गुड से चावल बनाकर कडवा बनाते हैं और तीन कौल अग्नि देने वाले के मुॅह में लगाते हैं, उसी स्थान पर उस दिन प्लेट में आटा प्लेन करके ढाक देते हैं दूसरे दिन साडी सिमटकर नदी में विसर्जित करते हैं और बाहर–भीतर होता मंदिर में जाकर आतें हैं। दुसरे दिन दोपहर को उठावना होता है उसमें भी मंदिर जाते हैं वह हरी भाजी लेकर आते हैं और सीधा लेकर जाते हैं। दुसरे दिन चावल बनाकर घी डालकर अच्छी तरह मिलाकर लड्डू बनाते हैं और पानी व चाय और यह चावल का लड्डू छत पर रखते हैं नौ दिनों तक। शाम को गरूड पुराण का पाठ होता है और रोज अंधेरा कर दीपक जलाते हैं नौ दिनों तक।

– दसवें दिन सुबह सुतक निकालकर पूरे घर का पोछा लगाया जाता है वह घर के सभी छोटे लडके बाल देते हैं। दसवॉ, ग्यारहवॉ घाट पर किया जाता है।

– बारहवें के दिन बहन बेटी परिवार के सदस्य 12 ब्राम्हण या गवरनी को जिमाते हैं और कपडे देकर मीठा खिलाते हैं।

– तेरहवें के दिन घर पर श्राद का पूरा खाना बनाकर घर पर ही पंडित या गवरनी को जिमाते हैं। घर पर ही तेरहवें की पूजा कर, तर्पण कर, सीधा देकर पूजन करते हैं और फिर पगडी की जाती है। धर्मशाला में गरूड पुराण का आखरी अध्याय का पाठ होता है और बाकी सदस्यों जिन्होंने बाल दिये हैं कि टोपी ससुराल द्वारा पहनाई जाती है फिर जिसने आग दी है वह सीधा लेकर मंदिर जाते हैं फिर जिसने रेकटा खींचा है वह महिला गेहूँ + पैसा लेकर मंदिर जाती है फिर सबको भोजन कराया जाता है।

– पन्द्रहवें के दिन श्राद वह छः मासी बरसी होती जिसमें पण्डित द्वारा तर्पण करवा कर पीण्ड बनवाते हैं परिवार कि सदस्य पूजन करते हैं उसी दिन से सुबह तुलसी को पानी व शाम को मंदिर में या घर पर तुलसी जी को दिया जलाया जाता हैं, बरसी आने तक।

– बरसी होने पर मृत्यु के पूरे श्राद्ध होने पर श्राद्ध पक्ष में उनको मिला दिया जाता है।

।। शादी का मुहर्त ।।

शीतला माता पूजन :–

1 दो झंडी सफेद भैरू बाबा की, लाल माताजी की
2 नीम की डगाल
3 दो नारियल (एक फोडना एक सिर्फ चढाता)
4 गुड
5 पूजा की सुपारी
6 सफेद ताव (2)
7 फूल की माला (2)
8 पानी का लोटा
9 आरती – कुंकू, हल्दी, अबीर, गुलाल, मेहंदी, चावल
10 घी का दीपक
पहले पूजा माता पिता करें फिर दुल्हा, दुल्हन
प्रोसेस :–

माता पूजने के बाद मुहर्त के पहले अच्छे चौघडियॉ में सवा पाव कुंकू, हल्दी लाना और बहन बेटी को झिलवाना।

खलमिट्टी :–

1. सात टोकनी, मिटटी लाने के लिये
(सात टोकनी दुल्हन की नौ टोकनी, दुल्हे की)
2. सुपडा 2, नारियल 2
3 खलबत्ता, (सभी पर नाडा बांधना)
4 मिटटी का दिया (तेल)
5 आरती – कुंकू, चावल, पैसे, सुपारी, पान (15)
6 गेहूँ बढने के लिये (आधा किलो)
7 बताशा (एक किलो)
8 नाडा
9 हल्दी की गॉठ (5 पीस) 250ग्राम
10 मूंग धोना – ½ किलो
11 गणेश जी
12 सलाई
13 फूल
14 पाट (पटला)
15 आटा (चौक मांडने के लिये)

प्रोसेस –

सबसे पहले टोकरियॉ, सुपडा, खलबत्ता, सब पर नाडा लपेट लें दुल्हा या दुल्हन को पाट पर चौक बनाकर बिठाना ।

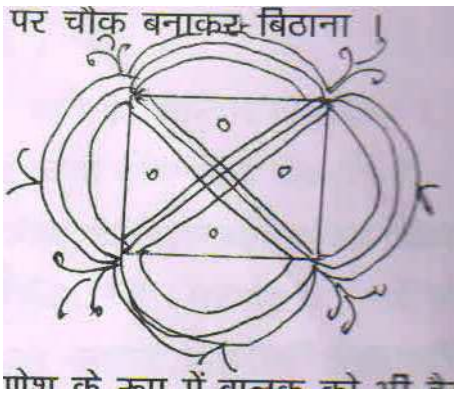

(गणेश के रूप में बालक को भी बैठाना)

पूजा कि थाली मे गणेश जी बैठाकर पूजा करना, कलाश की पूजा करना, चिकसा पिसाने चक्की पर जाना। गेहूँ, सब्जी व मुहर्त हल्दी डालकर चिक्सा पिसवा।

गणेश जी कि पूजा करके बहन बेटी दुल्हे को टीका लगाना 4, बेटी आपस में टीका लगाना, एक दूसरे को नाडा बॉधना मुहर्त में चार बहन बेटी हल्दी की गॉठ को कूटना, सिर एक चवासनी द्वारा सिलक खींचना जहॉ पर सिलक खींचना हो वहॉ ढेल के अंदर होकर टीका लगाकर गेहूँ, नारियल, सवा रूपये रखकर खोल भरना। फिर सीधे हाथ पर नौ और उल्टे हाथ पर सात हल्दी फिर कुंकू ऐसी सिलक खींचता ।

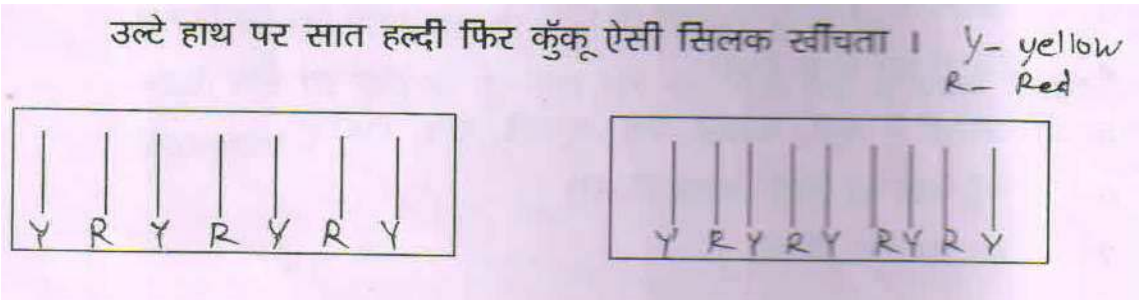

फिर सुपडे में गेहूँ झाडना उसमें बताशे और पैसे (4 चिल्लर) सुपारी भी डालना बहन छोटी को लिफाफा डालना । (चुडी के पैसे) दुल्हे की उठावे।

खलमिट्टी :–

1 गेट के पास मिट्टी
2 गणेश जी
3 पान, पैसा, सुपारी
4 मुसली
5 गुड

प्रोसेस :–

मिटटी खोदते समय पान पर गणेश रखकर पूजन करें। मुसली की पूजा करें, पैसा सुपारी, गुड रखना फिर गणेशजी सहित मिट्टी उचका कर दुल्हे की मॉ की खोल में डालना। दुल्हे की मॉ की खोल से बहन बेटी व नारियल पैसे से रंजन भरना अब टोकरियों में मिटटी डालकर अंदर आ जाए। सब मिटटी को एक जगह डालकर उसमें मुंह धो लें।

गवरी भोजन :–

1 साडी 2
2 भोजन
गणेश पूजा :–

– चावल, कपडे, 20 पान, लापसी, खाजा बनाना, दूध

सामग्री :–

1. चावल, गुड, देवी के गेहूँ– 5 किलो
2. नमक
3. घी – 2 लीटर, शक्कर 2 किलो, तेल 1 लीटर
4. चना दाल ½ किलो
5. बेसन – ½ किलो
6. हल्दी, कुंकू, नाडा, रूई, माचिस, कैची, टेप

अगरबत्ती :–

7. सफेद कपडा 1 मीटर, लाल कपडा 1 मीटर,
8. गुगल, धूप
9. कंडा
10. चिल्लर
11. काकडा, सुआ, पापड–1, मूंग
12. तांबे का फूलपात्र
13. गैस चूल्हा
14. मूंग दाल ½ किलो
15. पुजा की सुपारी ½ किलो
16. मिटटी का चूल्हा
17. कोठी
18. मिटटी का दिया
19. लिफाफे 21 रूपये

बर्तन लिए – 1 कढाई, 3 थाली, 1 सलाई, बढा चम्मच, 4 तपेली, दो बेलन चकला, 2 गिलास, धारा, तॉबा लोटा, स्टील का लोटा, जग, कटोरिया, चक्कु, कैंची, फेविकॉल।

गणेश पूजा की विधि

– लापसी, चावल, 32 खाजा बनाना एक पाट के उपर लाल कपडा बिछाना उसके उपर बीच में आधा किलो चावल रखना उसमें गणेश भगवान बिठाना। चारों कोनों पर चार–2 खाजे रखना उस पर लापसी के लड्डु रखना। गणपति के भी खाजा लड्डू रखना। पैसे सुपारी गणपति के पास रखना।

– मिटटी का चूल्हा और कोठी बनाना। उसको सफेद खडी से पोतना उस पर चारों तरफ गणपति लाल खडी से बनाना। बहन बेटी द्वारा दिया में धुप, घी, गुड का छोडना। सबकी पूजा करने के बाद कोठी के अंदर लाल कपडे की पोटली बनाकर मिटटी की कोठी में रखना। उसमें एक खाजा, लापसी, आटा के गणेशजी रखना। आटे के 21 गणेश बनाना उस पर कुंकु चावल डालना।

गणेश बंधाना – उस पर कुंकू चावल चढाना, बहन को कुंकू लगाना और नेक देना, दुध, चावल, का भोग लगाना।

मंडप बनाना :– पुरियॉ 16 बनाना, चार खंबे, आम के पत्ते बांधना, सुतली–1 पाव, माणक रूब, कूंकू, चावल, छेद वाला दिया, काकडा, सुआ, चना दाल, शक्कर, पापड, 4 गाडके में पानी रखना ठॅकना। 1–1 सिक्का डालना, मंडप मामी से लिपवाना, नेक देना, दुल्हे को काकनडोरा बॉधना।

– (नाडा, चांदी की अंगूठी पान)
दामादों को हाथे लगवाना –
– 4 नारियल, 4 लिफाफे
–4–4 पुरीया के बंडल बनवाना, नाडे से बांधना, दामाद के हाथ में देना (फिर हाथे लगवाना) उनका तिलककर नेग देना।
कुल देवी पूजन :–

– चावल, खाजा, लापसी, रोटी के जुडे 32 बनाना (64 रोटी), आटा के दिये 21, मिटटी के दिये 32, देवी के सामने छाबरी के नीचे रखना।

– एक छाबडी के अंदर देवी का भोजन रखना। देवी का फड मंडवा कर उसे दिवाल पर लगाना।

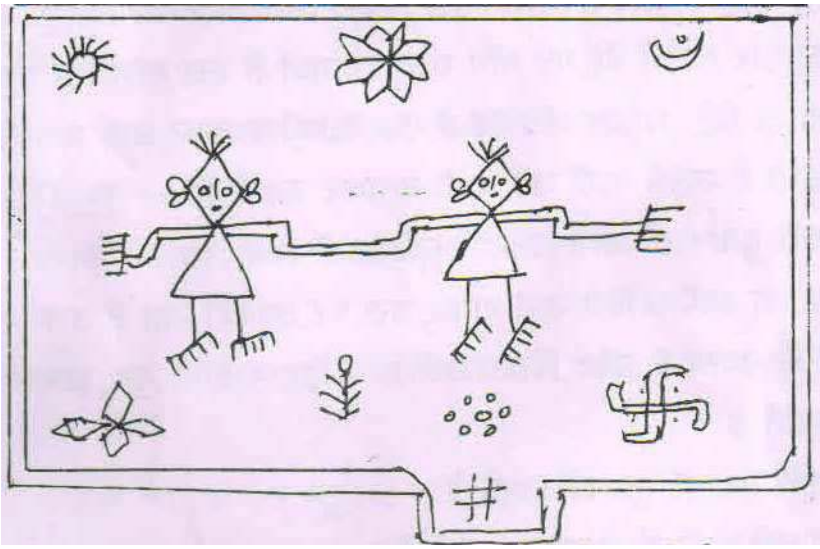

– देवी के सामने दोनों तरफ गेहूँ चावल से देवी की वे भरना दोनों तरफ मटकी की चलत रखना। एक तरफ 5 मटकी, सीधे तरफ और उपर नीचे एक बडा दिया जमाना। उल्टे हाथ

तरफ चार मटकी उपर नीचे एक एक दिया बडा रखना। बीच में एक बडी मटकी रखना उस पर भी एक बडा दिया रखना या उसमें घी, नाडे की बैनी बनाकर लगाना। दूध चावल का भोग लगाना एक दिये में धूप छोडना। देवी का पूजन सब कुटुंबियों के साथ करना। मंडप में माणक खंब की पूजा करना, एक पापड रखना, 1 सूजा रखना दोनों में काकडे को पीला करके चना की दाल रखना, माणक में भी पूजा करके रूखडी निवतना, घी, शक्कर का भोग लगाना, मंडप में चारों कोनों पर एक– 2 मटकी रखना उसमें पैसे सुपारी रखना और चारों कोनों पर पन्य पुरी, बनाकर नाडे से बांधकर रखना चाहिये। दुल्हे राजा को काकन दोरा बांधना नाडा, पीपल के पत्ता बांधना।

सोंज का सामान :–

– दो बेलन, दो लकडी की डब्बी, कुंकू की डब्बी, कुंकू, मेहंदी, नाडा, गुड, सुखा मेवा, खोपरे की सात वाटकी, खारीक, बादाम, मकाना, मिसरी, काजू, पिस्ता, काली पोत, चांदी की माता, 1 सिक्का, 1 जोडी चावल, दुल्हन का श्रृंगार सामान। (काँच, कंधा, चार लाख, ओढनी, दो मोर)

लग्न की देवी पूजन :–

– गेहूँ और चावल की ढेरी करते हैं। सीधे हाथ पर चावल व उल्टे हाथ पर गेहूँ। एक एक दिया उल्टा करके छोटी मटकी जमाते है। चावल पर चार मटकी गेहूँ पर पाँच मटकी जमाते हैं उस पर दिया रखते है।
– सामने गेहूँ चावल के बीच में एक मटकी रखकर उस पर बडा दिया रखते है उसमें नाडी की बत्ती बनाकर रखते हैं।
– बत्ती दुल्हन के आने तक जलती रहती है।
– 32 या अधिक दिये उल्टे रखकर उस पर छवबडी राते हैं उसमें 32 जुडे उस पर खाजे और दिये रखते है। दुध भात में गुड डालकर नैवेद्य लगाते हैं।
– अग्नि पर घी डालते है।
– लापसी रोटी के अंदर रख देते हैं।
– मण्डप में रूकडी निवदते हैं जिसमें बडों जो पूर्वज हैं उनका नाम लेकर उनको याद किया जाता है और चने की दान हल्दी मिलाकर, रूई का काकडा से शक्कर, घी का नवेद लगाकर सभी प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं।
कुम्हार के बर्तन :–
– श्रीदेवी रजान खाँ कुम्हार के बर्तन
– 14 मटकी
– 32 छोटे दिये
– 4 दिये छोटे
– दिये कडे
– बडा दिया
– एक रोटी का कडवा
– छेद वाला बडा दिया
– माणक खाँव धावडी
– अच्छे दिन या सोमवार सुबह जेल बनवाना पहनावा,

– सवा किलो गेहूँ, लाल कपडा, नारियल, सवा रूपया, तेल उतरवाना, सलकनपुर से चढावा।
लंच से पहले :–

– थाली का नैवेध बनाना।

बाने की तैयारी

– सुपडी, छोटी, मुसल, सुजा, रूई, एक सिक्का।

घोडे की तैयारी

– चना दाल, काजल, भाभियों के गिफट

दुल्हन की माँ

– टाँवेल, बताशे, मकाना, काजू, मिश्री (सौंजवाला)

बेडा :–
– घडा, दो लोटे, साडी, नारियल 50, घडी, चैन, अंगुठी
लगन :–
– परछने का सामान (सुजा, रवई, एक सिक्का, मुसल, सुपारी)
चवरी का सामान :–
– लडकी वालों की ओर से समस्त व्यवस्था की जाती है।
विदाई :–
– साल की धानी
देवी उठाने के लिये :–
– 32 जुडे रोटी, लापसी, चावल, कडी बनाते हैं या हलवा बनाते है।
– पंडित द्वारा श्री सत्यनारायणजी की कथा की जाती है।

मार्गदर्शिका

श्रीमती शक्ति चांडक
खण्डवा

संकलनकर्ता

श्रीमती आशुलता चांडक
खण्डवा
मो. न. 7509940410

।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

झंवर गौत्र की रीति परम्परा, त्यौहार एवं गीत

भेरू बाबा की पूनम

गुरू पूर्णिमा

पूजा की सामग्री :– गेहूँ की मुठठी पर 5 कंकड घी सिंदूर लगाकर रखते है। और भेरू बाबा और गणेश जी की पूजा की जाती है। कपूर, कुंकु, चावल, अष्टगंध, अगरबत्ती, घी का दीपक, धुप से भेरू महाराज की पूजा की जाती है। धुप पर घी गुड़ छोडकर पानी फेरते है।

भोजन :– दाल, बाटी, चावल, चुरमा, लड्डू बनाते है। और कंडे की धुप पर घी, गुड़ और खाने का सामान छोड़कर कपूर से आरती की जाती है।

रक्षाबंधन

पूर्णिमा के दिन बीर को राखी बांधी जाती है। शीतला माता के मंदिर जाते है।

पूजा का सामान :– 4 पुरी, कसार, नारियल, गोले की बाटकी, राखी, दिया, अगरबत्ती, कुंकु, चावल, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, प्रसाद, कोरा कागज (ताव), गेहूँ की मुठ्ठी लेकर जाते है।

शीतला माता को बाटकी और गोना बाबा को नारियल चढ़ाते है। फिर आकर भगवान को राखी बांधते है। इसके बाद मोहरत से घर मे भाई को राखी बांधी जाती है।

हरताली तीज (व्रत)

दूज के दिन रात को 12 बजे कंकडी खाकर व्रत लिया जाता है।

पूजा सामग्री – कुमकुम, चावल, सुहाग का समान, ब्लाऊज पीस, फल, प्रसाद, पंच खावका, पंच मेवा, पंचामृत, जनवाई का जोड़ा, पैसे, सुपारी, बीलपत्र, जल आदि से शंकर भगवान की पूजा की जाती है। शाम को मंदिर में पूजा करके पौथी सुनकर बीलपत्ती गिलकर, पानी, दूध, ग्रहण करते है। और ककड़ी से व्रत छोड़ते है।

भादो मास की गणेश चतुर्थी

भादो की गणेश चतुर्थी के दिन भगवान गणेश की झाँकी सजाकर उनकी मुर्ति बैठाकर उनकी रोज सुबह शाम आरती की जाती है। एवं लड्डू का भोग लगाकर पान सुपारी नारियल और कलश पर नारियल रखकर उनकी स्थापना की जाती है। तथा हवन करके घी गुड की धूप छोडी जाती है। रोज सुबह शाम मीठे का भोग लगाकर उनकी पूजा की जाती है।

अनंत चवदश – अंनत चवदश के दिन हवन करके उनका विसर्जन किया जाता है। कलश का नारियल चढ़ाकर जल को पुरे घर में छिड़क कर और उनके साथ प्रसाद रखकर उनका विसर्जन किया जाता है।

चैत्र मास की अष्टमी

कोरे कपड़े पहनकर सप्तमी के दिन गेहुँ पीसना

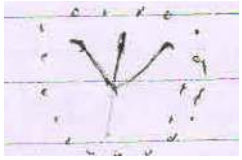

अष्टमी के दिन – सिंदूर का त्रिशूल दीवार पर बनाया जाता है। कुंकु, चावल, हल्दी, पुष्प आदि से पूजा की जाती है। गेहूँ की मुठ्ठी रखकर पूजा की जाती है। नारियल चढ़ाया जाता है। कंडे की धूप पर घी, गुड़, पंचाग धुप, गुगल छोड़ी जाती है।

भोजन – भोजन में चना दाल, रोटी, चावल, फीकी दाल, उसमे नमक, जीरा डालकर माता जी को भोग लगाते है। शेष भोजन सामग्री बच जाये तो उसे नवमी के दिन उपयोग करते है।

चैत्र मास की नवमी

नवमी माता :– पटे पर नौ कंकर घी सिंदूर लगाकर गेहूँ की मुठ्ठी के ऊपर रखते है। त्रिशुल की पूजा की जाती है। कुंकु, हल्दी, चावल से पुजा की जाती है। घी, गुड़ पंचाग, धुप, खीर, पुए, धुप पर छोड़े जाते है। नौ पुए धुप और खीर पूजन के पटे पर रखना और नवमी माता की पूजा करना। अष्टमी तथा नवमी माता के 2 नारियल चढ़ाते है। और आरती उतारते है।

भोजन :– गुड़ के पुए, खीर चावल की बनाई जाती है।

कुँवार की अष्टमी नवमी की पूजा

चैत्र की अष्टमी नवमी की तरह की जाती है।

भादो की बारस

पूजा की सामग्री :– गाज बिज माता की पूजा करने मंदिर जाते है। 5 दिए, 5 चानकी, बनाकर डोरे छोड़ते है। और नारियल चढ़ाकर प्रसाद लाते है। घर पर भी रोट रायता बनाते है। और इसको घर के सदस्य ही खाते है। कहानी सुनकर डोरा छोड़ते है।

सोलह श्राद्ध

पूनम के दिन से अमावस्या तक पुरखे मांडे जाते है। जिस दिन तिथि होती है। उस दिन ब्राम्हण को भोजन कराया जाता है। भोजन में खीर पुरी, बडे भजिए, रायता, सब्जि, खिलाकर दक्षिणा दी जाती है। तिथि के दिन तपर्ण करते है। सोलह दिन गुड़ घी की धूप छोडते है।

पितृमोक्ष अमावस्या के दिन सोलह दिन की धूप खमाई जाती है।

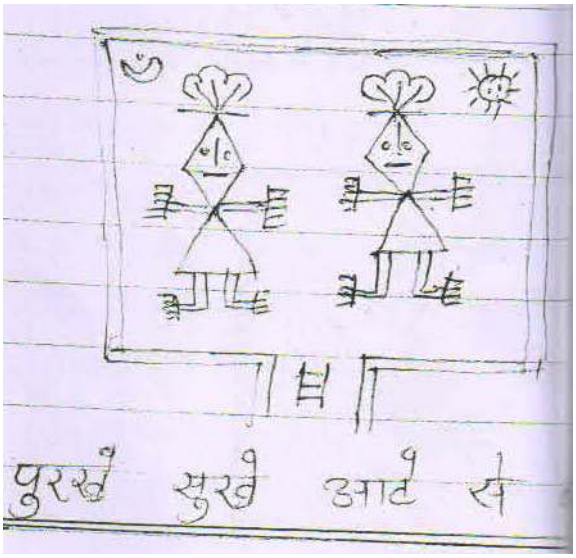

दीपावली

दिपावली :– ग्यारस से लेकर अमावस्या तक रोज शाम को दिये लगाए जाते है। धनतेरस पर लक्ष्मी माता और भगवान कुबेर की पूजा की जाती है। और रोज घर के आँगन में रंगोली बनाई जाती है।

लक्ष्मी पूजा – दिपावली के दिन दीवार पर गणेश जी बनाये जाते है। स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर उसके ऊपर पटा रखकर उस पर लाल सफेद कपड़ा बिछा कर केल के पत्ते पर बडा दीपक जलाकर लक्ष्मी जी की फोटो रखकर फुल माला से पूजा की जाती है।

पूजा की सामग्री :– पूजा में गोल सुपारी, कुंकु, चावल, हल्दी, मेंहदी, कमल का फुल, नाड़ा पंचरंगी, मिठाई, चावल की फुली, पाँच तरह की मिठाई, गुंजे, सवाली, लड्डू, नारियल, कपूर अगरबत्ती से पूजा की जाती है। 16 दिये आटे के 16 दिये मिट्टी के सुपड़े में रखकर कुंकु चावल, पुष्प, से पुजा की जाती है। पुजा करने के पश्चात् दियो को घर में सभी स्थान पर रखते है। गहनो की, वाहनो की, झाडू की भी पूजा की जाती है। पुरा सुहाग का समान भी लक्ष्मी माता को चढ़ाया जाता है।

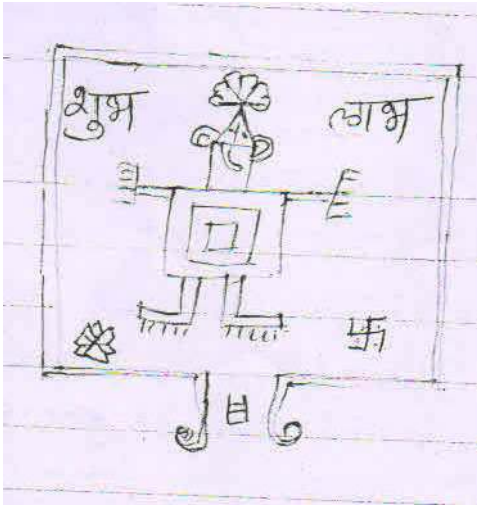

देव उठनी ग्यारस

देव उठनी ग्यारस के दिन चौक बनाकर पटा रखते है। पटे पर स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर भगवान का सिंहासन रखते है।

गन्ने की झोपड़ी बनाते है। तुलसी माता की पुजा करते है। भगवान को गन्नै, भटे, बोर भाजी, आँवला, ज्वार का पोखरा आदि कर भोग लगाते है। और पुरी सब्जी आदि का भोग लगाते है। परिक्रमा लगाते है और परिक्रमा लगाते समय बोर भाजी आँवला उठो देव सांवला बोला जाता है। और आरती कर प्रसाद दिया जाता है।

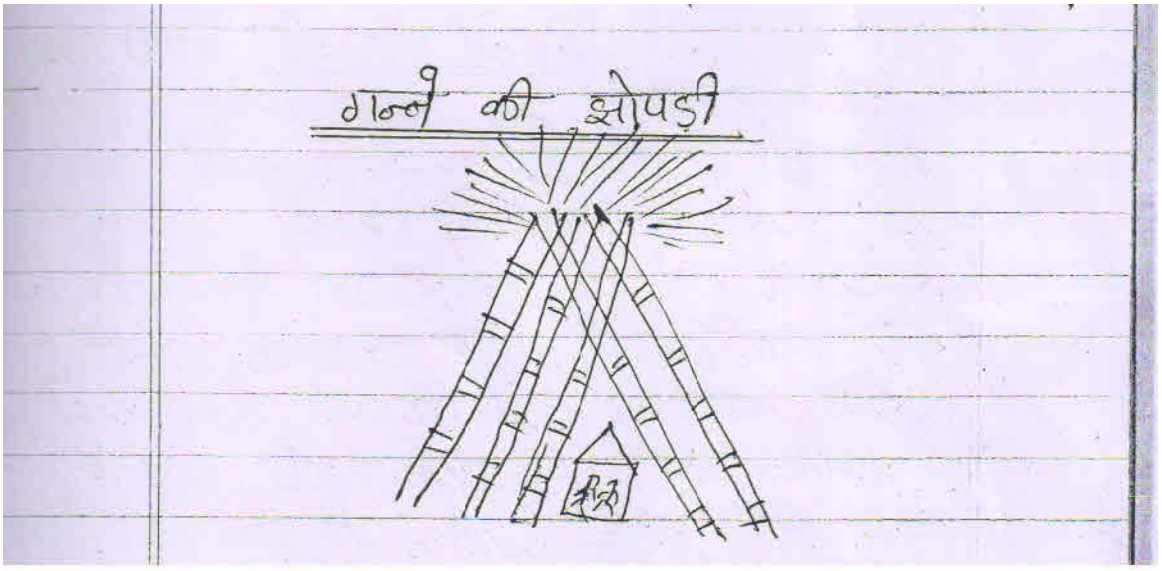

होली

पूजा की सामग्री :– कुंकु, चावल, घी, गुड़, भरगुलियै की माला, नारियल, दीपक।

खाने की सामग्री :– खीर, पुरी चढ़ाई जाती है। घी गुड़ की धुप दी जाती है। नारियल और भरगुलिये की माला चढ़ाई जाती है। और पूजा करके परिक्रमा लगाते है।

दूसरे दिन सुबह होली ठण्डी करके होली तापते है। फिर होली खेली जाती है। एक दूसरे को रंग लगाकर बधाईयाँ दी जाती है।

शीतला सप्तमी (शैली सप्तमी)

एक दिन पहले ठंडा खाना बनाया जाता है। मीठी पुरी, फीकी पुरी, चरके मीठे खूरमे दही, ज्वार के आटे की राबडी चावल काले चने गले हुए, नारियल, पैसे, कोरा ताव, कुंकु, हल्दी, मेंहदी, चावल, अष्टगंध, अबीर, गुलाल आदि से माताजी की पूजा करते है। शीतला माता की पूजा करके घर की दीवार पर हल्दी और दही मिलाकर हथिए लगाते है। स्वास्तिक का चिन्ह बनाकर कुंकु लगाते है। मंदिर मे प्रसाद चढ़ाकर नारियल लाते है।

गोपा अष्टमी

गोपा अष्टमी के दिन शाम को गाय और बछडे दोनो की पूजा की जाती है। पूरी गूझियाँ मिठाई गाय को खिलाई जाती है। कुंकु, चावल, हल्दी, अबीर, गुलाल से पूजा कर आरती की जाती है।

शादी के गणेश पूजन

गणेश पूजा :– 21 गणेश आटे में हल्दी मिलाकर बनाते है। कुंकु, चावल, हल्दी, पुष्प आदि से पूजा करते है। और बंधाँ कर अन्दर लाते है।

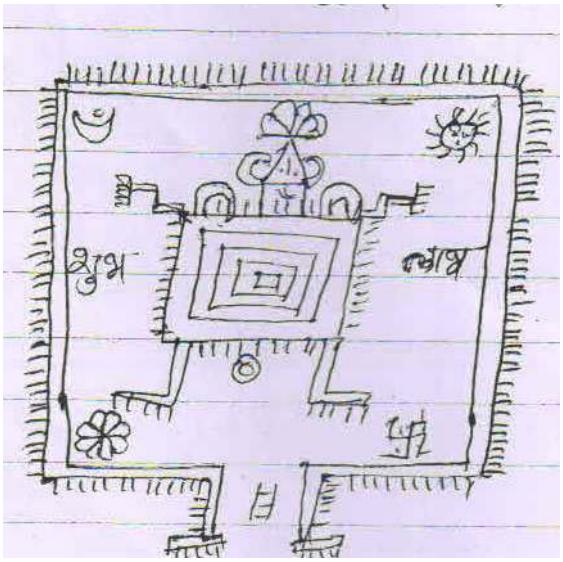

माय माता की पूजन

पूजा विधि :– सफेद कपडे पर फड बनाया जाता है। दीवार पर चिपका कर पूजा की जाती है। माय माता की कुड़ी भरी जाती है। सीधे हाथ तरफ 2½ किलो गेहूँ और उल्टे हाथ तरफ 2½ किलो चावल रखे जाते है। और बीच में एक मटकी में चावल डालकर लाल कपड़ा रखकर ऊपर दिया जलाया जाता है। 21 सफेद मटकी माता के आस पास रखते है। 4 बारीये भी रखते है। आधी माय माता मण्डप से पहले भरी जाती है। और आधी मण्डप के बाद भरते है। लापसी के 32 लड्डू, 32 पूरन पोली, 32 पूरी थाट की थाल में सजाकर भोग लगाते है। पूजा के समय चाकू में घी भरकर माता के सामने धार लगाते है। और उधो उधो बोलकर धार लगाते है।

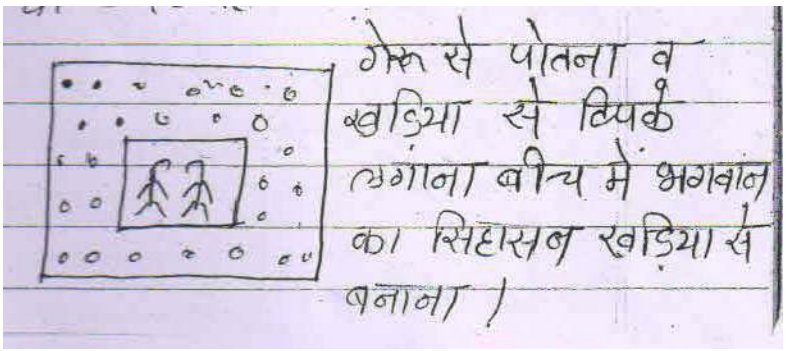

माय माता का फड

माय माता का फड सफेद कपड़े पर हल्दी से बनाया जाता है।

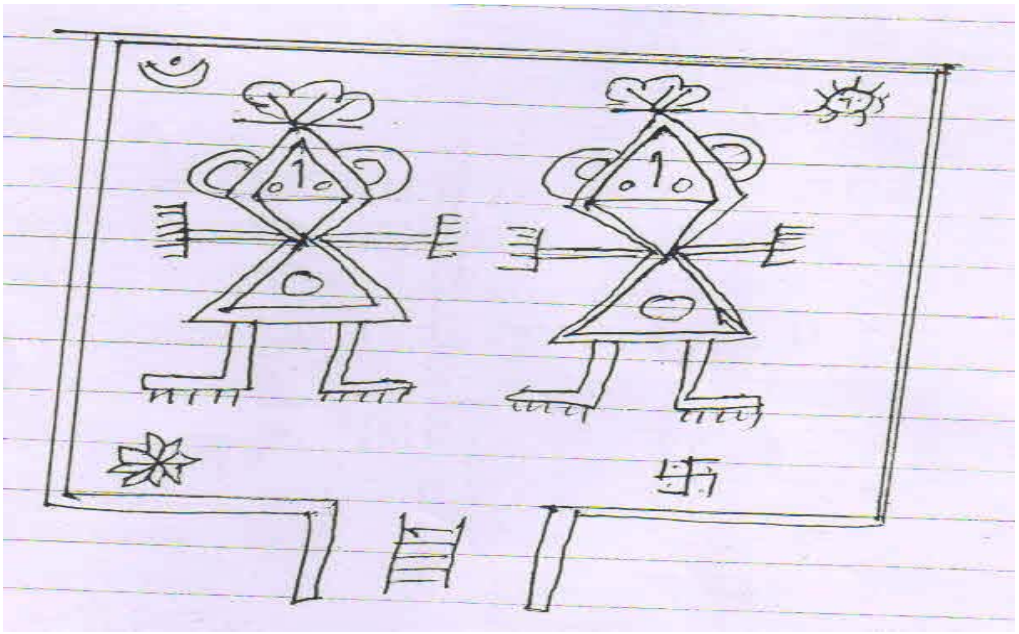

खल मिट्टी

सबसे पहले शादी में मोहरत किया जाता है। सात गठान हल्दी की बाँधकर सुपडे में गेहुँ चने की दाल चार महिलाएँ मोहरत 5 खूटी सिल्ला पर करते है। हल्दी और कुंकु घोलकर घर के कवले पर सिलक खिचते है। सात डलिया में भरकर मिट्टी लाते है। मुसला एवं मिट्टी रखकर एक चुल्हा दो थाली एक कोठी ढ़क्कन माय माता की पूजा के लिए बनाते है।

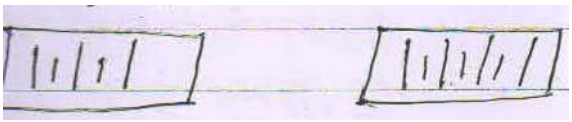

मण्डप :– मण्डप में आम के पत्तै लगाए जाते है। और बीच में मिट्टी के दिपक मे छेद करके नाडे को लपेट कर बांधा जाता है। जीजाजी सजाते है। जीजाजी को नारियल पैसे देते है। और हाथे हल्दी से पीठ पर लगाते है। उसके बाद हवन ग्यारी करके कांकड बाधे जाते है। मानक खम पूजे जाते है, महिलाए मंडप के नीचे चने की दाल, काकंड, हल्दी, पापड़, सुजा, चार कपड़े में हल्दी लगाकर चने की दाल और चार चार पुरी चारो तरफ मण्डप में बाँधते है।

विवाह में गाये जाने वाले गणेश

श्री गणेश जी

चलो गजानंद जोशी के यहाँ चला
तो अच्छी अच्छी लगन लिखावो
गजानंद, कोठारी गादी पे नोबत बाजे।

चलो गजानंद बनिये के यहाँ चला
तो अच्छी अच्छी हल्दी बुलाओ
गजानंद, कोठारी गादी पे नोबत बाजे।

चलो गजानंद बजाजी के यहाँ चला
तो अच्छा अच्छा कपडा बुलाओं
गजानंद, कोठारी गादी पे नोबत बाजे।

चलो गजानंद सुनारया के यहाँ चला
तो अच्छा अच्छा गहना बुलाओं
गजानंद, कोठारी गादी पे नोबत बाजे।

चलो गजानंद माली के यहाँ चला
तो अच्छी अच्छी मेंहदी बुलाओं
गजानंद, कोठारी गादी पे नोबत बाजे।

चलो गजानंद हलवाई घर चला
अच्छी अच्छी मिठाई बुलाओं
गजानंद, कोठारी गादी पे नोबत बाजे।

चलो गजानन गजानंद, कोठारी गादी पे नोबत बाज, नोबत बाज इन्द्रगढ़ गाजे
तो झनन झनन झालर बाजे गजानंद कोठारी(टेक)

विवाह के कूकड़ा

राजा ऊँची अटारी चितरंगी जी पर डालीया नवरंगी घाट, हरि बोलयो दीवान जी रो कूंकडा जहाँ सुतिया गजानन्द जी देवरा हरि बोलो बहु रिद्धि सिद्धि जाय जगविया जागो जागो बेन्या बाई रा वीर हरि बोलो दीवान जी रा कूकड़ा वे तो उठिया ने अपनी पांगा सांवरियाँ। उनकी पांगा पे हीरा मोती लाल। हरि बोलो

देवता तुम बिन सुरज उगयो नी
नही छुटे गयया रो बन्द
हरि बोलो दीवान जी रा कूंकडा।

बधावो

चटा चट नारियल चटके बधावो म्हारा अंगना में डोले
पहला बधावो म्हारा ससुरा ने झेलियो
सासु ने रंग से बधायो, बधावो म्हारा आंगन में डोले।
दुसरा बधावो म्हारा जेठ ने झेलियो
जेठानी ने लियो है बधायो, बधावो म्हारा आंगन में डोले।
तीसरा बधावो म्हारा देवर ने झेलियो
दिरानी ने लियो है बधायो, बधावो म्हारा आंगन में डोले।
चोथा बधावो म्हारा नन्दोई ने झेलियो
नन्द ने लियो है बधायो, बधावो म्हारा आंगन में डोले।
पाँचवा बधावो म्हारा सायब ने झेलियो
हमही ने लियो है बधायो, बधावो म्हारा आंगन में डोले।
छठवो बधावो म्हारा पोता ने झेलियो
कुलबहु ने लियो है बधायो, बधावो म्हारा आंगन में डोले।

भेरू जी का गीत

जद भेरूजी काकड़ आया, काकड़ आसन माँडयों जी।
जद भेरूजी गोया में आया, गोया मे आसन माँडयों जी।
वही को आसान, वही सिंधासन वही भेरूजी रमरया जी।
डावी भुजा पर नागन झुले, दुनिया दर्शन आया जी।
जद भेरूजी काकड़ आया, काकड़ आसन माँडयों जी।

हनुमान जी का भजन

हार गया हनुमान, अब मैं हार गया
मेरी नयया है मझधार अब मै हार गया

1 संकट हारी शिव अवतर, पिता पवन अंजनी महतारी
अंजनी माँ के लाल, अब मै हार गया
हार गया हनुमान, अब मैं हार गया

2 संकट ने मुझे घेर लिया है, पापो ने लीन किया है,
कर मेरा उद्धार, अब मैं हार गया
हार गया हनुमान, अब मैं हार गया।

3 ठोकर खाई है मैने जग की धीर नही मेरे मन में
धीरज दो हनुमान, अब मैं हार गया
हार गया हनुमान, अब मैं हार गया

4 व्याकुल है मेरा मन भारी धीर बंधाओ
संकटहारी सुन लो मेरी, अब मैं हार गया
हार गया हनुमान, अब मैं हार गया

5 आशा सबकी पूर्ण कर दो, अभय दान दो निर्भय
कर दो ओ पवन पुत्र हनुमान, अब मैं हार गया
हार गया हनुमान, अब मैं हार गया

6 संकट सबके काटो बाबा, दया करो दीनो के दाता
भक्त करे पुकार, अब मैं हार गया,
हार गया हनुमान, अब मैं हार गया

संकलनकर्ता
ज्योति झॅवर
इछावर

झंवर गोत्र के रीतिरिवाज

संकलनकर्ता

श्रीमती सपना तरूण झंवर

9425928475

बच्चे का जन्म :– जन्म के बाद बच्चे को नाडे की जेल बनाकर उसके गले में पहना देते है। तथा 5वें महिने में चाँदी की बेडी (कडा) बनाकर पैर में पहना देते है। फिर कभी भी उस बेडी को सिंगाजी महाराज के यहाँ चढा कर बच्चे का तौला दान करते है।

जलवाय पूजा :– 13 माह या सवा महिने का सूतकाला पूजन करते है, इसमें जल देवी की पूजा करते है। ऑगन में हल्दी से घर बनाकर 11 या 18 पूतले बनाकर पूजा करते है। और नारियल चढा देते है।

मुंडन :– बच्चे का मुंडन झंवर परिवार में पहले चॉदगढ में होता था लेकिन आजकल में पहले चॉदगढ में होता था लेकिन आजकल घर में ही भिलट देव का फोटो सामने रखकर करते है। मुंडन में आटे की कच्ची रोटी बनाते है। बहन रोटी के उपर लाल कपडा रखकर उस पर बाल झेलती है। प्रसाद के लिये थोडा सा मोदक बनाते है, और उसका नैवेध बताते है।

अष्टमी नवमी पूजन :– झंवर परिवार में देवी 2 बार पुजते है, चैत्र व कुवार में चैत्र की देवी के साथ भेरू पुजन तथा कुवार की देवी के साथ आसन पूजन होता है। आसन पूजन शरद पूर्णिमा के दिन शाम को होता है। और भेरू पुजन चैत्र का 4 माह बाद होता है।

अष्टमी :– सबसे पहले जहॉ पुजन करना है उस कौने मे साफ करके जमीन पर 1–2 मुठ्ठी गेहुँ रखकर उस पर 9 पथवारी (गौर) रख देते है। फिर आम की डगाल तथा बिना सुपारी दुर्वा चढा देते हैं। कंकु चावल से पुजा कर नारियल चढा देते है। तत्पश्चात् कंडे के उपर गुगल की धूप देते है।

अष्टमी के दिन चने की दाल, चावल व रोटी बनाते है। दाल को बघारते नहीं है तथा हल्दी भी नही डालते है। और लाल मिर्च को पानी मे भिगोकर उसको जीरा व नमक डालकर पीस लेते है।

दाल को बनाने के बाद गाढी दाल एक कटोरी में अलग रख देते है। नवमी पुजा के लिये। यदि बच्चे को बुटाना हो तो या नई बहु को बुटाना हो तो उनके हाथ से नारियल चढवाकर पूजा करवा देते है। बच्चे को सफेद कुर्ता पजामा जिसमे कुर्ते के पीछे लाल कपडे से बने चॉद तारे टांक देते है, वो पहनाते है। तथा हाथ व पैरो में चांदी के कडे और गले मे चॉदी की तागली पहनाते है, आरती करके भगवान को भोग लगाकर अर्पण कर तत्तपश्चात् सभी परिवार के सभी सदस्य एक साथ भोजन ग्रहण करते है।

नवरात्री की नवमी पुजा :– नवमी की पुजन के लिये गेहूँ की मुठठी को थोडा सा हटाकर चावल की मुठठी रखते है। पथवारी को धोकर चावल पर रखकर उसके उपर दुसरी आम की डगाल तथा दुर्वा रख देते है। कंकु चावल से पुजा कर गुगल की धूप रखते है। पैसे और नारियल चढा देते है। नवमी के दिन खीर व पूए रखकर अष्टमी की दाल रख लेते है

तथा एक दुसरी थाली में 9 पुए रखकर सबका नैवेध बताते है। इन 9 पुओ को खाते फिर आरती करके खाना खाते है।

शाम के पहले देवी को विर्सजित कर देते है। अष्टमी व नवमी को गेहूँ चावल आम की डगाल, दुर्वा, धूप सभी को एकत्रित कर एक डिब्बे में भरकर नदी में खमा देते है। और उस स्थान पर घी का दीपक जला देते है।

आसन पूजन :– इस पूजा में भी एक कौने में 1–2 मुठठी गेहूँ रखकर उस पर तॉबे का लौटा रखते है लौटे में पैसे सुपारी डाल देते है लौटे को तागली पहनाते है। लौटे में पानी भरकर 8 चम्मच घी (छोटे) घी डाल देते है। चारो कौनो पर 4 पुरी उसके उपर दिया आटे का लड्डू और 1 बेसन का सुरमा रखते है। इसी प्रकार एक प्लेट में लौटे के उपर व एक लौटे के सामने रखते है आरती के समय सभी दियो को जला देते है फिर आरती के समय सभी दियो को जला देते है फिर आरती करके खाना खाते है।

त्यौहार :– दिपावली, दशहरा, होली, राखी, नागपंचमी सितला माता पुजा, गणेश चतुर्थी, हरतालीका तीज, आन्नद चतुदुर्शी, करवा चतुर्थी सभी त्यौहार मनाये जाते है।

विवाह :– विवाह में भी मुर्हत, गणेश पुजन माता पुजन होता है। विवाह के समय भी देवी पुजन होता है। उसमें पुरण पोली, लड्डु, दिया, पुरी, चावल, की पुरी उडद की पुरी बनाते है। सभी को 32–32 बनाते है। सभी सामग्री को एक बडी सी थाल मे रखते है। देवी पूजन के लिये जहॉ पुजा करना हो वहीं दीवार पर गेहरू से चौकोर कर लेते है। उसे उसमें कंकु से दो छोटे छोटे पुतले बना देते है तथा आजु–बाजु थोडे से चावल भिगोकर उसे पीस कर उसमें जरा सी हल्दी डालकर उस घोल से अंगुलियों से टीपकी लगा देते है। लडका या लडकी जिसकी भी शादी हो उसे नहलाकर वहॉ लाते है उसके हाथो से सामने पत्तल पर गेहूँ व चावल मिलाकर उसे रखवाते है। तथा पुजा करवाकर कुटुंब के सभी लोग पुजा कर नारियल व पैसा चढाते है। उसके बाद उस बडी परात को घर के 4 बडे लोग मिलकर पकडकर 4–5 बार सामने देवी के घूमा देते है व आरती करके सभी प्रसाद सभी लोगो में बॉट देते है।

सपना तरूण झंवर

।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

काबरा गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार

आषाढ़ –गुरू पूर्णिमा (भेरू महाराज की पूनम)

पूजा – सामग्री – गेहूँ की मुट्ठी पर 5 कंकर रखकर घी सिंदूर लगाकर रखते है। और गणेशजी और भेरू महाराज की पूजा की जाती है। कपूर, कुमकुम, अष्टगंध, चावल, अगरबत्ती, घी का दीपक, दो धूप गणेशजी और भेरू महाराज की रखते है, उस पर घी गुड़ छोड़कर पानी फेरते है। और नारियल चढ़ाया जाता है।

खाने की सामग्री – दाल, चावल, कड़ी, बॉटी, 5 गुड़ के लड्डू, 5 बॉटी, भेरू महाराज को चढ़ाया जाता है। और दो कंडे की धूप पर घी – गुड़ और खानें का समान छोड़कर कपूर से आरती की जाती है। और नारियल चढ़ाया जाता है। और धूप शाम को विसर्जित की जाती है। दो कन्याओं को बुलाकर सती पूजी जाती है। उनके पैर हल्दी से पूजकर उनको प्लेट में रखकर 5 पूरी, 5 लड्डू, और नारियल (प्रसाद) दिया जाता है।

सती माता और भेरू महाराज के गीत गाए जाते है।

रक्षाबंधन (राखी)

पूर्णिमा के दिन बीर को राखी बांधी जाती है।

पूजा सामग्री – मिठाई, नारियल, पूजा का सामान पन्नी वाली राखी ले जाकर शीतला माता के मंदिर में बीर को राखी बांधकर नारियल रखकर आरती उतारकर आ जाते है। फिर घर पर भगवान और सभी घर की वस्तुओं पर राखी बांधी जाती है। फिर बहनें अपने भाइयों को राखी बाँधती है।

जन्माष्टमी

पूजा सामग्री – पूजा का सामान और कृष्ण भगवान का झूला सजाकर उनको नए वस्त्र पहनाए जाते है। फिर रात को 12 बजे आरती की जाती है। और प्रसाद में ढेचा, पंजेरी, पंचामृत फल आदि भगवान श्री कृष्ण को चढ़ाते है। और घी का दीपक लगाकर आरती गाई जाती है। और फिर प्रसाद लेकर अपना व्रत खोलतें है।

हरतालिका तीज

दूज के दिन रात को 12 बजे ककड़ी खाकर व्रत लिया जाता है। और तीज के दिन ककड़ी से व्रत तोड़ते है।

पूजा सामग्री – कुमकुम, चावल, सुहाग का समान, कपड़ा, फल, प्रसाद, पंच खावका, पंच मेवा, पंचामृत, जनवाई का जोड़ा, पैसे, सुपारी, चढ़ाया जाता है। शाम को मंदिर में पोथी सुनकर पौथी की पूजा करके फिर शंकर भगवान, पार्वती माता, गणेश जी की पूजा करकें बील पत्र गिलकर पानी दूध गृहण करते है। और ब्राम्हण को सूखा खाने का सामान (सीदा) देते है। इस प्रकार यह व्रत किया जाता है।

भादों की गणेश चतुर्थी –

भादों की गणेश चतुर्थी के दिन गणेश भगवान की झाँकी सजाकर उनकी मूर्ति बैठाकर उनकी रोज सुबह शाम को आरती की जाती है। एवं लड्डू का भोग लगाकर, पान, सुपारी, नारियल और कलश पर नारियल रखकर उनकी स्थापना पूजा की जाती है। एवं हवन करकें घी गुड़ की धूप छोड़कर उनकी स्थापना की जाती है। रोज सुबह शाम मीठें का भोग लगाकर उनकी पूजा की जाती है। और

अंनत चवदश– के दिन हवन करकें उनका विसर्जन किया जाता है। कलश का नारियल चढ़ाकर जल को घर में छिड़कर और उनके साथ प्रसाद रखकर उनका विसर्जन किया जाता है।

बड़े महिने की गणेश चतुर्थी

(साल भर में चार)

पूजा सामग्री – कुमकुम, चावल, अष्टगंध, नारियल, घी, गुड़, कपूर, गेहूँ की मुट्ठी, फूल, गुड़ के लड्डू।

खाने की सामग्री – दाल, चावल, कड़ी, बॉटी, गुड़ के लड्डू बनाकर गेहूँ की मुट्ठी पर गणेशजी रखकर 5 लड्डू का भोग लगाकर तुलसी पत्र रखकर घी गुड़ की धूप छोड़कर नारियल चढ़ाकर कपूर से आरती होती है। जल गमलें में डालकर शाम को धूप खमाई जाती है। इस प्रकार गणेश चतुर्थी की पूजा की जाती है।

ग्यारस –

ग्यारस के दिन व्रत किया जाता है। शाम के समय डोल निकलते है। यशोदा माता की पूजा जाती है। और चावल एवं फल से गोद भरी जाती है। फल फूल चढ़ाकर कृष्ण भगवान की पूजा की जाती है।

भादों की बारस–

पूजा सामग्री – गाज, बिज माता की पूजा करने मंदिर जाते है। 5 दिए, 5 चानकी बनाकर डोरें झोड़ते है। और नारियल चढ़ाकर प्रसाद लाते है। घर पर भी रोट– रायता बनता है। और इसको घर के सदस्य ही खातें है। बाहर के व्यक्ति को नही दिया जाता है।

सोलह श्राध्द

पूनम के दिन से अमावस्या तक पूरखे मांडते है। जिस दिन तिथि होती है। उस दिन ब्राम्हण को भोजन कराया जाता है। भोजन में खीर पूरी, बड़े भजिए रायता सब्जि खिलाकर दक्षिणा दि जाती है। तिथि के दिन तर्पण करते है। सोलह दिन गुड़ घी की धूप देते है।

पितृ मोक्ष अमावस्या – के दिन सोलह दिन की धूप खमाई जाती है।

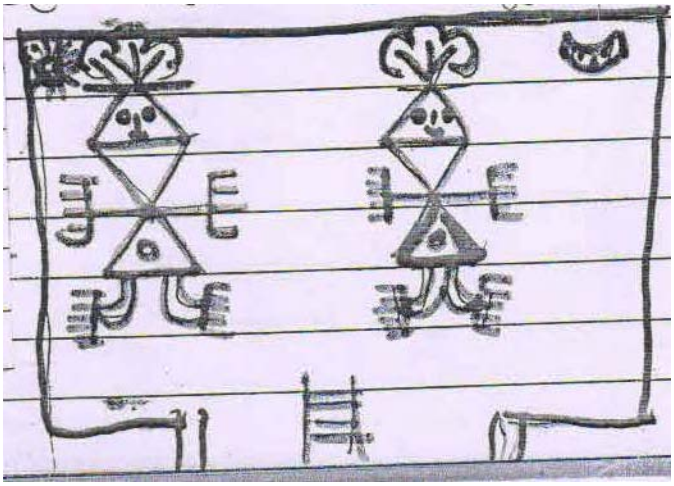

क्वार और चैत्र की अष्टमी

नवरात्री – नवरात्री के दिनों में किसी भी एक दिन कन्या भोजन कराया जाता है। और नवरात्री की अष्टमी को आठम माता की पूजा की जाती है।

पूजा सामग्री अष्टमी –

5 कंकर, आम की डाली, मेढ़ापाती, गेहूँ की मुट्ठी, गणेशजी मूर्ति, सिंदूर, कुमकुम, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, अष्टगंध, चावल, कपूर, घी का दीपक, कंडे की दो धूप, नारियल, घी, गुड़।

खानें का सामान – गेहूँ धोकर और गेहूँ पिसवाकर रखा जाता है। दाल, चावल, कड़ी, हल्वा, पूरी, मीठें भजिए, खीर, गुड़ के लड्डू 5, बॉटी 5, 9 पूरी घी से बनी दो खूट पर पूरी रखी जाती है। इस प्रकार दो धूप पर यें सामान छोड़कर नारियल चढ़ाया जाता है। और आरती की जाती है। एक गणेश भगवान की और एक अष्टमी माता की धूप दी जाती है। अष्टमी के दिन बच्चों को बुलाते है। सिक्के के ऊपर खीर रखकर चटाते है।

अष्टमी माता

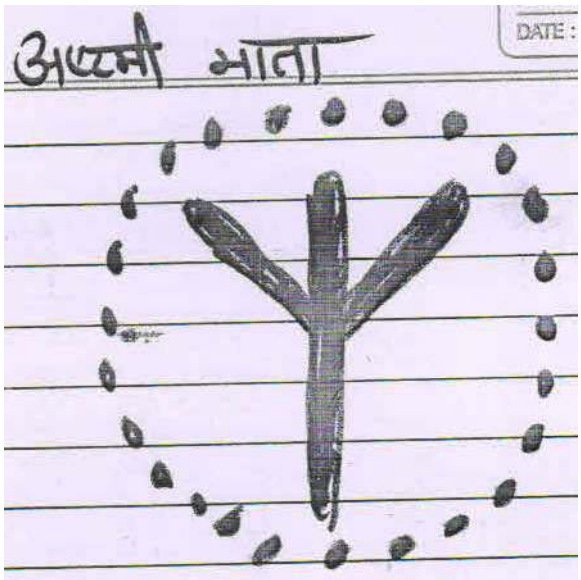

नवमीं माता

चैत्र क्वार की नवमी माता

पूजा सामग्री – नारियल, अगरबत्ती, घी, गुड़, 5 कंकर, आम के पत्ते, कुमकुम, चावल, सिंदूर, हल्दी, कपूर, दो धूप गणेश जी और नवमी माता की।

खाने की सामग्री – मीठें गुड़ के पुएँ घी से बने 9, खीर चावल की बनी हुई। दो धूप पर घी और गुड़ और खीर पुएँ छोड़े जाते है। और माताजी के सामने नौ पुएँ और खीर रखी जाती है। नारियल चढ़ाकर आरती होती है। और जल गमले में डाल देते है। घर में जल छिड़कर गमले में डाल दिया जाता है। शाम को 5 बजें अष्टमी नवमी की धूप नदी में विसर्जित की जाती है। रात नही रखते है। उसके बाद उस जगह पर जहाँ पूजा होती है। वहा पर स्वास्तिक बनाकर दीपक लगा देतें है। इस प्रकार चैत्र और क्वार की अष्टमी और नवमी माता की पूजा एक जैसी होती है।

दशहरा

दशहरे कें दिन सुबह नीलकंठ के दर्शन करने के बाद घर में मिठाई, भजिए आदि बनाए जाते है। और शाम को दशहरा मैदान जाते समय घर की कन्याएँ तिलक करकें गाड़ियों की पूजा करती है। और सभी बड़े बुजुर्ग बच्चे दशहरा जीतने जाते है। और खेड़ापति को नारियल चढ़ाते है। और घर पर सभी लोगो को तिलक लगाया जाता है। और सभी एक दूसरे के घर पर बड़ो का आशीर्वाद लेकर आते है। और एक दूसरें को बधाईयाँ देते है। इस प्रकार दशहरा मनाया जाता है।

दिपावली

दशहरे के 20 दिन बाद दिपावली मनाई जाती है।

दिपावली पर ग्यारस से लेकर अमावस्या तक रोज दीपक लगाएं जाते है। धनतेरस पर लक्ष्मी माता और कुबेर भगवान की पूजा की होती है। और दशहरे से लेकर दिपावली तक रोज सुबह घर के ऑगन में रंगोली बनाई जाती है।

पूजा सामग्री – दिवाल पर गणेशजी बनाए जाते है। और पूजा का सारा सामान – कुमकुम, चावल, घी का दीपक, फूल, धानी, और कमल का फूल, और 5 तरह की मिठाईयाँ एवं 5 तरह के फल, गुंजा संजोरी आदि सारा सामान चढ़ाया जाता है। और इस प्रकार पूजा के समय 16 आटें के और 16 मिट्टी के दीपक सुपड़े में रखे जाते है। और पूजा के समय इनको लगातें है। और सारें घर में रखे जाते है। कलश और गहनों की पूजा की जाती है। और दिवाल पर गणेश जी को चाँदी का सिक्का चिपकाया जाता है। इस प्रकार गणेश जी, लक्ष्मी जी और सरस्वती माता की पूजा आरती करने बाद पटाखे छोड़े जाते है। और फिर कुएँ और मंदिर में दीपक रखकर आते है। इस प्रकार एक दूसरे को बधाइयाँ देकर यह त्यौहार धूम धाम से मनाया जाता है। और घर के वाहनो की पूजा की जाती है। और बड़ो का आशीर्वाद लेते है।

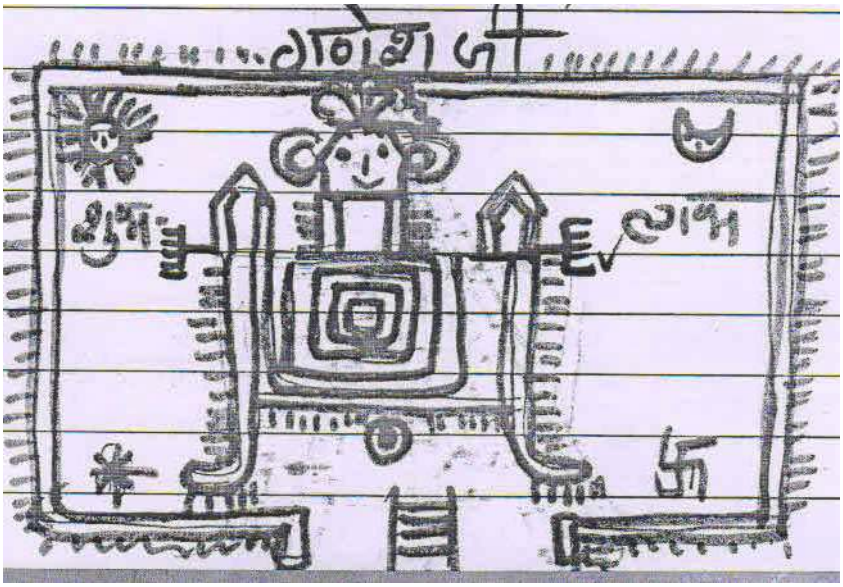

देव उठनी ग्यारस

देव उठनी ग्यारस के दिन शाम को 5 गन्ने की झोपड़ी बनाई जाती है। उसके अन्दर भगवान का सिंहासन रखकर पूजा कि जाती है।

पूजा सामग्री – मिठाईयाँ, फल–फूल, घी का दीपक और तुलसी माता का गमला रखकर भगवान को बोर, भाँजी, आँवला चढ़ाया जाता है। और कहा जाता हैं। बोर, भाँजी, आँवला, उठो देव सावलाँ।

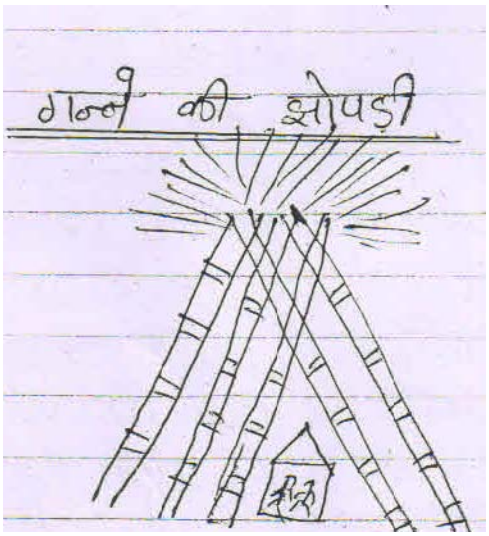

(सवासनी)

वैशाख का बड़ा महिना (उजाली) में 10 सवासनी जिमाई जाती है।

पूजा सामग्री – पान, लाख, चार चार सिंघाड़े, लौंग, इलायची, नारियल की चिढक मेंहदी, लगाई जाती है। बूढ़ी–हाड़ी के गीत गाए जाते है।

खानें की सामग्री – पूरी, लाप्सी, खाजें, दाल–चावल–कड़ी, सब्जि, लौंजी, खाजे, पूरी से चार चार खूँट भराए जाते है। दो पूरी, दो खांजे के घी गुड़ की दो धूप छोड़ी जाती है। आटे से बूढ़ी–हाड़ी–माड़ी जाती है। उनके सामने दो धूप छोड़कर नारियल और पूजा का सारा सामान चढ़ाकर बूढ़ी हाड़ी और गणेश जी की धूप छोड़ी जाती है। और शाम को विसर्जित की जाती है।

बूढ़ी–हाड़ी

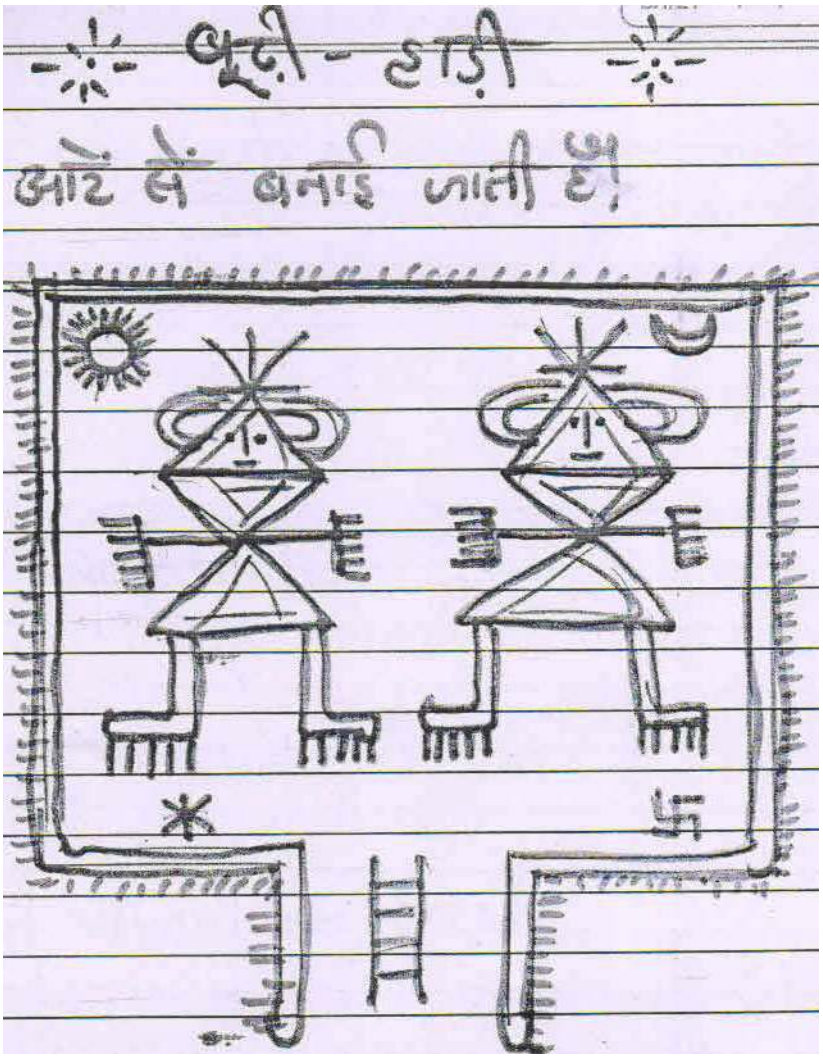

होली

पूजा की सामग्री – कुमकुम, चावल, घी गुड़, धूप, भरगुलिया की माला, नारियल, दीपक घी का

खानें की सामग्री – खीर, पूरी, होली की पूजा में धूप पर गुड़ घी छोड़ते है।

खीर पुरी चढ़ाई जाती है। नारियल और भरगुलिया की माला चढ़ाई जाती है। और पूजा करके परिक्रमा लगाते है। दुसरे दिन सुबह होली ठंडी करके होली तापते है। फिर होली खेली जाती है। और एक दुसरे को रंग लगाकर बधाईयाँ दी जाती है।

शैली सप्तमी – माताजी

एक दिन पहले ठंडा खाना बनता है। और एक दिन पहले हाथो में मेंहदी लगाते है।

खाने में – मीठी पूरी, फीकी पूरी, चरके मीठें खूरमें, दही, ज्वार के आटे की राबड़ी, चावल, कालें चने गलें हुए, नारियल, पैसे, कोरा दो ताव और पूजा का सामान कुमकुम, हल्दी, मेंहदी, चावल, अष्टगंध, अबीर, गुलाल आदि।

शीतला माता कि पूजा करके घर की दिवाल पर हाथिए लगाते है। और मंदिर की दिवाल पर हल्दी और दही मिलाकर हाथिए लगाते है। स्वास्तिक बनाकर कुमकुम लगाते है। मंदिर

में प्रसाद चढ़ाकर नारियल लातें है। इस दिन ठंडा खाना खातें है। और ठंडे पानी से नहाते है।

महाशिवरात्री –

मंदिर में जाकर भगवान भोलें की पूजा की जाती है। और व्रत किया जाता है।

पूजा की सामग्री – फल – फूल, पत्तियों, नारियल, घी का दीपक, चन्दन से पूजा की जाती है।

नाग पंचमी :– नागपंचमी के दिन दिवाल पर नारियल की नट्टी को जलाकर कच्चे दूध में घोलकर दिवाल पर नाग महाराज बनाए जाते है। और कूलर (आटा, घी, शक्कर) कच्चा दूध, नारियल, घी का दीपक, फूल आदि चढ़ाकर पूजा की जाती है। और गुड़ घी की धूप देतें है। और शाम को गीत गाए जाते है।

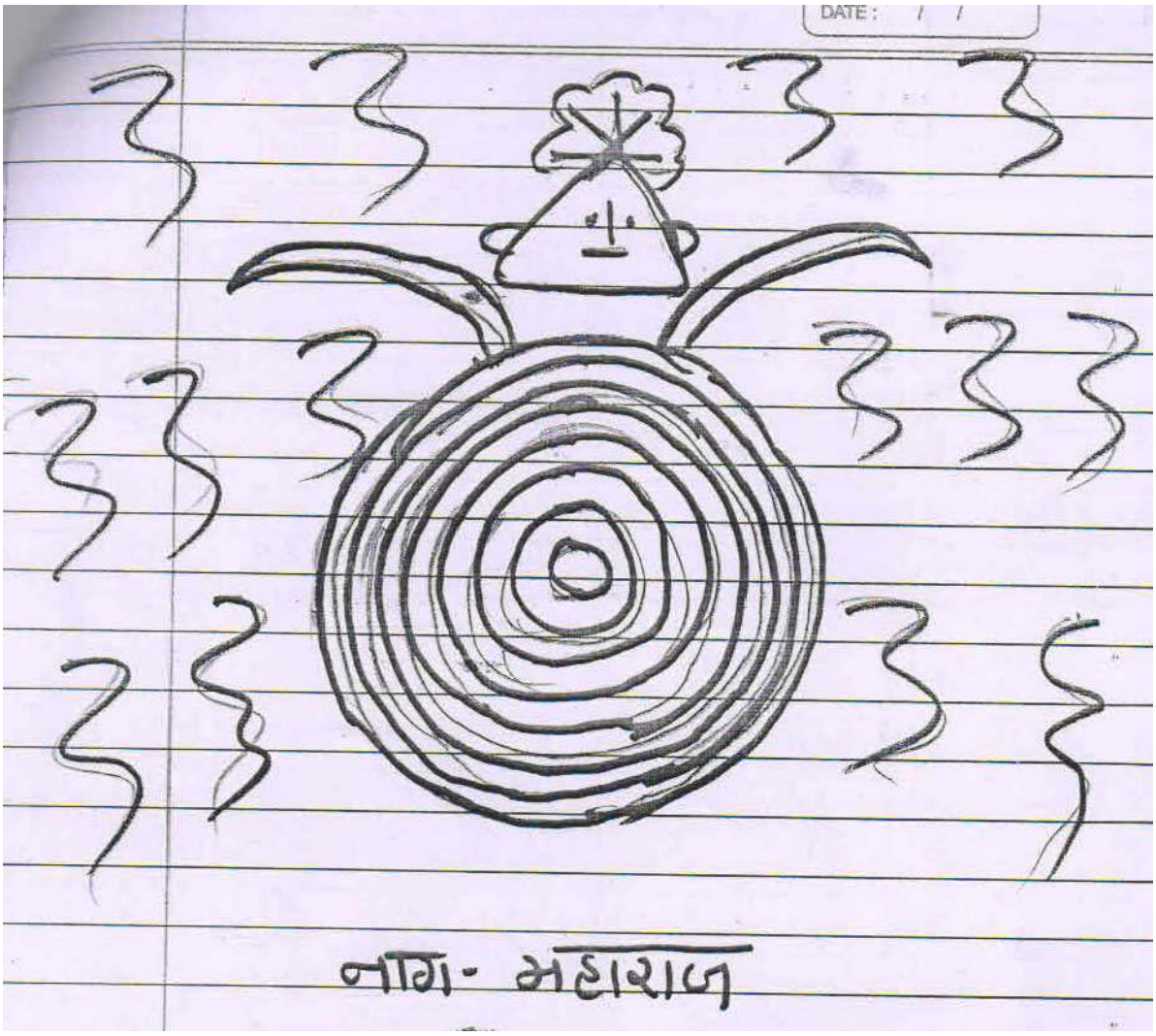

चोर माता – दो बच्चो की पूजी जाती है। या चार बच्चो की

चोर माता रात को 12 बजे के बाद अंधेरी में पूजी जाती है।

पूजा सामग्री – मीठी पूरी, फीकी पूरी, मीठी गुनी, चावल, दो ताव, नारियल, चार सिंघाड़े, चार लौंग, चार इलायची, चार पान, चार सुपारी, पूजा में दीपक नही ले जाते है। और कुमकुम, चावल, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, अष्टगंध, आदि। इसमे पूजा का खाना सिर्फ मम्मी पापा खाते है। और किसी को नही दिया जाता है। ये शादी से पहले पूजते है। सिर्फ दो या चार की पूजा की जाती है। तीन की नही शादी में दिन में पूजी जाती है।

उसमें भी चोर माना जैसा सामान बनातें हैं। इसमें दीपक लगाया जाता है। और धूप देते है। पूजा का सारा समान चढ़ाया जाता है। सिर पर जिसके बच्चे की पूजते है, उसकी मम्मी सिंगड़ी में अंगारा रखकर शीतला माता मंदिर लें जाती हैं।

चोर माता का खाना बच्चे मम्मी पापा दादा दादी खाते है। देवरानी जेठानी नही खाती है। जिसके बच्चे की माता पूजी जाती है। वह खा सकते है।

शादी में गणेश पूजन

गणेश पूजन में पूजा की सामग्री –

पूजा का सारा सामान दीपक, नारियल, धूप, फूल, अगरबत्ती।

खाने की सामग्री –

5 लड्डू, 5 खाजें, दूध चावल से पूजा की जाती है। दिवाल पर गणेश जी, गुलाबी रंग से बनते है। धूप छोड़कर दुल्हा दुल्हन पूजा करके सारें परिवार के सदस्य पूजा करतें है। धूप एवं नारियल चढ़ाते है। एवं आरती उतारते है।

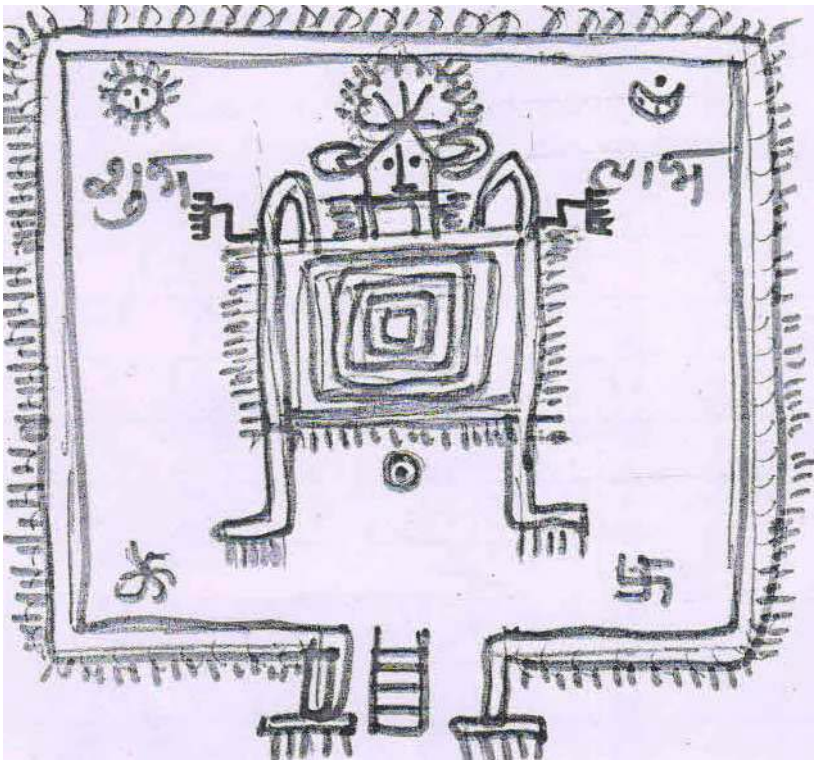

शादी में माइ माता की पूजा

पूजा सामग्री – पूजन का सारा सामान सफेद कपड़े पर फड़ बनाए जाते है। दिवाल पर चिपकाकर पूजा करतें है। चार चार करवे, एक एक दीपक रखकर फड़ के आस पास रखे जाते है। एक घी का दीपक लगाया जाता है। करवे के आस पास एक तरह सवा किलो गेहूँ और सवा किलो चावल रखें जाते है। आधी माय माता मण्डप से पहले भरते है। आधी मण्डप के बाद माइ माता के 32 दीपक आटें के बनते है। और उनमें घी फुलबत्ती रखते है। और 32 जुड़े खाजे बनते है। थाली में खाजे रखकर दीपक जमाते है। जिसकी शादी होती है। उनको नहलाकर आँख बंद करके जियाजी हाथ पकड़कर लाते है माइ माता के पास आकर दीपक लगाकर मम्मी पापा को देखते है। सभी सदस्य माइ माता की पूजा करते है। आँख बंद करके पहले पस भर कर चावल पीछे फेकतें है। फिर उसके मम्मी

पल्ले में झेलती है। फिर आँख खोली जाती है। पूजा के बाद दूध भात खाते है। जिसकी शादी होती है। वही खाता है।

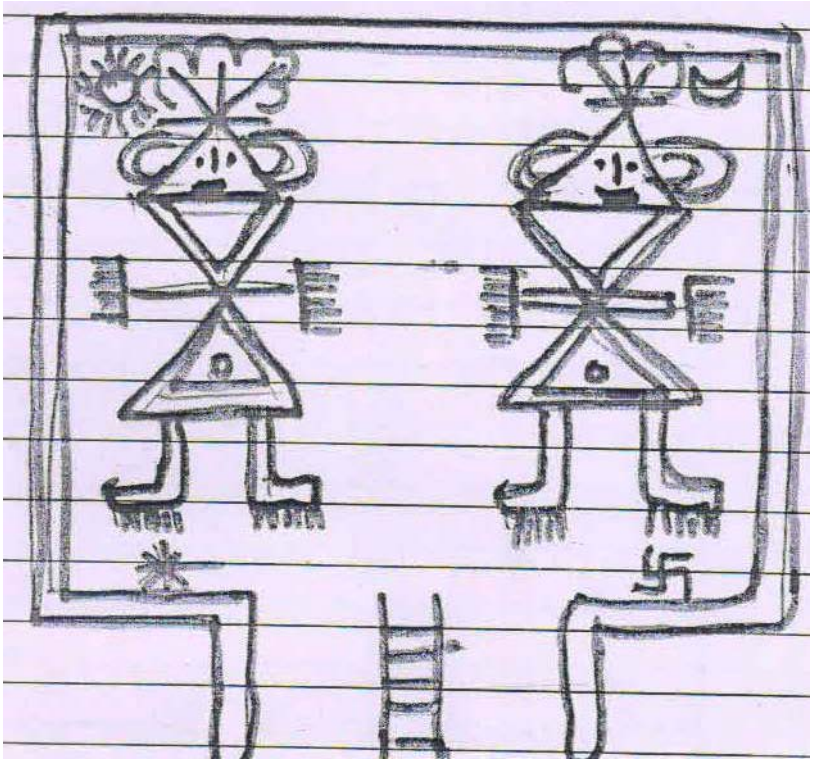

मण्डप –

मण्डप में आम के पत्ते लगाए जाते है। और बीच में बड़े मिट्टी के दीपक में छेद करके नाड़े को लपेट कर बाँधा जाता है। जीयाजी सजाते है। जीयाजी को नारियल पैसे देतें है, और फिर हाथिए हल्दी से लगाते है। उनके बाद हवन ग्यारि करके काफॅन बाँधते है। मानक खम पूजें जाते है। महिलाएँ मण्डप के नीचें चने की दाल, काकड़े, हल्दी पापड़, सूजा, चार कपड़े के टुकड़े में हल्दी लगाकर, चने की दाल और चार चार पूरी चारों तरफ मण्डप में ऊपर बाँधते है। उसके बाद मामेरा होता है।

मामेरा –

जिसकी शादी होती है। उसके मामा पक्ष कपड़े लेकर आते है। सबसे पहले मण्डप ढ़ाका जाता है। फिर मामेरा होता है।

जमाल –

सवासनी जिमाकर बच्चो के जमाल उतारे जाते है। जमाल नदी में खमाए जाते है।

खल मिट्टी –

सबसे पहले शादी में मोहरत किया जाता है। सात गठान हल्दी की बाँधकर सुपड़े में गेहूँ चने की दाल रखकर चार महिलाएँ मोहरत 5 खूँटी सिल्ला पर करती है। हल्दी और कुमकुम को (दोनो को मिक्स कर) घोलकर घर के कवले पर सिल्क खिचती है। सात डलियाँ में भरकर मिट्टी लाते है। मूसला एवं मिट्टी रख कर मिट्टी डालकर एक महिला

चूल्हा, दो थाली, एक कोठी और उसका ढक्कन माइ माता की पूजा के लिए बनाते है। मिट्टी को मम्मी झेलती है। जो पड़छती है।

शादी में माता पूजन

शादी में दिन में माता पूँजी जाती है। गाते बजाते पूजी जाती है। इसमें भी चोर माता जैसा सामान बनाते है। इसमें दीपक लगाया जाता है। और धूप देते है। पूजा का सारा सामान चढ़ाया जाता है। सिर पर जिसके बच्चे की पूजते है। उसकी मम्मी सिगड़ी में अंगारा रखकर शीतला माता मंदिर ले जाती है।

खाने का सामान – मीठी पुरी, फीकि पूरी, मीठी गुनी, चावल, दो ताव, नारियल, चार सिंघाड़े, चार लौंग, चार इलायची, चार पान, चार सुपारी पूजा की सामग्री में।

पूजा की सामग्री – घी का दीपक, धूप, पूजा का सारा समान – कुमकुम, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, अष्टगंध, चन्दन, चावल, फूल–फल आदि चढ़ाए जाते है। सिंगड़ी के अंगारे पर घी गुड़ की धूप दी जाती है। और आरती की जाती है। इसका खाना सभी खाते है।

विवाह के समय बनने वाले

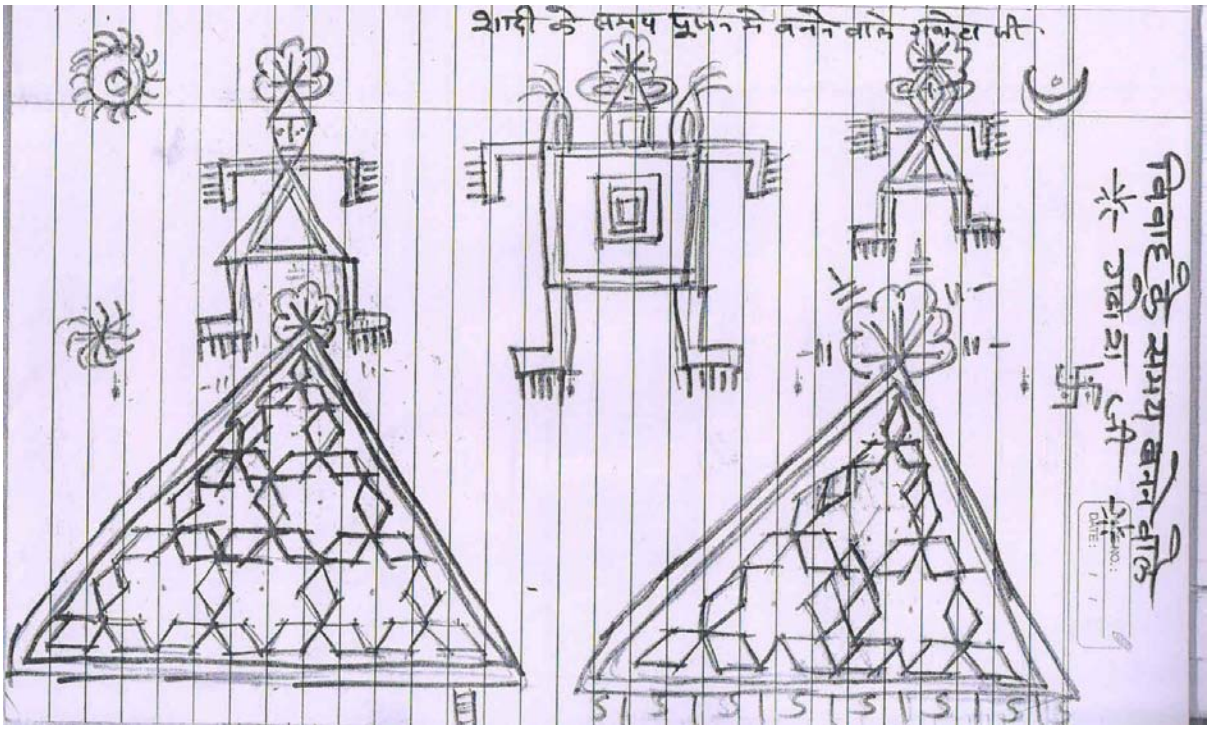

शादी के गणेश जी

1 शीश गजानन्द मोटा कट्टियों तेल सिंदूर चढ़े छैः जी,
गेंदराज गणपति दास पर हीरा जढ़या जी मानक मोती
कान गजानन्द मोटा कट्टियों बिजली से बाव डुले छैः जी,
शीश गजानन्द ——————————————————————
2 आँख गजानन्द मोटी कट्टियों छबला को दिवलो जले छैः जी,
गेंदराज——————————————————————————
शीश गजानन्द ——————————————————————
3 नाक गजानन्द मोटी कट्टियों, नव सरि नागन झूले छैः जी।
गेंदराज गणपति दास पर हीरा जढ़या जी मानक मोती

4 दाँत गजानन्द मोटा कट्टियों सुहागल चुढ़िलो पैन्ने छैः जी,
गेंदराज गणपति——————————————————————
5 होंठ गजानन्द मोटा कट्टियों होंठ तमोल रच्चो छैः जी
हिवड़ा गजानन्द मोटा कट्टियों हिवड़ो संच डुले छैः जी
हाथ गजानन्द मोटा कट्टियों चंपा री डाल नमे छैः जी
गेंदराज गणपति दास पर हीरा जढ़या जी मानक मोती
6 इग्ली गजानन्द मोटा कट्टियों जैसे मूंगफली छैः जी
तोंद गजानन्द मोटा कट्टियों सवा मन मलियो चढ़े छैः जी
गेंदराज गणपति दास पर हीरा जढ़या जी मानक मोती
7 जाग गजानन्द मोटा कट्टियों देवल खंभ रूके छैः जी
पिंडली गजानन्द मोटा कट्टियों रून छुन चाल चले छैः जी
गेंदराज गणपति दास पर हीरा चढ़या जी मानक मोती
8 पग्लया गजानन्द मोटा कट्टियों कंकुरा पग्लया बने छैः जी
गेंदराज गणपति दास पर हीरा चढ़या जी मानक मोती
9 पीठ गजानन्द मोटी कटियो अंबाबाणी जोड़ खुले है छैः जी
पूँछ गजानंद मोटी कटियों बनड़ी पे चवर ढुलें छैः जी
गेंदराज गणपति दास पर हीरा चढ़या जी मानक मोती

सूरज पूजा

छटी की पूजा – छटी माता की पूजा छटवे दिन होती है। दीपक लगाकर पूजा की थाली सजाकर कलम दवात और कोरा कागज जच्चा के पलंग के नीचे पूजा करके छटी के दिन रात भर कोरा ताव और कलम रखते है। विधाता बच्चो का भविष्य लिखती है। ऐसा कहते है।

दसवे दिन – सूतक उठा के जच्चा बच्चा के नाखून काटे जाते है।

17 दिन – जलवाय होती है।

सूरज भगवान की पूजा और कुआँ पूजते है। घर पे कवलें पर कुमकुम के हाथिए लगाए जाते है। बच्चो की माँ हाथिए लगाती है।

गणेश जी

गौरी के नन्दन की हम पूजा करते है। हम पूजा करते है। आराधना करते है। गौरी के नन्दन की हम पूजा करते है। शुभ कारज से पहले तेरा नाम जो लेते है। कोई संकट आए तो तुम रक्षा करते हो, तुम रक्षा करते हो। उस संकट हारें की हम पूजा करते है।
तुम बुद्धि विधाता हो तुम ज्ञान के दाता हो दुखियो कि लिए भगवान तुम भाग्य विधाता हो उस भाग्य विधाता की हम पूजा करते है। गौरी के नन्दन की हम पूजा करते है।
धन धन्य हो गौरी माँ जिसने तुम्हे जन्म दिया है। भोलें भण्डारी ने तुमको उपदेश दिया। उस शिव के दुलारें की हम पूजा करते है। गौरी के नन्दन की हम पूजा करते है।

माताजी

अजब गजब का मैया सिंगार है।
तुम्हारा सिंगार है तुम्हारा——
1 यही छबी देखन को मैया ————
——————————आउ मे दोबारा

अजब गजब का मैया सिंगार है।
तुम्हारा सिंगार है तुम्हारा––
2 लाल लाल माँ सोवे सिर पे लाल
चुनरियाँ चम चम चमके गोटें जड़ी
चुनरियाँ हीरें जड़ी नथनियाँ ने तेरे
रूप को और सवारा
अजब गजब का मैया सिंगार है।
तुम्हारा सिंगार है तुम्हारा––

3 सर पे तेरे सोवें माँ फूलो का गजरा
नैनो की शोभा मे है, मैया तेरा कजरा
जो देखे तेरी मोहनी मूरन हो जाए दास तुम्हारा
अजब गजब का मैया सिंगार है।
तुम्हारा सिंगार है तुम्हारा––

4 तेरी बेटी हूँ में तू है, मेरी माता
तीन लोक कल्याणी सबकी भाग्य विधाता
तेरी बेटी हूँ में तू है, मेरी माता

5 मेरा भाग्य सवर जाए माँ देदें मुझे सहारा
अजब गजब का मैया सिंगार है।

तुम्हारा सिंगार है तुम्हारा––

शंकर जी

1 शंकर भोले नाथ हमारा तुम्हारा हमारा तुम्हारा,
महाकाल की इस नगरी में पाउ जनम दोबारा।
शंकर भोले नाथ है––––––––––––––––
2 इस नगरी के कंकर पथर हम बन जाए,
भक्त हमारे ऊपर चढ़कर मंदिर आए
भक्त जनों के पैर पढ़े तो हो उद्धार हमारा
शंकर भोले नाथ हमारा तुम्हारा हमारा तुम्हारा
3 जब भी ये तन त्यागु त्यागु शिप्रा तट पर
मेरी भस्मी चढ़े आप को हो श्रृंगार तुम्हारा
शंकर भोले नाथ हमारा तुम्हारा हमारा तुम्हारा
4 इतना करना स्वामी भौर मरू मरघट पर
मेरी भस्मी चढ़े आप को पाऊ प्यार तुम्हारा।
शंकर भोले नाथ हमारा तुम्हारा हमारा तुम्हारा
5 गौरा के त्रिपुरारी ओ भोलें भण्डारी
आई शरण तुम्हारी राखो लाज हमारी
जो भोले की शरण में आए हो जाए वारा न्यारा
शंकर भोले नाथ हमारा तुम्हारा हमारा तुम्हारा

ओम नमः शिवाय बोलो, ओम नमः शिवाय बोलो।
शंकर भोले नाथ हमारा तुम्हारा हमारा तुम्हारा।

कृष्ण

1 मेरों राधा रमण गिरधारी श्याम बनवारी,
हरि मथुरा गोकुल आए तेरी
यशोदा मैहतारी, गिरधारी श्याम बनवारी
2 हरि मोर मुकुट पीताम्बर सोहें,
मुख मे मुरली भाली गिरधारी श्याम बनवारी
मेरों राधा रमण गिरधारी श्याम बनवारी,
3 हरि ललना विशाखा तेरी गोपी है।
बोलो राधा सबसे प्यारी गिरधारी श्याम बनवारी
4 हरि कब से अखिया तरस रही, सावन भादो सी बरस रही
मे तो देखु राह तुम्हारी गिरधारी श्याम बनवारी
5 हरि पैरों मे पैंजनियाँ सोहे, चाल चले मतवाली,
गिरधारी श्याम बनवारी
मेरों राधा रमण गिरधारी श्याम बनवारी,
गिरधारी श्याम बनवारी
6 मीरा बाई के प्रभु गिरधर नगर
टेरत टेरत हारी गिरधारी श्याम बनवारी

राम

1 दीन बंधु दयालु दया किजिए वरना हमको यहाँ से उठा लिजिए।
मेरे भगवान गरीबी किसी को न दे, मौन देदे मगर बदनसिबी न दे।
बदनामी से हमको बचा लिजिए वरना हमको यहाँ से उठा लिजिए ।
2 प्रभु आपने बुलाया चले आए हम, तेरी दुनिया में आकर के पछताए हम।
तेरी दुनिया मेरा उद्धार किजिए, वरना हमको यहाँ से उठा लिजिए।
3 मेरी बीच भँवर में नैया पढ़ी, मजधारों में आकर के टकरा गई।
पार कर ना सको तो डुबा दिजिए, वरना हमको यहाँ से उठा लिजिए।
4 गुनाह करकें भी हम तेरे द्वारे खड़े बरी करना सको तो सजा दीजिए।
दिन बंधु दयालु दया कीजिए।

सांई बाबा

1 राम श्याम भगवान सांई बाबा घर आना।
मेरा बिल्कुल बगल मे मकान साई बाबा घर आना।
2 सांई तेरी सिरड़ी बाँजे शहनाई रे
नाँचे रे झूम बाँटे रे मिठाई रे
समझे पुरानी पहचान साई बाबा घर आना।
3 सांई तेरे पैर मेरे पर पड़ जाएगें मेरा तेरा तेरा मेरा मैल बड़ जाएगा।
एक बार बनके मेहमान सांई बाबा घर आना
मेरा बिल्कुल बगल मे मकान साई बाबा घर आना।

4 भक्तो की अर्जी पर मोर लगा दो संकट मिटादों बाबा।
विघन हटादों कर दो हमारा बेड़ा पार सांई बाबा घर आना।
5 सिरडी में तो लगे है, मेलो थारे आवें भक्त हजार सांई बाबा घर आना,
खिचड़ी, रेवड़ी को भोग लगाऊ थारें नारियल चढ़े हैं हजार
साईं बाबा घर आना, मेरा बिल्कुल बगल मे मकान साई बाबा घर आना।

बजरंग

1 दुनिया चले न श्री राम के बीना,
रामजी चलें न हनुमान के बिना ।
जब से रामायण पढ़ ली है। एक बात मेनें समझली है।
रावण मरे न श्रीराम के बीना लंका जले न हनुमान के बिना।
दुनिया चले न श्री राम के बीना,
रामजी चलें न हनुमान के बिना ।
2 सीता हरण की कहानी सुनों एक बार मेरी जुबानी सुनो,
सीता मिले न श्रीराम के बीना पता लगे न हनुमान के बिना।
दुनिया चले न श्री राम के बीना,
रामजी चलें न हनुमान के बिना ।
3 लक्ष्मण का बचना मुश्किल था, कौन बुँटी लाने के काबिल था।
लक्ष्मण बचें न श्रीराम के बिना बूँटी मिले न हनुमान के बिना।
दुनिया चले न श्री राम के बीना,
रामजी चलें न हनुमान के बिना ।
4 सिंहासन पे बैठें थे सीता राम जी चरणों में बैठे थे हनुमान जी।
मुक्ति मिलें न श्रीराम के बिना, भक्ति मिलें न हनुमान के बिना।
दुनिया चले न श्री राम के बीना,
रामजी चलें न हनुमान के बिना ।

कृष्ण जी

1 मै आरती तेरी गाऊ ओ केशव कुंज बिहारी,
मैं नित नित शीश नमाऊँ ओ मोहन मदन मुरारी,
मथुरा से गोकुल आए सखियन संग रास रचाए,
मै तुम पर वारी जाऊँ वो मोहन मदन मुरारी।
2 माखन की मटकी फोड़ी सखियन,
संग अखिया जोड़ी मछुवन मे रास,
रचायों ओ मोहन मदन मुरारी।
3 कान्हा ने बंशी बजाई सब,
सखिया दोड़ी आई सब सखियो को,
दर्श दिखाया ओ केशव कुंज बिहारी।
4 है, तेरी छबि अनोखी दुजी न एसी देखी,
तुझसा न सुन्दर कोई ओ मारे मुकुट धारी,
मै आरती तेरी गाऊ ओ मोहन मदन मुरारी ओ केशव कुंज बिहारी।

5 जो आए शरण तुम्हारी विपदा मिट जाए सारी,
हम सब पर कृपा करना ओ जगत के पालन हारि,
मै आरती तेरी गाऊ ओ केशव कुंज बिहारी,
मैं नित नित शीश नमाऊँ ओ मोहन मदन मुरारी।

गुरूजी

एक तुम्ही आधार सतगुरू एक तुम्ही आधार सतगुरू,
मिलो न जब तक तुम जीवन मे शांति कहाँ मिल सकती,
खोज फिरा संसार सतगुरू एक तुम्ही आधार सतगुरू।
1 कैसा भी हो तैरन हारा मिलें न जब तक चरण सहारा,
हो न सका उस पार सतगुरू एक तुम्ही आधार सतगुरू।
2 हम आए है, द्वार तुम्हारें अब उद्धार करो दुःख
हारे सुनलो दास पुकार सतगुरू एक तुम्ही आधार सतगुरू।
3 है प्रभु आप विविध रूपो में हमे बचाने भव कुपो से
ऐसे परम उधार सतगुरू एक तुम्ही आधार सतगुरू।
4 छा जाना जग मे अंधियारा तब पानी प्रकाश जी
धारा आनें लेरे द्वारा सतगुरू एक तुम्ही आधार सतगुरू।
5 जब दुःख पानी भटक भटक कर जब आनें प्रभु भूल भटक कर आवें
तेरे द्वार सतगुरू एक तुम्ही आधार सतगुरू एक तुम्ही आधार सतगुरू

गणेश जी

गणपति आज पधारो श्री राम जी की धुन में,
गणपति आज पधारो श्री राम जी की धुन में,
राम जी की धुन में श्री राम जी की धुन में।
1 गणपति बैगा पधारो देवा रिद्धि सिद्धि लाओ,
सुख सम्पत्ति भर जाओ श्री राम जी की धुन में।
2 ब्रम्हा जी पधारो माना ब्रम्हाणी को लाओं
वेद ज्ञान समझाओ श्री राम जी की धुन में
गणपति आज पधारो श्री राम जी की धुन में,
3 हनुमन वेग पधारो देवा पवन वेग से आओं
बल बुद्धि दे जाओं श्री राम जी की धुन में
4 नारद बैगा पधारो देवा मिलकर ताल बजाओं
नारायण गुण गाओं श्री राम जी की धुन में
गणपति आज पधारो श्री राम जी की धुन में,
5 भक्तो बैगा पधारो देवा मिलकर ताल बजाओं
शिव मंदिर में आओं श्री राम जी की धुन में
गणपति आज पधारो श्री राम जी की धुन में,
गणपति आज पधारो श्री राम जी की धुन में,

संकलनकर्ता

श्रीमती भूमिका गुप्ता

।।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

लाड़ गोत्र के प्रमुख रीति रिवाज एवं गीत

शीतला माता पूजन

लाल झंडी एक, सफेद झंडी एक, नीम की डगाल, लाल झंडी माता के वहा लगाना, सफेद झंडी भैरव बाबा के वहां लगाना।

आरती थाली – कूंकू, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, गुड़ शक्कर नैवद्य।

भैरव बाबा के लिए सिंदूर –मिट्टी का दिया एवं दो नारियल एक खेलता व एक नारियल फोड़ना।

खल मिट्टी

आरती की थाली – कूंकू, हल्दी, चावल, मिट्टी का दिया, गुड़, शक्कर, बताशा, गणेश हल्दी की गठान सात (लडकी की), नौ (लडके की) हल्दी गठान सात मे दो गठान सिलक खीचनें के लिए रखना।

सामग्री – दो सुपडे लडकी की सात टोकनी, लडके की नौ टोकनी रखना, खलबत्ता मुसली सब पर नाडे बाँधना, सवा पाव गेहुँ में पैसे व बताशे बहन बेटियो को पैसा देना दो नारियल और सात पान एक पान पर गणेश जी बैठाना कलश पर पाँच पान और नारियल रखना दुल्हन या दुल्हे के साथ गणेश (बालक) को बैठाना। बालक को दुल्हन के दाँएने हाथ तरफ बैठाना।

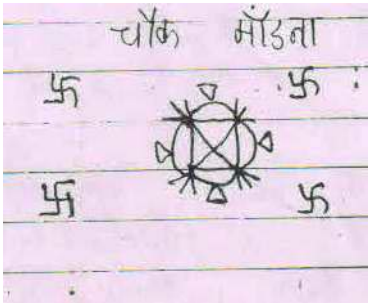

यह चौक मण्डप और मोहरत के समय बनाना।

दुल्हन को चौक पर हाथ में चावल और तिलक लगाकर बैठाना पास मे गणेश जी बैठाना। फिर 4 बहन बेटिया आपस मे नाडा बांधना फिर दो सुपडे मे धान पैसे चार सिक्के बताशे पाँच बार झाडना। पाँच हल्दी की गठान खलबत्ते मे बारिक कूटकर सिलक खींचना।

दाये तरफ – लडकी की सात (4 कूंकू और 3 हल्दी)

लडके की नौ (5 कूंकू और 4 हल्दी)

बाये तरफ – लडकी की पांच (3 कूंकू की और 2 हल्दी)

लडके की सात (4 कूंकू की और 3 हल्दी)

सिलक खीचनें वाली चवाचली होना (माँ, बाप, साँस, ससुर, वाली)

सिलक खींचने वाली के खोले में नारियल, पैसे, गेहूँ, बताशे रखना पल्ले मे बांध कर ही सिलक खीचना। फिर दुल्हन को पाट पर से उठा देना फिर मोरिथ के गेहुँ को हल्दी डालकर पिसवाना इस चिक्सा के 32 गणेश जी बनाना दुल्हन को चिकसे से नहलाना और चिकसे से ही चौक मांडना।

गणेश पूजा

दुल्हन या दुल्हे को चिकसा लगाकर बहन बेटियो ने नहलाना फिर गणेश पूजा करना।

सामग्री – लाल कपडा, सवा पाव चावल, नारियल, सवा रूपये, मिट्टी की कोठी।

करना – लाल कपडे को एक पटे पर बिछाकर सवा पाव चावल उस पर सवा रूपये रखना और नारियल रखना। फिर एक पान पर गणेश जी बैठाना। कोठी पर गणेशजी मांठना। पान पर गणेश जी को चावल पर बैठाना फिर सामने कलश पर पाँच पान व नारियल रखना और पास में पाँच लापसी के लड्डू रखना। चारो कोने पर चार चार खाजे व एक आटे का दिया व एक लड्डू चारों कोने पर रखना बीच मे सोलह खाजे रखना। सवा मुट्ठी की घूंघरी बनाना व गुड गणेश की आरती मे रखना। चावल कलश का नारियल 16 खाजे कोठी मे रखना (लाल कपडे मे बांध कर रखना) देवी उठने के बाद कोठी का सामान बहन बेटी को देना। मुट्ठी भर भाथ बनाना, पाँच चिकसे के आटे दिए बनाना, 32 गणेश और 32 खाजे भी बनाना।

देवी पूजन

दिवार पर लिप कर पाँच टिपकी कूंकू की लगाना, सवा मुट्ठी चावल बनाना, फिर पाँच गिलास चावल, पाँच गिलास गेहूँ दो बार भरना लाल कपडे में सवा पाव चावल, 32 सुपारी, 32 चवन्नी अठन्नी नारियल पोटली बांधकर माता के सामने रखना, चार करवा ऊपर दिया।

एक गेहू ढेरी	चावल की ढेरी
(5 गिलास)	(5 गिलास)

उस ढेरी पर 4 करवा और एक दिया दोनो तरफ रखना और एक बीच मे एक करवा रखना उस पर दिया रखना। दिये मे नाडे की बत्ती शुद्ध घी डालकर अखण्ड दीपक जलाना। सब करवो मे गेहूँ या चावल के दाने डालना और नाडा बाँधना और दोनो करवो के बीच फड लगाना और फड के ऊपर 5 आम के पत्ते नाडे मे बांध कर लगाना फड बहन बेटी को मांडने देना फिर उन्हे नेक देना। देवी के सामने 32 मट्टी के दिये बिछाना उस पर बांस की बनी छाबडी रखना। छाबडी पर 32 जुडा खाजा और 32 जुडी रोटी और बीच मे लापसी का बडा लड्डू रखना और जोडे पर थोडी थोडी लापसी रखना और 32 आटे के दिये बनाना उसमे बत्ती और घी रखना।

मण्डप

चार बास का मण्डप बनाना। मण्डप के चारों तरफ आम के पत्तो की तोरन बांधना। मण्डप के बीच मे पीपल के पत्ते के साथ नाडे से दिया बाँधना। मण्डप मामी से लिपाना और उसे नेक देना। मण्डप के चारो खम्बे के पास चार चार पूरी नाडे से बांधकर दामाद के हाथ रखवाना और उन्हे बहुओ से हाथे लगवाना और उन्हे नारियल और नेक देना। ऊपर पापड बांधना। माणक खम्ब दाएने हाथ पर मण्डवाना रूखडी निवतने के लिए चना दाल और काकड़ा हल्दी से पीला करना पहले कूंकू हल्दी से पूजा करना फिर एक दोने मे घी

शक्कर मिलाकर प्रसाद देना। मामा घर से मण्डप ढकवाना (मामेरा) मण्डप मे दुल्हन से हवन करवाना और काकन डोरा बांधना लडकी को सात और लडके को नौ गाठन बांधना पीपल का पत्ता तांबे की अँगूठी मे नाडे से बांधकर गठान लगाना।

मण्डप के चारो तरफ चार करवे पानी भरकर उसमें सुपारी और चार सिक्के डालना फिर दुल्हन को मण्डप मे तेल और चिकसा लगाकर बहन बेटियो ने नहलाना फिर करवे का पानी एक साथ दुल्हन पर डालना फिर नारियल फोडना और दुल्हन को देवी घर ले जाना। फिर कुटुम्ब सहित देवी पूजन करना फिर दुल्हन को दुध भाथ खिलाना। देवी उठाने के लिए घुंघरी का भोग लगाना। सात दिन बाद फड धोना बधावा गा लेना। माता की पोटली का भात बनाकर किसी भी अच्छे दिन खा लेना

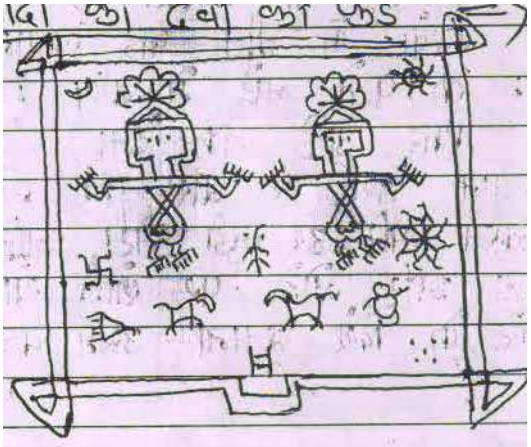

कूंकू हल्दी मिलाकर फड मांडना चार करवाँ मंडप चारो तरफ रखना दुल्हन को नहलाकर उस करवे को बहन बेटी मिलकर एक साथ डालना। फड को बंधाना व बहन बेटी को नके देना।

बच्चे के जन्म से –

जन्म के तुरंत बाद (तीन तार नाडा व दो तार सूत का धागे की जेल बनाना) बच्चो को गले मे पहनाना।

पांचवी पूजन –

पाँचवे रात को तेल की बत्ती जलाकर काजल बनाना व बच्चे को लगाना। हाथ पैर व कमर मे सूत का धागा बांधना। चांदी की छटी माता की पूजा करना। पाटले पर ताव रखकर लाल पेन रखना एक हल्दी की गाठ व भिलावा ताव पर रखे (सफेद पेपर) उसकी दिया जलाकर कूंकू चावल से पूजा करें।

नोट – थाली मे अजवायन व गुड भी रखे पूजा के बाद जच्चा को खिला दे।

छठी भी एसे ही पूजते है।

नाल खिरने के दुसरे दिन सूत काला पूजन :–

जहाँ जच्चा को नहलाते है। वहा पूजन करते है। दिवाल पर चाँद सूरज बनाते है। जमीन पर हल्दी से सात पूतले बनाते है।

सामग्री पूजन की – थाली मे कूंकू, चावल, गुड़, मिट्टी का दीपक, नारियल सूखा। 18 छोटी रोटी लडके की, 16 छोटी रोटी लडकी की, आटे के 5 दीपक लगाते है। पूजा के बाद नारियल फोडते है।

जलवाय –

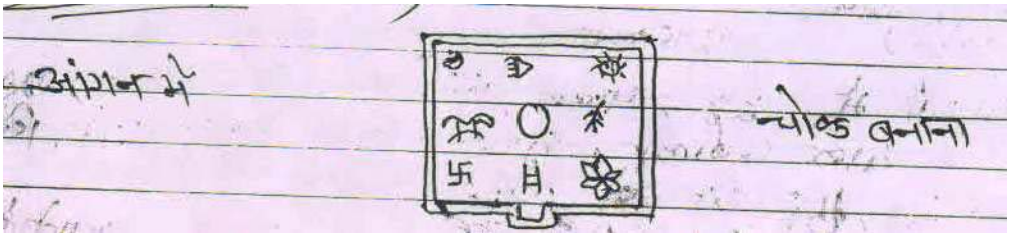

18 आटे के दिये जलाना (लडके के)

16 आटे के दिये लकडी के चोक पर जलाकर रखना कटोरी मे दूध लेना व पान से पांच बार मूँह से लगाना कमर में लंगोर व कंधे पर दराता रखकर जच्चा से चोक की पूजा करवाना बाद मे नारियल फूडवाना। पूजा के बाद दीवार पर दोनो तरफ (सात व पाँच) हल्दी के हाथे लगाना उस पर कूंकू की टीकी लगाना ओर देहली पर सूप मे गेहूँ, पैसा, खारिक व बादाम से गोर भरवाकर सर पर कलश रखकर देहली तक आना व घर की बहन बेटी से कलश उतराकर आजू बाजू पानी छलकाना।

नोट – सूतकाले में ओर जलवाय के दिन बच्चे की जेल बदलते है।

कुल देवी पूजन –

सप्तमी के दिन :– घर की चोघट लेना (पूताई व सफाई)

गेहूँ का आटा, 2½ kg (मोटा पिसना)

मूंग की दाल ½ kg (दरदरी पिसना)

अष्टमी के दिन :– गेहूँ का खिचडा, पूरी, पूए, बाटी, मूंग की दाल के बडा बडी (गोटा, गोटी), सब्जी, लाप्सी के लड्डू, घूंघरी बाखले, बच्चे को देवी से लगाना हो तो चावल की खीर, पाँच आटे के दिये (एक बडा व चार छोटे दिये) बिना दाग की भेरू बाबा की बाटी बनाते है। (खाने के पहले खीचड़ा थोडा से नौमी के लिए बचाते है) गोबर से लिपकर देवी बनाते है।

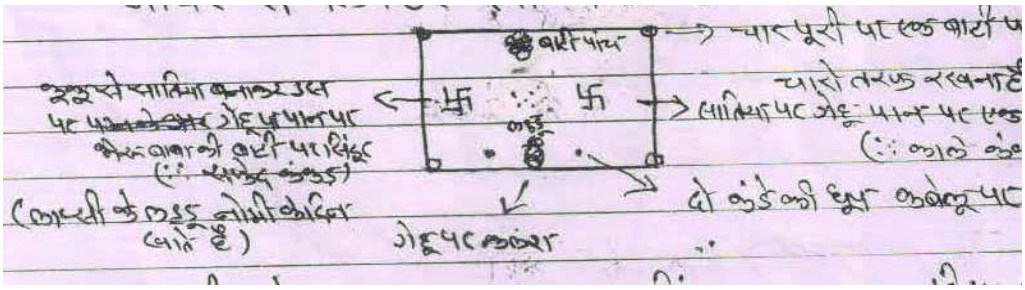

आरती में कूंकू, चावल, सिंदूर, कपूर, दीपक, गूगल, छाल छबीला, घूघरी बाखले, बाटी, पूये, खिचड़ा, लड्डू, गुड़, घी, अग्नि में छोडते है। कुवार में गिलखी व चैत्र मे भटे की सब्जी बनाते है। घी में खाना बनाते है।

नवमी के दिन :– चने की दाल, चावल, हलवा, केड़ा की रोटी, खिचड़ा की छुनी।

आरती मे कूंकू, चावल, गुड़, दो रोटी, हलवा, भात दाल, छुनी रखना, पहले बासी आरती करना फिर ताजी आरती करना। आरती के बाद नारियल चढ़ाना।

अष्टमी को नारियल फोड़ना और प्रसाद खाना।

नोट :– अष्टमी व नवमी का खाना शुद्ध घी मे बनता है।

मूंडन

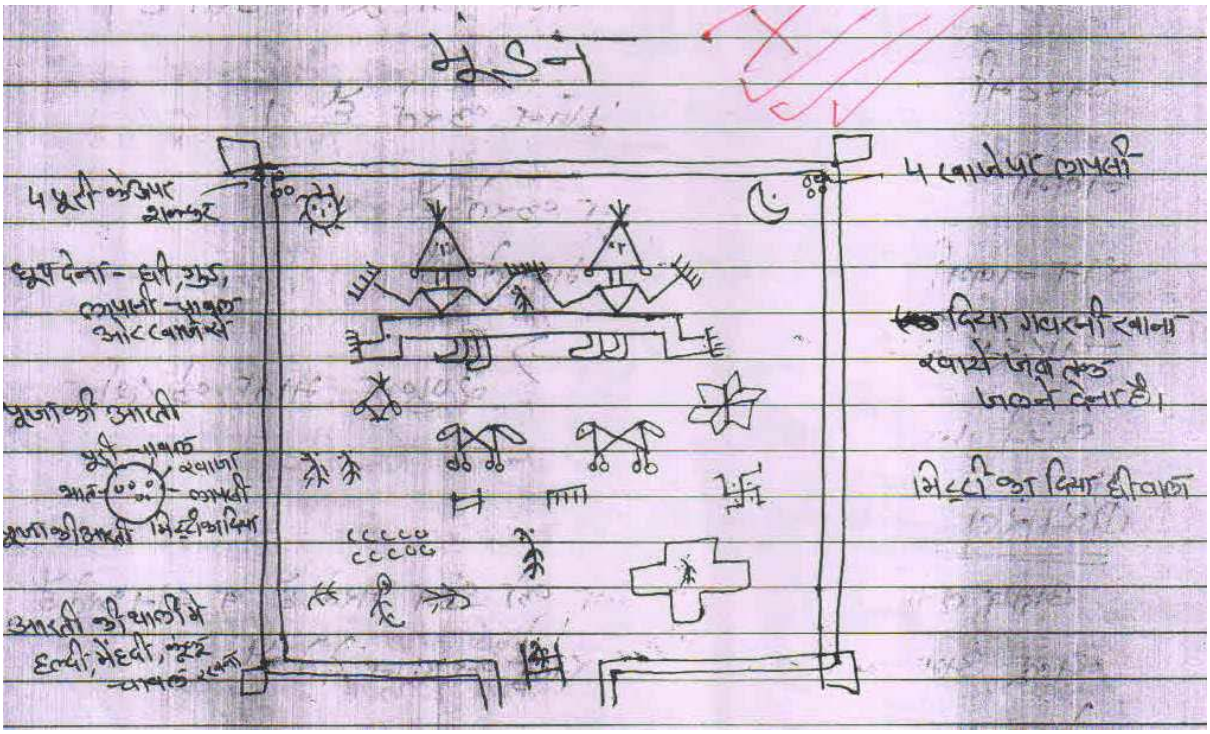

15 गवरनी को खाना खिलाते है। और उनको एक पान, 4 सिंघाडा, 1 लौंग, 2 लाख, 1 इलायची, नाडे की आटी, बिंदी, नारियल का प्रसाद देते है। हाथो मे मेंहदी लगाते है।

नोट :– जब गवरनी मूँह मे कोर लेती है। तभी मुंडन होता है।

सामग्री :– गेहूँ का आटा सवा किलो खाजे के लिए गेहूँ का आटा सवा किलो पूरी के लिए इसमे से लापसी बनाते है। एक मुट्ठी मूंग की दाल बनती है। एक कटोरी चावल बनता है। (मूंग की दाल परोसते नही है।)

त्यौहार

चैत्र :–

गुडी पडवा – नीम की पत्ती का जूस बनाकर पीते है। घर के द्वार पर नीम की पत्ती से सजाते है। भगवान को नीम के पत्ती चढ़ाते है। पूरन पोली का नैवेध लगाते है।

गणगौर तीज – भरी बाड़ी की पूजन करते है।

अष्टमी – अष्टमी पूजन करते है।

नवमी – नवमी पूजन करते है। राम नवमी जन्म उत्सव मनाते है।

चोदस रेणुका माता की – रेणुका माता के दर्शन करने जाते है।

बैसाख :–

अक्षय तृतीया :– अक्षय तृतीया को कुंभ भरते है। व दान करते है।

सत्तू अमावस्या :– इस दिन सत्तू का दान देते है।

जेठ :–

महेश नवमी – समाज मिलकर मनाती है।

वट सावित्री पूर्णिमा – वट वृक्ष की पूजा करते है। आम व चने से सुहागनो की गोद भरते है।

आषाढ़ :–

गुरू पूर्णिमा :– इस दिन भैरव बाबा का पूजन होता है।

सावन :–

नाग पंचमी :– दाल बाटी बनाते है, और नाग की पूजा करते है। इस दिन चाकू छूरी से नही काटते है।

रक्षाबंधन :– यह भाई बहनो का त्यौहार होता है।

भादो –

पंचमी :– इस दिन दाल बाटी बनाते है।

जन्म अष्टमी :– इस दिन श्रीकृष्ण जी का जन्मदिन मनाते है।

बछडा बारस :– बेसन व ज्वार की रोटी व गाय की पूजा करते है।

पोला अमावस्या :– इस दिन बेलो की पूजा करते है। व पूरन पोली बनाते है।

हरतालिका तीज :– निर्जला व्रत रखते है व शिवजी की पूजा करते है।

गणेश चतुर्थी :– गणेश जी की प्रतिमा स्थापित करते है।

ऋषि पंचमी :– ऋषियो की पूजन करते है। अतिझाडे से नहाते है। मोरधान खाते है।

हरछट :– हल की पूजन करते है। सिंघाडा व केला खाते है।

शीतला सप्तमी :– इस दिन चूल्हा नही जलाते है व दीपक नही लगाते है। शीतला माता की पूजन करते है। व ठंडा खाना खाते है।

डोल ग्यारस :– यशोदा माता की गोद भरते है।

बारस :– इस दिन रोट बनते है। व तोरई की सब्जी बनती है।

अंनत चौदस :– इस दिन अंनत देव की पूजा व गणेश प्रतिमा विसर्जित करते है।

अश्विनी –

श्राद्ध पूर्णिमा :– श्राद्ध पक्ष प्रारंभ होता है। आटे के पूरखे बनाते है। और 16 दिन तक रोज धूप डालते है।

पितृमोक्ष अमावस्या :– 16 दिन की धूप ठंडी करके पितरो को विदाई देते है।

पढ़वा :– नवरात्र प्रांरभ – इस दिन से घट स्थापना होती है। अष्टमी नवमी का पूजन होता है।

दशहरा :– आंगन में दशहरा मांडते है। बहन बेटी से तिलक लगवाकर गिलखी व शक्कर खिलाती है। व बहन बेटी को नेग देते है। फिर रावण दहन करते है।

कार्तिक :–

शरद पूर्णिमा :– चन्द्रमा की रोशनी मे रात को केसर का दूध रखकर रात के 12 बजे तक।

करवा चौथ :– इस दिन निर्जला उपवास रखते है व मिट्टी का करवा व चन्द्रमा की पूजा करते है।

एकादशी व्रत :– दीपावली प्रारंभ शाम को दिये जलाते है।

बछ बारस :– गाय बछडे की पूजा करते है। चवले व ज्वार की रोटी खाते है। शाम को दिये जलाते है।

धन तेरस :– इस दिन धनवन्तिरी की पूजन करते है। व पूरन पोली का नैवेद्य लगाते है। शाम को दिये जलाते है।

रूप चौदस :– सूर्य उदय के पहले नहाते है। यम की पूजा करते है। इसे छोटी दिवाली कहते है। शाम को दीपक लगाते है।

दीपावली :– लक्ष्मी पूजन करते है। गोधुली बेला मे 13 दिये कलपाते है उसमे काली तिल्ली, पान के टुकडे, फूल की पत्ती और धानी डालकर पूजन करते है।

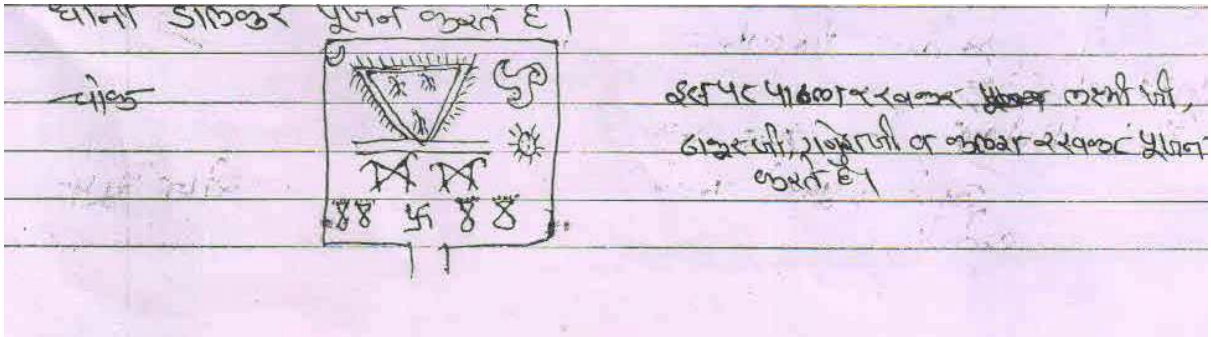

पढ़वा :– इस दिन गोबर से गोर्धन मांडकर पूजन करते है। व अन्नकूट होता है।

भाई दूज :– भाई को तिलक लगाकर मिठाई खिलाते है।

गोपाष्टमी :– गाय की पूजन करके गाय को आटे व गुड़ के आठ लड्डू खिलाते है।

आवला नवमी :– इस दिन आवले के वृक्ष की पूजन करते है व उसके नीचे बैठकर भोजन करते है।

एकादशी :– इस दिन तुलसी विवाह करते है। व देव उठाते है। गन्ने की झोपड़ी बनाते है। "बोर भाजी आवलॉ उठो देव सावला"

बेकुंठ चौदस :– इस दिन हरिहर मिलन शिवजी को बिल्वपत्र व विष्णु जी को मंजरी चढ़ाते है। व हरिहर मिलन करते है। रात को बारह बजे पूजन करते है।

कार्तिक पूर्णिमा :– इस दिन पंडित जी को बुलाकर पूजन करके जोड़ा जिमाते है।

अगहन :– नाग दीपावली व काल भैरव अष्टमी पूजन

पोष :– पोष के रविवार करते है। और कहानी कहते है।

माघ :–

संकटा चौथ :– दिनभर उपवास रखते है। गणेश जी की पूजन करते है, चंद्रमा की पूजन के बाद खाना खाते है।

मकर संक्राति :– तिल का दान करते है। खिचड़ी का दान करते है। मकर संक्राति के दुसरे दिन खिचडी बनाकर खाते है।

फागुन :–

माघी पूर्णिमा :– होली का डंडा गढ़ता है।

महाशिवरात्री :– शिवजी का पूजन करते है।

होली पूर्णिमा :– इस दिन डांडे की पूजन करने जाते है। गोबर की माला ले जाते है। पूरी व मिठाई का नैवेद्य लगाते है। दुसरे दिन धुलेंडी मनाते है।

रंग पंचमी :– शाम को होली ठंडी करते है। गुड चने व पानी से।

छट :– इस दिन खाना बनाते है सप्तमी के लिए।

सप्तमी :– इस दिन शीतला माता की ठंडी पूजन होती है व ठंडा खाते है।

संकलनकर्ता

श्रीमती योगिता माहेश्वरी
श्रीमती सुनैना माहेश्वरी
मोबाईल न0 9425326197

।श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

मूंदडा गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार

चैत्र की अष्टमी

सामग्री : चने की दाल, बाटी, पूरी, नौनेवज (हार 1, चूड़ी 8, बिछूड़ी 8, बत्ती 8, गोला 8, चोटी 8, लम्बीपूरी 8, गोल पुरी 8, लड्डू 8) लाप्सी के लड्डू, चावल, मैदे की पुरी 16 बनाई जाती है। 8 खाजे बीज में रखते है। और 4–4 आसपास (16) रखते है। उसके ऊपर नौनवेज रखे जाते है। और 5 दिए आटे के बनाकर रखते है। पूजा का खाना आज के दिन घी में ही बनता है। तीन नारियल चढ़ाते है। दो माताजी के नाम के और एक भेरू बाबा के नाम का, दो कंड़े की धूप लगाते है। चाँदी की माता का नाड़ा बदला जाता है, केले (कंकू) के पत्ते पर आठ बिन्दी लगाकर पथवारी बनाते है। गोल सुपारी, पैसा की पूजा की जाती है। 5 बाटी रखी जाती है, 8 खाजे के सामने, उसके सामने केल का पत्ता, पत्ते के ऊपर पथवारी, के पास, पैसा, सुपारी, और माता जी रखते है। दो पूरी का चूरमा बनता है। घूघरी बाफला (गेहूँ, चने उबले हुए)

पूजन से पहले – 6 (छठ) या 7 (सप्तम) के दिन सिर धोकर, दिया लगाकर माताजी का नाम लेकर मैदा लगाया जाता है। और मोटा आटा पिसवाया जाता है। बाटी के लिए।

पूजा की थाली में – 4 पूरी (खाजे) 2 बाटी, लड्डू, चूरमा पूरी का, दाल चावल, दूध चावल, गुड़, घी, छबीला,

सामग्री :– नाड़ा कंकू, चावल, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, चढ़ाने के पैसे, दिया, कपूर और जय अम्बे दिवाल पर लिखने के लिए सिन्दूर में घी डालकर लिखना। मेंदापाती चढ़ाई जाती है।

बच्चो की जेल बनाई जाती है। जेल बनाने के लिए, माताजी, नागदेवता, झींकमाता, सत्तीमाता, परी माँ जी, देव बाबा, भेरू बाबा के नाम लेकर बच्चो की जेल बनाई जाती है।

नवमी

अष्टमी के दिन का बीज वाला खाजा, नौवमी के दिन रखकर फीके पूए नौ, (9), खीर, एक कंडा, दो नारियल, घी में पूए, बनाना है। केल के पत्ते पर नौ (9) पूए रखते है। थाली में पूए और खीर रखकर, क्षारछबीला, गुड़, घी, कुंकू, चावल, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, मेंदापाती, रखकर पुजा करते है।

चैत्र और कुवांर की दोनो अष्टमी, नवमी की पूजन एक जैसी होती है।

गुरू पूर्णिमा

सामग्री – दाल, चावल, बाटी चूरमा, लाप्सी, लड्डू, घुगरी बाखला, पूरी, दीये आटे के

थाली में – कंकू, चावल, हल्दी, मेहंदी, अबीर, गुलाल, हवन सामग्री, नाड़ा, पैसा, सुपारी, गेहूँ, कंड़े की धूप, (2) दो नारियल (भेरू बाबा, सत्ती माता) गुड़, घी, दिया, कपूर , दाल 1, चावल , बाटी 1, 2 पूरी, लाप्सी के लड्डू, चूरमा, घुगरी बाखला रखते है। पटे पर गेहूँ की मूट्ठी रखकर 21 बाटी रखते है। (4–4 बाटी कोने में 5 बाटी बीच में,) बाटी के ऊपर दीया रखते है। कंडे पर सब थाली का सामान छोड़ते है। फिर आरती कर के नारियल चढ़ाते है। खाना घी में बनता है। दो पूरी का चूरमा बनता है। और दो कन्या को चूनरी उड़ाकर उनके पैर पूज कर 4 पूरी, 1 लड्डू, पैसे देना है। हल्दी से पैर पूजते है।

हरियाली अमावस्या

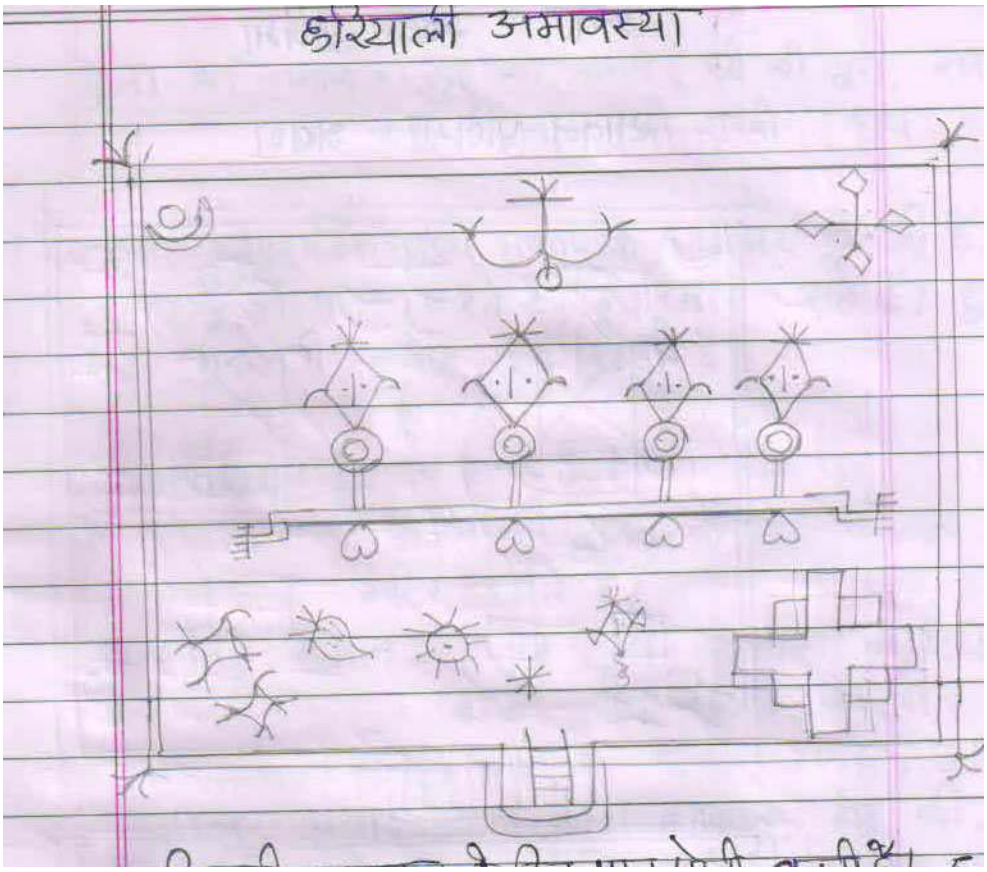

हरियाली अमावस्या के दिन पूरन पोली बनती है। 5 पूरन पोली बनाकर थाली में रखते है। (छोटी) कंकू, चावल, कपूर, नारियल, दो कपड़े की चिन्दी, पीली करके (हल्दी से) उनके हाथो पर लगाते है। और पूजन करते है। कंड़े की धूप छोड़ते है। उसमें घी गुड़ और पूरन पोली छोड़ते है। नारियल चढ़ाते है। चिन्दी को (आयफन) पूरन पोली से चिपकाते है।

सावन पूर्णिमा श्रवण

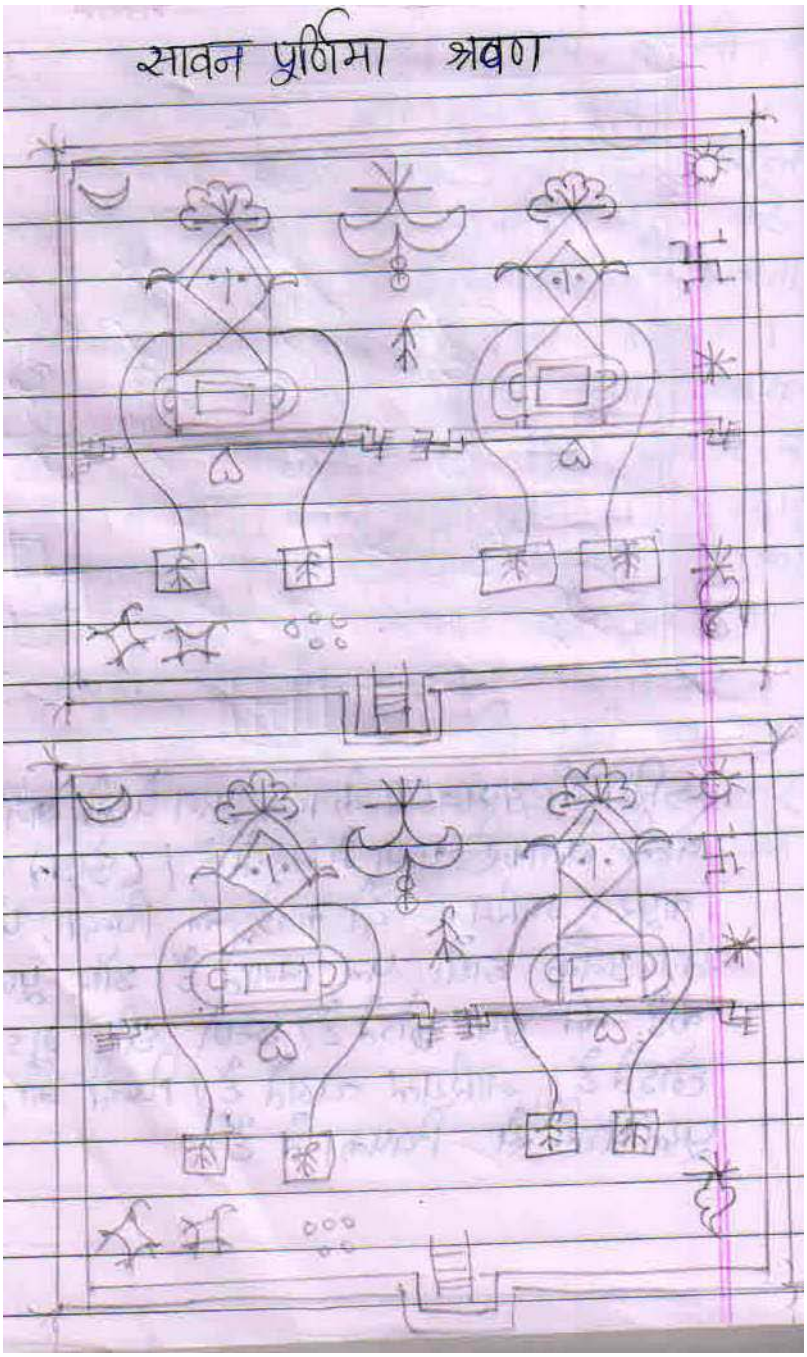

पूजा का सामान – गुड़ का कसार, घी की पूरी, नारियल, कंकू, चावल, दो राखी, धूप।

गुड़, कसार से राखी श्रवण के हाथ पर बांधनी है। कंकू से पूजा करते है। नारियल चढ़ाते है। धूप पर गुड़ घी, कसार पूरी छोड़ते है।

शीतला माता – श्रवण की पूजन के बाद शीतला माता मंदिर जाते है।

पूजा का सामान – 4 पूरी, कसार, नारियल, गोले की बाटकी, राखी, दिया, अगरबत्ती, कंकू, चावल, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, प्रसाद, 1 कोरा कागज, गेहूँ की मुट्ठी लेकर जाते है। शीतला माता को बाटकी, और गोना बाबा को नारियल चढ़ाते है।

फिर आकर भगवान श्री कृष्ण जी को राखी बांधते है।

पिठोरा बाबा

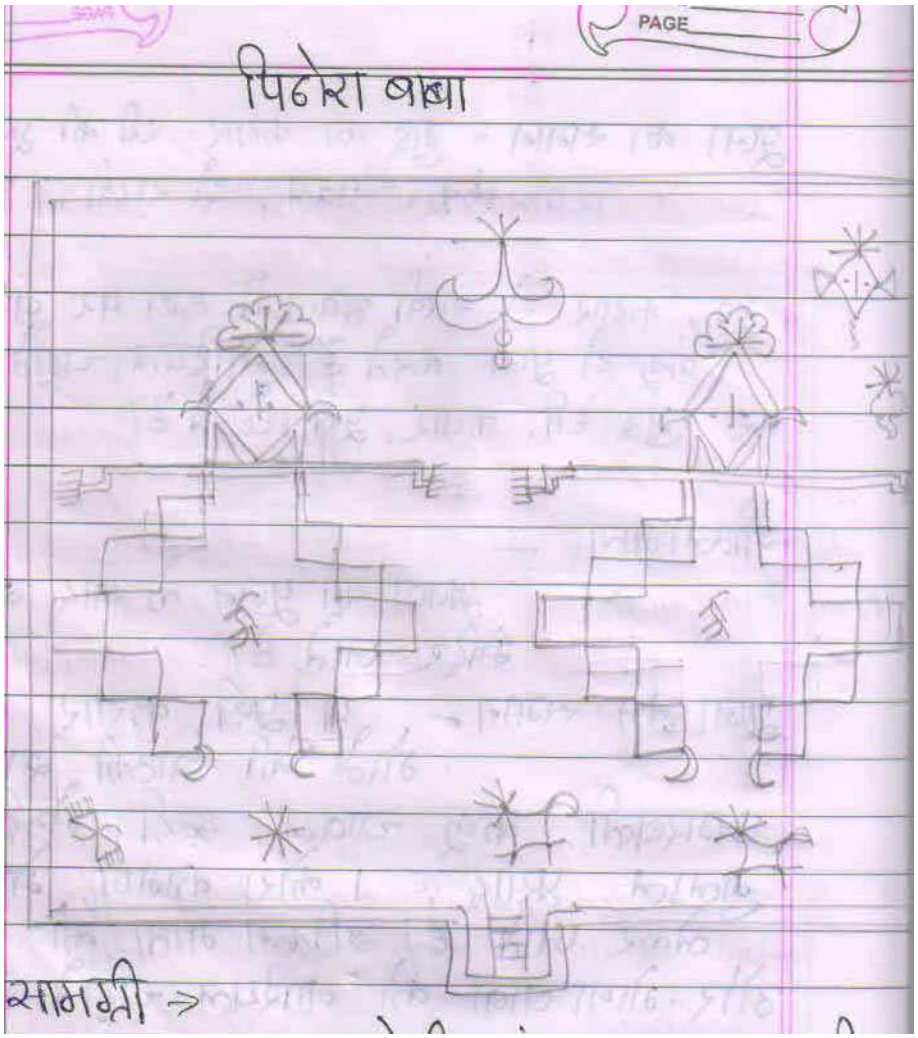

सामग्री – 5 पूरन पोली, कंकू, चावल, नारियल, घी, गुड़, धूप, दो राखी, से पूजन करते है।

भादो नाग पंचमी

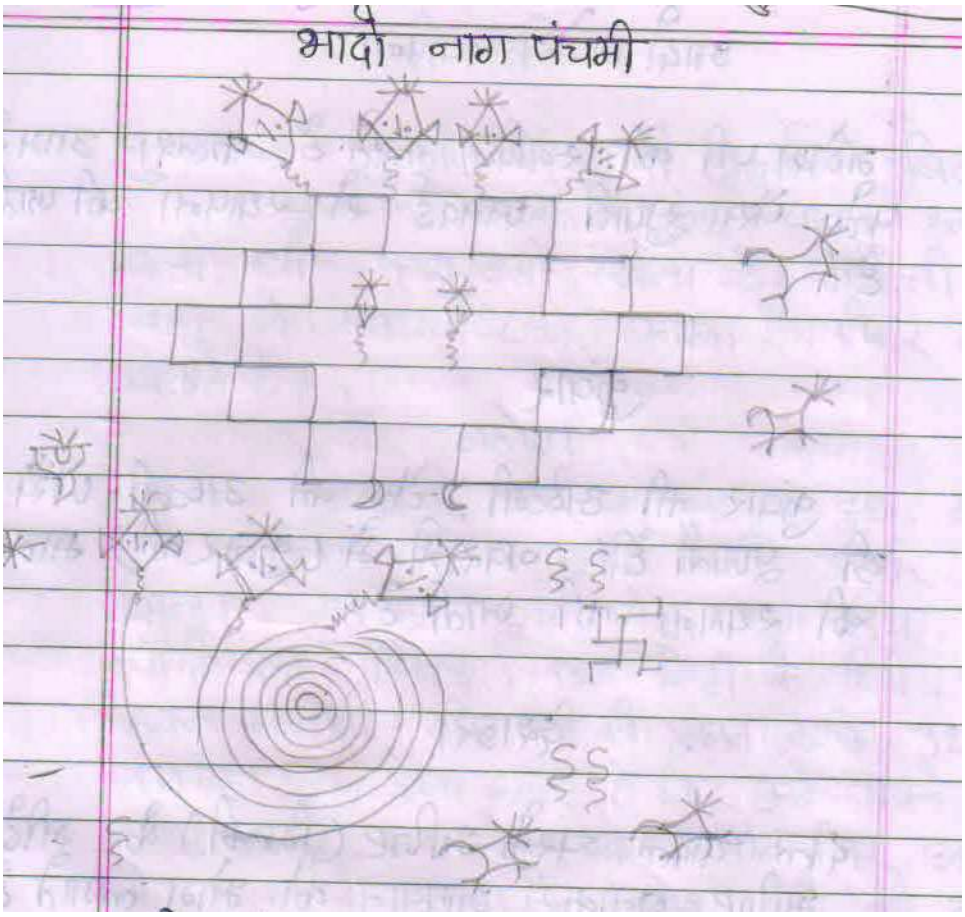

भादो की चतुर्थी के दिन की नारियल की नट्टी को जलाकर कच्चा दूध मिलाकर नाग देवता बनाते है।

पूजा का सामान – कच्चे आटे में गुड़, घी, मिलाकर कुलर बनाया जाता है। कंकू, चावल, सिन्दूर से पूजन करके, दो राखी चढ़ा कर के पूजन करते है। गुड़, घी की धूप छोड़ते है, खाने में दाल, बाटी बनाई जाती है, बाटी से पूजन करते है।

भादो गणेश स्थापना

गणेश जी की स्थापना करते है, कलश, आम के पत्ते, पैसा, सुपारी, जनवई से स्थापना की जाती है।

कुंवार

कुवांर की अष्टमी, चैत्र की अष्टमी जैसे ही पूजाती है। नवरात्री में (कुवांर की) माताजी की स्थापना की जाती है।

दशहरा

दाल, चावल, चरके भजिए (गिल्की) के, मीठे भजिए, बनाकर भगवान को भोग लगाते है। धूप छोड़ते है।

दीपावली

सुबह – दुकान में गादी मुहर्त से बिछाते है, पूजा की थाली में कंकू, चावल, हल्दी, मिठाई, बत्ती, घी, अगरबत्ती रखना है। रंगोली बनाकर कंकू से साथिया बनाना है, फिर गादी बिछाते है।

गणेश

शाम – पूजन में पूरी 4, चावल, दूध शक्कर, कंकू, चावल, हल्दी, मेहंदी, अबीर, गुलाल, सिन्दूर, गुड़, घी, धूप, गेहूँ, बडा दिया, लोटा, चाँदी का सिक्का, 32 मिट्टी के दिये, धानी फुली हवन सामग्री गणेश जी की पूजन करके 32 दिये जलाकर उनकी पूजा करना है फिर उसे अपने घर से बाहर लाकर सर से लगाना है। और फिर अन्दर ले जा कर के रखना है। गणेश जी की आरती कर के पूरे घर में दिए रखना है।

लक्ष्मी पूजन

सामग्री – बही खाता, पेन, कोरा कागज, बस्ता एक छोटा झोला (लाल कपड़े से बना हुआ) झोले में खड़ा धना, कमल गट्टे, हल्दी की गठान, डालना है। और बांधकर रखना है। सिक्के, श्री यंत्र, हार, कलश, नारियल।

पूजन का समान – कंकू, चावल, अबीर, गुलाल, हल्दी, मेंहदी, पैसा, सुपारी, रखना है। पाँच प्रकार के फल, पाँच प्रकार की मिठाई, दूध, दही, का पंचामृत, पंचमेवा, एक पटा, पटे के ऊपर एक लाल कपड़ा, फूलबत्ती, अगरबत्ती, लक्ष्मी, गणेश की फोटो, एक पान लगा हुआ, पान 4, धानी फुली, नारियल, धूपबत्ती, लगाकर पूजन करते है।

होली

सामग्री – 4 पूरी, चावल, कंकू, चावल, हल्दी, मेंहदी, अबीर, गुलाल, अगरबत्ती, दिया, नाड़ा।

पूरी, चावल, ले जाकर के (सभी समान) पूजन करना है। दिया और नाड़ा बदलकर लाना है। नाड़ा बदल कर घर के दरवाजे पर बाँधना है।

शीतला सप्तमी

सामग्री – पूरी 4, हलवा, कंकू, चावल, हल्दी, जल, मेंहदी, अबीर, गुलाल, ले कर के पूजन करना है। पूरी हलवे का माँ को भोग लगाना है। ताव (सफेद कागज), नारियल, गली हुई चने की दाल, गेहूँ की मुट्ठी भी माँ को चढ़ाना है। खाना 1 दिन पहले बनता है। सप्तमी के दिन सुबह ठंडा खाना खाते है।

संकलनकर्ता

श्रीमती महिमा मुंदडा

।। श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः।।

सोमानी गौत्र की रीति परम्परा एवं त्यौहार

आषाढ़ महीने के त्यौहार

श्रीराम सप्ताह के बाद जो पूर्णिमा आती है उसमें घी की कढ़ाई रखाती है एवं लापसी बनती है। तवा नही रखाता है।

श्रावण महीने के त्यौहार

श्रावण महीने मे जीरोती अमावस्या आती है। उसके बाद की पंचमी नाग पंचमी कहलाती है। उसमे दाल, बाटी, चुरमा बनता है। उस दिन कुछ भी नही कटता है। गुड़ एक दिन पहले (चतुर्थी) काट लेना चाहिये। उस दिन तवा भी नही रखाता है। (पंचमी के दिन)

नाग पंचमी का पूजन

रामेश्वर पर नाग बाबा मंदिर में एक नारियल, कुलर (आटे मे घी और गुड़ मिलाना) अगरबत्ती, दूध, 2 पुडिया सिंदूर की।

भादो मास के त्यौहार

भादव में नाग पंचमी (राखी के बाद) पर संजोरी, गुंजा, खाजा, चंदोडिया (चने के) पूरी, सब्जी बनती है तवा नही रखाता है।

पूजा की सामग्री :–

राखी, कंदोय, टीकी, कुलर, सिंदूर, दुध।

पोला अमावस्या के बाद डोल ग्यारस आती है, उसके बाद बारस आती है। गाज माता की बारस आती है। उस दिन डोरे छुटते है। एवं रोटी दाल बनती है।

डोरे बडे व्यक्ति (जन) के ८ (आठ) तार के एवं बच्चो के ५ (पाँच) तार के, दार दरवाजा सबके ५ (पाँच) तार के छुटते है। आठ डोरे आठ बार छुटते है। बीच में एक एक गेहूँ के दाने रखते है। चार चानकी व चार दिये आटे के बनाकर पूजा करना बाद में गाय को खिलाना चाहिये।

श्राद्ध पक्ष में जो श्राद्ध होते है वे –

1 पूणिमा श्राद्ध
2 दशमी का श्राद्ध (दादाजी का)
3 चतुदर्शी (चौदस) का श्राद्ध (पापाजी का)

कुँआर महीने के त्यौहार

नवरात्री

श्राद्ध पक्ष के बाद नवरात्री आती है, उसमें अष्टमी एवं नवमी के पूजन :–

अष्टमी के दिन :– चावल पर माता रखाती है। और लाल चंदन, सफेद चंदन, गुड़, कपूर, दो रोटी के जुडे आठ (८) खूँट पर रखना, उस पर दाल, चावल, कडी रखना। मीठा गुड़ का चावल

अलग रखना उसके भी आठ भाग एक थाली में अलग अलग भाग कर देना। गुगल, छाल, छबिला की धूप डालना एक नारियल अष्टमी को फूटता है।

भोजन :– चावल, चने की दाल, कडी उसमें हल्दी नही डालना, दाल में भी हल्दी एवं बघार नही करना।

दो कंडो पर अलग अलग धूप देना! माता को सिंदूर और घी लगाना।

नवमी के दिन :– माता जमीन पर स्वास्तिक मांड के रखाती है, 9 (नौ) जुड़ा पूए छोटे माता के पास रखना एवं 9 (नौ) जूड़े पुए के थाली में रखना। गुगल, छाल, छाबीले, घी, गुड़ की धूप देना। एक नारियल फोड़ना, एक नारियल बाबाजी का भी फोड़ना।

भिलट बाबा का सातियाँ अलग मांड़ना और उसकी भी पूजा करना और घी गुड़ की धूप देना और नारियल फोडना।

खाना :– अष्टमी के दिन की माता के नीचे के चावल की खीर, फीके एवं नमकीन (बेसन के) पुए, दाल, रोटी, सब्जी बना सकते है।

गणपति :– एक खाजा, एक संजोरी, एक वाडिम, 32 सुआली, 32 मिट्टी के दिये, गणपति चावल भिगोकर बाँट कर बनाना और हल्दी भी डालना।

दशहरा :– दूध भात का नैवेध।

कार्तिक महीने के त्यौहार

दीपावली के दिन शाम को गणपति की पूजा करना, गणपति सुबह मुहुर्त देखकर बनाना। गेरू से दिवार लिपना, उस पर चावल और हल्दी भिंजकर बांटकर उसके गणपति काड़ी से बनाना।

पूजा :– खीर, 32 (बत्तीस) खाजे, (हाथ का पिसा आटा),संजोरी, गुंजे 1–1, दाडिम खाजा (ग्यारह), (एक) पुरी इन सबका नैवेद्य बताना।

32 (बत्तीस) दिये, मिट्टी के उसमें तेल तिल्ली, खाने के पान के टुकडे डालना, उनकी पूजा करना और फिर उनको जलाना। गणपति के सामने एक कलश पर मिट्टी का बड़ा दिया रखकर रात भर जलाना।गणपति की तोंद पर चाँदी का रूपया गुड़ लगाकर चिपकाना। पूजा जो करते है वैसी करना।

दुसरे दिन पड़वा के दिन तवा नही रखना, कढाई रखाती है।

देव उठनी ग्यारस :–

चौक बनाना उसके बीच में हल्दी व चावल के पगले बनाना।

दूध, चावल का नैवेध लगाना।

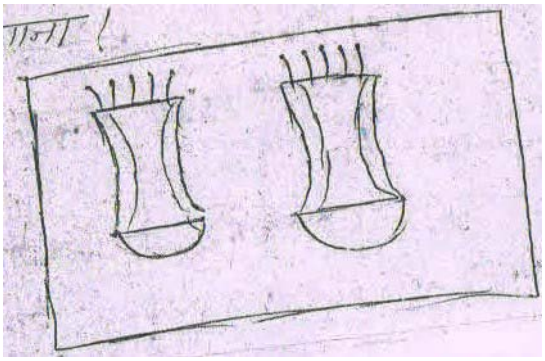

शादी के देव धामी

माता पूजन

माता पूजन के दिन एक लाल झण्डी एक सफेद झण्डी बनाना और सवा पाव चावल बनाना चावल में घी गुड़ रखना पूरा चावल माता जी के सामने पत्तल पर रखना। पहले पानी की धार भेरू बाबा पर से माताजी पर लाना। भेरू बाबा का नारियल खेलता छोड़ना माताजी का नारियल फोड़ना।

मोहरित :– दुल्हन को पाटले पर बैठाकर गेहूँ का धान झाड़ना गठान की हल्दी कूटकर सिलग

फाल्गुन माह के त्यौहार

होली के दिन व दुसरे दिन दोनो दिन पुडी बनाना, तवा नही रखाता है। दुध और चावल से नेवैद्य बनाकर पूजा करना। सफेद झंडी बनाकर पूजा करना।

चैत्र माह के त्यौहार

नवरात्री की अष्टमी व नवमी वैसी ही होती है जैसी कुआर की नवरात्री की होती है। उसके बाद रेणुका चौदस के दिन भी दाल बाटी या पुरी बनाना तवा नही रखाता।

संक्राती

सक्रांती पर दोनो दिन तवा नही रखाता दाल बाफले बनते है।

सगाई में

सगाई में देवधामी के पाँच नारियल होते है।

शादी से पहले शीतला माता पूजन

1 (एक) लाल झंडी

1 (एक) सफेद झंडी (एक एक बच्चे की)

1 (एक) नीम डगाल

सवा किलो चावल का भात बनाकर मंदिर ले जाना वहाँ पर एक पत्तल में पुरा चावल रख देना पुजा करना, एक नारियल फोडना व एक नारियल चढ़ा देना।

नोट :– गेहूँ व चावल की एक एक चौकी गणेश पुजन के दिन भरना (मंडप के दिन)

शादी में गणेश पूजन के दिन

खाजा	–	2 किलो के
लापसी	–	2 किलो के
भात	–	सवा पाव चावल का
घुंघरी	–	मुट्ठी भर गेहूँ की

५ (पाँच) खुट पर 20 खाजा, 20 लड्डू (लापसी के) ५ (पाँच) दिये आटे के। गणेश को कोठी के अंदर सवा किलो चावल, ५ आने पैसे, एक नारियल, 9(नौ) खाजे, ५ (पाँच) लड्डू रखना।

माता ४ (चार) किलो गेहूँ ४ किलो चावल

लगन की देवी ४ (चार) किलो गेहूँ ४(चार) किलो चावल

देवी भरना

भात सवा पाव, रोटी के 32 (बत्तीस) जुडे, 32 आटे के दिये, खाजा 1 (एक) किलो, मिट्टी के दिये 32, बड़ा दिया 1 (एक), मटका मिट्टी का 1 (एक) मटके के उपर बडे दिये में नाड़े की बत्ती दोनो तरफ चार चार, मटके के ऊपर एक एक दिया रखकर बेव भरना (गेहूँ और चावल की 1–1 (एक–एक) चौकी भरना।

नोट :– गणेश पूजन के दिन भी बेव भरना (गेहूँ और चावल की (एक–एक) चौकी भरना।

सवा महीने की देवी उठना :–

भात, 32 (बत्तीस) जुड़े रोटी, लापसी, भाता का पड़, पाट पर रखकर याल सजाकर देवी उठाना।

हलछट के दिन मोड़, बंदरवाल, एवं माणिक खंब खमाना व माता का पड़ धोकर ले आना।

गेहूँ का चिकसा :–

हल्दी एक किलो, चने का बेसन, मुँग को धोना फिर दाल करना पाव भर, एक किलो गेहूँ।

जेल करना :– 2 (दो) जेल करना, 2 (दो)लाल कपडे में सवा सवा रूपिया, एक एक नारियल, सवा सवा पाव चावल और जेल रखना, एक पहाड़ वाली माता को और एक इटारसी वाली माता को।

सुतकाला पूजन

१८ (अठारह) दिये आटे के

१८ (अठारह) चानकी

एक लोटे में दाल चावल भरना, उस पर दो चानकी व एक दिया रखना। बना हुआ दाल चावल। 1 नारियल सुतकाला, 2 नारियल जलवाय, 1 देव सुपारी, पान, गौर पॉच बनाकर पीला कपड़ा उड़ाना।

जलवाय :– १८ (अठारह) दिये आटे के

जमाल :– दो नारियल भगवान के पास रखना (एक पहाड़ वाली माता का एक इटारसी वाली माता का) जमाल नर्मदा जी में खमाना। एक नारियल पहाड़ वाली माता का एक इटारसी वाली माता का।

गाज माता :– ४(चार) चानकी, ४ दिये, मिट्टी के महादेव।

कास पुस की घास पर रखकर पुजा करना, डोरा बडे के, छोटे के डोरे बनाकर आठ बार छोड़ना, (दुर्वा, गेहूँ लेना डोरे के साथ छोडते समयमोहरीत को कोढी के ढक्कन पर बनाते है।)

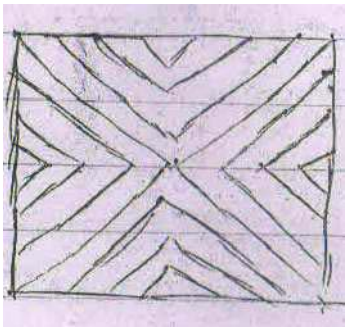

खड़ी से पोतना और गेरू से बनाना मुहँ के आजु बाजु।

मोहरीत के दिन :–

मोहरीत के दिन सिलक खिंचते है, ५ (पाँच) हल्दी की गाँठ से और उसके बीच

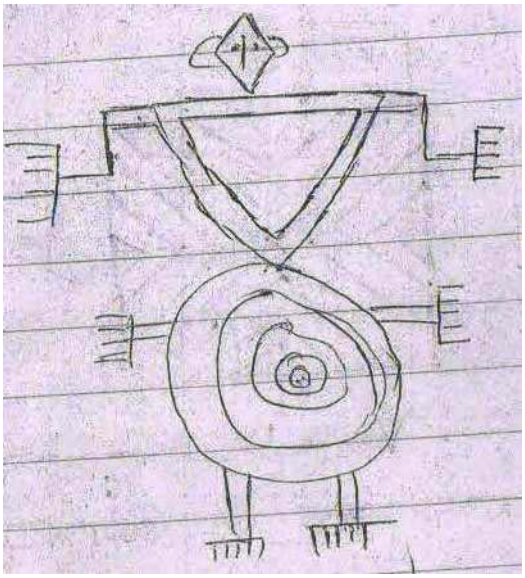

४(चार) कुंकू से

मोहरीत में सवा पाव चना और मुंग। कुंकू, हल्दी, गेहुँ सिलक खिचने वाले के लिये एवं गेहूँ का धान झाड़ना।

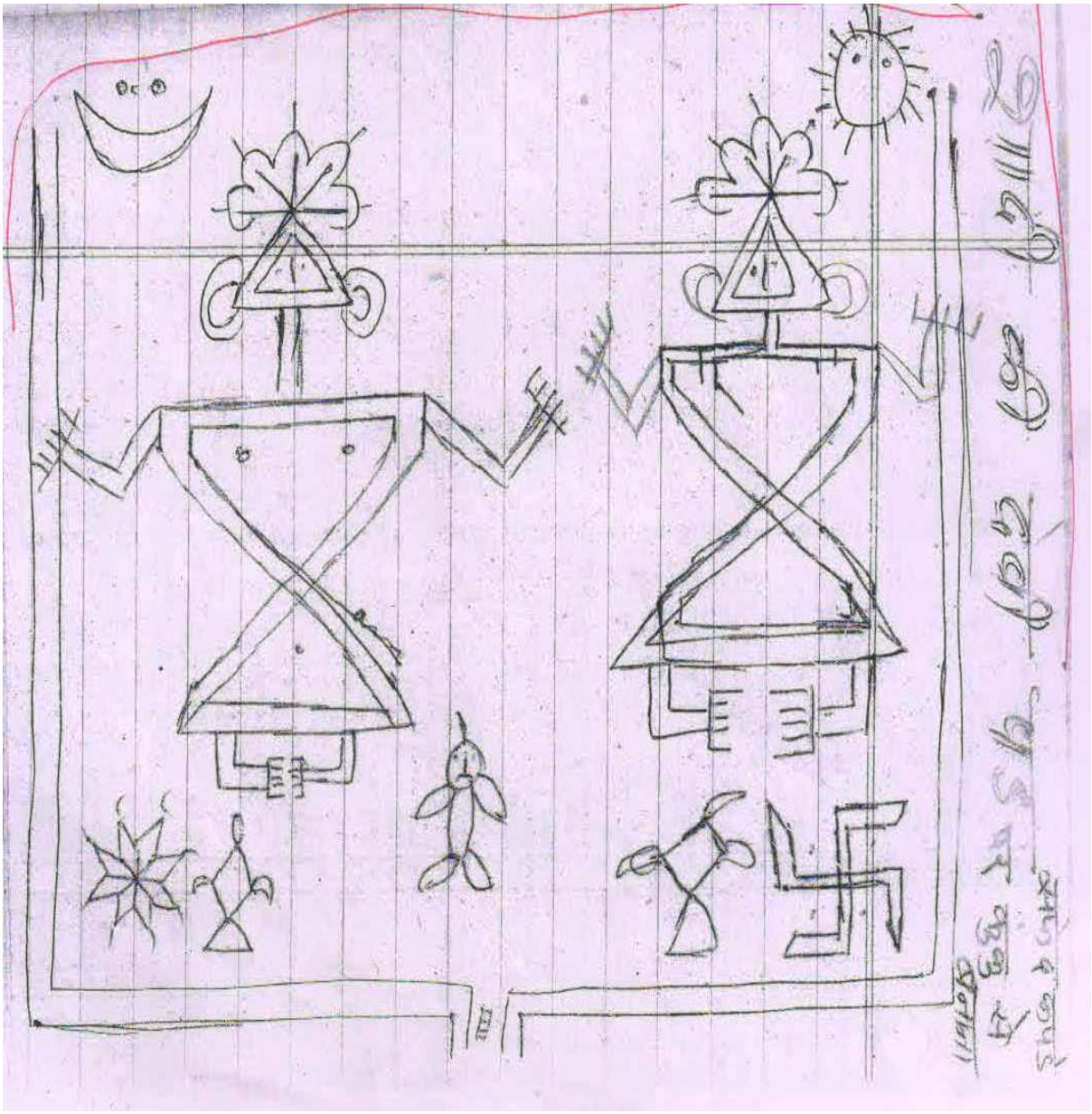

गाज माता की कहानी :–

भादो महीने के उजाले पक्ष में स्वर्ग की अप्सराये नहाती थी, एक गरीब बाई ने कहा गाज की पुजा हम भी करेंगे, अप्सराओं ने कहा कि तुम क्या पुजा करोगी उठते बैठते खाते हो। बाई ने कहा कि बहन हम भी करेंगे, बाई पूजा करने चली गई व रोट बना कर कोठी में रख गई। बच्चे भुख से रोने लगे, पडोसी ने कहा कि आओ हम खाना दे दे। तब देखे तो ये सोने चांदी के छत्र बन गये उनको तोडे तो वे टूटे नही बच्चो के माता पिता आये, पिता को माता ने कहा कि यह सुनार के यहां तुड़ा लाओ, सुनार ने कहा इसका कोई मोल नही है। जितने रूपये उठाते बने ले जाओं। घर ले आये बाजार से समान लाये फिर रोट बनाये खाना हुआ उसके बाद बच्चो को सोने के लिये चिन्दे बोन्दरे दिये, आधी रात को बाई के सपने में एक डोकरी आई, बाई ने कहा तुम कोन हो, डोकरी ने कहा में गाज हुँ, में कहां सोऊँ, बाई ने कहा हमारे घर आ कर सो जाओं।

सबरे इनकी झोपडी की जगह महल बन गये, हाथी घोडा, लाव लश्कर हो गये, पडोसी व राजा समझे की इसने चारो की है। दुसरे लोगो कपड़े को हाथ लगाये तो वे कोयले व चिन्दे बोन्दरे हो गये। बाई ने हाथ लगाया तो पितांबर हो गये, सब बोले तुमने क्या जादु किया है। बाई ने कहा कि हमको तो गाज माता टूटमान हुई है।

जैसे उसको गाज माता टूटमान हुई वैसे सब को ही गाज माता टूटमान हो।

धरमराज की कहानी :–

एक बुढिया थी। उनके बहु बेटे थे। उस बुढिया ने सब व्रत किये लेकिन धरमराज का व्रत नही किया। फिर भगवान के घर गई भगवान बोले तुमने सब व्रत किये मेरे धरमराज का व्रत नहीं किया। बुढिया बोली मैं क्या करूँ फिर भगवान ने पाँच दाने लोहे के दिये। फिर बुढिया धरती पर आई सुबह उठकर बहु ने देखा भुत प्रेत तो नही, बुढिया बोली मैं तुम्हारी सासू हुँ, बहु बोली मेरी सासु तो मरी गई। बुढिया बोली मैं तो धरमराज का व्रत करने के लिये। कार्तिक कि पूनम धरमराज का व्रत लिया। सासू बहु दोनो ने किया करते करते बारह महीने हो गये। पिलो कावडो, पिली चना कि दाल और ब्राम्हण को जोडो जूमानू फिर अगली पूनम को उद्यापन करना। धरमराज की मूर्ति सोने की, भरा बाण ये सब जोड़े को दो फिर बुढिया को विमान लेने आया और वह स्वर्ग में चली गई।

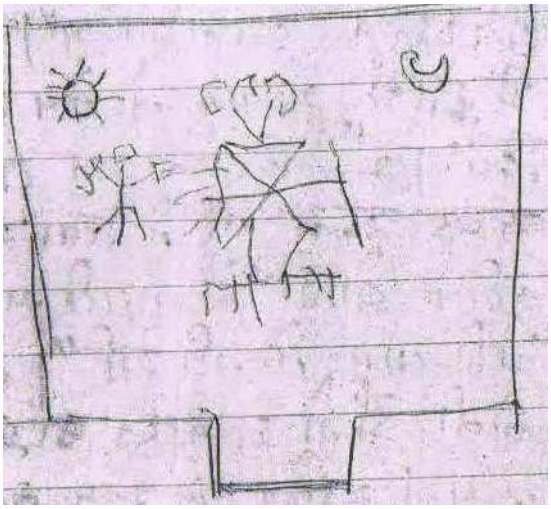

संकलनकर्ता

श्रीमती सीमा ललित सोमानी

खण्डवा

मो.न. 8871421213, 8319764218

जय महेश

बाहेती गोत्र के रीति–रिवाज एवं त्यौहार

मार्गदर्शिका : सौ. इन्दिरा बाहेती संकलनकर्ताः श्रीमती नमता बाहेती

''चैत्र''

नवरात्रिः

(1) गुड़ी पड़वा

इस दिन प्रातःकाल पूजन के पश्चात् कड़वे नीम व शकर का जल पीते हैं। घर के मुख्य द्वार एवं भगवान के स्थान पर नीम की पत्तियॉ लटकाई लाती हैं एवं श्रीखण्ड या पूरनपोली का भोग लगाया जाता है।

(2) गणगौर तीजः

इस दिन सुबह माता की बाड़ी में जाकर पूजन किया जाता है एवं श्रद्धानुसार माता को चुनरी–साड़ी–ब्लाउज श्रंगार सामग्री की भेंट नारियल के साथ चढ़ाई जाती है। बाद में वहॉ नारियल फोड़कर प्रसाद बांटा जाता है। दूसरे दिन सार्वजनिक स्थान पर माता के रथ पर धानी प्रसाद चढ़ाकर दर्शन किए जाते हैं।

(3) सप्तमीः

इस दिन माता के पूजन के साथ कंडा जलाकर गुगल डालते हैं। माता को गुड घी का नैवेद्य लगाते हैं। सामूहिक आरती के पश्चात् भोग में – शुद्ध देशी घी में बना भोजन बनता है जिसमें केवल दो बघार लगाते हैं। भोजन में दाल, चावल, कढ़ी, सब्जी (कद्दू या बल्लर या बैंगन) एवं रोटी बनाई जाती है एवं शाम को भी वही भोजन करते हैं, क्योंकि शाम को तवा नहीं रखा जाता है। इसी दिन दोपहर में अष्टमी उपवास के फलाहार हेतु दाने की बरफी, सिंघाड़े के लड्डू बनाकर रखते हैं। तत्पश्चात् स्नान कर गीले वस्त्रों से माता के भोग हेतु देशी घी में सिंघाड़ा आटा (थोड़ा सा) सेंककर सुरक्षित स्थान पर ढककर रखते हैं।

(4) अष्टमीः

इस दिन प्रातःकाल घर के पुरूष धुली सूती धोती पहनकर माता का पूजन करके एक दिन पूर्व बनाया गया माता का भोग सिंघाड़ा आटा गुड़ मिलाकर लगाया जाता है एवं अलग से गुड़ घी का नैवेद्य लगाते हैं और कंडा जलाकर माता के सामने गुगल डाला जाता है एवं परिवार सहित माता की आरती की जाती है। तत्पश्चात् पूजन करने वाला पुरूष गुड़ सिंघाड़े वाला भोग स्वयं ग्रहण करता है एवं गुड़ घी प्रसाद वितरित करते हैं। परिवार वाले विवाहित जोड़े फलाहार कर पूरा दिन उपवास रखते हैं।

कुंवारे बच्चे सप्तमी का बचा भोजन खा सकते हैं। इस दिन पूजन में सुबह दो नारियल चढ़ाते हैं जिसमें एक माता को व दूसरा भेरूजी का होता है। बाकी सदस्य अपनी मानता या श्रद्धानुसार नारियल चढ़ा सकते हैं।

(5) नवमीः

रामनवमी के दिन माता पूजन कर लाल रेशम में सात सात गांठ लगाकर घर के अविवाहित बच्चों के लिए पूजन करने वाली महिला द्वारा बेल बनाई एवं पहनाई जाती है। बेल बनाते समय कंडा जलाकर गुगल डालते हैं। सभी सदस्य माताजी की आरती करते

हैं। नारियल फोड़कर प्रसाद वितरण होता है। भोजन में दाल–बाटी, चावल का भोग लगता है। रामनवमी के उपलक्ष्य में भगवान को मीठा भोग लगाते हैं।

विशेषः छठ से नवमी तक किसी एक दिन छठी माता के नाम का नारियल चढ़ाकर फोड़ा जाता है।

(6) रेणुका चौदसः

इस दिन रेणुका माता के दर्शन कर नारियल, चुन्नी प्रसाद चढ़ाते हैं। श्रद्धानुसार हलवा का भी भोग लगाते हैं।

(7) सत्तू अमावस्याः

इस दिन सत्तू का भोग लगाकर मंदिर में एवं ब्राम्हण को सत्तू दान दिया जाता है।

''वैशाख''

अक्षय तृतीया (आखातीज)

इस दिन पानी से भरी मटकी, खरबूजा एवं सीधा किसी ब्राम्हण को दान देते हैं या मन्दिर में अर्पण किया जाता है।

''ज्येष्ठ''

वट पूर्णिमाः

इस दिन घर की विवाहित महिलाएँ बड़ के वृक्ष की पूजा करती हैं एवं भीगी चना दाल या भीगे चने एवं पके आम से अन्य सुहागिनों की खोल (गोद) भरती हैं। बड़ के वृक्ष को कच्चे सूत से लपेटकर परिक्रमा करते हैं। हर पूर्णिमा की तरह इस दिन भी सत्यनारायण व्रत कथा एवं पूजन होता है।

''आषाढ़''

देवशयनी एकादशीः

परिवार के सदस्य उपवास रखते हैं एवं विट्ठल रूक्कमणी के दर्शन करते हैं।

गुरू पूर्णिमाः

इस दिन अपने अपने गुरू के चरण स्पर्श करते हैं एवं गुरू की गादी या स्थान पर भेंट चढ़ाते हैं।

''सावन''

नागपंचमीः

सावन महीने में शुक्ल पक्ष की पंचमी को नागपंचमी पूजन होता है। इस दिन नाग–नागिन जोड़े का पूजन करते हैं एवं मन्दिर जाकर नारियल, दूध, रूई की बाती की माला, फल–फूल, अगरबत्ती, दिया लगाते हैं। भोजन में फीके पुए एवं नमकीन पुए (चीले) बनते हैं। इस दिन बघार नहीं लगाते हैं। चाकू, हथियार प्रयोग वर्जित रहता है।

वीरपसः

रक्षाबंधन के पूर्व आने वाले रविवार को भाई द्वारा विवाहित बहन को वीरपस दी जाती है। जिसमें साड़ी या ब्लाउज़ पीस, नारियल गोटा, हल्दी, कुंकुं, गेहूँ एवं पैसे रखकर भाई अपनी बहन के घर जाकर भेंट देता है।

पोता चौदसः

इस दिन माताजी का पूजन कर भोग में घी के बघार में कद्दू की या भट्टा, बल्लर की सब्जी, दाल–चावल, कढ़ी, रोटी, सूखा बघार करते हैं। शाम को वहीं भोजन करते हैं।

रक्षाबन्धनः

इस दिन बहने अपने भाई के घर राखी बांधने जाती हैं। सुबह खाने के साथ पकवान भी बनाए जाते हैं।

जन्माष्टमीः

इस दिन उपवास रखा जाता है। फलाहार लिया जाता है। रात्रि को कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाकर पंजेरी का प्रसाद बांटते हैं।

पोला अमावस्याः

इस दिन बैलों की पूजा कर मिष्ठान्न भोग लगाया जाता है।

हरितालिका तीजः

इस दिन घर की महिलाएँ एवं बालिकाएँ निर्जल व्रत रखती हैं एवं शिवजी की पूजा आराधना करती हैं।

गणेश चतुर्थीः

इस दिन श्री गणेशजी की मूर्ति स्थापित करते हैं। दस दिन सुबह–शाम गणेशजी को घर के (मोदक) भोग के साथ आरती की जाती है।

ऋषि पंचमीः

इस दिन महिलाएँ अतिझाड़ा से स्नान कर सप्तऋषि पूजा करती हैं। जनेऊ, कपड़ा, पान एवं पंचखोखा पूजन सामग्री है।

ऋषि पंचमी (चंदन से पाटे पर मांडना)

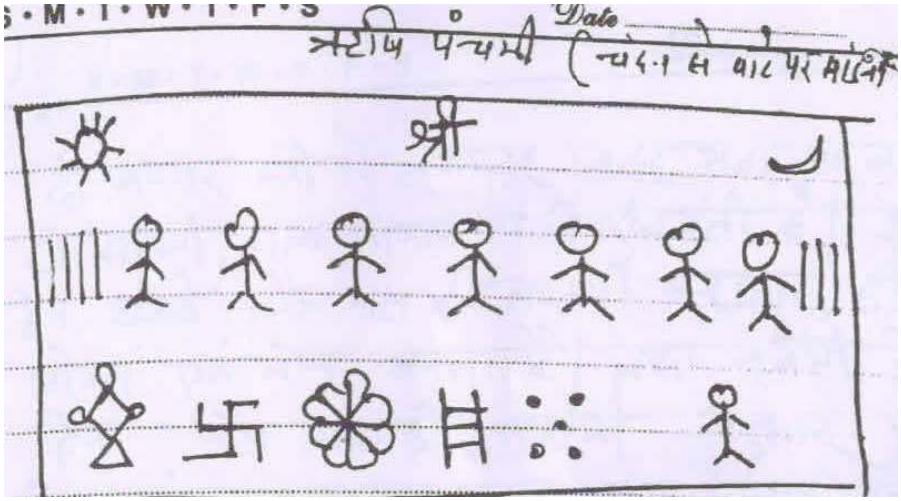

सीतला सप्तमीः

एक दिन पूर्व सौले में माता के भोग हेतु गुड़ का हलवा, भजिए, सात पुरी, सात बाटी, चावल बनाकर सप्तमी के दिन शीतला माता पूजन करते हैं। घर के सदस्य बासी भोजन (जो भी इच्छानुसार एक दिन पहले बना सकें) करते हैं।

अनन्त चौदसः

इस दिन चूरमा लड्डू का भोग गणेशजी को लगाकर विसर्जन करते हैं।

श्राद्ध पक्षः

श्राद्ध पक्ष वाले दिन तर्पण कर के पितरों को भोजन करवाकर सह–कुटुम्ब भोजन करते हैं। भोजन में खीर–पूरी, भजिए, कढ़ी, दाल–चावल, खड़े मूंग–चौले बनाए जाते हैं।

नवरात्रिः

इसके पहले श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन किचन की सफाई, पुताई इत्यादि कर ली जाती है। अष्टमी के दिन देवी का दो बघार घी में लगाकर कद्दू, भट्टा, या नल्लर की सब्जी, दाल–चावल–रोटी, कढ़ी बनती है। इस दिन चैत्र मास की सप्तमी अनुसार ही भोजन एवं भोग बनता है तथा नवमी के दिन चैत्र मास की अष्टमी अनुसार पूजन, भोग एवं उपवास रखा जाता है। पूरी नवरात्रि माता के सामने गुगल गालते हैं।

दशहराः

इस दिन कुंवारे बच्चों की सुरक्षा हेतु माता की बेल बनाई जाती है। लाल रेशम लेकर उसमें सात गठानें बिजासन माताजी के नाम की लगाई जाती है। गुगल गाला जाता है। शाम को दशहरा मांडते हैं।

शरद पूर्णिमाः

रात्रि में दूध पकाकर मेवा डालकर चन्द्रमा की छाया में रखा जाता है एवं प्रसाद बांटते हैं।

करवा चौथः

घर की महिलाएँ निर्जल उपवास रखती हैं। रात्रि में चांद देखकर पूजा करती हैं एवं खाना खाते हैं।

''दीपावली पूजन''

ब्रज बारस (द्वादशी):

इस दिन गाय एवं बछड़े की पूजा की जाती है। ज्वार की रोटी एवं चौले की सब्जी खाई जाती है। बेसन भी बना सकते हैं।

धन तेरसः

धन तेरस के दिन पूरनपोली बनाई जाती है। पूरन घर में दो दिन तक रखा जाता है, ताकि घर धनधान्य से भरपूर रहे। शाम को धन की पूजा की जाती है। इस दिन ग्वारपाठा जड़ सहित लटकाते हें।

रूप चौदसः

सुबह जल्दी स्नान (तिल्ली, हल्दी, उबटन लगाकर) किया जाता है।

दीपावली पूजनः

शाम को 16 दीपक जलाकर मॉ लक्ष्मी की पूजा की जाती है। पूरे घर की सजावट की जाती है। रात को रोशनी की जगमग के साथ कई प्रकार के व्यंजन खाये–खिलाए जाते हैं।

सुहाग पड़वाः

प्रातःकाल घर की महिलाएँ जल्दी स्नान करके बड़े–बुजुर्गों का आशीर्वाद लेती हैं।

भाई दूजः

इस दिन घर की बहन–बेटियॉ भाई को तिलक करती हैं एवं व्यंजन खिलाती हैं तथा भाई से नेग पाती हैं।

''देव उठनी ग्यारस''

देव उठनी ग्यारस को सुबह उपवास रख फलाहार किया जाता है। शाम के समय तुलसी एवं सालिग्राम का पूजन किया जाता है। घर के भगवान भी तुलसी के नीचे रखकर उनका पूजन किया जाता है। तुलसी को गन्ने की झोपड़ी के नीचे रखकर बोर–भाजी, आंवला का भोग लगाकर, तुलसी परिक्रमा की जाती है, फिर भोजन बनाकर उसका भोग लगाकर प्रसाद पाया जाता है।

जन्म से मरण पर्यन्त रिवाजः

जन्मः बच्चे के जन्म के बाद उसी दिन नाड़े की बेल पहनाते हैं। जन्म के बाद बच्चे को शुद्ध शहद चटाने की भी परम्परा है। छठवे दिन छटी पूजन में रात को घर की बड़ी महिला कोरा ताव, पर, खारिक, दिया जलाकर उसकी पूजा करती है। हल्दी से पीले करे धागे को बच्चे के पैर व हाथ में बांधा जाता है। देशी घी का काजल पाड़कर बच्चे को लगाते हैं, साथ ही ''छठी माता'' बच्चे को पहना देते हैं।

बच्चे का नालाः

बच्चे का नाला खिरने पर सुतकाला पूजाते हैं। जच्चा–बच्चा को स्नान करवाकर शुद्ध वस्त्र पहनाते हैं। बाथरूम की दीवार पर हल्दी से तीन पुतले बनाए जाते हैं। पीली चिंदी को पुतले के ऊपर गुड़ लगाकर चिपका देते हैं। सूखा नारियल व खारिक को फोड़ी जाकर जच्चा को दे देते हैं। लड़की होने पर 10 आटे की चांदकी व दिये तथा लड़का होने पर 10 आटे के दिए व चानकी बनाकर थाली में रखकर दिए जलाए जाते हैं। जच्चा बाथरूम में हल्दी के 7 (लड़का) या 5 (लड़की) हाथ हल्दी से लगाती है। जच्चा गीत गाये जाते हैं। मिठाई, बताशे वितरित किए जाते हैं।

जलवाय पूजनः (घर के बाहर पानी की टंकी के पास)

(1) जच्चा एवं बच्चा के स्नान करवाकर बच्चे को नाड़े की बेल पहनाना।
(2) एक सुहागन को भोजन करवाना एवं साडी देना।
(3) लड़के 18 आटे के दिये व लड़की के 16 दिए और चांदकी बनाना।
(4) पूजा थाली में कच्चा दूध, सादा पान, गुड़, खारक, सूखा नारियल रखना और पाट पर चांद सूरज के 3 पुतले बनाना व उसकी पूजा शाम को जच्चा–बच्चा द्वारा करवाना। पीली चिंदी तीनों पुतलों के ऊपर गुड़ से झूले जैसा चिपकाना। भरा कलश जच्चा के सिर पर रखना और खाली कलश रखना। गेहूँ से गोद भरना, डेल पर खारक फोड़ना, बच्चे को गोदी में लेकर खटिया पर बिठाना। दीवार पर 7–7 हाथे हल्दी के लगाना। अन्दर आने के बाद चौक पाट कर मामा घर के कपड़े करना।

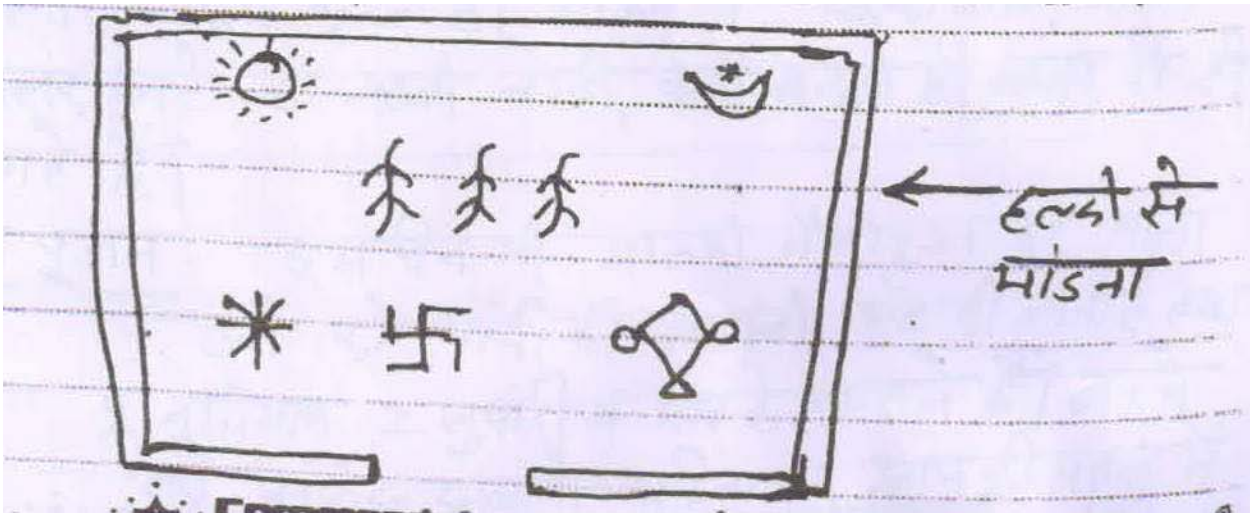

मुण्डन संस्कारः ''जमाल की देवी पूजन विधि''

ग्राम चमाटी में चैत्र मास की नवमी को जमाल निकलते हैं। परिवार के सभी बच्चों के जमाल एक साथ निकलते हैं।

सप्तमी पूजनः

इस दिन पूजा में कुंकुं चावल से देवी पूजते हैं। गुगल गाल कर उस पर घी छोड़ते हैं। घी, गुड़ का भोग लगा आरती करते हैं। भोजन में फीकी दाल, चावल, बल्लर। भटे की सब्जी, रोटी, कढ़ी बनती है। बघार दो ही लगते हैं।

अष्टमी पूजनः

इस दिन भी सप्तमी जैसा पूजन कर माताजी को चांदी की तागली भेंट की जाती है तथा 2 नारियल, 2 सुपारी व सिक्के चढ़ाते हैं। बच्चे को सफेद झबला पहनाकर आम की पत्तल में बुटाया जाता है। नैवेद्य में 4 रोटी, दाल, चावल, कढ़ी, बेसन की बड़ी डालकर, सब्जी (बल्लर, भटा, कैरी व अदरक चारों डालकर) माताजी को थाली में भोग लगाते हैं। थाली ढक देते हैं उसे दूसरे दिन मोड़ते हैं। इसी दिन 10 दिये आटे के उबालकर जलाये जाते हैं। अष्टमी के दिन ही बच्चे को सफेद झबला, टोपी, झंडी, तागली गले में, व तांबे एवं चॉदी के कड़े हाथ–पैर में, चॉदी की अंगूठी दूध भात से बुटाते हैं एवं बाद में रकम पहनाते हैं। माताजी को बच्चे के हाथ से नारियल भेंट करते हैं।

नवमी पूजनः

घर पर पूजन के बाद गुगल जलाकर लाल रेशम की बेल बनाते हैं। अष्टमी वाले नारियल फोड़ते हैं। अष्टमी की थाली का नैवेद्य घर के पुरूष वर्ग ग्रहण करते हैं। जमाल चमाटी में निकाते हैं।

चमाटी में 1 नारियल देवी को बच्चे द्वारा एवं 1 नारियल भैरू बाबा को वापसी में चढ़ाते हैं। बच्चे को गुलाबी झबला पहनाकर हाथ में झंडी पकड़ाते हैं। जमाल लाल कपड़े में रोट रखकर उसमें बहन–बेटियों द्वारा झेले जाते हैं।

खूंट जमालः

नवमी के अगले दिन सवा पाव चावल देवी भोग बनाकर देवी पूजन कर नारियल चढ़ाते व गुगल गालते हैं तथा खूंट जमाल निकाले जाते हैं। रेणुका माता के दर्शन कर नारियल प्रसाद (सवा पाव पेड़ा) पूजा की जाती है।

विवाह संस्कारः

मुहुर्त के पहले अच्छे चौघड़िया में सवा पाव कुंकुं हल्दी लाकर बहर–बेटी को झिलवाना एवं 2 गवन्नी जिमाकर साडी करना।

माता पूजनः

मुहुर्त के दिन सुबह सीतलामाता को बेल चढ़ाते हैं। सवा हाथ लाल कपड़ा, एक नारियल, सवा पाव चावल एवं सवा रूपया एवं कुंवारे (वर–वधु) की बेल माता को अर्पित करते हैं।

खलमिट्टी

टोकनी 7 या 9 (9 दुल्हे की या 7 दुल्हन की), 2 सुपड़ा, 2 नारियल,
खलबत्ता (नाडा बांधना), मिटी का दिया (तेल),
आरती – कुंकुं, चावल, सुपारी, पान, पैसे, गेहूँ सवा किलो (झाड़ने हेतु)
बताशा 1 किग्रा, नाड़ा, हल्दी की गांठ 250 ग्राम, गणेशजी, फूल, पाट, सलाई,
आटा (चौक मांडना)

विधिः सर्वप्रथम टोकनी, सुपड़ा, खलबत्ता सब पर नाड़ा लपेट कर दुल्हा/दुल्हन को पाट पर चौक बनाकर बिठाना। साथ में छोटे बालक को गणेश रूप में विराजना।

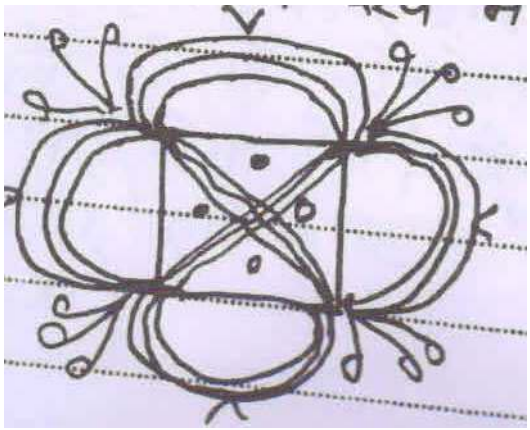

पूजा की थाली में गणेश पूजन व कलश पूजन एवं चिकसा में हल्दी (मुहुर्त की) डालना। गणेश की पूजा करके बहन–बेटी द्वारा दुल्हे को टीका लगाना व आपस में कुंकुं हल्दी लगाना, एक–दूसरे को नाड़ा बांधना। मुहुर्त में 4 बहन–बेटी द्वारा हल्दी की गांठ कूटना एवं सुपड़े में गेहूँ झाड़ना, उसमें बताशे, पैसे, सुपारी भी डालना है।

खलमिट्टीः 1. घर के पास मिट्टी, 2. गणेशजी 3. पान, पैसा, सुपारी
4. मुसली, 5. गुड़

विधिः मिट्टी खोदते समय पान पर गणेश रखकर पूजन करना, मुसली पूजन करना, गुड़ रखना फिर गणेशजी सहित मिट्टी उचकाकर दुलहे की मॉ की खोल में डालें। दूल्हे की मॉ की खोल से बहन–बेटी की खोल भरकर नेग देना। टोकरी में मिट्टी डालकर घर के अन्दर एक जगह मिट्टी इकट्ठी कर उसमें जल डालना।

गणेश पूजनः

गेहूँ के आटे में हल्दी डालकर 21 गणेश व बेसन में हल्दी डालकर 21 रोटी (छोटी) बनाना है व गणेशजी को बघाना एवं देवी के कमरे के बाहर मांडना बनाना (देखें चित्र)

कुलदेवी पूजनः

18 गिलास गेहूँ पिसाने के (या आवश्यकतानुसार), 18 गिलास मूंग की छिलके वाली दाल, सवा किलो चावल (खिचड़ी), सवा किलो चावल गाड़गे के लिए, गाड़गे 25 छोटे, दिये बड़े 6 नग, बड़ा गाड़गा 1, छोटे दिये 25+15 कुल 40 नग, मंडप का दिया 5 छेद+ भिलावा+कौड़ी, लाल खड़ू+सफेद खड़ू, माणक खम 1, चाटू (कडछी), माताजी की चांदी की तागली 2 नग, चावल 1 किग्रा पूजा, चावल 1 किग्रा (पीले करना), लाल कपड़ा 1.50 मीटर+1 मीटर, सफेद कपड़ा 1 मीटर+1 मीटर

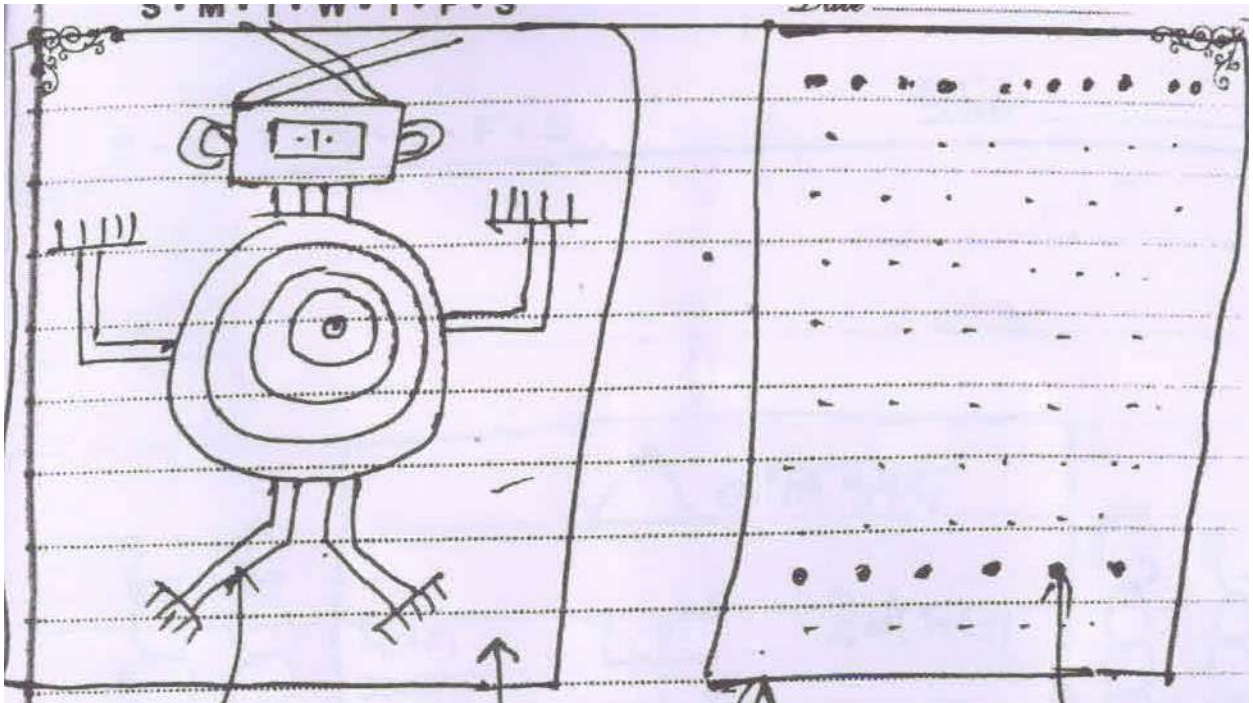

सफेद खड़ू लालगेरू लालगेरू सफेद टिपकी

गणेशपूजन के दिन देवी के कमरे के बाहर दीवार पर बनाना

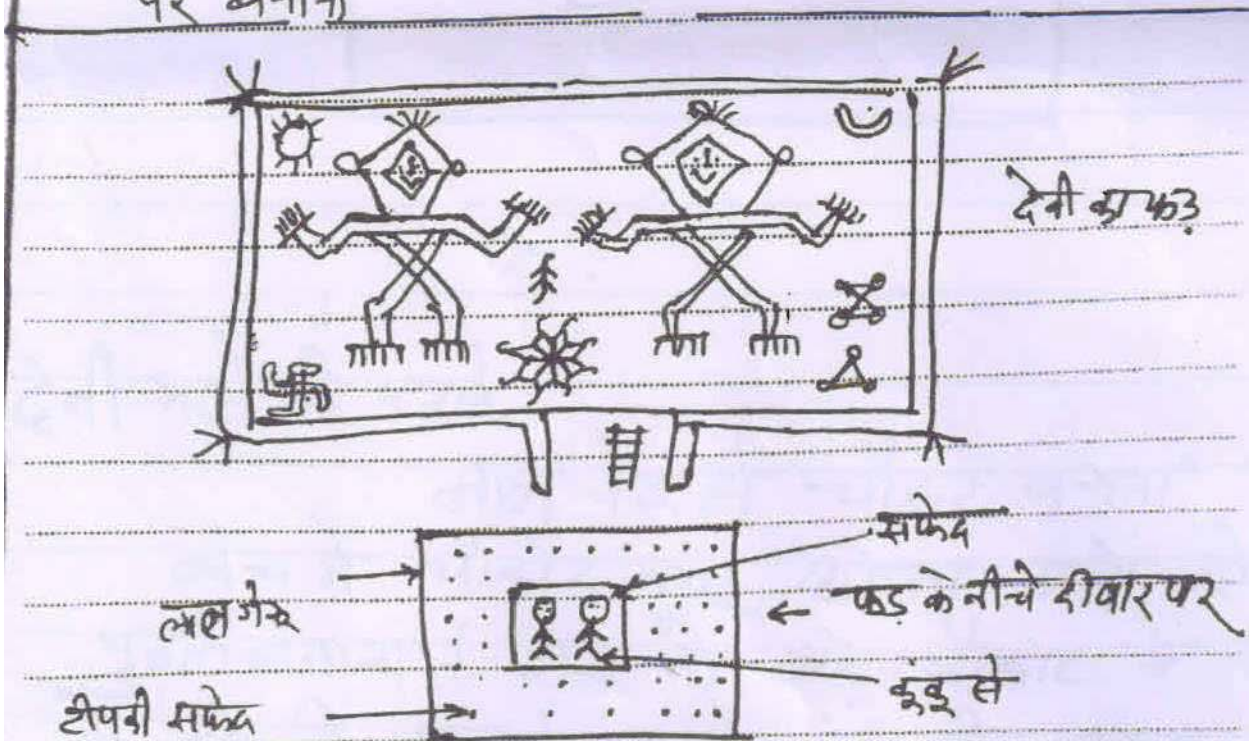

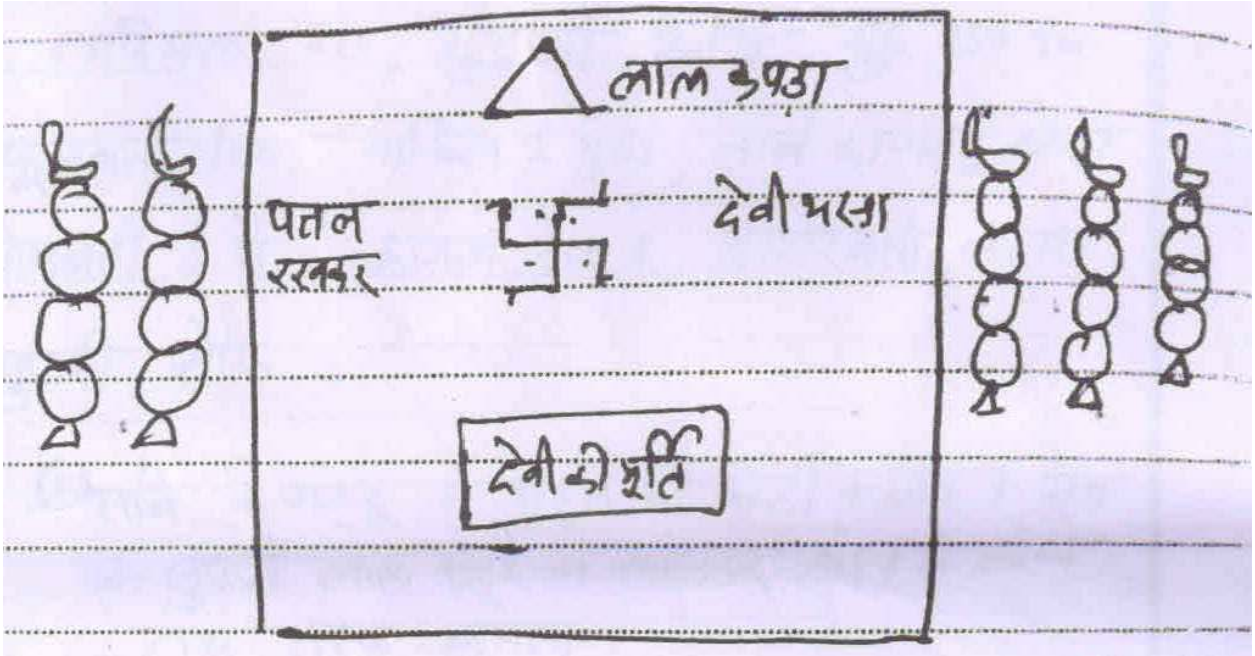

देवी भरने के पहलेः

लाल गेरू से चाकट बनना, बीच में चौकोर जगह छोड़ना, उसमें दो पुतले बनाना। गेरू के बड़े चौकोट में ऊंगली से टीपकी रखना। पुतले कुंकुं से बनाना।

सूजा 1, सुतली 100 ग्राम, लाल गेंहूँ 100 ग्राम, खडू 100 ग्राम, गुगल 50 ग्राम, कंडे–2, नारियल 20, शुद्ध घी 2 किग्रा, गुड़ 250 ग्राम, फूलवती 100, माचिस 1 पुड़ा, तांबे का गट्टू छोटा, मोमबत्ती 1 पैकेटे, कागज टेप 1, अगरबत्ती, बताशे, सुपारी, सौंफ।

नोटः (1) तांबे के गट्टे में मुहुर्त की मिट्टी+पान+पैसा+सुपारी लाल कपड़े में बांधकर मण्डप में सीधे हाथ तरफ बांधना।

(2) पीला कपड़ा, चावल, सुपारी पैसा रखकर माणक खंब में बांधना।

गणेश पूजन के दिनः

देवी के सामने दूल्हे के पिताश्री द्वारा मूंगदाल+चावल से देवी भरते हैं सात बार। उसमें 32 धेला+32 सुपारी भी डालते हैं। आधी सामग्री से गणेश पूजन के दिन देवी भरते हैं। बची हुई आधी सामग्री से लगन वाले दिन देवी भरते हैं। गणेश पूजन वाले दिन गाड़गे देवी मॉ के दाहिनी ओर 3 रो व बांयी ओर 2 रो, 4–4 गाड़गे व ऊपर 1–1 दिया पॉचों रो में व नीचे बेस हेतु दिया लगाते हैं। सभी गाड़गों में धेला–सुपारी डालना। बीच के बड़े गाड़गे में चावल (सवा पाव या सवा किलो) डालकर धेला–सुपारी डालना।

लगन की देवीः

माता का पड़ लगाकर देवी स्नान कराकर पूजन कर लिया जाता है। सवा किलो हलवे का भोग तैयार कर लिया जाता है। आटे के 32 दिये बनाते हैं फिर सभी परिजन–कुटुम्बी पुरखों को याद कर रूखड़ी न्यौतते हैं। रूखडी के समय दूल्हे को मण्डप में बिठाते हैं एवं सभी पीले चावल से रूखड़ी न्यौता देते हैं। दूल्हे को बहन बेटी तेल चढ़ाकर, स्नान कराकर ऑखे बन्द रखवाकर देवी के समक्ष दर्शन हेतु लाती हैं। उसके साथ ही देवी के सामने हलवे को परात में रखकर आटे के 32 दिये जलाते हैं एवं वर पिता माता के सामने देवी भरते हैं एवं दो नारियल चढ़ाते हैं। बुजुर्ग हलवे+दिये जलाकर थाट घुमाते हैं। दूल्हा ऑख खोलकर सर्वप्रथम दिये

के दर्शन कर माता–पिता को देखकर प्रणाम करता है एवं माता को नारियल चढ़ाता है। साथ ही गाड़गों के ऊपर के दिये भी पूजन से पहले जलाकर रखते हैं। घर के सभी कुटुम्बी माता पूजन एवं आरती करते हैं। दूल्हे के दाहिने हाथ में कांकण डोरा बांधा जाता है। माता पूजन के समय कंडा जलाकर गुगल छोड़ते हैं।

मण्डपः मण्डप वाले दिन 4 बांस से मण्डप लगाकर आम के पत्तों से सजावट कर बीच में दिये में कौड़ी, भिलावा बांधकर लटकाना। दामादों के नाड़ा बांधकर, पूड़ी रखकर हाथे (बहुओं द्वारा) लगाते हैं। चारों कोनों में मटकी में पानी धेला–सुपारी रखते हैं। दूल्हे को हल्दी के बाद उस मटकियों के पानी को सिर पर डालते हैं। मण्डप के दिन दूल्हे की मामी द्वारा मण्डप लीपकर नेग दिया जाता है। मामा घर से मामेरा आता है जिसमें परिवार द्वारा मण्डप में मामा परिवार का स्वागत कर उनके द्वारा दिए वस्त्र भेंट स्वीकारते हैं।

बाना :	सुपड़ी, छोटी मूसल, सुजा, रूई, सिक्का
घोड़े की तैयारीः	चना दाल, काजल, भाभी नेग
दुल्हन की मॉः	टावेल, बताशे, मखाना, काजू, मिश्री
बेडाः	घड़ा, दो लोटे, साड़ी, नारियल 50
लगनः	पड़छने का सामान (सुजा, रवई, सिक्का, मुरूल सुपारी)
चवरी का सामानः	वधु पक्ष द्वारा
विदाई	साल की धानी
सोंज :	2 बेलन, 2 लकड़ी की डब्बी, कुंकुं डब्बी, कुंकुं मेहंदी, नाड़ा, गुड़, सूखा मेवा, खोपरे की 7 वाटकी, काली पोत, चांदी की बड़ी तागली, सिक्का, दुल्हन श्रंगार सामान, 2 मोड़, कपड़े, गहने इत्यादि।
देवी उठानाः	सवापाव हलवा सेंककर भोग लगाकर चढ़ाये गये नारियल फोड़ना, पड़ को ऊँचा करना।
अन्तिम संस्कारः	सभी परिवारों में शास्त्रोक्त विधि से इस संस्कार की सारी रीति सम्पन्न की जाती है। 15 दिन के श्राद्ध बाद छःमासी, बरसी, मासिक श्राद्ध फिर वार्षिक बरसी कर श्राद्ध पक्ष में मिलाया जाता है।

।। जय महेश ।।

———————————————

।। श्री गणेशाय नमः ।।

श्रीमती अंजुषा पंकज बाहेती, खण्डवा
मो. 9424040222

माताजी की पूजन विधिः : अष्टमी पूजन विधिः

सामग्रीः चावल, गेहूँ, जौ, पत्थर (कंकर) कुंकुं, चावल, छार छबिला, गुगल, पंचांग धूप, अगरबत्ती, आयफल, कपूर, 20 रोटी खूंट की, 7 दिए आटे के, मिट्टी का दिया, नारियल 2, घी, गुड़

विधिः सबसे पहले सप्तमी को घर की साफ सफाई कर पुताई लिपाई करें फिर सवले में कपड़े डाले, वहॉ का दरवाजा लगा दे, ध्यान रखे उन कपड़ों को कोई भी ना छुए। अष्टमी के दिन सिर से नहाकर सवले के कपड़े पहनकर अन्दर आवे, नाहे के पानी से घट्टी को धोए और साफ कपड़े से पोछें। अब इसमें अष्टमी के गेहूँ पीसें। इसके बाद घट्टी को पोछकर नवमी के गेहूँ पीसें। उसमें से नवमी की मुट्ठी निकाले अब खाने बनाने से पहले चावल में से पहले अष्टमी की मुट्ठी चावल निकाल लें, चने कीदाल को घी से बघारे व चावल बनाए, फिर जो गेहूँ पीसें उसकी 20 रोटी छोटी–छोटी बनाएं और उसी आटे के 7 दीए बनायें। अब पूजन की जगह को गोबर से लिपें, उस पर कुंकुं से सातीयॉ बनाएँ, अब गेहूँ और चावल की मुट्ठी (ढेर) लगाए। एक थाली में कुंकुं, चावल, पयाग, धूप, पीसे चावल का आयफल, छार– छबिला, कपूर, घी, गुड़, घी का दीया आटे का, अगरबत्ती आदि रखें। अब चारों ओर खूट पर 4–4 रोटी व आटे का एक–एक दीया रखें, उसमें घी डाले और उसमें गोल बत्ती रखें। दोनों ढेर पर एक एक रूपया और सुपारी रखें। दो दीये सामने और एक दीया पीछे रखें। अब कंकर को दूध और पानी से धोकर उसमें घी, सिंदूर, लगावें व एक ढेरी पर 4 और एक ढेरी पर 5 कंकर रखें। अब दीया जलाकर पूजन विधि शुरू करें। पहले घर के आदमी पूजा करते हैं, फिर धूप देते हैं व भोग लगाते हैं। उसके बाद औरतें कुंकुं और आयफल से पूजन करती है। इसके बाद एक नारियल चढ़ाते हैं व बाद में आरती गाते हैं।

नवमी की पूजन विधिः सामग्री– नारियल, खीर व पुवे रखने के लिए 4 थाली के दो दीए आटे के अष्टमी जलाकर रखना आयफल (अष्टमी के पीसे में से अलग निकालकर रखा हुआ)

पूजन विधिः पूजन जैसा अष्टमी को करते हैं वैसे ही करते हैं। पहले दो दीये जलायें। नौ पुए के सामने रखे, चार पूए थाली में रखें जिससे पूजा करें। धूप छोड़े, पर खीर पूए सभी धूप में छोड़े, सबके पूजन के बाद नारियल चढावें व आरती उतारें। जब बच्चों को बुटाना हो तो उसके हाथ से पूजन करावे, उसे आम के पत्तों से खीर सात बार चढ़ावें।

मण्डप के नीचे दुल्हन के हाथ में कांकन बांधनाः पीपल के पत्ते व नाड़े का बनता है। सात गठान लगाना।

माणकखंब, पूर्वजों को न्यौतनाः सामग्री– मानकखंब, पापड, कांकडे, चने की दाल की पोटली, चने कीदाल, सुआ, घी, शक्कर।

अब चने की दाल व काकडे को हल्दी से पीला करके वहॉ चढाए, पापड व सुआ को खड़ा रख दें।

माय माता की तैयारीः 32 दीए मिट्टी के, चावल चार किलो, गेहूँ चार किलो, छटकना, चार–चार करवे, ऊपर–नीचे दीए चार, एक बडी मटकी व दीए सामने रखने के लिए नाडे की बत्ती।

गणेश पूजाः गणेश पूजन में खाजा, लापसी, और चावल बनते हैं। खाजा लापसी व गणेश बनाने के लिए सवा–सवा किलो आटा, मैदा, बेसन पीस लें। बेसन के 32 गणेशजी बनाना है। सबमें कुंकुं की टीकी लगाकर नाडा बांधे। अब एक सातीयॉ बनायें व उस पर पाटा रखें। उस पर लाल कपड़ बिछावें। उस पर सवा पाव चावल रखें। उस पर एक नारियल रखें। सामने ढेर पर गणेशजी रखें। फिर पैसा सुपारी रखें। चारों खुंट पर चार–चार खाजा उसके ऊपर लापसी और आटे के दीये जलाकर रखना। अब पूजन की थाली में चार खाजा, लापसी और भात रखें। गुड घी रखें। गुड घी की धूप देना है। अब गणेशजी बघाने जाते हें। घर के बाहर बेटी लेकर खडे। फिर गणेश्जी की पूजा करके व बहन बेटी को नेग देकर गणपति लेवें, माथे से लगाकर ले आए। अब उन बत्तीस गणेश को पाटे पर बिछाकर रखना है। (चावल के पास) दुल्हन और सभी परिवार के पूजन करें। पूजन के बाद दुल्हन पॉच कोल दूध भात का खावे 9 खाजे गणपतिजी के आगे रखते हैं, वो कोठी में रख देवें।

अब खुंट के खाजे लापसी उठाकर सभी प्रसादी के रूप में खा लेवें। अब चावल की पोटली लाल कपड़े में बना लें। गणेश को व आटे के दीए को उठाकर अलग रख दें।

मण्डपः आम के पत्ते, नाडे, छेद वाला दीया बीच में बांधने के लिए चार पोटली चने की दाल की चार–चार पुडी चारों तरफ बांधने के लिए चार जमाई चारों तरफ पोटली पर पुड़ी बांधते हैं। हल्दी के हाथे लगाकर नेग देते हैं।

कुंकुं हल्दी से सीलक खींचे। एक तरफ 7 और एक तरफ 5 कुंकुं से शुरू करना है। सीलक खींचने वाली बाई को सवा किलो गेहूँ , एक नारियल व पताशे, पैसा सुपारी गोद में दें, फिर सीलक खींचे।

अब खलमिट्टी लाते हैं आरती की थाली में पैसा, सुपारी, गणपतिजी रखना, चौक बनाकर पाटे पर टोपली रखे, उसकी पूजा करें, चुन्नी ओड़ाते हैं। घुंघरी, बाखले बनाकर थाली में रखे, गुड़ भी रखें, दो पान रखें, अब मिट्टी की जगह (जहॉ से मिट्टी लाते हैं) उस जगह को लीपें। उस पर सातियॉ बनाएँ, उस पर चावल चढ़ाएँ, पान रखें, पान पर गणपतिजी रखें। गणेशजी का पूजन करके उन्हें गुड़, 9 घुघरी बाखले का भोग लगाए। अब बहन बेटी मिट्टी खोदती है। दुल्हन की मॉ गणेशजी सहित गोद में झेलती हैं। जो मिट्टी खोदती है उसे टीका लगाकर धोक व नारियल देते हैं। अब सात टोपली में मिट्टी भरकर घर ले आते हैं। घर लाकर पहले मुसली रखते हैं, फिर गणेशजी रखते हैं। फिर सब टोपली की मिट्टी पर पानी डालते हैं। साल सुपड़े के गेहूँ को सेंकर हल्दी के साथ पीस ले, उसे चिकसा व चौक का आटा बना लें।

विवाह की रस्मेः सर्वप्रथम माता पूजन की जाती है।

माता पूजन की सामग्रीः 1 लाल झण्डी, 1 सफेद झण्डी 4 नारियल (2 नारियल खेलते छोड़ते हैं और 2 नारियल फोड़ते हैं)। सवा किलो चावल सुबह बनाकर ठंडे करना, 2 ताव ूपजी की थाली, कुंकुं, चावल, अबीर, गुलाल, मेहंदी, दही, दूध, कपूर, नाड़ा, घी का दीपक फूलबत्ती वाला। अब माता पूजने जाते हें। ढोल के साथ।

मोहरतः सर्वप्रथम देवधामी के नाम से पॉच नारियल चढ़ाते हैं।

सामग्रीः दो सुपड़े, गेहूँ सवाया, उसमें एक सिक्का, 4 सुपारी, टोपली (लड़के की 9, लड़की की 7) टोपली सील्ला पत्थर, हल्दी की 7 गठान, 2 गठान थाली में सीलक खींचने के लिए, पताशे, नाड़े।

चार महिलाएँ जो साल सुपड़ा करती हैं वा आपस में एक दूसरे के टीका लगाकर नाड़ा बांधे। सीला पत्तर पर नाड़े बांधे। आटे का चौक बनाकर दुल्हा या दुल्हन को बिठायें। पहले गणेश को टीका लगाकर 10 बताशे हाथ में देना, फिर उसे पाटे पर बिठाना। फिर दुल्हन को बिठाना, सामने तांबे का कलश रखें। उसमें 5 पान व नारियल रखें। नीचे गेहूं, कलश में पानी रखें। दुल्हन के आगे 2–2 करके साल सुपड़ा करते हैं, फिर चारों बाईयॉ सीला पर हल्दी की गठान में हाथ लगाकर बारीक पीस ले। उसी हल्दी का कटोरी में घोल करें। एक कटोरी में कुंकुं घोलें। अब दीवार पर

जमाल की गवरनीः चावल सवा गिलास, सवा किलो गेहूँ खाजा बनाने के लिए। एक रोटी सादे आटे की सवा किलो गेहूँ कसार व पुड़ी के लिए। 22 पान, 44 सिंघाडे, 11 लोंग, नाड़े की आटी, टीकी का पत्ता, 11 इलायची, 22 चुड़ी लाख की, नारियल–1, दो लाख, टीकी व नाड़े की आटी (गुच्छी) रखना है।

नीचे पानी का हाथ फेरकर सातीया बनाओ। उस पर कुंकुं, चावल के छीटे देना व पाटा बिछाना, पाटे पर सातीया बनाओ।

एक थाली में कुंकुं, चावल, मेहंदी, गुड़, घी रखे। एक मिट्टी का दीया, उसमें लम्बी बाती व घी रखे। अब दो पुड़ी, दो खाजे व लापसी व पके चावल रखे। पांच कच्चे सूत की बनी पोत रखे। उसमें पांच गठान लगावें। अब एक दूसरी थाली में पान के जोड़े बनाकर 10 गिनकर रखे, अब पाटले पर सातीया बनाकर चारों कोनों पर दो दो पूड़ी, दो दो खाजे, एक एक लापसी वाले लड्डू व आटे के दीये में गोल बाती रखें। अब सातीया बनाया उस पर एक पान का भरावन रखें। एक कटोरे में मेहंदी भी घोले। अब घी, गुड़ की धूप दें व पूजन करें।

हर परिवार का 1–1 नारियल लगता है। अब 10 गवरनी जीमाए (खाना खिलाये)। पहले उन्हें पूजा के चावल, कसार, खाजे व पूड़ी परोसे। बाद में पूरी रसोई परोसें। जिमाने के बाद उन्हें हाथ में मेहंदी देवे व टीकी लगाकर एक पान व प्रसाद देवें।

———————————————

भंसाली गोत्र के रीति–रिवाज (त्यौहार)

रचयिताः श्रीमती माया प्रदीपजी भंसाली मो.न. 9300832964

मार्गदर्शकः श्रीमती इन्दिरा मोतीलालजी भंसाली

सर्वप्रथम चैत्र की नवरात्री के प्रथम दिन ''गुड़ी पड़वा'' के दिन सुबह स्नान के पश्चात घर के पुरूष वर्ग द्वारा लकड़ी के डंडे में लाल रेशमी कपड़ा बांधकर उस पर ताम्र कलश को उल्टा लगाकर उस पर माला चढ़ाई जाती है एवं नीम के पत्ते लगाए जाते हैं। इसे गुड़ी कहा जाता है। यह हिन्दू धर्म में शुभ प्रतीक होता है जिसे सजाकर, छत के सीधे हाथ पर बांधा जाता है। इस दिन नीम के पत्ते को सुबह से ही तोड़कर सभी घर के द्वार पर तथा भगवान के कक्ष में लगाए जाते हैं तथा नीम के कोमल पत्तों को घर के सभी व्यक्तियों द्वारा सेवन किया जाता है। गुड़ी बांधने का समय प्रातःकाल होता है। गुड़ी बांधने के पश्चात् घर में भोजन (दाल, चावल, पूरनपोली, कढ़ी, सब्जी आदि) बनाकर भगवान को भोग लगाया जाता है। गुड़ी को 12 बजे उतारकर भगवान के सामने पाट पर रखकर उसकी पूजा की जाती है एवं नैवेद्य अर्पण किया जाता है तथा भगवान से नववर्ष के मंगलमय होने की कामना की जाती है।

नवरात्र के तीसरे दिन ''गणगौर तीज'' के पर्व को मनाते हैं। इस दिन माता की बाड़ी में जाकर जवारों की पूजा कर सुहाग का सामान तथा प्रसाद चढ़ाया जाता है। दो नारियल एक खेलता छोड़ा जाता है तथा दूसरा वहीं फोड़ा जाता है। गणगौर माता के बिदाई वाले दिन उनकी नारियल तथा धानी से गोद भरी जाती है।

रामनवमी जो कि नवरात्र का नौवा विशिष्ट दिन होता है। इस दिन श्रीराम को पीले पेड़े का भोग लगाकर, 12 बजे ''भय प्रगट प्रयाला'' स्तुति की जाती है तथा आरती की जाती है। नवरात्र के आठवे दिन अर्थात् अष्टमी को अलोना उपवास रखा जाता है तथा कुलदेवी के दर्शन किए जाते हैं।

दशमी के दिन भंसाली परिवार की कुलदेवी का पूजन होता है। इस दिन भोजन में चने की दाल (नई), नये गेहूँ का आटा, सई की सेंगा, गुड़ की खीर बनाकर कुलदेवी को भोग लगाया जाता है। रोटी पुड़ की बनाई जाती है तथा चने की दाल फीकी रहती है। इस दिन सुबह ही भोजन बनाया जाता है। रात में उसी भोजन को ग्रहण किया जाता है। महिलाएँ एक दिन पहले (बघार, चटनी आदि) बना सकती हैं। भंसाली परिवार के बच्चों के जमाल इसी दिन निकाले जाते हैं।

रेणुका चौदस के दिन पॉच घर से जोगे का आटा मांगकर बाटी बनाई जाती है। रेणुका देवी के दर्शन परिवार सहित किए जाते हैं।

''अक्षय तृतीया'' के दिन पानी से भरी मटकी के नीचे गेहूँ रखकर, ऊपर खरबूजा रखकर पूजा की जाती है। इसे मन्दिर में रखकर आते हैं या ब्राम्हण को दान दे देते हैं।

''वटव्रत'' जिसे बड़ पूर्णिमा भी कहते हें। इस दिन बड़ के पेड़ की पूजा की जाती है। कच्चे सूत से बड़ के पेड़ की परिक्रमा कर पति की दीर्घायु की कामना की जाती है। इस दिन सुहागिन औरते आम एवं भीगी चने की दाल से एक–दूसरे की गोद भरकर, कुंकुं–हल्दी करती है। घर की बहुएँ बड़ी–बुजुर्ग महिलाओं से आशीर्वाद लेती हैं। इस दिन पूरणपोली एवं आमरस बनाया जाता है।

''नागपंचमी'' के दिन दाल–चावल, बाटी, गुड़ की खीर, तुरई की सब्जी बनाई जाती है। एक ही बघार से दाल व सब्जी बनाई जाती है। उस दिन चाकू, कैंची का उपयोग (काटना) वर्जित होता है। अतः यह सभी काम एक दिन पहले किए जाते हैं। इस दिन हमारे घर पूर्वजों द्वारा प्रदत्त डब्बी, जिसमें कि चॉदी के नागदेव विराजित हैं, उनकी साल में एक बार इसी दिन पूजा होती है। इसके पश्चात् दूसरे दिन वह डब्बी बन्द कर दी जाती है।

श्रावण की पूर्णिमा के पहले रविवार को वीरपस दी जाती है। इस दिन भाई, बहन के ससुराल वीरपस लेकर जाता है जिसमें साड़ी, गेहूँ, खोपरे का गोटा, चूड़ी, हल्दी, कुंकुं एवं पैसे दिए जाते हैं। इस दिन भाई, बहन को टीका लगाकर वीरपस देता है और बहन, भाई को टीका लगाकर नारियल एवं पैसे देती है।

भंसाली परिवार में राखी के एक दिन पहले पोतिया चौदस मनाई जाती है। इस दिन दाल, बाटी, गुड़ की खीर, तुरई की सब्जी बनाई जाती है। इस दिन घर के पुरूष (बुजुर्ग पुरूष) द्वारा सफेद सूत के सात तार के पोतियो बनाकर, उन्हें हल्दी के रंग में रंगा जाता है। घर के प्रत्येक सदस्य के लिए पोतियो बनाये जाते हैं। इन पोतियो का पूजन कर घर के पुरूषों के दायें हाथ में तथा लड़कियों (कुंवारी) के बायें हाथ में बांधे जाते हैं। घर की महिलाएँ (विवाहित) के हाथ में पोतियो नहीं बांधे जाते हैं। यह राखी से पहले होने वाली एक रस्म होती है। पोतियो चौदस के बाद आने वाले पहले रविवार के दिन इन पोतियो को निकालकर जल में विसर्जित किया जाता है।

''पोला अमावस'' के दिन विशेष ''पूरनपोली'' बनाई जाती है। मिट्टी के बैलों का पूजन कर भोग लगाया जाता है। जिस घर में बैल की जोड़ी हो तो उन्हें सजाकर भोग लगाते हैं। इस दिन बैलों से जुताई का कोई काम नहीं लिया जाता है।

भंसाली परिवार की सीतला सप्तमी, जन्माष्टमी के एक दिन पहले मनाते हैं। इस दिन सीतला माता को कोरा ताव, नारियल, दही चढ़ाया जाता है। छठ के दिन रात्रि में सौलिये के कपड़े में सात रोटी बनाई जाती है, उस पर गुड़–घी रखकर सप्तमी के दिन माताजी को भोग लगाया जाता है। ठण्डा खाना खाते हैं।

जन्माष्टमी के दिन कृष्णजी के लिए भोग में आटे में गुड़ के पानी से उसनकर खिलौने बनाये जाते हैं। 8 टांकी, 8 गोटी, 8 गेंद, 8 कंठ, 8 मुरली, 8 मुहरी, 8 चोटी, 8 गुल्ली, 8 डंडा बनाकर तथा प्रसाद में पंजरी, पंचमेवा, पॉच फल, मिश्री माखन, मिठाई एवं भोजन का भोग अर्पित करते हैं। इस दिन उपवास कर रात्रि में कृष्णजन्म पश्चात् भोजन करते हैं।

गणेशोत्सव के पहले दिन शुभ मुहुर्त में प्रतिमा स्थापित कर, चूरमे के लाडू का भोग लगाया जाता है। इसी प्रकार हर दिन अलग–अलग लड्डूओं का भोग लगाया जाता है तथा अनन्त चतुर्दशी के दिन शुभ मुहुर्त में गणेश की पूजा कर भोग लगाकर उन्हें उनके

स्थान से खसकाकर रख देते हैं, फिर विसर्जन के समय जाते वक्त गणेशजी को उठाकर पूरे घर में घुमाकर उन्हें बाहर से अन्दर पॉच पैर तीन बार लाते ले जाते हैं और फिर आखिरी में उन्हें विसर्जन के लिए ले जाते हैं।

श्राद्ध पक्ष के पहले दिन पूरा भोजन (दाल, चावल, सब्जी, पूरी, खीर, कढ़ी, भजिये, खड़े मूंग) बनाकर घी, गुड़ की धूप दी जाती है। सीधा संजोया जाता है। इसी तरह नवमी श्राद्ध तथा अमावस्या (सर्वपितृ अमावस्या) के दिन भी इसी तरह किया जाता है। श्राद्ध के अन्य दिनों में रोज गुड़–घी की धूप दी जाती है। शाम को मटके के पास घी का दीपक (16 दिन) लगाया जाता है। जिस दिन घर पर पूर्वजों का श्राद्ध होता है,उस दिन पाट पर उनका चित्र रखकर चित्र के सामने धूप दी जाती है। सीधा तथा भोजन रखा जाता है। इस दिन ब्राम्हण व बहन–बेटी, पित्तर, गवरनी को भोजन करवाकर दक्षिणा देने के पश्चात् अन्य सदस्य भोजन करते हैं।

पितृमोक्ष अमावस्या को आखिरी दिन की धूप देकर उसे विसर्जित किया जाता है।

नवरात्रि

नवरात्र के पूरे दिन मॉ दुर्गा की पूजा अर्चना कर धूप (दोनों समय) दी जाती है एवं आती की जाती है।

अष्टमी के दिन अलोना उपवास रखा जाता है और माताजी (कुलदेवी) के दर्शन किए जाते हैं। दशमी के दिन नवदुर्गा के उपवास खोले जाते हैं। इस दिन कन्याभोज करवाया जाता है। भोजन में केलवाना (केले तथा दूध का मिश्रण) का अनिवार्य रूप से माताजी को भोग लगाकर कन्याओं को परोसा जाता है। इस दिन दशमी के ही दिन उपवास खोलते हैं।

शाम को दशहरा जीतने घर के पुरूष जाते हैं। दशहरा जीत के आने के बाद घर की बेटी डेल पर खड़े रहकर सभी पुरूष, जो कि दशहरा जीतकर आये हैं, उनका टीका करती हैं। राख के लड्डू बनाकर आजू–बाजू X इस प्रकार हाथ कर फेकती हैं। तॉबे के लोटे स`जल फिराकर जल दोनों तरफ डालकर, गिलकी शक्कर खिलाती हैं, तत्पश्चात् घर में प्रवेश करते हैं। फिर सबसे पहले भगवान को सोना–चॉदी पत्ते अर्पित कर पूर्वजों को अर्जित किया जाता है तथा बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं।

दीपावली पूजन

''गोवत्स द्वादशी'' के दिन ''गाय–केड़े'' की पूजा की जाती है। पूजा में अबीर, गुलाल, हल्दी, कुंकुं, चावल तथा चौले, ज्वार, गुड़, ब्जाउज पीस, कंघी, कॉच लिया जाता है। पहले गाय माता का पूजन, फिर केड़े का पूजन करते हैं। हल्दी से हाथे लगाये जाते हैं। हाथे पर कुंकुं लगाया जाता है। ब्लाउज पीस ओड़ाते हैं, कंघी से उनकी कंघी की जाती है। खुर की पूजा की जाती है। फेरे लिए जाते हैं। गाय–केड़े की पोथी सुनी जाती है और गाय को ज्वार, गुड़, चौले खिलाए जाते हैं। इस दिन ज्वार की रोटी एवं चौले की सब्जी खाई जाती है। इसलिए इस दिन को चौला बारस भी कहते हैं।

''धनतेरस'' के दिन ''पूरनपोली'' बनाई जाती है। कुबेर एवं लक्ष्मीजी का पूजन किया जाता है। इस दिन बाजार से कुछ भी धन (बर्तन, सोना, चॉदी, गाड़ी, इलेक्ट्रॉनिक

आदि) खरीदे जाते हैं। इस दिन लक्ष्मी कुबेर पूजा के पश्चात् घर के वाहनों एवं सभी सामान की पूजा कर गुड़–धनिया का भोग लगाते हैं।

''रूप चौदस'' के दिन तिल्ली+ बेसन + हल्दी + कच्चे दूध का उबटन बनाकर इससे नहाया जाता है। इस दिन को नरक चौदस भी कहते हैं। इस दिन महिलाएँ सुबह से श्रंगार कर मन्दिरों में दीपदान के लिए जाती हैं। इस दिन दीपदान का बहुत महत्व है।

''दीपावली'' के दिन सभी प्रातः उठते हैं, फिर बहन–बेटी चौक मांडती हैं। सभी दरवाजों पर गेंदे के फूल एवं आम के पत्ते की माला लगाई जाती है। खड़ू एवं गेरू के चौक मांडते हैं। डेल बनाई जाती है। पंच पकवान बनाए जाते हैं। भगवान को भोग लगाकर भोजन किया जाता है। शाम कों पूजा के मुहुर्त में पाट पर लाल वस्त्र पर माँ लक्ष्मी का श्रीयंत्र एवं चित्र रखकर पूजा की जाती है। कलश, पॉच प्रकार के फल, नारियल, साल की धानी, मिष्ठान्न, दही, दूध, घी, पंचामृत, सिंघाड़े, कमल का फूल आदि सामग्री लेकर पूजन विधि शुरू करते हैं। इस दिन बहीखाते लिखे जाते हैं। 16 कोरे दीये, मिट्टी की गवलन, 4 छोटे–छोटे मिट्टी के घड़े, जिनमें ज्वार, गेहूँ, चावल इस प्रकार 4 धान रखकरपूजा करते हें। गुड़–धने का भोग लगाते हैं। जिसके यहॉ दुकान है वह घर में लक्ष्मीपूजन के पश्चात् दुकान पर लक्ष्मीपूजन कर बहीखाते लिखते हैं। लक्ष्मी माता के दर्शन कर पटाखे फोड़े जाते हैं।

अन्नकूट (गोवधन पूजा) के दिन गोबर से गोवर्धन बनाये जाते हैं। घर के बाहर साफ जगह पर नहाने से पहले गोवर्धन बनाए जाते हैं। फिर नहाने के पश्चात् महिलाएँ उनका पूजन करती हैं, भोग लगाते हैं।

भाईदूज के दिन बहन–भाई को टीका लगाकर भोजन करवाती हैं। इसके पश्चात् भाई–बहन को भेंट देता है।

देवउठनी ग्यारस

इस दिन सुबह से सभी लोग उपवास रखते हैं। इस दिन मॉ तुलसी के गमले को गेरू–खड़ू से सजाया जाता है तथा गेरू खड़ू के चौक हर कमरे में बनाये जाते हैं। जिस सीान पर विवाह या मण्डप बनाना हो वहॉ भी चौक बनाया जाता है। पॉच गन्ने की झोपड़ी बनाई जाती है। उसके अन्दर पाट पर लाल कपड़ा बिछाकर तुलसी का गमला भगवान श्रीकृष्ण तथा गणेशजी को रखा जाता है एवं पूजन कर बोर, भाजी, आंवला चढ़ाया जाता है। श्लोक बोले जाते हैं। एक कपड़े की आड़ (अंतरपट) रखकर लग्न लगाये जाते हैं। इस प्रकार शालिगराम जी से तुलसीजी का विवाह सम्पन्न कराया जाता है। विवाह हो जाने के पश्चात् तॉबे के कलश में पानी लेकर घंटी, शंख, झांझ बजाकर 5 फेरे लिये जाते हैं और भगवान (देव) को उठाया जाता है। ''बोर, भाजी, ऑवला, उठो देव सॉवला'' ऐसा बोलकर उठाया जाता है, तत्पश्चात् आरती कर भोग लगाया जाता है। इस दिन दाल, बाटी, चुरमा, मिठाई का भोग लगाया जाता है।

तिल संक्रांति– तिल संक्रांति के दिन तिल का उबटन लगाकर नहाया (स्नान) किया जाता है। तिल के पॉच लड्डू एवं मूंग की दाल व चावल को मिलाकर कच्ची खिचड़ी का भोग भगवान एवं मन्दिर में चढ़ाया जाता है तथा सुहाग एवं बांटने की चीजों पर पानी फेरकर उसे बाटा जाता है। इस दिन बल्लर की सब्जी, खिचड़ी, टापू बनाई जाती है।

होली– होली के दिन पूरनपोली बनाई जाती है एवं शाम को होलिका की पूजा कर पूरनपोली का भोग, श्रीफल, कण्डे की माला, बताशे चढ़ाते हैं, फेरे लेते हैं।

जन्म से मरण तक का रिवाज

1. बच्चे का जन्म– जिस दिन बच्चे का जन्म होता है, उसके पॉचवे दिन मॉ को पॉच प्रकार का (दाल, चावल, सब्जी, रोटी, हलवा, पापड़) भोजन कराया जाता है। छठे दिन भी यही भोजन दिया जाता है एवं रात्रि को छठी पूजा होती है, जिसमें कोरा ताव–2, खारिक–2 एवं चॉदी की छटी, काला धागा, पेन की कुंकुं, चावल से पलंग के नीचे दिया जलाकर पूजा करते हैं। बच्चे का मुँह ढक दिया जाता है, ताकि बच्चा दीये का उजाला नहीं देखे, फिर पूजा के बाद हो दीया जलता है उसके ऊपर एक प्लेट को ढंककर काजल बनाया जाता है। फिर दूसरे दिन जच्चा–बच्चा को प्लेट का काजल लगाया जाता है एवं धागे में छठी को डालकर बच्चे के गले में बांधी जाती है और काले धागे हाथ–पैर पर बांधे जाते हैं।
2. सूतकाला पूजनः बच्चे का नाला खिर जाने के बाद सूतकाला पूजते हैं। उस दिन जच्चा–बच्चा को नहलाकर साफ नये कपड़े पहनाये जाते हैं। बहन–बेटी रिश्तेदार को बुलाकर गीत गाये जाते हैं। ''सूरजपूजा'' करते हैं। एक पाट पर चौक बनाते हैं जिसमें चॉद, सूरज बनाते हैं।
   हल्दी के हाथे लगाये जाते हैं। पीली चिंदी में पैसा सुपारी बांधकर रखते हैं। सूखा नारियल फोड़ते हैं। खारिक+ हल्दी की गांठ पूजा में रखते हैं। वह बच्चे को घुटी में देते हैं। नारियल जल्वा को दे देते हैं। गीत गाते हैं तथा आखिरी में मिठाई, बताशे बांटे जाते हैं।

3. जलवाय पूजनः जलवाय पूजन में जच्चा–बच्चा को नहलाकर बच्चे को कोरे कपड़े पहनाये जाते हैं। रिश्तेदारों को बुलावा देते हैं। शाम को जलवाय पूजन के समय जच्चा को कुँए या हेण्डपम्प पर ले जाकर नल, हेण्डपम्प या कुँए की पूजा की जाती है। खारिक एवं नारियल फोड़ा जाता है। वहॉ से दो लोटे पानी भरकर जच्चा के सिर पर रखकर घर के मुख्य द्वार पर लाया जाता है। फिर घर के अन्दर बहन–बेटी द्वारा लोटे को उतारा जाता है, फिर जच्चा से बहन–बेटी द्वारा पूछा जाता है कि– ''भरा कि रीता'', तब जच्चा द्वारा बोला जाता है– ''भरा''। इस प्रकार बहन–बेटी द्वारा जच्चा के दायें से बायें पॉच बार लोटे के पानी को घुमाकर पूछा जाता है। हर बार ''भरा'' जच्चा द्वारा बोला जाता है। फिर मुख्य द्वार की डेल पर खारिक फोड़कर जच्चा मुख्य द्वार के दोनों ओर हल्दी के हाथे लगाती है। अगर लड़की हो तो पॉच हाथे, लड़का हो तो सात हाथे लगाये जाते हैं। उन पर कुंकुं के टिपके लगाये जाते हैं। जच्चा फिर अन्दर आती है। फिर जलवाय के गीत गाये जाते हैं। फिर जच्चा बच्चा को पाट पर बिठाकर कपड़े किए जाते हैं।

4. मुण्डन संस्कार– मुण्डन संस्कार में बच्चे के पहले या तीसरे साल मुण्डन किया जाता है। यदि दो लड़के एवं एक लड़की हो तो एक नारियल रखा जाता है। यदि दो लड़की एवं एक लड़का हो तो भी नारियल रखा जाता है। यदि एक ही लड़का हो तो एक नारियल रखकर मुण्डन किया जा सकता है। यदि चार बच्चे हो तो नारियल की आवश्यकता नहीं होती है। हमारे यहॉ लड़कों का मुण्डन एवं लड़कियों की चोटी निकाली जाती है। मुण्डन लाल कपड़े में झेले जाते हैं। पूजन सामग्री में

कुंकुं, हल्दी, चावल, फूल एवं दो सुखे नारियल, आटे के दीये–11 घी से जलाये जाते हैं।

चैत्र मास की दशमी के दि नही मुण्डन संस्कार किया जाता है। इसके लिए दशमी से ही या तीन दिन पहले नये गेहूँ, नये चने की दाल प्रयोग करते हैं। गेहूँ के आटे की सौलये के कपड़े पहनकर पिसाकर लाते हैं। फिर किचन एवं भगवान घर को साफ कर एवं पुताई करते हैं। दशमी के एक दिन पहले सौलिये के कपड़ों को धोकर डाल देते हैं। दशमी के दिन सुबह 5 बजे से उठकर चने की दाल, चावल, गुड़ की खीर, सई की सेंगा एवं पूड़ की रोटी बनाई जाती है। इस दिन बघार नहीं होता है। दशमी के एक दिन पहले बघार, लोंजी आदि बनाये जा सकते हैं एवं रोटी का तवा 9 बजे उतरने के बाद माताजी की पूजा की जाती है। कुलदेवी की प्रतिमा का पूजन प्रत्येक व्यक्ति करता है। आरती के पश्चात् भोग लगाया जाता है फिर माताजी के सामने दो नारियल सूखे रखे जाते हैं एवं आटे के 11 दीये घी के जलाये जाते हैं। तत्पश्चात् मुण्डन होता है। जब तक मुण्डन होता है तब तक आटे के दीये जलते रहना चाहिए, इसका ध्यान दिया जाता है।

पाट पर बच्चों को बैठकर एक साथ चारों बच्चों के बाल में कैंची लगाई जाती है। बहन बेटी मुण्डन झेलती है। बहन बेटी को नेग दिया जाता है। बाद में सभी भोजन प्रसादी ग्रहण करते हैं। कुंवारी बेटी बहन को घर में भोजन प्रसादी खिलाई जाती है। मुण्डन के तीसरे दिन जमाल वाले बच्चों के खूंटे निकाले जाते हैं। उस दिन सवा पाव चावल बनाकर माताजी को भोग लगाया जाता है। फिर सभी बालों को लाल कपड़े में इकट्ठा कर बहते जल में विसर्जित किए जाते हैं।

5. मृत्यु– मृत्यु होने पर बड़ा या छोटा बेटा अग्नि देता है। वह बहू गोबर से जिस जगह पर उनको सुलाया जाता है वहॉ गोबल से रेंकटा खींचती है और बिना पीछे देखे उनके कपड़े लेकर सबसे पहले चलती है। वह कुंए पर कपड़े गीले कर नहाती है और वहीं कपड़े लेकर उसी जगह पर रख देती है। वहॉ पर मायके से आये चावल + घी + मूंग की दाल बनाकर कड़वा बनाते हैं और तीन कौल अग्नि देने वाले के मुँह में लगाते हैं। उसी स्थान पर उस दिन प्लेट में आटा सपाट करके ढंक देते हैं। दूसरे दिन साड़ी समेटकर नदी में विसर्जित करते हैं और बाहर–भीतर होता है। मन्दिर में जाकर आते हैं। दूसरे दिन या तीसरे दिन दोपहर को उठावना होता है। इसमें मन्दिर में जाकर सुपारी फोड़कर कार्य शुरू कर देते हैं। दूसरे दिन से चावल बनाकर घी डालकर अच्छी तरह मिलाकर लड्डू बनाते हैं और पानी व चाय और यह चावल का लड्डू, पीपल के पत्ते पर रखते हैं। नौ दिन तक शाम को गरूड़ पुराण का पाठ होता है और रोज अंधेरा कर दीपक जलाते हैं, नौ दिनों तक।

दसवें दिन सुबह सुतक निकालकर पूरे घर का पोछा लगाया जाता है। वह घर के सभी छोटे बड़े लड़के बाल देते हैं। दसवॉ, ग्वारहवॉ घाट पर किया जाता है।

बारहवें दिन बहन–बेटी परिवार के सदस्य को जिमाते हैं।

तेरहवें दिन घर पर श्राद्ध का पूरा खाना बनाकर घर पर ही पण्डित या गवरनी को जिमाते हैं। घर पर ही तेरहवें की पूजा कर, तर्पण कर, सीधा देकर पूजन करते हैं और फिर पगड़ी की जाती है। यदि सुहागन महिला शान्त होती है तो इस दिन 13

गवरनियों को साड़ी व सुहाग का सामान देकर भोजन कराते हैं। धर्मशाला में गरूड़ पुराण का आखिरी अध्याय का पाठ होता है और बाकी सदस्यों, जिन्होंने बाल दिये हैं को टोपी ससुराल द्वारा पहनाई जाती है। फिर जिसने आग दी है वह सीधा लेकर मन्दिर जाते हैं फिर जिसने रेकटा खींचा है वह महिला गेहूँ + पैसा लेकर मन्दिर जाती है। फिर सबको भोजन कराया जाता है।

पन्द्रहवें दिन श्राद्ध व छःमासी बरसी होती है जिसमें पण्डित द्वारा तर्पण करवाकर पिण्ड बनवाते हैं। परिवार के सदस्य पूजन करते हैं। उसी दिन से सुबह तुलसी को पानी व शाम को मन्दिर में या घर पर तुलसी जी को दीया जलाया जाता है, बरसी आने तक ..... ।

पन्द्रहवें दिन बहन–बेटी द्वारा शाम को दूसरी डेल करवा दी जाती है। इसके बाद परिवार कहीं भी आ–जा सकता है।

बरसी होने पर मृत्यु के पूरे श्राद्ध होने पर श्राद्ध पक्ष में उनको मिला दिया जाता है।

श्री गणेशाय नमः

।। शादी का मुहूर्त ।।

1. शीतला माता पूजन

    1. दो झण्डी सफेद, लाल माताजी एवं भैरू बाबा की
    2. नीम की डगाल
    3. दो नारियल (एक फोड़ना, एक चढ़ाना)
    4. गुड़
    5. पूजा की सुपारी
    6. सफेद ताव–2
    7. फूलमाला–2
    8. पानी का कलश–1
    9. आरती – कुंकुं, हल्दी, अबीर, गुलाल, मेहंदी, चावल
    10. चीक्सा
    11. घी का दीपक

    पहले माता–पिता द्वारा पूजन किया जाता है, फिर दूल्हा या दुल्हन।

2. खलमिट्टी
    1. 7 या 9 टोकनी मिट्टी लाने के लिए
       (7 टोकनी दुल्हन की, 9 टोकनी दूल्हे की)
    2. 2 सुपड़ा, 2 नारियल
    3. खलबत्ता मुसली सभी पर नाड़ा बांधना
    4. मिट्टी का दीपक (तेल का)
    5. आरती – कुंकुं, चावल, पैसे, सुपारी, पान (15), नाड़ा
    6. पिछटने वाले गेहूँ आधा किलो (पिछटने के लिए)
    7. बताशा 1 किलो
    8. हल्दी की गांठ (15 पीस) 250 ग्राम
    9. गणेशजी
    10. फूल
    11. पटला
    12. आटा (चौक मांडने के लिए)

प्रोसेस–

सबसे पहले टोकरियों, सुपड़ा, खलबत्ता, सब पर नाड़ा लपेट ले, दुल्हा या दुल्हन को पाट पर चावल सुहागन द्वारा देकर बैठायें। पाट के नीचे चौक बनाना।

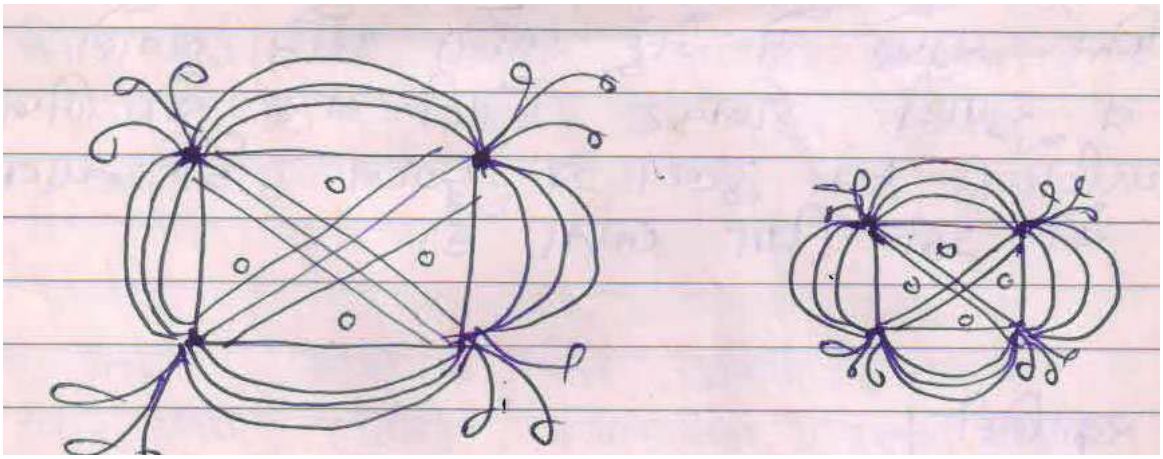

(गणेशजी के रूप में बालक को भी बैठाना)

पूजा की थाली में गणेशजी को बैठाकर पूजा करना, कलश की पूजा करना, फिर बहन बेटी द्वारा दुल्हा या दुल्हन को टीका लगाना। फिर 4 सुहागन बहन बेटी एक दूसरे को टीका लगाती हैं। वह हाथ में नाड़ा बांधती हैं ओर चारो मिलकर खलबत्ते से हल्दी की गांठ को कूटती हैं। फिर एक सुवासनी द्वारा तिलक खींचना, जहॉ पर सिलक खींचना हो वहॉ डेल के अन्दर होकर टीका लगाकर गेहूँ, नारियल, सवा रूपये रखकर खोल भरना चाहिए। फिर सीधे हाथ पर नौ और उल्टे हाथ पर सात हल्दी फिर कुंकुं ऐसी तिलक खींचते हैं।

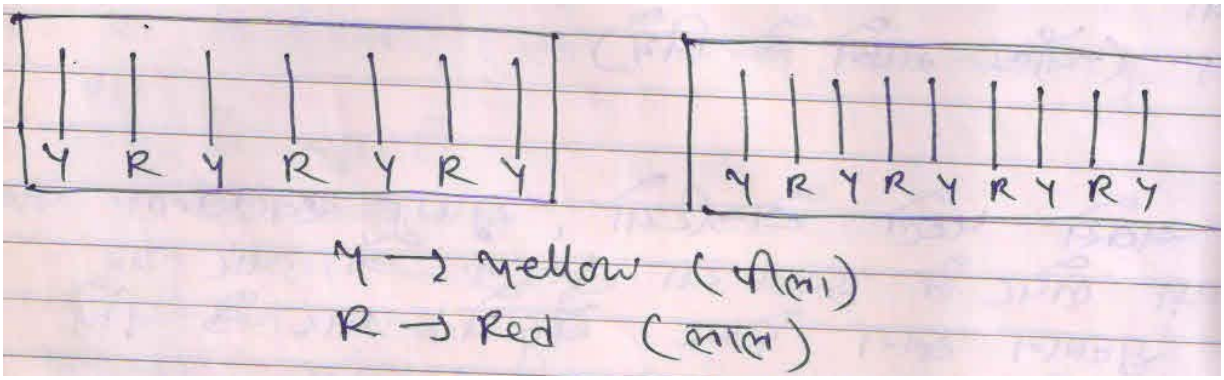

फिर सुपड़े में गेहूँ झाड़ना। उसमें बताशे और पैसे व सुपारी डालकर छोटी बहन को लिफाफा देना चाहिए एवं दुल्हा व दुल्हन को चावल देकर पाट से उठा दिया जाता है।

खलमिट्टी–

1 गेट के पास मिट्टी
2 गणेशजी
3 पान, पैसा, सुपारी
4 मुसली
5 गुड़

प्रोसेस–

मिट्टी खेदते समय पान पर गणेशजी रखकर पूजा करें, मूसली की पूजा करें। पैसा, सुपारी, गुड़ रखकर गणेशजी को भोग लगायें। फिर गणेशजी सहित मिट्टी उचकाकर दूल्हे या दुल्हन की मॉ के खोल में डालना। फिर जो गणेशजी को खोल में डालता है उस बहन–बेटी को नारियल देते हैं। उसके बाद टोकनियों में मिट्टी लेकर घर आते हैं। सब मिट्टी को एक जगह डालते हैं। फिर पानी डालते हैं, फिर हाथ–पैर धोकर सब अन्दर आते हैं। फिर बताशे बांटते हैं।

आज के दिन हमारे यहॉ सबसे पहले भाई–बहन की गवरनी जिमाते हैं। इसमें घर की सुहागन बहन–बेटी को जिमाकर कपड़े एवं सुहाग का सामान दिया जाता है। इसके बाद घर के सभी सदस्य भोजन करते हैं।

गणेश पूजनः शादी के पहले दिन गणेशजी की पूजा की जाती है। इसमें माताजी के कमरे के गेट के सीधे हाथ पर गणेशजी का चित्र लगाया जाता है एवं उसनकी पूजा करके गुड़ का भोग लगाया जाता है।

मण्डप बनानाः नाड़ा, आम के पत्ते, पूरियॉ 16 बनाना, कुकुं, चावल, छेद वाला दिया, काकड़ा, सुआ, चना दाल, शक्कर, पापड़, मिट्टी का 4 गाडगी (करवा), उनमें 1–1 सिक्का डालना, एक छोटा लोटा तांबे का जिसमें भिलावा एवं पैसा सुपारी हों।

प्रोसेस– चार खंबों में आम के पत्ते बांधकर मण्डप बनाना। सीधे हाथ पर तांबे के लोटे में सुपारी, पैसा भिलावा रखकर लाल कपड़े से बांधकर मण्डप के सीधे हाथ पर लटकाना। मण्डप के बीच में पॉच छेद वाला दीया, जिसमें कौड़ी लगाकर बीच में बांधना। मण्डप के चारों कोनों पर मिट्टी की गाडगी में सुपारी एवं पैसा डालकर पानी से भरकर रखना। मण्डप मामी से लिपवाना, नेग देना।

दामादों को हाथे लगवाना, 4 नारियल, 4 लिफाफे, 4–4 पूरीयों को नाड़े से बांधना, दामाद के हाथ में टीका लगाकर चार–चार पूरी देना। हाथे लगाना, नेग देना।

कुलदेवी पूजनः पूजा की सुपारी 250 ग्राम, दो नारियल सूखे, नाड़ा, कुंकुं, चावल, गुड़, कपूर, गेरू, खडू, लाल ब्लाउज पीस–1, लड़का का पाट, आसन, चिल्लर पैसे, ढाई किलो गेहूँ, ढाई किलो चावल, सवा पाव 2 बार के चावल, मटकी में भरने के लिए 1 किलो चावल, तीन पाव आटा, डेढ़ किलो घी, 1 किलो शक्कर, हलवे की कढ़ाई, सरिया, दो थाली, 2 कटोरी, चम्मच, छोटी प्लेट–2

देवी के बर्तनः 20 मटकी, 5 मटकी के ऊपर बड़े दीये, 1 मटकी बड़ी, मटकी के नीचे टेका लगाने के लिए छोटे दीये–15, मण्डप का छेद वाला दीया, रूई, माचीस, कैंची, टेप।

प्रोसेसः

1. देवी के घर के बाहर चौखट के सीधे हाथ पर गणेशजी का चित्र लगाकर पूजा कर गुड़ का नैवेद्य लगाना।
2. देवी के कमरे में साफ पोछा लगाकर, पूर्व दिशा में देवीजी का पूजन स्थान चुनना।
3. सबसे पहले चौकोर लाल खडू से पोतना। उस पर सफेद खडू के टिपके लगाना। चौकोने के बीचोबीच में थोड़ी सी जगह खाली छोड़ना। वहॉ पर पीसे हुए चावल से पोतकर, दो देवियॉ बनाना। फिर मिट्टी की मटकी रखना। सीधे हाथ की तरफ 4–4 मटकी की 2 लाईन एवं उलटे हाथ की तरफ 4–4 मटकी की 3 लाईन होना चाहिए। मटकी के नीचे 3–3 दीये का टेका लगाना। मटकी के सबसे ऊपर दीये रखकर उसमें घी के दीपक लगाना। दोनों मटकी के बीच में कुंकुं का स्वस्तिक बनाकर लकड़ी के पाट पर सीधे हाथ पर गणेशजी बीच में कुलदेवीजी एवं कृष्णजी की मूर्ति स्थापित करना। घर के सबसे बड़े पुरूष सदस्य द्वारा माताजी का पूजन करके सवा किलो गेहूँ की एवं सवा किलो चावल की बे भरना। फिर माताजी का

पूजन करना, फिर दो नारियल सूखे बीच में रखना। सीधे हाथ पर बड़ी मटकी में चावल भरकर उस पर धेला–सुपारी, लाल ब्लाउज पीस रखना। सभी सदस्यों द्वारा पूजन करना। दूल्हे अथवा दुल्हन द्वारा पूजन करवाना, आरती करना एवं माताजी को हलवे का भोग लगाना। सवा पाव चावल का भोग लगाकर उस पर गुड़ व घी रखना। यह भोग पहले दुल्हे को खिलाना फिर सभी को देना।

नोटः यदि एक दिन की शादी रहती है तो दो बार पूजा करके, सवा–सवा किलो की उसी समय दो बार गेहूँ एवं चावल की बे भर दी जाती है और यदि दो दिन की शादी रहती है तो अलग–अलग सवा–सवा किलो की बे भरते हैं। पहले दिन हलवे के भोग का प्रसाद लगता है। दूसरे दिन सवा पाव चावल , उस पर गुड़ घी रखकर भोग लगाया जाता है। यदि एक दिन की देवी है तो हलवे एवं चावल दोनों भोग लगता है। इस प्रकार पूजन सम्पूर्ण किया जाता है। चित्र

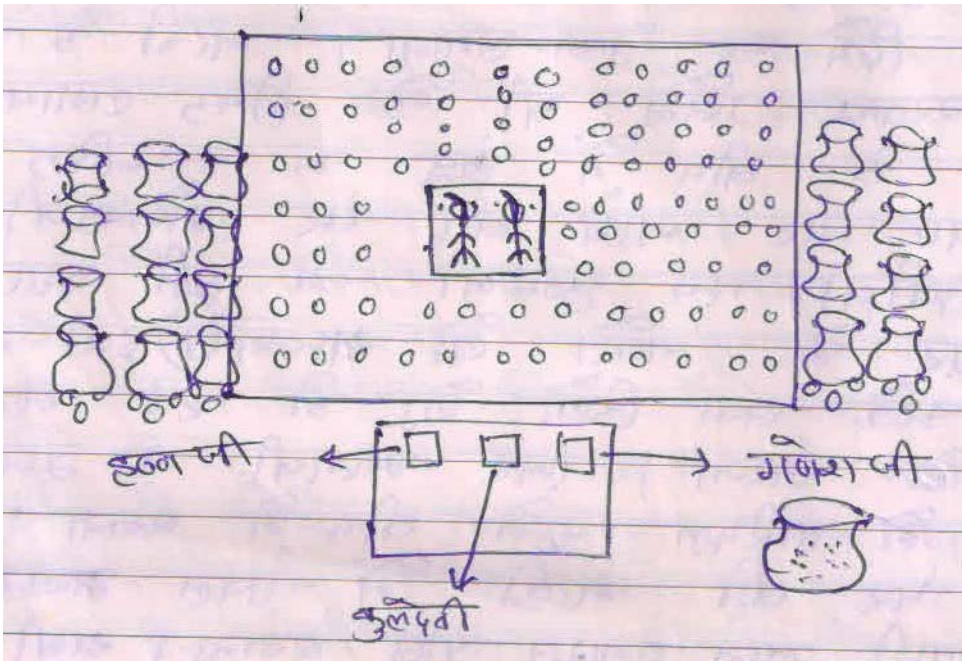

मण्डप में दुल्हे या दुल्हन को लगन वाले दिन नहलाने के पहले तेल चढ़ाया जाता है। जो कि आम के पत्ते से तेल लगाकर सबसे ऊपर दीये (मण्डप के) पर, फिर सिर पर, फिर कंधे पर, फिर घुटने पर और अन्त में पैरों पर लगाया जाता है। इसी प्रकार से नीचे से ऊपर ले जाया जाता है। यह 5 बार किया जाता है एवं बहन बेटी इस रीत को करती हैं। फिर बाद में हल्दी लगाकर नहलाकर मण्डप के चारों ओर रखी मिट्टी की गाडगी का पानी सिर पर डालकर दुल्हे, दुल्हन की ऑखे बन्द करवाकर तथा कोई आवाज नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार दुल्हे/दुल्हन को कहा जाता है। इसके बाद मामाजवल उड़ाकर जीजाजी द्वारा माताजी के दर्शन के लिए ले जाया जाता है। वहॉ सीधे हाथ पर दुल्हे या दुल्हन के माता–पिता को बैठाया जाता है। पहले वह माताजी की पूजा करते हैं फिर दूल्हे /दुल्हन से करवाई जाती है। फिर पूरा कुटुम्ब पूजा करके आरती करते हैं।

लगन वाले दिन सुबह से मानखंब जो कि पुरखों की प्रतिमा कहा जाता है उस दिन घर की सभी महिला द्वारा सुबह से उठकर मण्डप में मानखंब के पास बैठकर पिली चावल हाथ में लेकर पूर्वजों को आमत्रित करते हैं। दूल्हे की मॉ द्वारा एक सफेद कपड़े की चिन्दी को हल्दी से रंगा जाता है, उसमें काकड़े एवं चने की दाल रखकर एवं दो पापड़ मनखंब पर चढ़ाये जाते हैं। वहॉ पर सुआ रखा जाता है। फिर सभी के द्वारा चावल चढ़ाकर नाम लेकर पुरखों का आव्हान करते हैं। इस प्रकार मण्डप विधि सम्पूर्ण हो जाती है।

सोंज का सामानः दूल्हे की तरफ से दो बेलन, दो लकड़ी की डिब्बी, जिसमें कुंकुं एवं हल्दी भरी रहती है, मेहंदी, नाड़ा, गुड़, सूखा मेवा, खोपरे की 7 वाटकी, बादाम, मखाना, मिश्री, काली पोत, सिक्का, दुल्हन का श्रंगार का सामान, कॉच, कंघा, लाक की चूड़ी, दो मोर एवं लग्नटीप एवं दुल्हन की साड़ी चप्पल आदि।

दूल्हे को पड़छनाः सुपड़ी, मूसली, सूआ, रवई एवं सिक्का।

बारात की तैयारीः घोडे के लिए चना दाल, दूल्हे के लिए काजल, भाभियों की गिफ्ट।

बारात वधु पक्ष की तैयारीः दूल्हा जब वरछोटा पर आता है तब दुल्हन की मॉ द्वारा दूल्हे को टावेल ओड़ाया जाता है। टोपी पहनाई जाती है एवं टावेल की खोल में ड्रायफ्रुट से गोद भरी जाती है।

बेड़ाः वधु पक्ष से दुल्हन की बहन या बुआ बेड़ा उठाती है जिसमें 1 घड़ा, उसके ऊपर दो लोटे रखे जाते हैं उसकी पूजा कर, बेड़ा उठाने वाले को साड़ी दी जाती है। बेड़ा रखने के पश्चात् दूल्हे के जीजाजी द्वारा चेन, अंगूठी, घड़ी भेंट दी जाती है।

लग्नः लग्न मण्डप में आने पर दुल्हन की मॉ द्वारा दूल्हे को परछा जाता है।

चवरीः साल की धानी एवं पंडितजी द्वारा लिखवाया गया सामान।

बिदाईः बिदाई के समय लड़की के हाथ में सुपड़ा, जिसमें मिठाई रखी जाती है एवं कांसे की कटोरी में खिचड़ी भरकर दी जाती है एवं तेल की पली में दीपक जलाकर सुपड़े में आगे लटकाया जाता है। लड़की द्वारा दही के हाथे मॉ के पैर पर लगाया जाता है। इस प्रकार बिदाई सम्पन्न की जाती है।

देवी उठानाः

सुबह से नहाकर माताजी को सवा पाव चावल गुड़ घी रखकर भोग लगाया जाता है। नारियल फोड़कर प्रसाद चढ़ाया जाता है। प्रसाद बाटकर माथा टेककर, हाथ जोड़कर माताजी को उठा लिया जाता है।

भट्टड़ गोत्र के रीति रिवाज

सर्वप्रथम चैत्र माह की नवरात्रि के प्रथम दिन 'गुडी पड़वा' के दिन सुबह घर के बाहर नीम की पत्तियां लगाकर फिर स्वच्छ वस्त्र धारण कर देव पूजा की जाती है एवं मंदिर में जाकर नीम की पत्तिया लगाकर शिवजी को दूध जल चढ़ाया जाता है।

भोजन मे हलवा या पूरन पोली बनाकर इसका नेवैघ बताकर सपूर्ण परिवार के साथ इसको ग्रहण करते है।

गणगौर तीज के दौरान बाडी में परिवार की महिलाओं द्वारा पूजा अर्चना की जाती है।

चैत्र में अष्टमी पूजी जाती है। इस दिन परिवार के सभी शादी सुदा व्यक्ति उपवास रखते है। दिन मे एक समय सिगाड़े की नमकीन रोटी दही के साथ खाते है एवं फलो का सेवन करते है। कुवारे बच्चो के लिये खाना एक दिन पूर्व ही बनाकर रख देते है।

नवमी को हवन किया जाता है एवं दाल बाटी भोजन में बनाई जाती है।

रेणुका चौदस के दिन छैगांव स्थित मंदिर में जाकर दर्शन किये जाते है।

अक्षय तृतीया को पानी से भरी हुई मटकी के ऊपर गेहूँ एवं खरबूजा या आम रखकर उसे मंदिर मे दान कर दिया जाता है एवं भोग मे हलवा या आम का रस बनाकर परिवार की बहन बेटियो को बुलाकर भोजन करवाया जाता है।

बड़ पूर्णिमा व्रत के दिन बड़ की पूजा करते है एवं घर की महिलाये बड़ के पेड़ पर जाकर उसकी पूजा करके आम व भीगे चने से अन्य सुहागनो की खोल भरती है।

गुरू पूर्णिमा के दिन घंटा घर स्थित मंदिर में पूजा अर्चना एवं यथाशक्ति दान दिया जाता है।

नाग पंचमी के दिन सुबह रामेश्वर स्थित भीलट देव मंदिर मे नारियल चढ़ाया जाता है एवं घर पर नाग देवता की पूजा की जाती है, इस दिन तवा नही रखते है एवं चाकू से कोई वस्तु काटते भी नही है। सुबह के भोजन में चीले (मूंग, चने एवं मीठे) बनाये जाते है। एवं शाम में बाटी एवं दाल बनाई जाती है।

रक्षाबंधन के पूर्व रविवार को बहनो को 'दूरपस' दी जाती है जिसमे नारियल का गोला, गेहूँ, हल्दी, कूंकू के साथ साड़ी दी जाती है। यह दूरपस भाई द्वारा बहन के घर जाकर दी जाती है।

रक्षाबंधन के दिन बहनो को घर बुलाकर भोजन करवाया जाता है एवं भाईयों द्वारा रक्षासूत्र बंधवाया जाता है।

पोला अमावस्या के दिन बैल की मूर्ति घर मे लाकर उन्हे हलवे का नैवेघ बताया जाता है एवं बैलो की पूजा करके उन्हे हरा चारा खिलाया जाता है।

इसी पखवाडे मे शीतला सप्तमी में घर की महिलाये प्रातः मे ही शीतला मंदिर जाकर, चने की भीगी दाल एवं गेहूँ लेकर शीतला माता के दर्शन करती हैं एवं इस दिन घर में कोई भी चीज गर्म करके नही खाई जाती एक दिन पूर्व का बना हुआ बासी हुआ भोजन ही किया जाता है।

गणेश चतुर्थी को घर में पूरे विधि विधान के साथ गणेश जी की स्थापना की जाती है एवं बाफले लडडू बनाकर भोग लगाया जाता है। एवं पूर्ण नौ दिन अलग अलग मिष्ठान का भोग लगाकर नियमित पूजा की जाती है।

अनंत चौदस के दिन गणेशजी की पूजन कर उन्हे विसर्जित किया जाता है, एवं घर के बच्चो को अनंत के रूप में गले मे जेल डाली जाती है।

श्राद्ध पक्ष में जिस दिन जिन पूर्वज का श्राद्ध होता है उसके नाम की धूप डाली जाती है एवं एक पिचर को (महिला या पुरूष) को भोजन करवाया जाता है। अगर गया जी में पिंड दान हो चुका है तो उसके नाम का सीदा (थाली मे आटा, दाल, कच्ची सब्जी, चावल,गुड़ व घी) मंदिर मे दान कर देते है।

परिवार मे पहले आटे के पगले भी बनाये जाते थे पर धीरे धीरे इस प्रथा को बन्द कर दिया

श्राद्ध पक्ष के अंतिम दिन सभी पूर्वजो के नाम से धूप डालकर घर में मूंग के भजिये, खीर या वासंदी बनाकर दो पित्तरो को खाना खिलाया जाता है।

नवरात्री

पूर्व मे नवरात्रि के पहले दिन दुर्गा सप्तशती पाठ बिठाने के पश्चात् पूरे नौ दिनो तक उपवास किया जाता है (इच्छानुसार) एवं अष्टमी एवं नवमी के दिन शादीशुदा लोगो को पूर्णतः उपवास रखना होता है। उपवास मे अष्टमी के दिन सिंघाडे की रोटी (दशमी) एक समय खायी जाती है। नवमी के दिन एक समय नमक युक्त फलाहार किया जाता है एवं हवन करने के पश्चात् साय में सभी खिड़की एवं दरवाजो की चौखट पर नींबू का बलभोग दिया जाता है।

दीपावली का तीन दिवस का पूजन

1. धनतेरस को परिवार मे पूर्व मे गमी होने के कारण कोई भी बडी पूजा का आयोजन नही होता है केवल संध्या समय 13 दीपक (मये) जलाकर भगवान धन्वतरी एवं कुबेर के सामने साधारण पूजन कर दीप प्रज्जवलित किये जाते है।

2. रूप चौदस :– इस दिन जल्दी उठकर (हल्दी+बेसन+मलाई) का उबटन बनाकर स्नान करने के पश्चात् मंदिर मे जाकर दिये जलाकर घर मे स्वच्छता के साथ पूरे परिवार के साथ पूजन किया जाता है। इस दिन अपनी क्षमतानुसार व्यंजन बनाकर घर की बहने व उनके परिवार को भोजन करवाया जाता है

3. दीपावली के दिन घर मे फूलो की तोरण लगाकर सायं को गणेश एवं लक्ष्मी पूजन किया जाता है घर मे बने सभी व्यजनों का प्रसाद एवं फलो का प्रसाद चढ़ाया जाता है। एवं 16 दीपक तार कर (नये) उनमे से 4 दीपक नजदीक के मंदिर मे रखकर आते है।

4. गोर्वधन पूजा हमारे परिवार में नही मनाई जाती है।

5. भाई दूज के दिन बहने सभी भाईयो को आपकी अपनी इच्छानुसार या शक्तिनुसार अपने घर बुलवाकर भोजन करवाती है, विपरीत इसके कई बार बहने ही भाईयो के यहाँ के घर आकर उन्हे प्रेम से खिलाती है। इस दिन भाई अपनी बहनो को क्षमतानुसार वस्त्र भेंट करते है। अलग से किसी भी प्रकार के पूजन का प्रावधान नही है।

देव उठनी ग्यारस

इस दिन शाम को घर के बाहर चौक बनाकर उसपर तुल्सी का गमला रखा जाता है तथा गणेश जी व शालीग्राम भगवान को उसपर विराजित करके चारों ओर गन्ने व ज्वार की पेड़ी बनाकर उनका पूजन किया जाता है एवं बोर भाजी आंवला भटे व गन्ने से देव को उठाते हैं एवं घर के सभी सदस्य उसका पूजन करते हैं। रात को खाने में दाल बाटी चूरमा एवं भटे की सब्ज़ी बनाकर भोग लगाकर खाया जाता है।

तिल संक्राति

इस दिन तिल्ली के लड्डू व खिचड़ी का दान यथानुसार मंदिर एवं गरीबों में दान किया जाता है घर पर दो गर्वनियो को खाना खिलाया जाता है. (गरीब) एवं क्षमतानुसार दान दिया जाता है। दूसरे दिन सभी स्त्रियां अन्य सुहागने स्त्रियों के साथ वस्तुओं का आदान प्रदान करती है।

होली

इस दिन गोबर के उपले बनाकर उनकी माला बनाई जाती है। एवं होलिका की पूजन करने के पश्चात् उपलो की माला दहन मे डाल दी जाती है। पूरन पोली का नवैघ बनाया जाता है।

अन्य रिवाज

1. जलवाय पूजन :– इस दिन जच्चा बच्चा को नहला कर बच्चे को मामा घर द्वारा दिया हुआ नया झबला पहनाया जाता है। पूजन के समय मां सिर पर लोटा (दूध+पानी) रखकर घर के परिक्रमा करती है एवं इसके पश्चात् घर की डेल के बाहर घड़े की पूजा करके भीतर लाकर पाटले पर बैठाकर कपड़े किये जाते है व सभी परिजनो को मिठाई इत्यादि बाटे जाते है।

2. मुण्डन संस्कार :– हमारे परिवार मे नवजात के मुंडन चैत्र माह के देवियों मे नवमी के दिन निकाले जाते है। कुल देवी, जो कि चमाटी ग्राम मे है, वहॉ केवल लड़को के ही मुण्डन संस्कार होते है, लड़कियो के नहीं सर्वप्रथम उस दिन घर पर

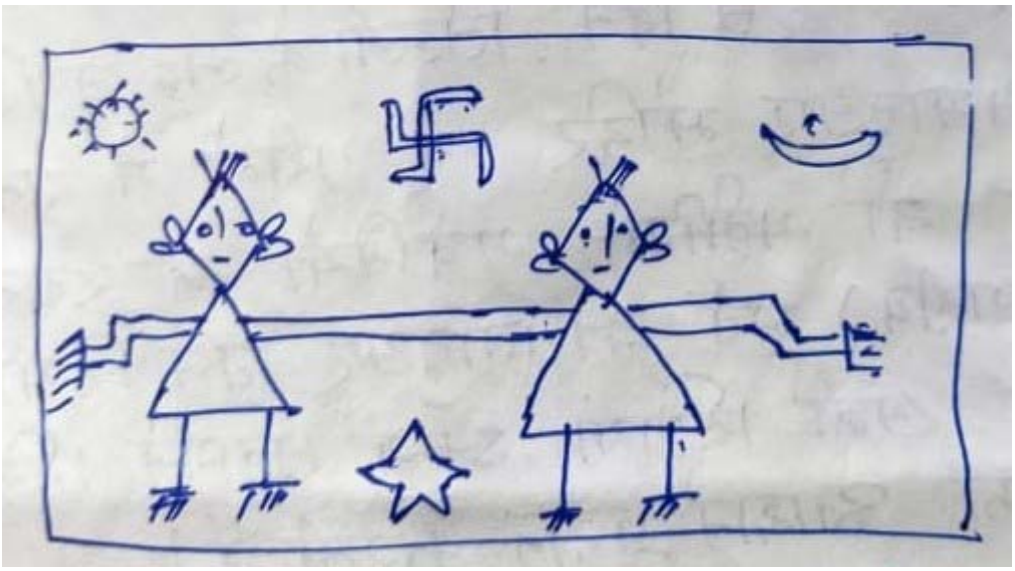

ये पगला बनाकर देवी का पूजन होता है। घर के वयस्क दिन मे उपवास रखते है एवं शाम को मुण्डन के पश्चात् दाल बाटी एवं चूरमे के लडडू बनाये जाते है एवं परिजनो को बुलाकर भोजन करवाया जाता है।

शादी के समय कुलदेवी का पूजन :– सर्वप्रथम गणेश पूजन होता है।

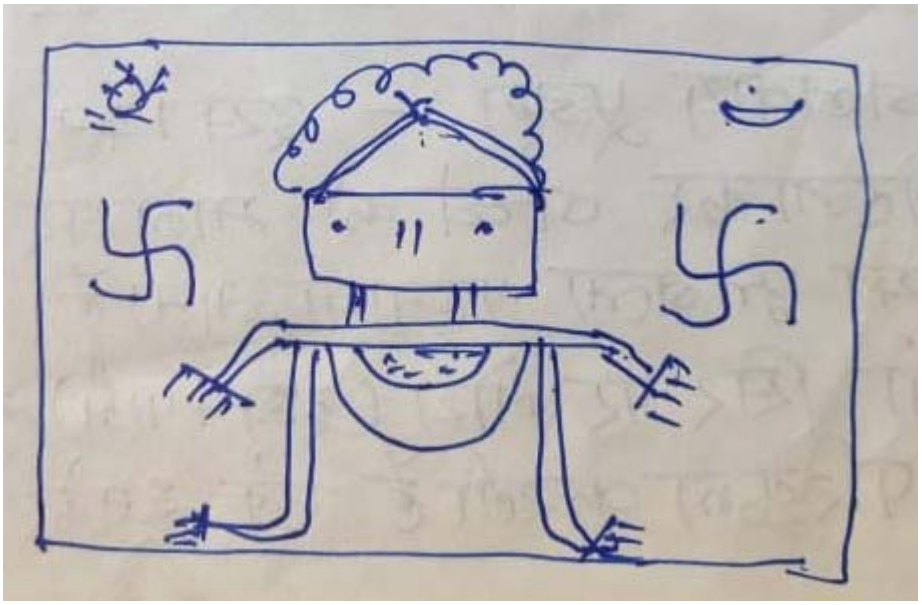

इस पगले को बनाकर गणेश पूजन किया जाता है, इसके पश्चात् कुलदेवी के पूजन के समय 32 छोटी मटकी (चावल+मूँग की दाल) से भरी उस पर दीपक प्रज्जवलित करते है। पगले बनाकर उसके सामने चावल व मूँग की दाल की खिचड़ी के ठेरी लगाकर उस पर बड़ा मटका रखा जाता है। मटके मे भी खिचडी भरकर उस पर बड़ा दिया रखकर इसे कत्थई कलर के वस्त्र से ठक दिया जाता है। फिर बड़े दिये को जलाते है। तत्पश्चात् घर

के सभी सदस्य पूजन करते है, इस हेतु तांबे की बडी परात मे 32 नग रोटी के जूड़े, 32 पूरी, 32 चावल के आटे की पूरी व 32 आटे के दिये एवं लाप्सी के लड्डू रखे जाते है। आटे के दिये जलाकर सभी सदस्य हाथ लगाते हुये। Clock wise and anti clock wise उधौ, उधौ करते हुये पूजन करते है। तत्पश्चात् उसी सामग्री के सभी सदस्यो मे बांट दी जाती है। इसके पूर्व कोई भी सदस्य कुछ भी नहीं खाता है।

देवी उठाते समय गुड़ घी का नैवेघ बताया जाता है एवं चावल (केवल) बनाये जाते है जो कि कुल के सभी सदस्य ग्रहण करते है।

संकलनकर्ता – श्री चांदमल करोडी मो. न. 8989619195

'' जय महेश''

श्री गणेशाय नमः

जय श्री दादाजी

बजाज उर्फ करोड़ी गोत्र के जन्म विवाह एवं त्यौहार व रीति – रिवाज

सर्वप्रथम चैत्र माह से प्रथम दिन '' गुडी पड़वा'' के दिन नववर्ष की शुरूआत से :– सुबह पूजन के बाद नीम की पत्ती और गुड खाकर पानी पीते है। व घर व भगवान के मदिर में कडवा नीम लगाते है। घर पर मीठा भोजन बनता है।

''गणगौर तीज''

जहाँ गणगौर माताजी की बाड़ी होती है, वहाँ पूजन कर नारियल रखकर, नारियल फोड़ा जाता है। दूसरे दिन गाँधी भवन में जाकर गणगौर माता के दर्शन दिये जाते हैं।

''चैत्र माह की अष्टमी''

चैत्र माह की अष्टमी को पूजा की जाती है। विवाहित नवरात्रि के उपवास रखते हैं। रामनवमी को देवीपूजन होता है, दूध, चावल, शक्कर का भोग लगाते हैं और नये जनेउ, लाल रेशमी धागे की बेल बांधना है। लडकी को पांच गांठ वाली बेल एवं लडके को सात गांठ बेल गले में पहनाते हैं।

''रेणुका चौदस के दिन''

पूरा परिवार छोटी छैगांव के रेणुका माता मंदिर में दर्शन करने जाता है, आरती कर भोग लगाया जाता है। घर पर दाल, बाटी, चूरमा बनाया जाता है।

''अक्षय तृतीया के दिन''

सुबह स्नान करके भगवान का पूजन कर, मटकी में पानी भरकर, ऊपर आम या खरबूजा और गेहूँ रखकर, पूजा करके मंदिर में रखकर आते है।

''बड़ी पूर्णिमा''

सुहागिन महिला व्रत के दिन बरगद वृक्ष की पूजा करती है। घर की महिलायें आम और चने (भीगे हुये) से सुहागन औरत की गोद भरती हैं।

आषाढ़ इतवार :– अमावस्या के बाद प्रथम इतवार, भैरव बाबा की पूजा की जाती है, नारियल फूटता है। घर में दाल, बाटी, चूरमा बनता है।

गुरू पूर्णिमा :– भैरव का दिन माना जाता है। गुरू महाराज के विट्ठल मंदिर में दर्शन किये जाते हैं। घर में दाल, बाटी, चूरमा बनता है।

नागपंचमी :– एक दिन पूर्व बना ठंडा भोजन किया जाता है। नागमंदिर जाकर सिंदूर एवं नारियल चढ़ाया जाता है एवं जीते नाग की पूजा की जाती है।

श्रावण की पूर्णिमा :– श्रावण की पूर्णिमा से पहले रविवार बहनों को इरपस दी जाती है। बहन बेटी को हम रविवार को सुबह गेहूँ नारियल की बाटकी, हल्दी, कुंकु, ब्लाउस पीस, पैसे देकर रक्षाबंधन भाई बहन के घर जाता है और ससुराल में रक्षाबंधन का आमंत्रण देकर आता है।

श्रावण की नागपंचमी :– नाग मंदिर में नारियल चढ़ाया जाता है। जीते नाग महाराज की पूजा की जाती है एवं जिरौत भी दीवाल पर मांडी जाती है, सफेद खडू से एवं पूजा की जाती है, बासी भोजन किया जाता है।

पोला अमावस्या :– के दिन पूरनपोली बनाई जाती है, व मिट्टी के बैलों को घर लाकर पूजन किया जाता है व राखी बांधी जाती है और जिसकी खेती होती है, वो बैलों को लेकर घर आते हैं और उनकी पूजा की जाती है और बैलों को पूरनपोली भोजन खिलाया जाता है। काम करने वाले मजदूरों को खाना खिलाया जाता है और नये वस्त्र खेत की मजदूरी दिये जाते है।

हरितालिका व्रत :– हरियाली तीज को महिलायें निर्जला व्रत रखती हैं। शिव पार्वती की पूजा की जाती है। रात्रि जागरण होता है।

गणेश चतुर्थी :– गणेश चतुर्थी को सुबह शुभ मुहुर्त में गणेशजी की मूर्ति लाई जाती है। दाल, बाफला, लड्डू का भोजन बनता है। केले के पत्ते पर गणेश स्थापना की जाती है। कलश पर नारियल, एवं पूजन सामग्री रखी जाती है और 11 दिन के लिए नवेज बनाया जाता है एवं पूजा पाठ कर आरती की जाती है अनंत चौदस को अनंत देवता का पूजन कर अनंत बांधा जाता है, जो वर्ष भर रक्षा करता है।

शीतला सप्तमी :– शीतला माता मंदिर जाकर देवी का पूजन कर ठंडा भोजन का भोग लगाया जाता है एवं घर में परिवार के सभी सदस्य एक दिन पूर्व बना ठंडा भोजन करते है।

श्राद्ध पक्ष :– पहले दिन से आखिरी दिन तक पूरा भोजन बनाकर जौ, काला तिल से पूजन किया जाता है व खीर भजिये उड़द बड़े कढ़ी, दाल, सब्जी बनाकर तर्पण किया जाता है। ब्राह्मण भोजन, बहन बेटी, पितृ गवरनी को भोजन कराकर घर के लोग भोजन करते हैं और गयाजी बैठाकर पितृ को गुड़ घी की घूप दी जाती है।

पितर मांडवा

पितृमोक्ष अमावस्या आखिरी दिन की धूप देकर उसे जल में विसर्जित किया जाता है।

नवरात्रि

नवरात्रि पर घर की साफ सफाई होती है। पूरा घर साफ होता है। सब कपड़े चादर बगैरह की धुलाई होती है। घर को धोया जात हैं या जहाँ पूजा पाठ करते है, उस कमरे को देव स्थान एवं किचन साफ कर धोया जाता है, पुताई होती है। एवं नवरात्रि में भवानी माता मंदिर जाकर रोज दर्शन किये जाते हैं। अष्टमी के दिन उपवास किया जाता है। शादीशुदा सब उपवास करते हैं। नवमी के दिन सुबह अलोना चावल (भात) बनाते, सोल्या में बनता दूध, चावल या शक्कर चावल, घी गुड़ का नवेज बनता है और यही नवेज खाया जाता है और आम के सात पत्तों से बच्चे को दूध चावल मुंह से लगाते हैं। सभी परिवार सोल्या के

कपड़े में पूजा करता है और आरती होती है। नवेज, गुड भात बनाते हैं। नारियल फोड़ते हैं। शाम को 9 दिन पूजी की सामग्री धूप ध्यान का विसर्जन करते हैं और शाम को नीबू की बलि देते है।

दशहरा के दिन :– बहन बेटी से शाम को टीका लगवाकर गिलकी, शकर का प्रसाद ग्रहण कर गोलमाल बाबा स्थित मंदिर जाकर सोना चांदी चढाकर दर्शन किये जाते हैं एवं घर आकर बुजुर्गों को सोना चांदी देकर आशीर्वाद लिया जाता है एवं रिश्तेदारों के यहां आशीर्वाद लेने हेतु जाया जाता है।

दीपावली

गोवत्स द्वादशी :– इस दिन गाय, केड़े की पूजा की जाती है। पूजा में अबीर, गुलाल, हल्दी, कुंकू, चावल, जौ, चौले, गुड़ लिया जाता है। पहले गाय माता पूजन किया जाता है तथा हल्दी हाथे लगाये जाते हैं और गाय को ज्वार, गुड़, चौले खिलाये जाते हैं। इस दिन एक बार भोजन किया जाता है व ज्चार की रोटी और चौले की सब्जी बनाई जाती है।

धनतेरस – के दिन पूरनपोली बनाई जाती है एवं पूरा खाना बनाया जाता है और बहन बेटी को खाना खिलाया जाता है, जिसकी दुकानदारी है, बेसन का चिकसा बनाते हैं और उससे नहाया जाता है।

दीपावली – के दिन सुबह दुकान पर बहीखाते की पूजा होती है। सुबह बहन बेटी चौक मांडती है, रंगोली बनाई जाती है। शाम को घर पर गणेश पूजा होती है। इस दिन तवा नहीं रखा जाता, पूड़ी सब्जी व गैरह बनाया जाता है। 21 दिये जलाये जाते हैं एवं घर बने पकवान गूँजे, संजोरी, मिठाई, नमकीन, सब्जी पूड़ी, दाल चावल, कढी का नवेज बनाया जाता है। भोजन दिया जाता है। दुकान पर बहीखाते की पूजा करते हैं। 21 दिये जलाये जाते हैं। उनकी पूजा करके घर की बहू पूरे घर पर दिये रखकर थाली आती है।

अन्नकूट (गोवर्धन पूजा) :– के दिन भी गोबर से गोवर्धन बनाये जाते हैं। घर के बाहर साफ जगह पर नहाने से पहले गोवर्धन बनाये जाते हैं। घर की सभी महिलायें पूजन करती हैं। अब जिसकी खेती है, वही गोवर्धन पूजा करते हैं। गोवर्धन बनाते हैं। बाकी बंद कर दिया जाता है।

भाईदूज :– के दिन बहन भाईयों के घर आती है और टीका लगाती है। मीठा नमकीन खिलाती है और उनको भाई भेंट देता है।

देवउठनी ग्यारस

देवउठनी ग्यारस के दिन भगवान की पूजा की जाती है व फरियाल बनाया जाता है। शाम को घर के बाहर चौक बनाकर उस पर तुलसी का गमला रखा जाता है तथा सालिगराम भगवान उस विराजित किया जाा है। चारों तरफ चार गन्नों की झोपड़ी बनाकर तुलसी का पूजन कर अबीर, गुलाल, सिंदूर चावल, कुंकू, हल्दी शक्कर, फूल द्वारा पूजन किया जाता है तथा बोर, भाजी, आंवला, भटे, गन्ना से देव उठाते हैं। घर के बड़े तुलसी की पांच परिक्रमा (बोर भाजी आंवला, उठो देव सांवला) कहकर करते हैं। फिर सभी सदस्य पूजा करते हैं एवं घर में बनाये पकवान से भगवान को मिठाई भोग लगाते है।

तिल संक्राति – के दिन तिल्ली के लड्डू और दाल चावल खिचडी का दान किया जाता है। पण्डित जी को कपडा, पैसे, खिचडी, लड्डू देकर उनका तिलक किया जाता है। दूसरे दिन सुहागन जो सामान बांटती है, उस पर लड्डू रखकर पानी फेरती है उस दिन घर पर खिचड़ी और बनाये जाते हैं।

बसंत पंचमी – इस दिन सरस्वती देवी की फोटो पर माला पहनाकर पूजन किया जाता है। घर में मीठा भोजन बनाते हैं।

शिवरात्री – शिवरात्रि के दिन भगवान भोले की पूजा करते हैं एवं उपवास की सामग्री भोजन में बनाई जाती है। भगवान महेश की पूजा करते हैं।

होली – के दिन शाम को पूनम के दिन सुबह होली की पूजा करते हैं। पूरनपोली, दाल, चावल, भजिये बनाये जाते हैं और होलिका का नवेज बनाते हैं एवं गोबर कंडे की माला बनाकर होलिका को हार पहनाते हैं। दूसरे दिन होली की अंगार घर पर लाते हैं। गेहूँ की बाली सेंकते हैं।

जन्म के रीति रिवाज

बच्चे का जन्म :– जिस दिन बच्चे का जन्म होता है, उसी दिन 2 बेल बच्चे को पहनाते हैं। पांचवे दिन और छठवें दिन छठी माता की पूजन होती है। जिसमें कोरा ताव 2 खारिक, 2 बिलावा और पीले धागे (हल्दी में करे हुये) कुंकू, चावल, हल्दी, दिया एक थाली में रखकर जच्चा बच्चा के पलंग के नीचे दिया जलाकर प्लेट में रात को सोते समय काजल बनाया जाता है। रात को सोते समय माँ बच्चे को गोद में लेकर ताव की पूजा करती है। दिये से कोरा काजल बनाकर बच्चे को लगाते हैं। पूजा कर पीले धागे बच्चे के हाथ व पैर मे बांधते हैं।

बच्चे का नाला – बच्चे की नाल खिर जाने पर सुतकाला पूजते हैं। उस दिन जच्चा बच्चा नहाकर साफ कपड़े पहनाते हैं। बहन बेटी रिश्तेदारों को बुलाकर गीत गाये जाते हैं। सूरज पूजा करते हैं। एक पाट पर चौक बनाते हैं, जिसमें चाँद सूरज बनाते हैं। पीली चिन्दी में पैसा, सुपारी बाँधकर रखते हैं और सूखा नारियल फोड़ते हैं। खारिक, हल्दी की गाँठ पूजा में रखते हैं, वह बच्ची को घूंटी में देते हैं। नारियल गच्चा को देते हैं। यदि लड़की हुई तो गीली आटे की 14 चावड़ी और लड़का हो तो 18 चावडी बनाते हैं और आटे के दिये चावड़ी जितने ही दिये बनाये जाते हैं। वह पाट पर दिये चावड़ी रखकर जच्चा के हाथ से पूजा करवाई जाती है। गीत गाये जाते हैं। मिठाई बताशे बांटे जाते हैं। दीवाल पर हल्दी से हाथे लगाये जाते हैं।

जलवाय पूजन – जलवाय पूजन में जच्चा बच्चा को नहलाकर बच्चे को लाल कपड़ा कोरा दे झबला पहनाते हैं। बुलावा कर सभी रिश्तेदारों को बुलाते हैं। शाम को जलवाय पूजन के समय जच्चा सिर पर लोटा (पानी – दूध) रखती है। घर के डेल पर बाहर घड़े की पूजा करके चौक बनाकर दोनों को बैठाकर मायके के कपडे करते हैं। गेहूँ, नारियल, खारिक और पैसा से गोद भरते हैं। गीत गाकर मिठाई बांटते हैं। 5 नारियल देवी के अलग रखते हैं। सवा महीने बाद जच्चा – बच्चा को नहलाकर मंदिर के दर्शन कराकर मायके भोजन के लिये भेजते हैं।

मुण्डन संस्कार :– बच्चे को देवी में कुंवार की माता में बैठाना है एवं बच्चे को देवी से लगाना। बच्चे को कोरे सफेद कपड़े पहनाते हैं और कमीज की पीठ पर लाल कपड़े के चांद सूरज टांका जाता है और चांदी के कड़े तागली हाथ पैर गेल में पहनाया जाता है और आत के 7 पत्ते से बच्चे को दूध भात मुंह को लगाते हैं। जब बच्चा देवी से लगता है। पहले साल या तीसरे साल बच्चे का मुण्डन संस्कार किया जाता है। हमारे यहाँ लड़की के जमाल नहीं निकलते। लड़के के जमाल निकालते हैं। जमाल मुण्डन संस्कार खेड़ापति हनुमान मंदिर पर निकालते हैं।

(1) लाल कपडा 1/2 मीटर (2) मोटा आटा (3) गुड़ 1/2 किलो (4) घी (5) सिंदूर (6) सुपारी (7) कुंकु (8) हल्दी (9) चावल (10) नाड़ा (11) अगरबत्ती (12) 5 नारियल (13) कपूर सुबह शुभ मुहूर्त में निकलते हैं। बच्चे को नहलाकर तैयार करते हैं और पूजा का पूर्ण सामग्री तैयार किया जाता है। आटे के दो रोट सेंक कर शुद्ध घी लगाकर रखते हैं एवं एक रोटी जमाल झेलने वाली एक तरफ रखते हैं एवं लाल कपडे में रोटी रखते हैं। उस पर जमाल झेलते हैं। सभी रिश्तेदारों को बुलाया जाता है।

सामग्री – लाल कपड़े बच्चे के नाप के सफेद कपड़े से चांद सूरज पीठ पर टांका जाता है एवं कान ढकी टोपी 2 झण्डी 1 लाल 1 सफेद बच्चे के हाथ में रहती, बाल खुले रखते हैं।

नाई को 1 दिन आगे बता देते है एक दिन आगे रिश्तेदारों को बुलाया जाता है पूर्ण तैयारी शाम को की जाती है बताशे गुड़ बाटने के लिये बैंड बाजे आदि सुबह, शुभ मुहुर्त में बच्चे के दादा एवं पूरा परिवार घर से खेडापति हनुमान मंदिर के लिये निकलता है। पहले बच्चे को दादा लेकर निकलते है और घर की डेल पर नारियल फोडते हैं। गांजे बाजे से मंदिर पर जाते हैं। वहॉ दरी बगैरा बिछाई जाती है। मंदिर में बहन बेटी चौक पाट बनाती है और पाट पर बच्चे को बैठाया जाता है। भगवान के मंदिर में 2 रोट शुद्ध घी लगे एवं हार पुष्प माला दो नारियल एवं घी सिन्दूर एवं भगवान को चोला चढाया जाता है। एवं नवेद बताया जाता है। फिर मुहुर्त देख बच्चे को पाट पर बैठाया जाता और बुआजी या बहन लाल कपडे में जमाल झेलती है नाई कैंची से पूर्ण जमाल काटता है। उसके बाद बच्चे को नहालाकर सिर पर हल्दी लगाई जाती है और कुंकु से बनाया जाता है एवं भगवान ढोक दिलाई जाती है। भगवान की पूजा करते हैं। बहन, बेटी, सास, काका, काकी को मामा के यहां से कपडे करते हैं। उसके बाद गीत वगैरह गाये जाते हैं एवं नाश्ता पानी होता है। कोई परिवार सभी को भोजन कराते हैं। यह उसकी श्रद्धा पर है। उसके बाद घर पर आया जाता हैं। एक नारियल घर पर फूटता है और महिलायें घर पर गीत वगैरह गाती हैं। तीसरे दिन बच्चे को शुभमुहुर्त देखकर खूंटे (बाल) निकाले जाते हैं एवं उसके बाद सिर पर हल्दी लगाई जाती है। कुंकू से बनाया जाता है और बहन बेटी को भोजन कराया जाता है।

– शादी का मुहुर्त –

गवरनी भोज – मुहुर्त के पहले दो गवरनी को भोजन कराते हैं। पूर्ण कपड़े देते हैं। मुहुर्त घर पर हो तो दिया चौक बनाकर बहन बेटी को पाटले पर बैठाते हैं। पहले जेल बांधते हैं। लडके को 2 गठानें लाल रेशमी धागा एवं लड़की को 7 गठानें बांधकर जेल बांधी जाती है। उसके बाद माता बेल माँ उतारती है। उसे लाल कपड़े में गेहूँ, पैसा, नारियल

रखकर जेल उतार कर रखते हैं। उसे सलकनपुर में माताजी के यहाँ पहुँचा देते हैं। प्रोसेस – माता पूजन के बाद मुहुर्त में अच्छे चौघड़िया में सवा पाव हल्दी लाते है।

खल मिट्टी – सात टोकरी मिट्टी लाने के लिये। (7 टोकरी लड़की के लिये, 9 टोकरी लड़के के लिये), दो सूपडा, दो नारियल, खल बत्ता सभी पर नाड़ा बांधना मिट्टी दिया तेल, आरती, कुंकु, चावल, पैसे, सुपारी, पान, गेहुँ 1/2किलो, बताशे 1 किलो, नाडा, हल्दी की गांठ, गणेश जी, तांबे का लोटा सलाई, फूल, पाट (पटला), आटा चौक मांडने के लिये सबसे पहले टोकरिया, सूपड़ा सब पर नाड़ा लपेटकर दूल्हा दुल्हन को चौक बनाकर पाट पर बैठाना। गणेश के रूप में बालक को भी बैठाना। पूजा की थाली में गणेश जी बैठाकर पूजा करना, कलश की पूजा करना चिकसा पीसने चक्की पर जाना, गेहूँ, मुहुर्त की हल्दी डालकर सेंक कर चिकसा पिसवाना। गणेश जी की पूजा करना, बहन बेटी दुल्हे दुल्हन सुपारी भी डालना। बहन बेटी को लिफाफा देना और दूल्हा या दुल्हन उठायें।

खल मिट्टी – घर के गेट के पास मिट्टी, गणेशजी पान पैसा, सुपारी गुड़

प्रोसेस :– मिट्टी खोदते समय पान पर गणेश रखकर पूजन करें। मूसली की पूजा करें। पैसा, सुपारी, गुड रखना फिर गणेश सहित मिट्टी उचका कर दूल्हे की माँ की खोल में डालना। दूल्हे की माँ की खोल से बहन बेटी व नारियल पैसे से रजन भरना। अब टोकरियों में मिट्टी डालकर अंदरी आ जायें। सब मिट्टी को एक जगह डालकर उसमें पानी डालना।

गणेश पूजन – चावल बनता है। गुड़, घी, शक्कर का नवेज बनता है। बहन बेटी गणेश बनाती है और दूल्हे की माँ डेली के यहां झेलती है। गणेश पूजा के दिन माता भरते हैं। दूल्हा नहा धोकर पस भरता है। चावल, गेहूँ पैसे चढ़ाकर दो नारियल रखते हैं एवं चावल बनता है।

करोडी परिवार द्वारा शादी की देवी पूजना –

1. शादी के मुहुर्त के पहले – सवा पाव हल्दी और सवा पाव कुंकुम बाजार से मंगाना।
2. माता की जेल उतारना – लाल कपड़ा – 1 मीटर, 1 नारियल, 5 पाव गेहूँ, माता चांदी की, सवा रूपये नगद, या श्रद्धानुसार पैसे रखकर लाल कपड़े की पोटली बनाना व शादी के बाद सलकनपुर माता मंदिर पर चढ़ाना।
3. रूपा :– रूपा का 1 दिया घी का, 2 नारियल, दूल्हा, दुल्हन के ऊपर से उतारने का तथा 2 दीये घी के लगाना एवं पैसे एवं सुपारी रखकर थाली सजाना तथा गुड़ का प्रसाद चढाना।
4. हल्दी – हल्दी के 4 नारियल एवं 1 नारियल दूल्हा, दुल्हन के ऊपर से उतारने का तथा 2 दीये घी के लगाना एवं पैसे एवं सुपारी रखकर आरती (थाली) सजाना तथा गुड़ का प्रसाद चढाना।
5. गोद भरना (कुड़ी भरना) :– 18 नाप गेहूँ, 18 नाप चावल, 32 पैसे (रूपये श्रद्धानुसार) 32 सुपारी, 1 नारियल रखकर दुल्हा/ दुल्हन से माता की गोद भरवाना।
6. लग्न – 1 मीटर लाल कपड़ा व 1 मीटर सफेद कपड़ा तथा लाल कपडा आयत के गाडगे ऊपर रखना सफेद कपडे पर माता का पड़ बनाना 36 नाप गेहूँ पीसाना। 10 नाप चावल पीसाना 5 नाप उडद पीसाना। गेहूँ के आटे 32 दिये बनाना व बचे हुए

आटे की पूडी एवं लड्डू बनाना, उडद के आटे एवं चावल के आटे की भी पूडी बनाना दुल्हा दुल्हन को नहलाने के बाद एक नारियल उनके उपर से उतार कर फोडना, देवी पूजने के बाद रूपा हल्दी एवं लग्न सभी नारियल फोड कर प्रसाद बाटना ।

7. देवी उठाना – आयत के गाडगे का चावल बनाना 7 नाप गेहुँ देवी उठाने के पीसाना तथा गेहूँ के आटे के साथ लड्डू व 7 दिये बनाना व बचे हुए आटे की पूडी बनाना तथा देवी उठाना उपरोक्त विधि से कार्य करे ।

मृत्यु

मृत्यु होने पर बडा या छोटा बेटा अग्नि देता है।बहू गोबर से जिस जगह उसको सुलाया जाता है, वहां गोबर से रेकटा खीचती है, और बिना पीछे देखे उनके कपडे लेकर सबसे पहले चलती है। वहा कुए पर कपडे गीले कर नहाती है। और वही कपड़े लेकर उसी जगह पर रख देती है। वह पर मायके से आये चावल , 100 ग्राम घी, गुड से चावल बनाकर कडवा बनाते है।और तीन काल अग्नि देने वाले के मुंह को लगाती है। उसी स्थान उस दिन पर प्लेट में आटा प्लेन करकेढाक देते है।दूसरे दिन सारी समेट कर नदी में विसर्जित करते है। एक फूल रख लिया जाता है वह दसवें दिन पूजा के लिये जाते है। और बाहर भीतर होता हैं मंदिर मे घर का दमाद शुद्ध पानी एक सुपारी लेकर जाया जाता है दामाद भगवान की पूजा करते है। जल चढाने है और बाहर आकर सभी को पानी छिटते है और सुपारी फोडकर सभी को बाट देते है। और घर वापस आते है। दूसरे दिन दोपहर को उठावना होता है। उसमें भी मंदिर जाते हैं। वहां से हरी भाजी लेकर आते हैं और सीधा लेकर जाते हैं। दूसरे दिन चावल बनाकर घी डालकर अच्छी तरह से मिलाकर लड्डू बनाते हैं और पानी व चाय और यह चावल का लड्डू मकान की छत पर नौ दिन तक रखते हैं। शाम को गरूड़ पुराण का पाठ होता है। रोज अंधेरा कर दीपक जलाते है। नौ दिन तक दसवें दिन सुबह सुबह निकालते हैं। पूरे घर का पोंछा लगाया जाता है। घर के सभी छोटे बड़े लड़के नाती बाल देते हैं। दसवां ग्यारहवां घर पर किया जाता है। रामेश्वर पर किया जाता है और ओंकारेश्वर, उज्जैन में किया जाता है। उसमें अग्नि देने वाला और मामा या दामाद साथ में ले जाते हैं। दसवां, ग्यारहवां बारहवां ओंकारेश्वर/उज्जैन में किया जाता है। जैसी परिवार की श्रद्धा हो।

बारहवें दिन – बहन, बेटी, परिवार सदस्य 12 ब्राह्मण गवरनी को एवं रिश्तेदारों को भोजन कराते हैं। मामा मौसी ससुराल को एवं मीठा खिलाते हैं एवं गवरनी और ब्राह्याण को कपड़े करते हैं।

तेरहवें के दिन – घर पर श्राद्ध का पूरा भोजन बनाया जाता है। घर पर ही पंडित तर्पण करता है। पूजा पाठ कराता है एवं सीधा दिया जाता है और एक पगड़ी घर पर की जाती है। धर्मशाला में गरूड़ पुराण का आखिरी अध्याय का पाठ होता है और बाकी सदस्यों की जिन्होंने बाल दिये हैं की टोपी ससुराल द्वारा पहनाई जाती है। फिर जिसने आग दी है, वो सीधा लेकर मंदिर जाते हैं। उसके बाद जिसने रेक्टा किया है, वह महिला गेहूं पैसा लेकर मंदिर जाती है। फिर सबको भोजन कराया जाता है।

पंद्रहवें दिन – श्राद्ध व 6 मासी, बरसी होती है। जिसमें पंडित द्वारा तर्पण करवा कर पिण्ड बनाते हैं। परिवार के सदस्य पूजन करते हैं। उसी दिन सुबह तुलसी को पानी व शाम को

मंदिर में घर पर तुलसी को दिया जलाया जाता है। 13 बरसी आने तक बरसी होने पर मृत्यु के पूरे श्राद्ध होने पर उनको साढ़े ग्यारह माह में श्राद्ध में मिलाया जाता है।

करोडी परिवार द्वारा शादी की देवी पूजन

शादी के मुहुर्त के पहले 1 1/4 पाव हल्दी एवं 1 1/4 पाव कुंकुंम बाजार से मंगाना।

मता की जेल उतारना :– लाल कपड़ा 1 मीटर, 1 नारियल 4 पाव गेहूँ माता चांदी की 5 1/4 रूपये नमंद या श्रद्धानुसार पैसे रखकर लाल कपड़े की पोटली बनाना व शादी के बाद सलकनपुर माता मंदिर पर चढ़ाना।

रूपा :– रूपा का 1 दिया घी का, 2 नारियल एवं 1 नारियल दुल्हा दुल्हन के ऊपर से उतारकर व पैसे एवं सुपारी रखकर थाली सजाना तथा गुड़ का प्रसाद चढ़ाना ।

हल्दी :– हल्दी के 4 नारियल एवं 1 नारियल दुल्हा दुल्हन के ऊपर से उतारने का तथा 2 दीये घी के लगाना एवं पैसे व सुपारी रखकर आरती (थाली) सजाना तथा गुड़ का प्रसाद चढ़ाना।

गोद भरना (कुड़ी भरना) :– 18 नाप गेहूँ 18 नाप चावल 32 पैसे रूपये , 32 सुपारी, 1 नारियल रखकर दुल्हा दुल्हन से माता की गोद भरवाना।

लग्न :– लाल कपडा व 1 मीटर सफेद कपड़ा बाजार से अपने सीधे हाथ तरफ 3 व उल्टे हाथ तरफ 2 गाड़गे की लाइन लगाना तथा देवी के कमरे के बाहर सीधे हाथ तरफ गणपति बनाना व उल्टे हाथ तरफ बोटे लगाना। मंगाना तथा लाल कपडा आयत के गाड़गे के ऊपर रखना। सफेद कपड़े पर माता का पड़ बनाना।

36 नाप गेहूँ पीसना, 10 नाप चावल पीसना, 5 नाप उड़द पीसना। गेहू के आटे से 32 दीये बनाना व बचे हुए आटे की पूडी एवं लड्डू बनाना, उडद के आटे एवं चावल के आटे की भी पूड़ी बनाना। दुल्हा दुल्हन को नहलाने के बाद उनके ऊपर से उतारकर फोड़ना।

देवी पूजन के बाद, रूपा, हल्दी व लग्न सभी नारियल फोड़कर प्रसाद बाटना।

देवी उठाना :– आयत के गाड़गे का चावल बनाना 8 नाप गेहूँ देवी उठाने के पीसना। तथा गेहुँ के आटे के 8 लड्डू व 8 दिये बनाना व बचे हुए आटे की पुड़ी बनाना तथा देवी उठाना। उपरोक्त विधि से कार्य करें

डागा गोत्र के रीति रिवाज त्यौहार देवी पूजन

1. प्रस्तावना
2. देवीस्थान
3. गोत्र डागा
4. समाज मे स्थान ओर सम्मानित है
5. आषाढ़ माह से चैत्र सहित आषाढ़ सहित

डागा परिवार कि रीति रिवाज

1. प्रस्तावना :– डागा गोत्र समाज में एक मात्र एक परिवार है जो दो परिवार में बट गया। हमारा परिवार ग्राम रेहटी तहसील बुधनी जिला सीहोर के अन्तर्गत आता है। हमारे पिता छोटे लाल पिता पूनमचंद जी ये रेहटी ग्राम के निवासी है। छोटे लाल जी डागा के तीन भाई थे। इनके दो भाइयों के यहां कोई संतान नही थी। छोटे लाल जी डागा की शादी आष्टा निवासी सेठ अनोखीलाल जी नागोरी जी की बहन राजल बाई के साथ हुआ। ये शादी के (बाद में) रेहटी से खण्डवा आ गये। और से भिकारी लाल जी बजाज उनकी मां अच्छी के यहां आये। अच्छी छोटेलाल जी के पिता पूनमचंद की बहन जी। अच्छी मां ने उनके घर पर सहारा दिया फिर उनको अपने पास रख लिया। उनको धंधे में लगाकर खण्डवा में अपने मकान में स्थान देकर रखा। बाद में उनके घर बच्चे हुए।

हम दो भाई सुमनचंद, माखनलाल हुए। हमे पढ़ा लिखाकर कुछ योग्य बनाया फिर मुझे (सुगनचंद) के नार्मल स्कूल में टीचर ट्रेनिंग में उनके रिश्तेदार जी कमलचंद जी माहेश्वरी जी राजानंद जी माहेश्वरी जी की कृपा से मां ने मुझे एक वर्ष पाठ्यक्रम करके टीचर बना दिया इसी बीच पिता छोटेलाल जी डागा का देहांत हो गया। मां ने हिम्मत के हमें पाला फिर मेरी शादी खुशीलाल जी गंगाराम जी दाड़ परिवार की लड़की पुष्पाबाई के साथ हो गया। पत्नि भी टीचर ट्रेनिंग करके मेरे साथ कार्य करने लगी और हमारा परिवार में हरियाली बंसत आ गई। परिवार बड़ता गया। और आज हम समाज के सामने योग्य हो गए। आज दाल रोटी से सुखी है।

2. देवीस्थान :– हमारे डागागोत्र की देवी टिवारी में मूर्ति दो है, बिजासन माता राजस्थान व भेरू रामगंड राजस्थान में है। पहले हमारे पिता के यहां लड़का नही होता था। उन्होने देवी लसुडिया माता से मांग थी माता की कृपा से पुत्र सुगनचंद, माखनलाल, चम्पालाल, तीन पुत्र हुए चम्पालाल का देहांत हो गया हम दो भाई इस समय है।

3. गोत्र डागा :– धाकड़ माहेश्वरी समाज में एक ही परिवार दो भाईयो का है। समाज में एक ही घर है। डागा परिवार का ।

आषाढ़ में गुरू पूर्णिमा पर दाल बाटी बनाई जाती थी गुरू महाराज विट्ठल मंदिर की पूजा के पश्चात् ही परिक्रमा की जाती थी।

सावन में राखी का त्यौहार में बहनों को लाकर उनसे राखी बांधने का कार्य होता था, बहनों की राखी पर पूरे पांच कपड़े व कुछ रूपये होकर राखी बांधी जाती थी। बहनें राखी से पहले ही ले आते थे राखी पर पूरन पोली, व पूरी से पूरा भोजन बनाकर खाते थे। अब भादो में घर में गणेशजी की स्थापना की जाती थी दस दिन लड्डू बाटी चुरमा के साथ पूरा भोजन बनाकर गणपति जी को भोग लगाया जाता था। मैं मोहल्ले में गणपति जी स्थापना, श्री नागोरी के गेरिज की जगह पर करते थे चंदे के सहयोग से दस दिन गणपति जी, घर से देवी घी के रोज लड्डू बनाकर प्रसाद बांटा जाता था। कुंवार माह में अष्टमी, नवमी दो दिन देवी का पूजन पूरे परिवार सहित किया जाता और सब मिलकर अष्टमी को दाल बांटी फिर नवमी को फीके पुए, मीठे पूये, नमकीन पूये, खीर बनाकर देवी भोग लगाकर ग्रहण किया जाता था।

फिर दशहरे के दिन नये कपड़े पहन कर दशहरा दर्शन करने जाते फिर आकर अपने परिवार के बड़े लोगो से आर्शीवाद लेकर बहन रिश्तेदारों के घर आर्शीवाद लेने जाते है, दशहरे के दिन मावा मिठाई व पूरा भोजन सब को बुलाकर एकत्र होकर किया जाता था। फिर चौदस को देवी जी का पूजन करके दर्शन किये जाते थे, फिर क्या था।

दिवाली आ गई, दिवाली पर मावे की मिठाई गूंजे संजुरी, सेव दिवाली के पूर्व बनाकर परिवार सहित बेन बेटी जमाई बच्चों के साथ खाई व खिलाई जाती तथा प्रसाद के रूप में मुहल्ले मे बांटी जाती है। घर मे फटाके व लक्ष्मी पूजन कर अपने समाज के नामी परिवारो के यहाँ जाकर रूपये जमा कराके जैसे रतनलाल जी, चम्पालाल जी, भिकारीलाल जी, डिगरीलाल जी चांडक की दुकानो पर जाकर खाते में 100 रू. जमा कराके आते थे। फिर वो भी हमारे यहां आकर पैसे जमा कर खाता बही शुरू करवाते थे। दिवाली पर पांच दिन तक अच्छे पकवान बनाकर सब मिलकर खाते थे।

अब चार माह तक शादियों का आनन्द लेते व रिश्तेदारों के यहां जाते रहते थे। अब फागून आ गया, होली पर पूरन पोली पूरा भोजन बनाकर होली पूजन करके खाना व दूसरे दिन रंग गुब्बारे से होली बनाना रात में फगन होते थे वहां जाकर गालिया सुनना व मिठाई लाकर खाना।

अब चैत्र का महीना आ गया चैत्र के महीने में घर की पूरी सफाई झाड़ पूरा करना फिर देवी की अष्टमी नवमी कुंवार माह जैसी थी, देवी पूजन करना चौदस के दिन छोटी छैगांव देवी के यहाँ बैल गाडियां लेकर जाना रेस लगाना गाड़ी बैल दोड़ाना, गांव से गाड़ी बैल बुलवाना दोड़ाना, गाड़ी बैल वालो का छारी छैंगांव माता को यहां जमाई रिश्तेदार को बुलाकर भोजन करवाना इस दिन पूरी सब्जी नुकती सेव दही बड़ा रायता परोस कर सब साथ बैठकर खेत में भोजन करना रात में जाकर गाड़ी वालो को स्वागत के साथ कपडे पैसा देकर विदा करते फिर घर में दर्शन करके रात विश्राम करना।

बैशाख, जेठ के महीनों में घर में रहकर बने पकवान खाना फिर आषाढ़ आ गया। शहर में राम संवाद का व दादा जी का मेला लगना दादा जी दर्शन विट्ठल दर्शन करना, गुरू पूर्णिमा दाल बॉटी बनाकर गुरू पूजन करके खाना। रात में विट्ठल भगवान जी की पालकी

के दर्शन गुरू महाराज के दर्शन करके रात्रि मे जो सुबह का प्रसाद ग्रहण करके रात्रि दर्शन पश्चात् विश्राम करना।

हमारा परिवार शुरू से ही खाने का शोकिन व त्यौहार बनाने व बेन बेटियों भाईयों सहित हर त्यौहार महा वार बनाना व दाल बांटी का ज्यादा आदि रहा है। हमारे यहाँ बेन बेटी का ज्यादा स्वागत होता है और त्योहरों पर बुलाकर भोजन कराया जाता है। आज भी वैसा जैसा ही चल रहा है। बस मां का आर्शीवाद पूरे परिवार पर है और हम बहुत सुखी है। परिवार दाल बाटी जलेबी भजिये घर पर ही बनते है। मावे की मिठाई आदि ।

शादी के कार्यक्रम चांडक परिवार के अनुसार ही होते है। बर्तन मिट्टी आना बहाना मंडन बनाना। दिवाली पर दीवार पर गणपति बनाना ग्यारस पर देव उठाना जमीन पर साढ़े खोपड़ी बनाना।

श्री सुगनचंद जी डागा (महेश्वरी)

मो. नं. 8962240241

जय महेश माहेश्वरी नमः

मार्गदर्शिका न संकलन कर्ता श्री गणेशाय नमः

श्रीमती करूणा विमल धारवां

मो. नं. 9826666207

धारवां गोत्र के त्यौहार व रीति रिवाज

सर्व प्रथम चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिन गुडी पडवां का गुडी पडवां के दिन सुबह पुजन के बाद कडवा नीम की डाली घर के मंदिर व सभी दरवाजों पर लगाया जाता है। व नीम के शरबत का प्रसाद लिया है। पूरन पोली व पूरा भोजन बनाया जाता है।

चतुर्थी के दिन गांधी भवन में जाकर गणगौर माता को नारियल धानी का प्रसाद बांटा जाता है। रेणुका चौदस को नारियल फोडते है। व सावण माह में सन्तू अमावस के दिन सन्तू का दान देकर सन्तू का भोग लगा कर खाया जाता है। बड़ पूर्णिमा के दिन वट वृक्ष की पूजा कर कच्चा सूत बड के झाड को लपेटा जाता है। आम व भीगे चने से सुहागनों की गोद भरी जाती है। जिराती अमावस के दिन जिरोती मांडकर कुंकु चावल से पूजा की जाती है। दिवाल को सफेद मिट्टी से पोत कर लाल गिट्टी (गेरू) से मांडी जाती है। खाजा लाप्सी का भोग लगाया जाता है।

नाग पंचमी के दिन तुवर की दाल व बाटी बनायी जाती है। कोई फल काटा नही जाता है। राखी के पहले रविवार के दिन बहन बेटी को विरपस (साडी, ब्लाउस पीस, गेहूँ, गुड नारियल, दस रूपये, सुहाग सामग्री लेकर भाई बहन के घर देने जाता है) रक्षाबंधन के दिन बहन राखी बांधने आती है। भादों मास की हरतालि तीज के दिन 11 या 21 रोठ (टापू) बनाकर कुंकु, चावल से घर की महिला पूजा करती है। गुड का पाक, तुरई व अन्य सब्जी बनायी जाती है।

पोला अमावस के दिन खीर, पूडी, बनायी व सारा भोजन बनाया जाता है। गणेश चतुर्थी व अनंत चौदस औटन है।

भादों को दोनो नाग पंचमी मानी जाती है। दूसरी ऋषि पंचमी दोनों कवलो पर सफेद मिट्टी से पोतकर नारियल की नट्टी जला कर पीसकर, कच्चा दूध मिलाकर नाग मांडकर सिंदूर से पूजा कर गुड के चूरमे का भोग लगाकर देव राखी बांधी जाती है। डोल ग्यारस के दिन डोल में जसोदा माता की गोद नारियल, गेहूँ व ब्लाउस पीस से भरी जाती है।

दूसरे दिन बच्छ बारस के दिन गाय केडे की पूजा कर ज्वार की रोटी बेसन के साथ खायी जाती है।

नाग का मांडना

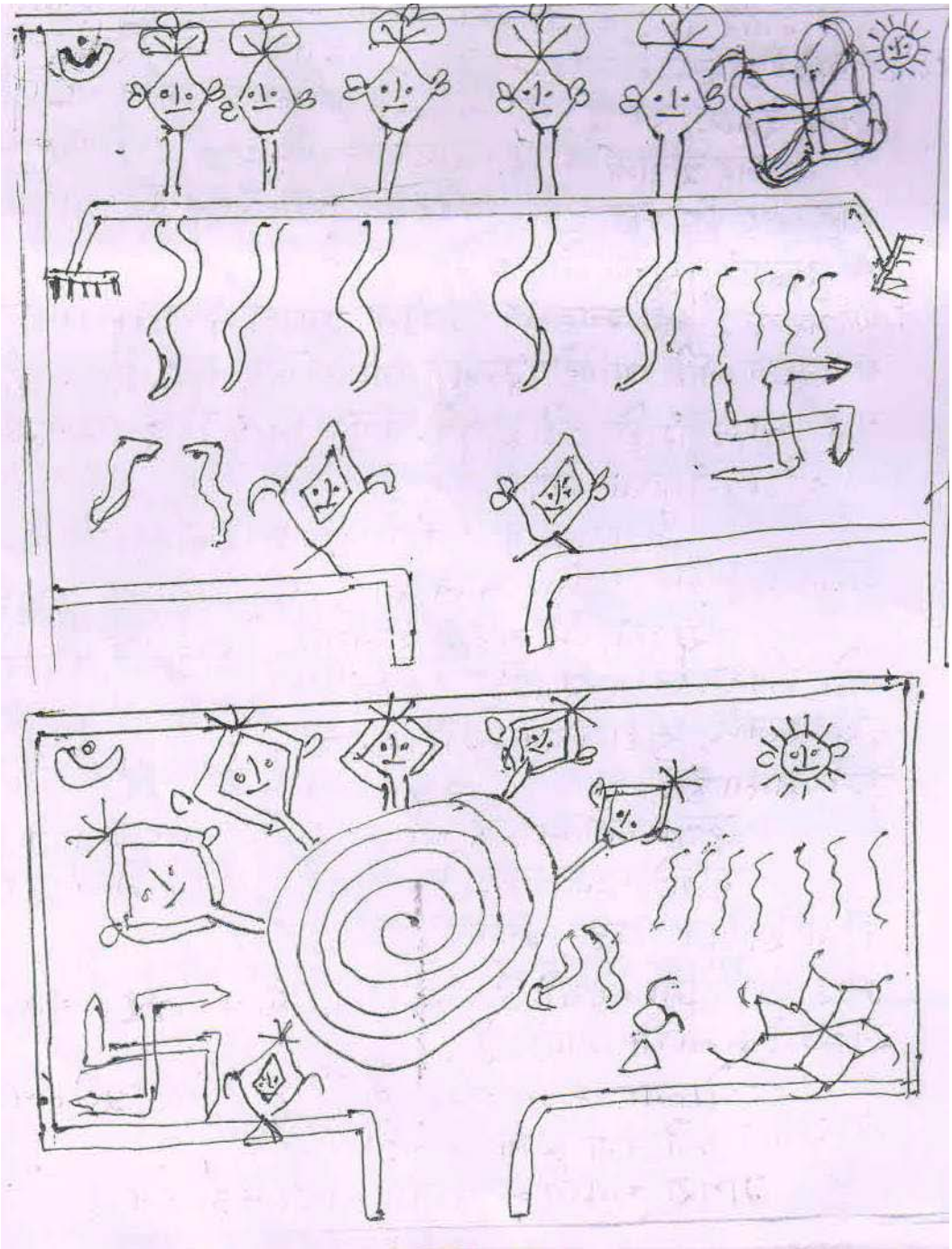

रात को दाल चावल बनाया जाता है। दोनो नवरात्रि में इसी प्रकार पूजन आरती के बाद नारियल फोडे जाते है। शाम को पथवारी नदी में विसर्जित कर देते हैं। पूजा के पाट पर सतिया कुंकु से मांडा जाता है। दीपक जलाते है। पूजा के गेहूँ, चावल, पैसे, बहन, बेटियों को दिये जाते है। नई बहू भी देवी पूजा करती है। नवमी के दिन बच्चे को तिलक लगा कर आम के पत्ते पर खीर रखकर चटाई जाती है। बच्चे को सफेद कुर्ता जिसकी पीठ पर लाल कपडे से चांद के बीच में तारा बना होता है। देवी से लगने के बाद पहिले या तीसरे साल लडके व लडकी का मुंडन किया जाता है।

मुंडन संस्कार लडके का अब्दुल्लागंज रेल्वे स्टेशन से 10–15 कि.मी. दूर भोजपुर गांव में किया जाता है। भैरो बाबा को सिंदूर लगा कर लंगोट दुपट्टा पहनाकर धूप दीप कपूर से आरती कर नारियल फोडा जाता है। लाल कपडा 1/2 मीटर मोटा आटा, घी, गुड़, आटे की रोटी 1 तरफ सिकी हुई चुरमा (आटे) का गुड़ घी मिलाकर बनाया जाता है। खाने में दाल बाटी बनायी जाती है। बच्चे को नये कपडे पहनाकर कैंची व नाई को कुंकु, चावल, लगाकर बहन बेटी जमाल झेलती है। लाल कपडे में रोटी रखकर बाल इकट्ठे कर नदी में

विसर्जित करते है। बच्चे को नहला कर सिर पर हल्दी जगा कर कुंकु से सातिया मांडकर मामा के घर के कपडे पहनाते है। घर आकर तीसरे दिन खूटे निकाले जाते है। और सवाया चावल बनाकर उसका भोग लगाते है।

लडकी का मुंडन घर पर बाई, बेन की गवरनी को भोजन कराने के बाद निकाले जाते है। पूजा में 10पान, 10 जोड लाख की चूडी, 40 सिंगाडे, लौंग, इलायची, सुपारी, खोपरे की चिटक, नाडे की आटी, मेंहदी हाथ में लगाकर 2 लाख की चूडी व अन्य सुहाग सामग्री देते है। गुड की लाप्सी व खाजे व भोग लगाकर सबको दिया जाता है। तेल का मिट्टी का दिया लगाया जाता है।

शरद पूर्णिमा की रात्रि में मेवा मिला के सरिया दूध का भोग लगा कर संत सिंगाजी की आरती कर शक्कर का प्रसाद श्राद्ध पक्ष के पहले दिन से 16 दिन दाल, चावल, सब्जी, 2 रोटी, गुड घी, की धूप दी जाती है। जिस दिन श्राद्ध होता है। उस दिन खीर पूरी भजिये कडी दाल चावल सब्जी बनाकर ब्राह्याण व बहन बेटी पितर गवरनी को भोजन करा कर बाद में घर के सभी सदस्य भोजन करते है।

पित्तर मांडन पाट पर

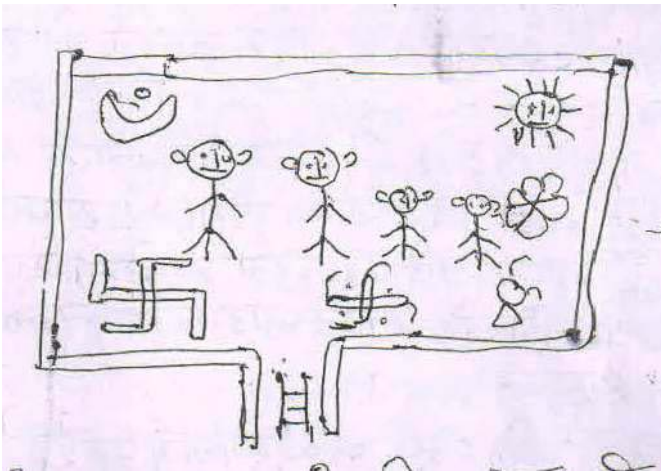

पितृ मोक्ष अमावस के दिन गुड घी की धूप देकर विसर्जित किया जाता है।

नवरात्रि :– अष्टमी के एक दिन पहले घर की साफ सफाई होती है। जहाँ माता जी का पूजन व भोजन बनाते है। पुताई, लिलाई होती है। सप्तमी के दिन देवी के गेहूँ सौले में कपडे या कोरे कपडे पहन कर पिसवाते है। पूरे घर वालों के कपडे भोंग कर डाले जाते है। दूसरे दिन वही कपडे पहन कर पूजन करते है। 1/2 कि गेहूँ, 1/2 कि चावल की ढेरी लगाते हैं। नदी की रेत में से लाई गई पथवारी को धोकर सिंदूर में घी मिलाकर लगाते है। 1 तरफ पांच और दूसरी तरफ 7 पथवारी रखते है। मेढ़ा पाती, आम की पत्ती चढ़ाई जाती है। कुंकु, हल्दी, चावल सिंदूर से पूजा की जाती है। दो नारियल चढाये जाते है। कंडे पर घी, गुड़, छाल छबीले की धूप दी जाती है।

भोग में चने की दाल, बाटी, गुड की पांच पूरन पोली 20 पूरी 20 लाप्सी के लड्डू, दही, चावल, में जीरा नमक मिलाया जाता है। चारों कोनों पर चार – चार पूरी व 1–1 लड्डू, दही, चावल का भोग लगाते हैं।

नवमी के दिन भोग में गुड की खीर व 9 पुअे का भोग लगाया जाता है। खाने में सब्जी, रोटी, खीर बनाते है। बाटा जाता है। मान्यता है। कि रात्रि में 12 बजे अमृत वर्षा होती है। दूध चंद्रमा के उजाले में रख कर सभी ग्रहण करते है।

दीपावली पर्व

कार्तिक कृष्णा पक्ष की एकादशी से दीपावली पर्व शुरू हो जाता है। रात्रि में 11 दिये लगाये जाते है। धनतेरस के दिन पूरन पोली व पूरा भोजन बनाकर बहन बेटी को भोजन कराया जाता है। रात्रि महालक्ष्मी जी का पूजन किया जाता है। रूप चौदस के दिन सुबह तिल्ली पीस कर हल्दी मिला कर उबटन से नहलाया जाता है। अमावस के दिन रात्रि में 16 नये दिये सूपडे में रख कर कुंकु, हल्दी, चावल, तिल्ली, गुड़, साल की धानी चढ़ाई जाती है। 1 दिया हनुमान जी के मंदिर में लगाया जाता है। दूसरे दिन अन्नकूटोत्सव मनाया जाता पूरा भोजन के साथ गूंजे, खुरमा, पापडी, चकली, खीर, पूरी, मिक्चर आदि अधिक से मिठाई, नमकीन का भोग लगा कर भगवान गोवर्धन नाथ का विशेष श्रृंगार पूजन किया जाता है।

भाई दूज के दिन बहन अपने भाई को भोजन करा कर तिलक करती है। भाई बहन को गिफ्ट देता है।

14 जनवरी को संक्रांती पर्व मनाया जाता है। सुबह तिल्ली हल्दी उबटन से स्नान कर, खिचडी, लड्डू तिल्ली का भोग लगाकर मंदिरो में ब्राह्याणों को व जरूरत मंदो को दान दिया जाता है। दूसरे दिन फीकी खिचडी, सब्जी पूरी, दाल बाटी बनाई जा सकती है।

होलीका पूजन में नारियल व गोबर की माला चढ़ाई जाती है। धुलेंडी के दिन माता पिता व अपने से बडे सभी गुरूजनों को रंग गुलाल लगाकर अर्शीवाद लिया जाता है। परिवार जनों की मृत्यु से दुखी परिवारों में गुलाल डालने जाते है।

बच्चो के जन्म होने के पहले कुल देवी, देवता के निमिन्त पांच सूखे नारियल रखे जाते है। बच्चे का जन्म होने पर घर की बडी महिला दो बेल 1 सूत की जिसमें 8 गठान लगायी है। दूसरी नाडे की बेल में 9 गठान लगाकर बच्चो के गले में पहनायी जाती है। बच्चे नाला खिरने पर सुतकाला पूजा जाता है। मोरी में पाट पर दो कोरे ताव, पेन, नेल कटर रख कर कुंकु चावल से पूजा कर तेल का दिया लगाया जाता है। बहन बेटी को बुलाकर गीत गवाये जाते है। पतासे बाटे जाते है।

जलवाय पूजन में जच्चा बच्चे को नहला कर कोरे कपडे पहनाकर शाम को कुये पर परिवार की महिलाओं के साथ जाते है। कुये के चारों तरफ दिवाल पर हल्दी के हाथे जच्चा के द्वारा लगाये जाते है। कुंकु की टिपकी लगाते कुये की पाल पर कुंकु हल्दी, चावल, रूपया, सुपारी, पीली, चिंदी, हल्दी से कर चढाई जाती है। जलवाय पूजन के बाद जच्चा कुये से दो लोटे में पानी भर कर घर लाती है। (डेली के बाहर देवर या भांजा लोटे

उतारता है) उसको नेग (भेंट) दी जाती है। जच्चा बच्चे को जलवाय पूजन के पहले चोक पाट करके पिचर के कपडे पहनाते है।

शादी का मुर्हुत

1 शीतला माता पूजन

1 दो झंडी सफेद भैरों बाबा की, लाल माताजी की

2 नीम की डगना

3 2 नारियल 1 चढ़ाना 1 फोडना

4 गुड

5 पूजा की सुपारी

6 सफेद ताव 2

7 फूल की माला 2

8 पानी का लोटा

9 आरती कुंकु, हल्दी, अबीर, गुलाल, मेहंदी, चावल

10 घी का दिया

पहले माता पिता पूजन करें फिर दुल्हा दुल्हन विधि माता पूजन के बाद, मुर्हुत के पहले सवा पाव कुंकु, सवा पाव हल्दी खडी लाना। सात बांस की टोकनी दुल्हन की नौ टोकनी दुल्हे का 2 सूपडे, 2 नारियल खल बत्ता, मुसली, सभी पर नाडा बांधा जाता है। गेहूँ 1/2 किलो झाडने के लिये पतासा 1 किलो, नाडा, मूंग, चना आधा 1/2 किलो गणेश जी 1 गेट के पास मिट्टी 2 गणेशजी 3 पान, रूपया, सुपारी, 4 मुसली 5 गुड़

विधि :– मिट्टी खोदते समय पान पर गणेश रखकर पूजन करे, पैसा, सुपारी, गुड रखकर गणेशजी सहित मिट्टी उठा कर दुल्हे, दुल्हन की मां की खोल में डालना माँ की खोल से मिट्टी टोकनी में रख कर घर में एक जगह डाल कर हाथ से मिट्टी गिली कर चूल्हा कोठी बनाते है। बहन बेटी की खोल में रूपये, नारियल देते है। कोठी पर गणेश मांडते है।

गणेश का मांडना

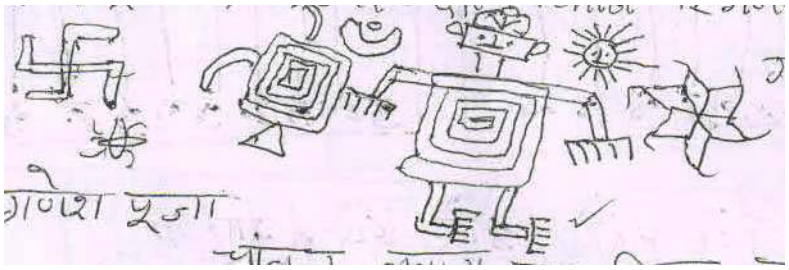

गणेश पूजा चावल, कपडा लाल 1 मीटर खाजा लापसी बनाना

सामग्री चावल 2 1/2 कि. , गेहूँ 2 1/2 कि., गुड, नमक, घी, 2 कि. चना दाल 1/2 कि. बेसन 1/2 कि. हल्दी कुंकु नाडा, रूई, माचिस, कैंची टेप सफेद कपडा 1 मीटर, अगरबत्ती, कपूर, दिया फूल, सिंदूर, आटा चौक मांडने के लिये, पाट सबसे पहले टोकरी, सूपडा, खल बत्ती, मूसली पर नाडा बांधना, पूजा की थाली में गणेश बैठा कर कलश की पूजा करना, सिक्का हुआ गेहूँ पिसवाकर, हल्दी मिला कर चिकसा बनाना।

गणेश जी की पूजा करके बहन बेटी, दुल्हा दुल्हन को टीका लगा कर एक दूसरे को नाडा बांधते हैं। मुहुर्त में चार बहन बेटी हन्दी गांठ कुटती है। 1 चवा सली (जिसके माता पिता व सास ससूर हो) डेली के अंदर से टीका लगा कर गेहूँ 1 सवा रूपया से गोद भरते है। जहां सिलक खींची जाती है। फिर सीधे हाथ तरफ नौ सिल्लक और उल्टे हाथ पर सात सिलक खिंची जाती है। 1 सिलक हल्दी की 1 कुंकु की

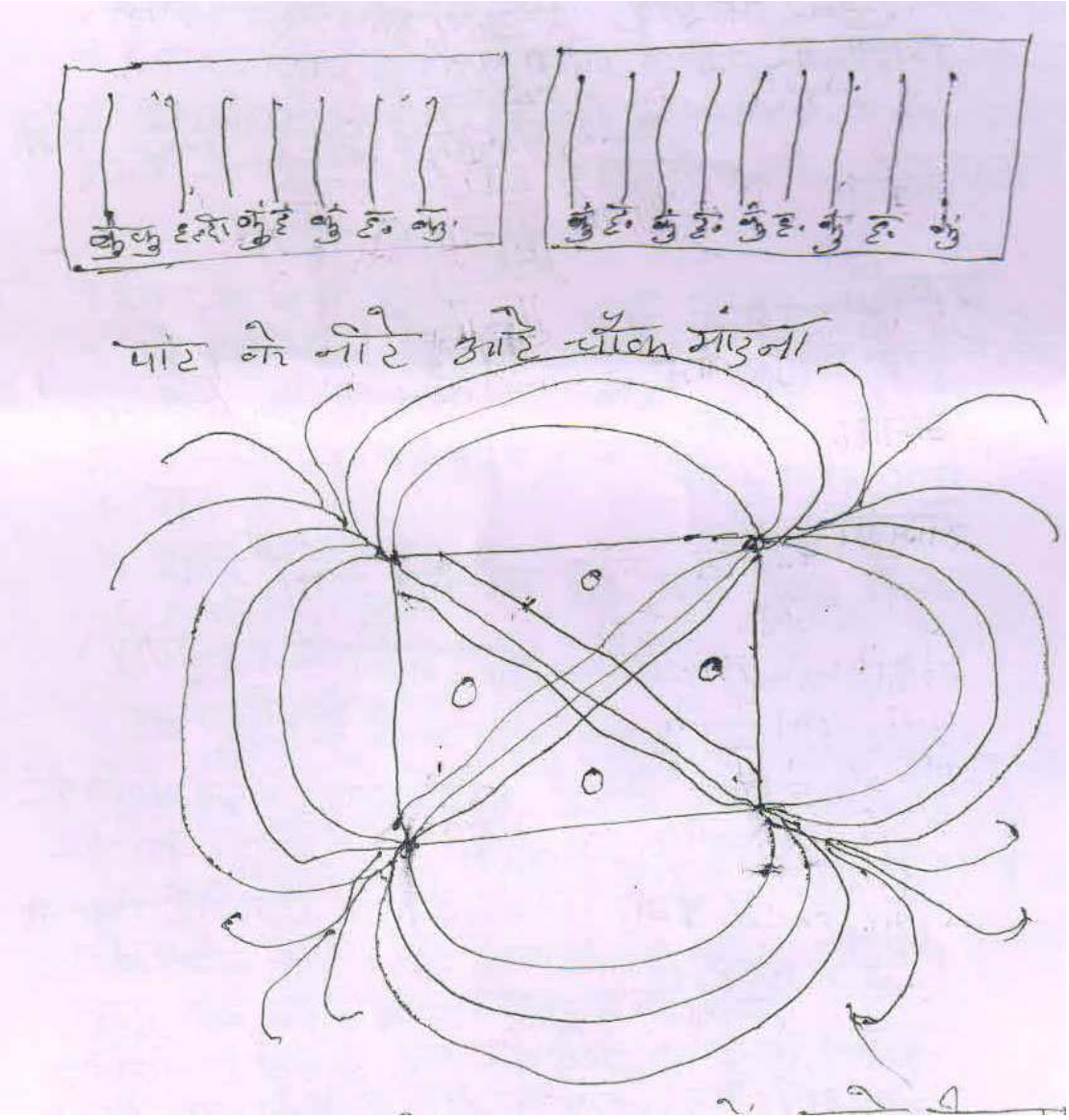

फिर सुपडे में गेहूँ झाडना उसमें पतासे, चिल्लर, सुपारी भी डालना बहन को 50 रू. का लिफाफा देना (चूडी के पैसे) हाथ में चावल देकर दुल्हा, दुल्हन को उठाया जाता है। चना दाल शकर पापड 4 गगडे में पानी भरकर चारो 5 कोनो पर रखना 1–1 सिक्का डालना मंडप, मामी लिपती है। नग देना दुल्हा, दुल्हन को काकन डोरा बांधना । (नाडा चांदी की अंगूठी, पान)

दामादो को हाथ लगवाना नेग में नारियल व 50रू. का लिफाफा देना। 4–4 पूरी नाडे से बांधकर दामाद के हाथ से बांस के पास रखना।

कुल देवी पूजन :– चावल, खाजा, लाप्सी रोटी के बत्तीस जुडे (64) रोटी बनाना मिट्टी के बत्तीस दिये छाबडी के नीचे रखना, देवी का भोजन छाबडी में रखना देवी का फड मंडना कर दिवाल पर लगाना।

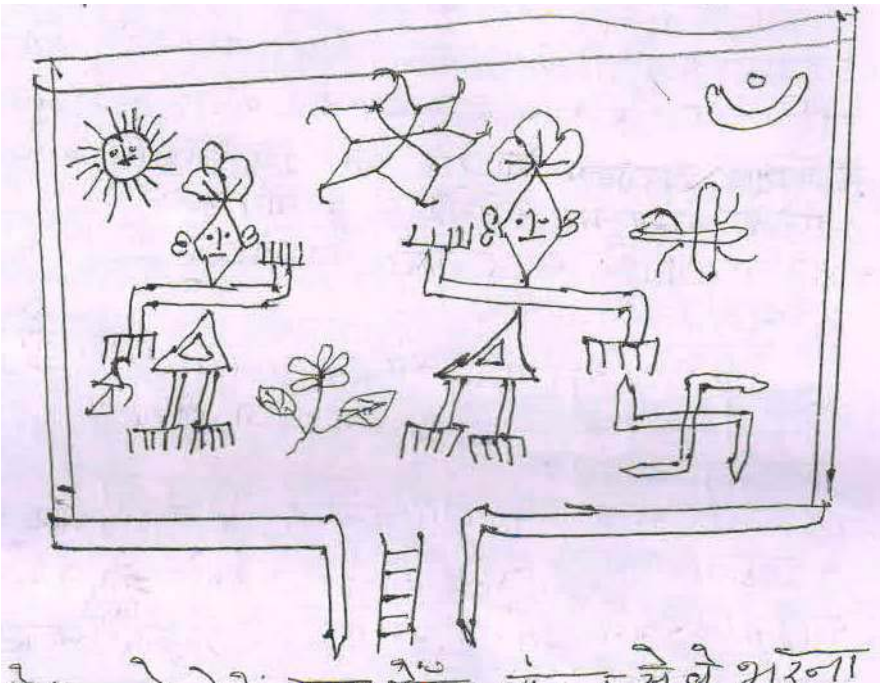

देवी के सामने दोनो तरफ गेहूँ, चावल से वे भरना दोनो तरफ करवों की चलत रखना सीधे हाथ तरफ 5 करवे, 3 उलटे हाथ तरफ चार करवे रखना ऊपर नीचे एक एक बडा दिया रखना उसमें नाडे की बत्ती व घी रखना। दूध चावल का भोग लगाना धूप छोडना। सभी कुटुंबियों के साथ करना।

चिल्लर काकडा सुआ पापड 1 मुंग तांबे का फूल पात्र, गैस चूल्हा, मिट्टी का चूल्हा कोठी खडी (सफेद मिट्टी) से पुती हुई। मिट्टी का दिया 21 रूपये लिफाफे।

बर्तन 1 कडाई , 3 थाली, 1 सलाई, बडा चम्मच, 4 तपेली, दो बेलन, चकला 2 गिलास तांबे का लोटा, स्टील का लोटा जग, कटोरिया, चाकू, कैंची, फोन काल।

गणेश पूजा की विधि :– चावल, 32 खाजे, लापसी बनाना 1 पाट पर लाल कपडा बिछाना उसके ऊपर बीच में 1/2 कि. चावल रखना उस पर गणेश भगवान बिठाना, चारो कोनों पर चार चार खाजे रखना उन पर 1–1 लापसी का लड्डू रखना गणपति के पास पैसा सुपारी रखना खाजा लापसी के लड्डू का भोग लगाना।

मिट्टी चूल्हा कोठी बनाकर उसको सफेद मिट्टी से पोतकर चारों तरफ लात खडी (मिट्टी) से गणेश बनाना। बहन बेटी द्वारा दिये घी, गुड की धूप छोड़ना आटे के 21 गणेश बनाकर उनकी कुंकु चावल से पूजा कर 1 खाजा लापसी लाल कपडे की पोटली बनाकर कोठी में रखना।

गणेश बंधाना उसे कुंकु, चावल चढ़ाना बहन कुंकु लापसी है उसे नेग देना। दूध चावल का भोग लगाना।

मंडप बनाना :– 16 पूरी बनाना, 4 बांस चार कोनों पर गाढना, आम के पत्ते बांधकर चारो कोनो पर तोरन लगाना। 1 पान सुतली, माणक खंब की पूजा करना। 1 पापड रखना 1 दोने में कांकड हल्दी से पीले करके रखना, सूजा, चने की दाल रखना माणक खंब की

कुंकु, चावल से पूजा कर घी शक्कर का भोग लगाना, मण्डप चारों कोनो पर 1–1 करवा पानी भरकर रखना उसमें 1–1 रूपया डालना 4–4 पूरी नाडे से लपेट कर चारों कोनों पर रखना दुल्हा, दुल्हन को काकन दोरा पीपल के पत्ते को नाडे से हाथ की कलाई पर बांधना।

सौज का सामान :–दो बेलन, दो लकडी की डिब्बी, कुंकु की डब्बी, मेहंदी, नाडा सुखा मेवा खोपरे को 8 बाटकी, काजू, किसमीस, खारक, बादाम, मखाना, पिस्ता, काली पोत चांदी की माता 1 सिक्का, 1 जोडी चप्पल, दुल्हन का श्रंगार कांच, कंघा, चार लाख, ओढनी दो मोर ।

लग्न की देवी पूजन :– सीधे हाथ तरफ चावल की ढेरी पर पांच मटकी व उल्टे हाथ तरफ गेहूँ की ढेरी पर 4 मटकी दिया उल्टा करके एक के ऊपर एक जमाते है। ऊपर दिया रखते है। गेहूँ, चावल के बीच 1 बडी मटकी पर बडा दिया रखते है। दुल्हा दुल्हन के आने तक जलती रहती है। 32 या अधिक दिये रखकर उस पर छाबड़ी रखते है। उसमें 32 जूडे रोटी के अंदर लापसी रख देते है। उस पर खाजे और आटे के दिये 21 या 32 रखते है। दूध भात में गुड डालकर भोग लगाते है।

अग्नि पर घी गुड डालते है।

मण्डप में रूकडी निवतते है। जो पूर्वज है। उनके नाम लेकर याद किया जाता है। चने की दाल, हल्दी मिला काकडा, घी शक्कर का भोग लगाकर सभी प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं।

कुम्हार के बर्तन :– 14 करवे 32 दिये 4 छोटे दिये 1 बडी मटकी 1 बडा दिया, 1 छेद वाला बडा दिया, माणक खंब अच्छे दिन या सोमवार को जेल बनाना। खाना शुरू करने से पहले थाली में रखकर भोग लगाना

बाने की तैयारी :– छोटी सूपडी सूजा मूसल, एक सिक्का, रूई

घोडे की तैयारी :– चना दाल, काजल, भाभियों के गिफ्ट दुल्हन की मां टावेल पतासे सोंज में रखा मेवा।

बेडा घडा, दो लौटे, साडी, नारियल 50, घडी, चेन अंगूठी लगन पडछने का सामान सूजा, खई, 1 सिक्का, मूसल, सूपारी चवरी का सामान लकडी वाला व्यवस्था करता है।

विदाई :– साल की धानी

देवी उठाने के लिये :– 32 जूडे रोटी, लाप्सी, चावल, कडी अधिकांश हलवे का भोग लगा कर देवी उठाते है। सत्यनारायण भगवान की कथा करायी जाती है।

मृत्यु होने पर बडा या छोटा बेटा अग्नि देता है। जिस जगह मृत को सुलाया जाता है। वहां बहू गोबर से रेकटा करती है। बिना पीछे देखे उनके कपडे लेकर आगे चलती है। कपडे घर के बाहर रखकर कुये पर जाकर नहाती है। घर आकर मायके से आये चावल , घी, गुड पका कर कडवा बनाती है। और तीन काल अग्नि देने वाले के मुंह को लगाती है। उसी स्थान पर प्लेट में आटा प्लेन कर ढाक देते है। दूसरे दिन सारी चिता की राख समेट कर नदी में विसर्जित कर देते है। फूल (बची हुई हड्डी) एकत्रित कर पानी दूध से धोकर लाल कपडे की थैली में रखकर वहीं (शमशान में) जौ तिल फूल से पूजा कर

मिठाई नमकीन दूध, चाय, पानी का भोग लगाकर घी का दीपक मिट्टी व अगरबत्ती लगाकर बिना पीछे देखे घर आते हैं। थैली के फूल नर्मदा गंगा आदि पवित्र नदियों में विर्सजित किये जाते है। बाहर भीतर होता हैं परिवार के लोग मंदिर के बाहर जाते है। घर परिवार का दमाद एक कटोरी में जुवार सुपारी व रूपया लेकर मंदिर जा कर सुपारी फोड कर परिवार वालो को देते है। तीसरे दिन उठावना होता है। उसमें भी मंदिर में सीधा लेकर परिवार के साथ जाते है व हरी भाजी लेकर आते है। दूसरे दिन चावल बनाकर घी मिलाकर लड्डू बनाते है। चावल का लड्डू पीपल के पत्ते पर छत पर रखते है। पानी का गिलास (मिट्टी के बडे दिये मे पानी रखना चाहिए) 9 दिन तक शाम को गरूड पुराण का पाठ पंडित कराता है। रोज अंधेरा कर दीपक जलाते है 9 दिन तक दसवे दिल सुबह सुतक निकाल कर पूरे घर का पौछा परिवार के सभी छोटे भाई बडे पोते मुडन कराते है। दसवां ग्यारवां घाट पर किया जाता है। बारहवें दिन बहन बेटी व परिवार के सदस्य ही भोजन करते है।

तेरहवें दिन घर में श्राद्ध का पूरा खाना बनाकर घर पर पंडित पित्तर या गवरनी को भोजन करा कर वस्त्र आदि देते है। घर पर तर्पण कर पगडी की जाती है। ससुराल वालो की तरफ से धर्मशाला में गुरूड पुराण का आखरी अध्याय का पाठ कर बाकी सदस्यों को टोपी पहनाई जाती है। फिर जिसने आग दी वह सीधा लेकर मंदिर जाता है। सभी परिजनों के साथ फिर जिसने रेकटा किया वह महिला कटोरी में गेहूँ पैसा लेकर सबके साथ मंदिर जाती है। फिर सबको भोजन कराया जाता है। (तेरह गवरनी, पित्तर को भोजन करा कर वस्त्र आदि देते है।)

पंद्रहवें दिन श्राद्ध व छः मासी बरसी होती है। जिसमें पंडित द्वारा तर्पण करवा कर पिण्ड पूजा कि जाती है। परिवार के साथ उसी दिन से तुलसी को जल व शाम को दिपक पुलसी जी को घर या मंदिर में जाकर दिया लगाकर बताया जाता है। बरसी आने तक पूरे बारह श्राद्ध होने पर श्राद्ध पक्ष में उनको मिलाया जाता है।

ऊँ शांति शांति शांति

गगरानी गोत्र के रीति रिवाज

चैत्र :–

धूलेंडी :– सब्जि पुरी बनना है। शाम को खिचडी बन सकती है।

दुल्हे देव की पूजा :– दाल, बाटी, बनाना है घी का बगार लगाना।

शैली सप्तमी :– शीतला पूजन छठ के रोज सब्जि पूरी, शक्कर पारे, खुरमे, दही बडे, मीठे भजिये केरी की लोजी, इमली की चटनी बनाना, दही जमाना फिर गैस चौका ठंडा करना।

सप्तमी के दिन :– सिर धोना, पूजा करने जाना 1 लोटा पानी में कुंकु, हल्दी, दही, चावल, चना, दाल, 4 दाने, पैसे डालकर पानी चढाने जाना 2 ताव 1 नारियल फोडना 1 ताव माताजी को 1 ताव भेरू बाबा को चढ़ाना, भगवान को नैवेघ लगाना गौ माता को नैवेघ देना। भगवान की पूजा में ठंडा दिया रखना जलाना नही शाम को बच्चे से जलवाना।

नवमी के दिन बहु का जन्मदिन आता है।

गुडी पडवा

नीम लगाना दरवाजा पर ।

पूरन पोली बनाना, दाल, चावल, कड़ी, सब्जि बनाना 2 गिलास चने की दाल चढ़ाना 3 गिलास शक्कर डालना।

गणगौर पूजन

दूज के दिन बाडी की पूजा करना, पूजा की थाली ले जाना पीला कपड़ा गेहूँ नारियल ले जाना और नारियल को फोडना। रात (शाम) को धानी का प्रसाद बाँटना।

अष्टमी नवमी (देवी की पूजा)

सोलिया का पानी भरना सोलिये मे ही चने की दाल, चावल, बाटी बनाना घी का बगार लगाना (लहसून प्याज नही) अष्टमी के दिन शाम को भोजन नही बनाना है।

नवमी

खीर फीके पुआ, सब्जि पूरी बनाना कन्या भोज करवाना है। परेशानी हो तो जलेबी खलाना है। दक्षिणा में फल और पैसे देना है।

रेणुका चौदस

रेणुका चौदस के दिन दाल बाटी बनाना माताजी के दर्शन करने जाना है। 2 नारियल 1 माताजी का एक भेरू बाबा को आते वक्त चढाना है।

वैशाख

गणेश चर्तुथी :– बडी चर्तुथी गणेश मंदिर जाना दर्शन करने। मोदक बनाकर या गुड नवैघ लगाना। शाम को चंद्रमा देखकर पूजा करना और खाना ।

सतु अमावस्या सतु मंदिर मे देना सतु खाना कुछ भी बनाना

आखा तीज

खाना बनाकर भगवान को नवैघ लगाना ।

मुन्नी और बहू की शादी की सालगिरह

जेठ में कुछ नही

जेठ में बड पूर्णिमा :– बड की पूजा करने जाना। पूजा की थाली आम चने की दाल और कपडा ले जाना और सबकी गोद भरना 1 टाइम खाना खाना दाल बाटी या रस पूरी कुछ भी बनाना बगार एक दिन पहले कर लिया जाता उस दिन बघार नही होता है।

आषाढ़ गुरू पूर्णिमा

पूनम के दिन बिट्ठल मंदिर जाना पूजा करने नारियल और चीरोंजी ले जाना। दाल बाटी या बाफले बनाना है नवैघ लगाकर खाना दादा दरबार जाना प्रसाद चढ़ाना।

सावन

5 सोमवार मंदिर जाना पार्थश्वर की पूजा करवाना (सवा लक्ष्य) मोदक का भोग, रोज लगाना, सोलिया में बनाना (कच्चे दूध में आटा गुथना और टापू बनाकर सेकना) गुड, घी मिलाना।

जिरोती आमवस्या

दाल बाटी बनाना

नाग पंचमी :– दाल बाटी बनाना नाग मंदिर पूजा करने जाना। कच्चा दूध, सिंदुर, अगरबत्ती, 2 नारियल ले जाना 1 नारियल नाग बाबा और 1 नारियल बिच्छन माता का नाम लेकर फोडना नाग नागिन जोडे की पूजा करना। भवानी शंकर पंडित के नाग मंदिर मे 2 नारियल फोडना शाम को पूरे घर मे घी का दिया बताना सुबह कंडे पर अग्नि जिमना दाल बाटी गुड घी का बगार लगाना दूसरे दिन छठ के दिन नाग बाबा की लकडी फिरवाना और 5 रू. नारियल देना।

रक्षाबंधन

राखी बंधवाना (बहन बेटी को बुलाना)

भादों की बड़ी चवथ करना चांद देखकर खाना खाना ।

भादो की नाग पंचमी

पंचमी के दिन देव राखी दुध नारियल नाग मंदिर भेजना दाल बाटी बनाना दोनो टाइम की घी का बगार लगाना है। लहसून प्याल नही।

जन्म अष्टमी भी मनाना कृष्णा भगवान झुला थाना पजेरी बनाना

(वज वारस) बच्छा बारस

ज्वार की रोटी बेसन बनाना गाय केडा की पूजा करना (पूजा की थाली, चने की दाल या ज्वार गाय का खिलाना। शाम को 5 बजे बेसन के तामे या ज्वार की रोटी खा सकते है। रात को नहीं काटना पिटन नहीं कहानी बोलना।

पोला अमावस्या

पूरन पोली या हलवा बनाना। भगवान को नवैघ लगाना।

हरतालि तीज

हरतालिका की पूजा करने जाना सुहाग की चीज नारियल कपडा चढ़ाना फलाहार करना मिठाई फल रात का जागरण करना है।

ऋषि पंचमी की पूजा कर सकते है अपनी इच्छा फलिहार करना।

गणेश चतुर्थी

गणपति की स्थापना करना कलश और नारियल पान रखना। दाल बाफले, लड्डु, गुड़ शक्कर के बनाने 5 लड्डू पूजा मे रखना। 10 दिन तक आरती पूजा करना।

अनंत चौदस के दिन सब्जि पूरी या दाल बाटी मोदक या लड्डु या हलवा का नवैघ लगाना 1 पूरी में 14 टिकडी लगाकर बेलन फेर लेना और तल लेना भगवान को नवैघ लगाना मुहुर्त देखकर विसर्जन करना आरती करना नारियल फोडना सबको प्रसाद देना। पूराने गणपति को विर्सजन करना।

सत्यनारायण अनंत चौदस के दिन करना पूनम के दिन नही करना पूनम के दिन सोलह श्राद्ध चालू हो जाते है इसलिए नही करना।

सोलह श्राद्ध

पूनम के दिन सीधा देना पुरा खाना बनाना दाल चावल सब्जी पूरी खीर भजिए भगवान को नैवेघ बताना गाय माता का प्लेट लगवाना खिलाना पचंमी की दिन सीधा देना नैवेघ लगाना, नवमी के दिन सीधा देना नैवेघ लगाना पंचमी नवमी और अमावस्या ऐसा ही करना सीधा देना वैसा नैवेघ देना। कडे पर धुप नही डालना साथ नैवेघ

क्वार (कुआर)

पुनम के दिन पितृ बैठना। दाल, चावल, खीर, भजिये मुंग, उडद, कडी, पूरी बनाना। सब्जी बनाना पाटले पर पूरखे माडकर धूप देना। थलोडी सजाना 2–2 पूरी की 4 रखना, चारो पर दाल चावल पूरी भजिये खीर रखना। सीदा सजाना सब पर अलग अलग पानी फेरना। 1 कंडा लगाकर धूप देना और धूप पर सब खाना रखना और पानी फेरना । 1 गाय को देना 1 कोवा को देना 1 कुत्ते को देना। 1 अतिथि (मांगने वाले को देना) थलोडी ढाक देना दूसरे दिन गाय को देना।

पूनम के दिन आहुते पितर

दूज के दिन मामाजी का श्राद्ध

पंचमी के दिन महेश काकाजी

दशमी के दिन दादीजी और ताऊजी पितर मंडावा

नवमी के दिन ढोकरा ढोकरी

चौदस के दिन घायला घायली

आमवस्या के दिन जाते पितर पूरा खाना बनाना अग्नि जिमाना धूप देना और पितर माडना अग्नि ठंडी करने जाना उस जगह पर पानी का हाथ फेरकर कुंकु का सातिया बनाना।

अगर तीर्थ या गयाजी छोड़ आये तो कुछ नही करना पूरा खाना बनाकर भगवान को नवैघ लगाकर खाना खा पितर नही मडना और तिथि वाले दिन सीदा देना। ब्रहाण जिमाना

पितृ बिठा दिये तो पुराने नही पितृ नही माड़ना, माड़ना कडे पर नही थलोडी नही मांडना

नवरात्रि

नो दिन देवी के दर्शन करने जाना, सप्तमी के दिन आटा पीस अष्टमी नवमी का अलग

अष्टमी :– अष्टमी के दिन देवी पूजना। सप्तमी के दिन घर धोना अष्टमी के दिन गेहुँ अलग नवमी के दिन अलग आटा अलग रखना छुना नही सो लीये में कपडे धोकर डालना आदमी के कपडे बाईयो के कपडे बच्चे के कपडे अष्टमी के दिन सुबह सिर धोकर पानी भरना देवी वाले रूम में दो बर्तन भर कर रखना। गैस कुकर का खाना बनाना।

खाने में :– चने की दाल, बाटी, चावल, पूरी, लाप्सी बनाना है। देवी देवी में एक तरफ गेहूँ की मुट्ठी रखना और एक तरफ चावल की मुट्ठी रखना एक 2 पैसे सुपारी रखना चावल पर आठ पतवारी और गेहूँ पर नौ पतवारी रखना चार आटे के दिये बनाना चारो कोने पर एक एक रखना और चारो कोने पर चार 2 पूरी लाप्सी बीच में चार बाटी रखना आरती सजाना आरती में चार पूरी 2 बाटी चने की दाल चावल लाप्सी रखना कुंकु चावल गुड कपुर मिट्टी का दिया घी का आरती में रखना पानी का कलश 2 नारियल बढती बेल बेल पहले चावल वाली ढेरी की पूजा करना सब पूजा करेंगे। अष्टमी के दिन नारियल नही फोडना उबा रख कर रखना है।

अष्टमी के दिन बच्चे को दुध चावल आम के पत्ते से चटना। सफेद बनियान में 5 लाल टिकडी लगाना।

नवमी

नवमी के दिन सोलिये में पानी भरना फिखे पुआ और खीर बनाना है। अलग से आटा लेकर रोटी सब्जी बनती है। फिर गेहुँ की पुजा पहले करना फिर चावल की करना। आरती करना दोनो नारियल फोडन। तिलक लगाना। घी के दीपक जलता रहे। सब भोजन कर ले। तुरंत देवी खमाना। पानी का हाथ फेरकर कुंकु का सातिया बनाकर चावल डालकर जलता दिया रखना विर्सजन करना। हाथ पाव धोना पानी लाना। अगर देवी नही पूजन हो तो चने की दाल चावल बाटी बनाकर दिन पालना और एक टाईम जिमना नोमी के दिन खीर पुआ सब्जि रोटी भगवान को नवैघ लगाकर खाना। दोनो टाईम खाना। रात को खिचडी भी बना सकते है।

शरद पूर्णिमा के दिन मेवे का दुध बनाकर चंद्रमा के नीचे रखना 12 बजे पीना।

कार्तिक

कार्तिक में पूरे महीने सुबह 5–6 बजे तेल कर दिया लाये गोल गोल घुमकर कहना लक्ष्मी माता चोरो को ना बरस पलंग छोडकर गणपति लक्ष्मी सस्ती कुबेर देवता मेरे घर राज्य करो जय जय कार करो अन्न धन के भंडार भरो रोज बोलना, नहाना, पूजा करना, मंदिर जाना तेरस के दिन से अखंड दिया जलाना पड़वा तक

धनतेरस के दिन पूरन पोली बनाना बहन बेटी को खाना खाने बुला 1 कटोरी में पूरन सिग तक भरकर रखना दीपावली तक फ्रिज में रखना अपना घर भरा पूरा रहे गेरू चौक बनाना शाम को धन तेरस की पूजा करना तेरहा दिये जलाना।

चौदस के दिन तिल्ली का उपटन लगाकर नहाना चाहिये, दीवाली के दिन जल्दी होकर दुकान पर चौक मड़ते है, गादी की पूजा होती है बहु बेटी को नेग देते है। शाम को लक्ष्मी पूजा होती बहीखाते की पूजा होती है। 16 दिये तेल 16 दिये आटा के जलाते है दिये कलपते है, घानी बतासे मिठाई का भोग लगते है सबको मिठाई व ईनाम देते कारिगरयों को बच्चे फटाके फोड़ते है। बहुऐ मंदिर दिया मिठाई लेकर जाती है दर्शन करने

गोरधन पडवा के दिन पूरा भोग बनाकर भगवान को भोग लगाते है।

भाई दूज के दिन बहन भाईयों के घर जाती है। और मिठाई नमकीन, भाई तिलक लगाती और मिठाई खिलाती भाई आरती उतरती है भाई लम्बी उम्र की कामना करती और भाई भी बहन को उपहार देते है।

ज्येष्ठ की पूर्णिमा व्रत

पूर्णिमा के दिन बड की पूजा करते है भीगे चना या दाल और आम ले जाते है पूजा करने के बाद सुहागनो की गोद भरते है।

आषाढ़ :– गुरू पुर्णिमा इस दिन भैरू बाबा की पूर्णिमा मानते है इस दिन दाल, बाटी, चुरमा बनाते है। घी का बगार लगाते है लहसून प्याज नही गुरू पूर्णिमा के दिन विठल मंदिर व दादाजी मंदिर जाते है।

सावन नाग पंचमी :– नागपंचमी के दिन नाग नागिन की पूजा करते है। रामेश्वर मंदिर में दूध, नारियल, सिंदुर व फूल चढ़ाते है। एक नारियल बिच्छन माता को चढाते है। फिर दाल बाटी चुरमा बनाते है।

भादो की नागपंचमी भी मानते है। दोनो समय दाल बाटी बनाती है। और पूजा में राखी और नारियल चढाते है

जन्म अष्टमी :– जन्म अष्टमी के दिन भगवान श्री कृष्ण का जन्म मनाते है। जन्म अष्टमी के दिन पंजेरी व ढेचा का नवैघ लगाते है।

बछडा बारस :– इस दिन गाय व केडे की पूजा करते है बेसन व ज्वार की रोटी खाते है।

पोला अमावस्य :– इस दिन मिट्टी के बैल की पूजा होती है व पूरनपोली का भोग लगाते है।

गणेश चतुर्थी :– गणेश जी की स्थापना करते है। दाल बाटी चुरमा के लड्डु बनते है। दोनो समय भगवान की आरती व नवैघ लगाते है। और चतुरदर्शी के दिन विसर्जन करते है।

श्राद्ध पक्ष :– श्राद्ध पक्ष के पहले दिन से सौलह दिन तक धुप देते है। तिथि वाले दिन दाल चावल सब्जी पूडी खीर उडद भजिये मूँग के भजिये बेसन के भजिया बनाते है पितृर

बनाते है। गोरनी व पंडित को भोजन कराते है व दक्षिणा देते है। जब पितृर को गयाजी या बद्रीनाथ बैठाया आते है। तो पितृर नही मांडते है। खाना बनाकर गो माता और ब्राम्हण को खिला देते है।

नवरात्री :– क्वार की नवरात्रि पर नो दिन तक रोज देवी की पूजा करते है। गुगल छाल छबिला की धूप देते है और कपूर की आरती करते है सप्तमी के दिन चोगर लेते है सोलिया में कपडे डालते है और सोलिया में आटा पिसाता है।

अष्टमी के दिन चने की दाल चावल बाटी लापसी पूरी बनती है।

नौमी के दिन खीर पुऐ सब्जी पूरी बनती है। गेहूँ चावल की मुटठी रखते उस पर अष्टमी की आठ पतवारी और नोमी की पतवारी रखते है। चारो कोने पर 4 – 4 पूरी और लाप्सी और आटे के 4 दिये चारो कोने में रखते है और बीच में 4 बाटी और गुड रखते है। थाली में कुंकु चावल गुड, नाडा पैसा सुपारी रखते है। पूजा करते है नोमी के दिन चार 2 पुऐ, खीर रखकर पूजा होती है। बच्चो को अष्टमी के दिन दुध चावल से कटाया जाता है नोमी के दिन नारियल फोडते है। अष्टमी को नही फुटते है। सबके भोजन करने के बाद देवी विर्सजन होती है।

दिपावली पूजन :– धनतेरस के दिन धनवंतरी की पूजा होती है। उस दिन पूरल पोली बनाते है। 13 दिये जलाकर पूजा करते है 1 बडा दिया जलाकर उसकी पूजा करके वह दिया 3 दिन तक अखंड जलता है बच्चे पटाखे छोडते है।

रूप चौदस :– रूप चौदस के दिन जल्दी उठकर तिल्ली के उबटन से नहाते है।

दिपावली :– दिपावली के दिन सुबह जल्दी उठकर नहाकर दुकान पर चोक मांडते है। और मुहर्त में गादी बिछाते है। शाम को लक्ष्मी पूजा और बहि खाते की पूजा होती है। सब बरकरा को मीठाई व ईनाम देता है।

गट्टानी गोत्र

चैत्र – (नवरात्रि)

गुड़ी पड़वा – पूरनपोली या श्रीखण्ड का भोग लगाया जाता है।

अष्टमी पूजन

मन्दिर वाले स्थान पर दीवार पर सिन्दूर से त्रिशुल और एक तरफ पूंच दूसरी तरफ चार टिपकी मांडी जाती है और स्वस्तिक बनाया जाता है। किसी पाट पर माताजी की तस्वीर रखकर एक तरफ आधा किलो गेहूँ व आधा किलो चावल की ढेरी लगाई जाती है। पथवारी (नौ कंकड) धोकर सिन्दूर में घी मिलाकर उस पर लगाते हैं। सारी पूजन सामग्री से पूजन करते हैं और श्रीफल का भोग लगाते हैं। कंडे पर घी, गुड़ और हवन सामग्री से धूप डालते हैं व आरती करते हैं।

माता के भोग में नौ बाटी और चने की दाल बनाई जाती है और सामने जमाई जाती है। साथ ही गेहूँ चना गुड डालकर घुंघरी बनाई जाती है और इसी दिन दूध चावल से बच्चे को नया सफेद कपड़े पर लाल कपड़े से चॉद तारा बनाकर पहनाया जाता है और बुटाया जाता है। अष्टमी वाले दिन घर में बघारा नहीं होता और एकासना।

- चैत्र की नवमी की ओटल है।
- क्वार में अष्टमी नवमी दोनों पूजी जाती है।

नवमी पूजन – पूजन तैयारी अष्टमी की ही रहती है बस ढेरी में गेहूँ, चावल थोड़े बढ़ा दिए जाते हैं। उस दिन अलग श्रीफल का भोग लगाते हैं व पूजन होम करते हैं।

भोग में गुड़ की खीर व 11 आटे गुड़ के पूए बनाते हैं। खाने में सब बना सकते हैं।

माताजी का विसर्जनः गेहूँ चावल और चढ़ाए हुए पैसे बहन–बेटी को दे सकते हैं या मन्दिर में रख सकते हैं। माताजी को उठाकर वहॉ कुमकुम से स्वस्तिक बनाकर दिया जलाते हैं।

दीपावली पूजनः

धनतेरसः पूरनपोली का भोग लगाकर झाडू के साथ धना–चना–गुड रखकर लक्ष्मी पूजन किया जाता है।

रूप चौदसः सुबह जल्दी उठकर चिकसे से नहाया जाता है।

दीपावलीः चौकी पर लक्ष्मी का पाना रखकर सारी पूजन सामग्री से पूजन किया जाता है। बताशे, लाई, पॉच प्रकार की मिठाइयॉ, फल का भोग लगाते हैं। कंडे पर घी, गुड व हवन सामग्री से हवन करते हैं। एक श्रीफल को लाल कपड़े में लपेट कर घर के पैसे रखने वाले स्थान पर रखते हैं व पिछले साल के श्रीफल को फोड़ते हैं। लक्ष्मीजी की आरती करते हैं।

आषाढ़ की पूर्णिमा (गुरू या भैरो पूर्णिमा)

भैरो महाराज केनाम से हवन करके नारियल चढ़ाते हैं। इस दिन घर में बघारा नहीं होता। चने की दाल और बाटी बनाते हैं।

नाग पंचमी (श्रावण): नाग महाराज के नाम से हवन करके नारियल चढ़ाते हैं। इस दिन भी बघारा नहीं होता। चने की दाल और बाटी बनाते हैं।

गणेश चतुर्थी से अनन्त चौदसः गणेशजी का रोज पूजन कर भोग लगाया जाता है। (गणेश स्थापित करना इच्छानुसार)

सीतला सप्तमीः (चैत्र व भादौ की कृष्ण पक्ष सप्तमी)

सीतला माता का भीगी चने की दाल, दही व कच्चे चावल नारियल से पूजन करते हैं। ठंडा भोजन खाते हैं।

हरतालिका तीज (शुक्ल पक्ष भादौ): ओटल होने की वजह से घर में पूजा नहीं मांड सकते। इसलिए मन्दिर जहॉ पूजा हो रही हो वहॉ पूजा कर आते हैं।

श्राद्ध पक्षः पूर्णिमा वाले दिन पितरों केनामसे घी, गुड, की धूप छोड़ी जाती है। जिस दिन घर में श्राद्ध होता है उस दिन पाट पर पितर बनाकर जौ, काली तिल्ली से पूजन किया जाता है। खीर, उड़द के भजिए बनाकर ब्राम्हण या गवन्नी को भोजन करवाकर घर के सदस्य भोजन करते हैं।

आटे से पितर का मांडना (पाट पर)

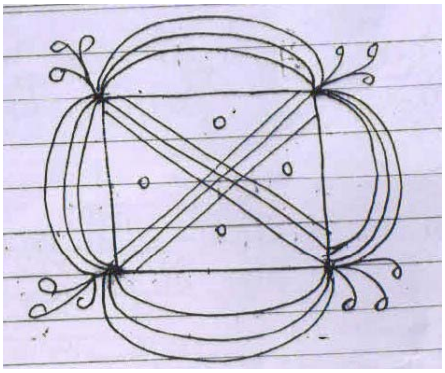

पितृमोक्ष अमावस्या पर धूप देकर पितरों को विसर्जित किया जाता है।

विवाह विधिः शादी शुरू से पहले पितरों के नामसे गवरनी जिमाते हैं।

सीतला माता पूजनः

1. दो सफेद–लाल झंडी (सफेद भैरा बाबा लाल माताजी की)
2. नीम की डगाल
3. दो नारियल (एक फोड़ना एक खिलता चढ़ाना)
4. गुड़
5. पूजा की सुपारी
6. सफेद ताव
7. फूल की माला
8. पानी का लोटा
9. आरती की थाली
10. घी का दीपक

पहले पूजा माता–पिता करे फिर दूल्हा–दुल्हन

माता पूजने के बाद मुहुर्त के पहले अच्छे चौघडिया में सवा पाव कुमकुम, हल्दी लाना और बहन–बेटी को देना।

मुहुर्त (खलमिट्टी)

1. टोकनी (लड़की में 5, लड़के में 7)
2. 2 सुपड़ा, 5 नारियल
3. खलबत्ता
4. मिट्टी का दिया (तेल)
5. आरती की थाली
6. गेहूँ बढ़ाने के लिए (1/2 किलो)
7. बताशे (बांटने के लिए)
8. नाड़ा
9. हल्दी की गांठ–7
10. गणेशजी
11. फूल
12. पाट
13. आटा (चौक मांडने के लिए)

खलमिट्टी के पहले 5 नारियल देवदाणी के नाम से रखे जाते हैं और शादी के बाद उसे फोड़ते हैं।

सबसे पहले टोकरियॉ, सुपड़ा, खलबत्ता, सब पर नाड़ा लपेट ले। एक पाट के नीचे आटे से चौक बना दें। (चित्र)

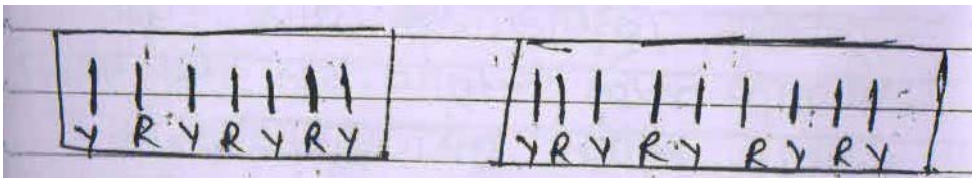

पूजा की थाली में गणेशजी बैठकर पूजा करना, कलश की पूजा करना, चिकसा पिसाने चक्की पर जाना। गेहूँ और मुहुर्त की हल्दी डालकर चिकसा पिसवाते हैं।

चार सुहागन आपस में नाड़ा बांधकर सुपड़े से झाडे, पिफर सारी औरतें मिलकर बाहर से टोकनी में मिट्टी लाते हैं।

दहलीज पर खड़े होकर एक सुवासीनी दीवार पर सिलक खिंचती हैं हल्दी और कुमकुम से। सीधे हाथ तरफ और उल्टे हाथ तरफ खीचते हैं।

गेहूँ रूपये और नारियल से सुवासीनी की खोल भरते हैं।

मुहुर्त का चिकसा और मेहंदी सीतलामाता को चढ़ाकर दूल्हा–दुल्हन को लगाते हैं।

गवरनीः एक पाट पर पितर बनाकर फिर उनकी पूजा करना। पितर के पैर तरफ ब्लाउज पीस (लाल+पीला+नारियल) रखकर उस पर सारा सुहाग का सामान रखते हैं। ग्यारह पान पाट पर रखना। उसमें से 10 बांटना। एक रखे रहने देना। दोनों तरफ 4–4 खाजे+लापसी रखना व उसी की धूप देना (अलग से) मेहंदी घोलकर पाट पर रखना व सभी को लगाना। दस गवरनी को खाना खिलाते हैं।

गणेश पूजाः भोग– सवा किलो आटे से अनगिनत (जितने भी बन जाए) खाजे और लड्टू बनाते हैं। थोड़ी सी छिलके वाली मूंग की दाल और चावल बनाते हैं।

पूजाः आटे में थोडी सी हल्दी मिलाकर 32 गणेशजी बनाते हैं। एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर बीच में गेहूँ की ढेरी रखकर पीतल के गणेशजी रखते हैं। उनके दोनों तरफ चार खाजे व चार लड्टू रखे व सामने भोग में चार खाजे और पॉच लड्डू रखें। आरती की थाली सजाकर सब मिलकर पूजा करते हैं।

रूखड़ीः मण्डम में माणकखंब की पूजा करना, 2 पापड़, 1 सूजा रखना। दोनों में काकड़े (कपास के बीज) को पीला करके चना दाल मिलाकर रखना। माणक की पूजा करके रूखड़ी न्योतना। घी, शक्कर का भोग लगाना। मण्डप में चारों कोनों पर एक एक मटकी रखना। उसमें पैसे सुपारी रखना। मामी से मण्डप लिपवाना है और चौक बनवाना है।

रूखड़ी न्यौतने में घर के सारे बुजुर्गों का नाम लेकर उन्हें याद किया जाता है। सफेद कपड़े में पैसा+सुपारी चावल बांधकर माणकखंब में बांधना।

मण्डप बांधने में दामाद चार–चार पूड़ी नाडे में बांधकर चारों कोनों पर रखेंगे, फिर देवी पूजने के बाद मण्डपाच्छादन होता है।

देवी पूजनः सवा किलो आटे से खाजा और लापसी बनाना, साथ ही मूंग की छिलके वाली दाल और चावल भोग के लिए एक सफेद कपड़े पर कुमकुम हल्दी मिलाकर पड़ बनाना है।

माता का पड़

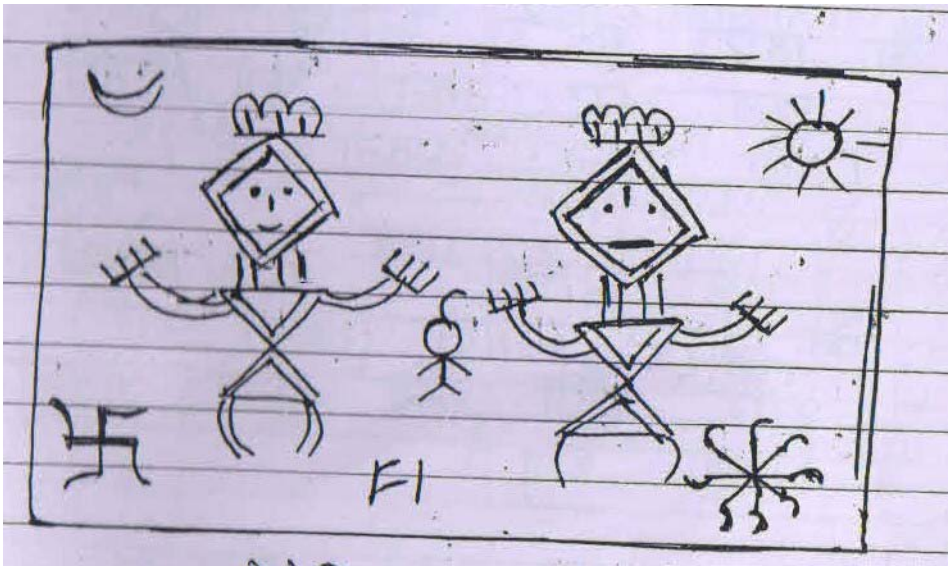

एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर पड़ के आसपास गेहूँ कए तरफ चावल दूसरी तरफ (5 गिलास) ढेरी लगाना है। उनके ऊपर चार करवे और उन पर एक दिया जमाना है। एक बड़ा करवा और बड़ा दिया बीच में जमाना है। (9 करवे) 32 कोरे, मिट्टी के दिए उल्टे जमाना है। उस पर माता की छाबडी (बड़ी परात) रखना है। उस छाबड़ी में 32 आटे के दिए (गोल बत्ती वाले) और भोग के खाजे लापसी रखना है।

दुल्हा–दुल्हन को मण्डप में मामी के मांडे चौक पर पाट रखकर बिठाकर पहले तेल चढ़ाते है और चिकसा लगाते हैं। मण्डप के चारों कोनों पर रखी मटमी के पानी से दुल्हा–दुल्हन को नहलाकर मामा जवल के कपड़े ओढाकर ऑख बन्द रखकर घर का दामाद देवी के कमरे में लेकर जाता है। माता के कमरे में ले जाकर 32 दिए दिखाना है फिर माता पिता का मुँह दिखाते हैं।

दुल्हा–दुल्हन से सबसे पहले माताजी का पूजन करवाकर फिर कुटुम्ब के द्वारा माताजी का पूजन करवाना। फिर मण्डप में ले जाकर कांकणडोरा बंधवाना।

कांकणडोरा, पीपल का पत्ता नाड़े में बांधकर उसमें गठान लगाकर बांधते हैं।

मामेरा–ननिहाल पक्ष के सारे सदस्य को टीका लगाया जाता है।

सौंजः सौंज में पंचखोखा+फल+7 वाटकी+गुड+नाडा+मेंहदी+कुमकुम+कॉच+सुहाग की सारी चीजें रखकर दुल्हन को चढ़ाई जाती हैं।

पडछनाः लड़के को पडछनाः 1 छोटी मूसली, रवी, सुआ व 1 रूपया का सिक्का + सुपड़ी (पॉच चीजें)। इन सबमें नाड़ा बांधना। दुल्हे की मॉ दुल्हे को पडछेगी। सारी चीजों से सात बार नजर उतारते हैं। दुल्हे से सभी लोग मिलनी करते हैं। चाची, भाभी दुल्हे को काजल लगाती हैं व उसके घोड़ी पर बैठने पर घोड़ी को गुड़–चना खिलाती हैं और लगाम पकड़ती हैं।

वरछोटाः जब दुल्हन के यहॉ पहुॅचता है तो दुल्हन की मॉ दुल्हे को पडछती है। पडछने का सामान एक जैसा होता है।

लड़की की बहन और दामाद बेड़ा लेकर आते हैं। बड़े दामाद लड़के को कपड़े और ज्वेलरी देते हैं।

शादी हो जाने के बादः जब दुल्हन को लेकर जब आवे तब माताजी के दर्शन करवाते हैं और उसके बाद माताजी उठाते हैं। हलवे का भोग लगाकर 10 आटे के दिए लगाते हैं।

सत्यनारायण भगवान की कथाः दूसरे दिन कथा करवाकर मंदिरों के दर्शन कराना और नारियल चढ़ाना।

जन्म के रिवाजः हॉस्पिटल ले जाने के पूर्व देवधामी के नाम से 5 नारियल या नारियल के पैसे रखना तथा जलवाय के बाद फोडना।

डिलेवरी वाले दि नही नाडे में आठ गठान लगाकर देवधामी तथा बड़े बुजुर्गों का नाम लेकर बच्चे के बले में डालना तथा सवा महीने बाद निकालना।

छठी पूजनः छठवें दिन हल्दी, गुड़, कोरा कागज, पेन थाली में रखकर दिया जलाकर पूजा करना। उस समय बच्चे के मुॅह ढांककर रखना। बच्चे को मॉ की गोदी में सुलाकर पूजा करना तथा कोरा कागज तथा पेन तकिये के नीचे रख देना। दिया नहीं बूझने तक पलंग के पास ही रखना।

जलवायः जलवाय पूजन में जच्चा–बच्चा को नहलाकर बच्चे को कोरे कपड़े पहनाते हैं। बुलावा कर सभी रिश्तेदारों को बुलाते हैं। शाम को जलवाय पूजन के समय जच्चा सिर पर लोटा रखकर (पानी+दूध) पानी के स्रोत की पूजा करते हैं। घर की डेल के बाहर घड़े की पूजा करके चौक बनाकर दोनों को बिठाकर मायके के कपड़े करते हैं। वह गोद (गेहूॅ+नारियल+खारिक और पैसा) गोद भरते हैं। गीत गाकर मिठाई बाटते हैं।

जमाल झेलनाः देवधामी के 5 नारियल रखना। सवा किलो आटे का चूरमा बनाकर पाल्या बाबा का नाम लेकर (उनके देव स्थान पर या उनकी फोटो के सामने रखकर) चूरमा+ 2 नारियल + भेंट रखना। सत्यनारायण भगवान की कथा करना। पाल्या बाबा को गुड़ + घी + चूरमे की धूप देना है। एक तरफ बिना तवा रखे गैस या कंडे पर सेंकना है। फिर लाल कपड़े में उसको रखकर उस पर बहन बेटी जमाल

झेलेगी। लड़के–लड़की दोनों का मुण्डन होता है। बालों को बांधकर सवा रूपये रखकर नदी में खमाना है। अच्छे दिन देखकर जमाल के बाद नारियल फोड़ना।

तिल संकांतिः सुबह जल्दी उठकर तिल व हल्दी के चिकसे से नहाते हैं। तिल के लड्डू और दाल चावल की खिचड़ी का दान किया जाता है। किसी भी 13 चीजों पर पानी फेरकर सुहागन स्त्रियों में बांटा जाता है।

होलीः पूर्णिमा वाले दिन शाम को पूजन सामग्री, नारियल और कंडे की माला से होलिका की पूजा करते हैं। उसमें गेहूँ की बाली सेंकते हैं और दूसरे दिन आग लेकर आते हैं।

देवउठनी ग्यारसः चौक बनाकरउस पर तुलसी के पौधे के साथ शालिगराम रखते हैं। गन्ने का मण्डप बनाकर पूजन सामग्री से पूजा करते हैं और बोर, भाजी, ऑवले का भोग लगाते हैं। तुलसी को सुहाग का सामान चढ़ाते हैं।

मृत्यु के रिवाजः मृत्यु होने पर बेटा अग्नि देता है और वह गोबर से जिस जगह पर उनको सुलाया जाता है वहॉ गोबर से रेंकटा खिचती है और बिना पीछे देखे उनके कपड़े लेकर सबसे पहले चलती है। वह कुऍ पर कपड़े गिले कर नहाती हैं और वहीं कपड़े लेकर उसी जगह पर रख देती हैं। वहॉ पर मायके से आए चावल + गुड + घी डालकर कंडा जलाकर वहीं पर कड़वा बनाते हैं और तीन कौर अग्नि देने वाले के मुँह से लगाते हैं। उसी स्थान पर उसी दिन एक थाली में आटा सपाट करके रखते हैं और उसे ढंक देते हैं। दूसरे दिन साड़ी सिमटकर नदी में विसर्जित करते हैं और बाहर–भीतर करते हैं। साड़ी समेटने के बाद उठावना करते है, उसमें मन्दिर के बाहर सेदर्शन करते हैं। उठावने के बाद चावल बनाकर घी डालकर अच्छे से लड्डू बनाकर कौए को खिलाते हैं साथ ही पानी भी रखते हैं। रोजाना जो भी बनता है उसका भोग लगाते हैं। गरूड़–पुराण का पाठ कराते हैं और दिया बत्ती के समय अंधेरा करके दिया जगाते हैं।

– दसवे दिन सुबह सुतक निकालकर पूरे घर का पोछा लगाया जाता है एवं घर के छोटे लड़के बाल देते हैं। दसवॉ, ग्यारहवॉ घाट पर किया जाता है।

– ग्यारहवें के दिन पंडाजी के माध्यम से 11 ब्राम्हण भोज कराया जाता है।

– तेरहवें के दिन घर पर श्राद्ध का पूरा खाना बनाकर भोग लगाते हैं और पंडितजी या गवरनी को खिलाते हैं। घर पर ही तेरहवीं की पूजा, तर्पण करते हैं और पगड़ी करते हैं। धर्मशाला में गरूड़ पुराण का आखिरी पाठ पढ़कर घर के बाकी सदस्यों को टोपी पहनाई जाती है। सभी लोग मंदिर जाते हैं जिसने रेकटा खींचा था वह गेहूँ + पैसा लेकर मन्दिर जाती है।

– पन्द्रहवें दिन श्राद्ध व छःमासी बरसी करते हैं जिसमें पंडित द्वारा तर्पण करवाकर पिण्ड बनवाते हैं।

साल भर हर महीने की तिथि को श्राद्ध करते हैं व तीसरे साल श्राद्ध पक्ष में पितरों में मिला देते हैं।

श्रीमती संध्या–विनोद माहेश्वरी (गट्टानी)
उज्जैन

———————————

कासट गोत्र में पूजे जाने वाले देवी देवताओं की जानकारी

मुंडन संस्कार :– कासट गोत्र की कुलदेवी सलकनपुर वाली विजासन देवी है। कासट गोत्र में उत्पन्न होने वाले लडके या लडकी दोनो का मुंडन सलकनपुर जाकर ही होता है वहा देवी पूजन के लिए पहाड़ पर ही खूट बनाये जाते है। आठ पूरी, लाप्सी गुड़ की, चने गेहूँ की घुंघरी, दूध चावल तथा कच्चे आटे की दिये आठ बनाकर थाली तैयार कर 3 नारियल तथा वहॉ पर ही लाल कपड़े पर आटे की कच्ची रोटी पर बहन बुआ झेलती है, और वहा होशंगाबाद में बाल खमा दिये जाते है। बच्चे को सफेद झबला उस पर लाल कपउे से चन्द्रमा, सूर्य बनाकर पहनाया जाता है।

अन्न प्राषन संस्कार (बुटाना) :–

श्री संवत 2077 मीती चैत्र शुक्ल पडवा (गुड़ी पड़वा) दिनांक 25–03–2020

कासट गोत्र में चैत्र की देवी अष्टमी नवमी तथा कुवांर की देवी दोनो पूजी जाती है तथा दोनो पर एक ही समान खाना बनता है तथा दोनो में से किसी देवी पर बच्चो को बुला सकते है, देवी (अष्टमी) के दिन दाल चने की, बाटी, चावल दाल बिना बघारी हुई बनती है गेहूँ की अष्टमी सवाई (पाव,सवासर) चावल की नवमी तथा भैरवजी की अष्टमी के रोज पूजा होती है 3 नारियल अष्टमी एक भैरव एक तथा नवमी के रोज एक नारियल फोड़ना है बच्चे को चांदी के हाथ पैर के कड़े तथा गले में तागली पहनाई जाती है सफेद झबला लाल कपड़े के चांद सूरज बनाकर पहनाया जाता है चांदी के सिक्के से अष्टमी के रोज दूध चावल खिलाया जाता है गेहूँ चावल बहन को दे दिये जाते है ।

विवाह संस्कार :–

विजासन देवी का फड मांडा जाता है एक मीटर सफेद कपड़े पर कुकुम घोल कर दो पुतके चांद सूरज, निशानी, फूल आदि बनाकर दिवाल पर चिपका देते है बाजी से तेल की धार नीचे तक गिराते हैं उस दिन 64 छोटी – छोटी रोटियॉ पाने 32 जूडे बनाये जाते है 32 खाजे सभी शुद्ध घी में लाप्सी गुड़ के 32 कहू 32 आटे के दिये बिना तले हुए घी के जलाये जाते है, सबसे नीचे मिट्टी के 32 दिये उसके ऊपर छबड़ी में पहले 32 जूडे उन पर 32 खाजे प्रत्येक पर एक–एक लाप्सी लहू तथा 1–1 दिया रखकर जलाया जाता है और सपरिवार पूजा की जाती है दोनो साइड एक ओर सवा किलो गेहूँ तथा दूसरी ओर सवा किलो चावल गेहूँ पर 8 पथवारी (कंकड) चावल पर 9 तथा भैरव की 5 पथवारी आम के पत्ते, कनेर की डाली रखी जाती मिट्टी की छोटी–छोटी 4 मटकी एक तरफ तथा 4 दूसरी तरफ तथा बीच में बडी मटकी रखी जाती है उन सब पर दिये रखे जाते है जलाकर आरती की जाती है।

बच्चो के जन्म के समय सुतकाला तथा जलवायु :–

बच्चे के जन्म के पांचवे दिन पूरा खाना बालतन को खिलाया जाता है रात में कच्चा सूत, बच्चे के पैर, हाथ कमर का काला धागा रखा जाता है।

छठवें दिन छटी पूजी जाती है रात में एक प्लेट में कुंकु, चावल, मिट्टी का दिया तेल का जलाकर काजल बनाकर लगाया जाता है छटी माता, पेन कोरा कागज रखा जाता है।

सातवें दिन सुतकाला :–

बच्चे के नाला गिर जाने पर नहलाकर शाम को मोरी में हल्दी घोलकर दो पुतले चाँद सूरज को में निशानी फूल बनाकर 18 छोटी चांद की (रोटी) तथा आटे के 18 दिये जलाकर पूजा की जाती है तथा दिवाल के दोनों किनारे में 7–7 हाथे हल्दी के लगाये जाते है कुंकु की टिपकी लगाई जाती है लडका होने पर ये किया जाता है लडकी के समय 14 रोटी 14 दिये और 5–5 हाथे लगाते है।

ग्यारवें दिन जलवाय पूजन :–

आंगन में सूर्य अस्त होने के पहले हल्दी से दो पुतले कोट में चांद सूरज चौक फूक बनाकर पूजा की थाली से पूजा बच्चे को माँ की गोद में लेकर करवाते हैं एक नारियल 2 खारिक एक लोटा पानी मरकर माँ के सिर पर फाल के चोमल बनाकर पूछा जाता है मरा की खाली वह मरा बोलती है देहली पर 2 खारिक फोड़कर पीछे दोनो दिशाओं में फेंकी जाती है पूजा करते समय चिंदी को पीली करके 5 गौर पत्थर की रखी जाती है उस पर पीली चिंदी चडाई जाती है तथा पुतलो पर गुड़ दूध का नवेद बताया जाता है हाथ में चाकू रखते हैं नारियल फोडकर सबको बांट दिया जाता है।

शीतला सप्तमी :–

चैत्र शुक्ल सप्तमी, भाद्रपद शुल्क सप्तमी को शीतला पूजन किया जाता है एक दिन पहले ठंडा खाना बनाया जाता है सप्तमी को भीगी चने की दाल, दही, ताव पानी कुंक चावल हल्दी से शीतला माता (पुराना मंदिर) में पूजा करके नारियल चढ़ाया जाता है। दोनो सप्तमी पर दोनो टाइम ठंडा ही खाया जाता है।

नाग पंचमी :–

श्रावण शुक्ल पंचमी तथा भाद्रपद कृष्ण वदी पंचमी को रामेश्वर स्थित नागदेवता को नारियल फोडा जाता है तथा तुवर की बिना बघारी दाल और टापू दोनो पंचमी पर दिन में एक ही बार दोनो टाइम का बनाया जाता है।

गुरू पूर्णिमा :–

विठुल मंदिर जाकर पंढरीनाथ भगवान की पूजा करके दान राशि दी जाती है और उस दिन चने की बिना बघारी दाल बाटी चावल एक ही टाइम बनाकर उपवास किया जाता है एक टाइम खाना खाया जाता है।

हरछट व्रत :–

भाद्रपद शुक्ल षढठी को लडके की माँ छट का व्रत करती है पूजा में राखी, घानी, महुए के दोने मरकर खिलौने जैसे गोठी, भंवरा आदि रखकर पूजा करके बच्चों को दोने बाटतें है लड़के को राखी बांधकर प्रसाद खिलाया जाता है।

अनंत चतुर्दशी :–

अनंत देव की पूजा करके आदमी लोग बिगर नमक का खाना खाकर उपवास करते है अनंत देव अपनी भुजा पर बांधते है।

रेनका चौदश :–

चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को छोटी छैगांव जाकर रेनका माता का पूजन किया जाता है उस दिन सात घर जाकर जोगा (आटा) मांगकर तथा घर का मिलाकर बगैर नमक डाले हलवा या बाटी बनाई जाती है दाल बाटी बनाते है।

डूला देव पूजन :–

होली के बाद की दूज तथा दीवाली के बाद की दूज पर होता है चने की बीना बघारी दाल, बाटी , चावल बनाया जाता है नारियल फोडा जाता है सभी कुटुम्बी इकट्ठा होकर करते है।

कु. बसन्ती गुप्ता

से.नि.उ.श्रेणी शिक्षिका
(खंडवा)

मालपानी गोत्र के रीति रिवाज

चैत्र नवरात्री :–

गुडी पड़वा :–

इस दिन कड़वा नीम व शक्कर का पानी का भोग लगाकर स्वंय ग्रहण करते है। एवं मीठे में पूरन पोली बनती है, इसका भी भोग भगवान को लगाते है।

अष्टमी पूजन विधि :–

माताजी की प्रतिमा के समक्ष हम गेहूँ की ढ़ेरी रखते है, एवं नदी से लाई हुई पथवारी (10 कंकड) महिलाओ की माता जो शादी म चढ़ाते है उसकी पूजा की जाती है। कण्डे पर गुगल व शुद्ध घी की धूप दी जाती है। देवी माता को नारियल (सूखा) चढ़ाते है। माताजी के समक्ष जो गेहूँ की ढेरी रखते है, उस पर 8 बाटी रखी जाती है। आरती करते है।

प्रसादी :– माता के भोग में बाटी, दाल (चने की) समक्ष रखी बाटी आरती के बाद भोजन के साथ ग्रहण करते है।

नवमी पूजन विधि :–

माताजी की प्रतिमा के समक्ष जो गेहूँ की ढ़ेरी है अब उस पर नवमी के दिन गेहूँ के फीके 9 तामे (फीके) रखे जाते है। और पानी वाला नारियल इस दिन माताजी को चढ़ता है। एवं आज के दिन बच्चो की जेल बनाई जाती है। घुघंरी बाकले चढ़ाये जाते है। और बाकी पूजन अष्टमी के जैसे ही धूप दीप के साब होती है।

प्रसादी :– नवमी के दिन गेहूँ के फीके तामे और खीर बनती है। माताजी को भोग लगाया जाता है। माताजी को चढ़ाये हुए तामे धूप के साथ खमायें जाते है।

(क्वार की बडी अष्टमी और नवमी ओटन होने की वजह से मालपानी परिवार (हमारे यहाँ) नही ूपजी जाती है।)

नागपंचमी :– नागपंचमी के दिन दाल (तुअर दाल) एवं बाटी, चुरमा बनाते है। नागदेवता की पूजा की जाती है। नाग मंदिर में जाकर वहाँ कसार और दूध का भोग लगाते है। एवं नारियल चढ़ाया जाता है।

पोला अमावस :– इस दिन हमारे यहाँ ओटन होने से पूजन नही किया जाता है।

श्राद्ध पक्ष :– श्राद्ध पक्ष के पूरे 16 दिन सादी धूप दी जाती है। और जिस दिन श्राद्ध होता है उस दिन दाल, सब्जी, पूरी, भजिये, खीर, कड़ी बनायी जाती है। भोग पितरो को लगाया जाता है।

शीतला सप्तमी :– शीतला सप्तमी की पूजा ओटन न होने से नही की जाती।

धनतेरस :– दीपावली अमावस्या के दिन हमारे यहाँ ओटन होने से धनतेरस के दि नही महालक्ष्मी पूजन किया जाता है। धानी, बतासे, गूंजे, पपड़ी मिठाई, फल आदि का भोग

लगाया जाता है। रंगोली बनाई जाती है। एवं दीपक जलाएं जाते है। माताजी के सामने एक दीपक तेल का जलाते है जो पूरी रात जलता है।

देवउठनी ग्यारस :– इस दिन पांच सांटे (गन्ने) की झोपड़ी बनाकर उसमें तुलसी जी को रखकर साथ में सालिग्राम भगवान को विराजित करते है। और उनका विवाह किया जाता है। बोर, भाजी, आंवला, भय, गन्ना, से देव उठाते है। मिठाई एवं फल आदि का भोग लगाया जाता है। बैंगन की सब्जी एवं पुड़ी बनाई जाती है। जो पूजन के बाद खाते है।

मुण्डन संस्कार :– देवी से लगाने के बाद मुण्डन संस्कार ही मुण्डन किया जाता है। हमारे यहाँ केवल लडको का ही मुण्डन किया जाता है। हमारे मालपानी परिवार के बच्चो का मुण्डन शुजालपुर के पास '' घोसी का बबला '' में किया जाता है। भैरव बाबा मंदिर में, जो कि मालपानी परिवार के भैरव बाबा का मंदिर है।

कुलदेवी :– मालपानी परिवार की कुल देवी माता रेहटी के पास सल्कनपुर वाली माताजी है। उन्ही के नाम की जेल बच्चो को पहनाई जाती है। एवं शादी से पहले जाकर माताजी के वहाँ जेल उतारी जाती है।

दुल्हा देव महाराज :– हमारे मालपानी कुटुम्ब का ही एक परिवार जो कि रेहटी मे रहते है, उन्ही के यहाँ दुल्हा देव महाराज की ठानक है। वही हम सब जाकर साथ मिलकर सभी परिवारजन पूजा करते है। घर की कन्याओं को इस पूजा से दूर रखा जाता है।

शनिवार के दिन रात्रि शुरू होने पर दुल्हा देव की पूजा की जाती है। प्रसाद में हलवा, पूरी, बेसन के भजिये बनाए जाते है, शुद्ध घी मे।

रविवार के भैरव बाबा की पूजा की जाती है। प्रसाद में दाल, बाटी, चुरमा, चावल बनाये जाते है। दोनो ही पूजन में सूखा नारियल चढ़ाया जाता है।

शादी ब्याह की पूजन विधि

गणेश पूजा की विधि :– एक पाट के ऊपर लाल कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर बीच में चावल रखना फिर उस पर पान रखके गणेश भगवान को बिढाना तथा सामने पैसा सुपारी रखना। चारो कोनो पर चार – चार खाजें उस पर लापसी के लडडू रखना। गणपति जी को भी खाजा लड्डू का भोग लगाना। 32 खाजा बनाना तथा चावल, लापसी बनाना। मिटटी का चूल्हा और कोठी बनाना। उन सब पर कूंकू चावल डालना। उसी कोठी मे पूजा के बाद लाल कपडे की पोटली बनाकर रखना, तथा उसमें एक खाजा, लापसी बेसन के गणेश जी रखना। बहन बेटी को कूंकू लगाना और नेक देना। दुध–चावल का भोग लगाना, गणेश जी को मनाना।

कुलदेवी पूजन :– चावल, खाजा, लापसी, मूंग की दाल, पूरी की 32 जुड़ी बनाना, आटे के 32 दिए, 32 मिटटी के दिए देवी के सामने ढाबरी के नीचे रखना। देवी का फंड मंडवाकर उसे दिवाल पर लगाना। ढाबरी के अंदर पूरी 32, 32 दिए और लापसी रखना।

देवी के सामने दोनो तरफ गेहूँ और चावल से देवी करना। दोनो तरफ चार – चार मटकी रखना उस पर एक एक दिया रखना। बीच में एक मटकी उस पर बड़ा घी का दिया रखना।

सभी कुटुंबियो के साथ पूजन करना।

मनिहार परिवार के रीतिरिवाज त्यौहार

सर्वप्रथम चैत्र की गुड़ी पडवा से स्तर सेम चैत्र की अष्टमी नवमी नवरात्री में होती है रेणुका चौदस के दिन केवल दर्शन करने जाते है।

श्रावण की नागपंचमी भाद्रो की नागपंचमी माडे जाते है हमारे परिवार में गणेशजी बीठाते है श्राद पक्ष पितर नहीं माडते।

नवरात्री के उपवास करते है मंदिर जाते है अष्टमी के दिन त्रिशूल बनाकर सामने गेहूँ रखते है उसके उपर माताजी का श्रृंगर गेहूँ के आटे से बनाते है और शुद्ध घी में तलकर रखते है स्टील के डब्बे में रखते है बच्चे का गोरा शर्ट रखते है हल्दी कुमकुम चावल सिंदूर कुल माता पूजन करते है कंडडे पर घी गुड धूप डालते है 2 नारियल देवी को चढ़ाते है। सभी जन मिलकर आरती करते है माताजी की ।

शीतला सतमी :–

चैत्र मास की सतमी और भातो की सतमी हलवा पुरी चरके मीठे सब्जी पुरी रायता केलवाना ठण्डा बनाना है। खाना है। भातो में कच्चे आटे 7 टापु आटे के बनाना है। घी और गुड रखकर माता जी के सामने रखते है

भैरो बाबा का :–

दाल, बाटी, चुरमा, घुघरी, चना, गेहूँ, एक कड़े की रोटी बाड़े की पूजा करते है सात रोटी छोटी – छोटी बनाना है।

अष्टमी नवमी में खाना बनाना (अलोना खाना बनाते है) दाल, चावल, पुरी, घुघरी, चना, गेहूँ उबालना लापसी मिठी घुली माता रानी के श्रृंगार अच्छे घी की पूडी बनती है। पांच बाटी छोटी – छोटी घी में बनती है। मातारानी के श्रृंगार घर, कंगा, कारतई, कडे तोड़े लोंग, गुलकी डडा, सुपारी 9–9 बनाते है। आटे में बनाना है। तलना है। डब्बे में रखना है दूसरे दिन खीर बनाना है।

नवमी :–

नौ पुए ओर के बनाने है। घी में खीर दाल चावल आलू की सब्जी दही छाछ घर का हो तो कड़ी चरके ताए फिके ताए फुड़ की रोटी

नागपंचमी के भादों की श्रावण की दोनो में दाल बाटी बनती है।

श्रीमती रूकमणी देवी मालपानी
मो. नं. 9200752360

श्रीमती निर्मला मालपानी
मो. नं. 9977037406

मोहता गोत्र के रीति रिवाज

सर्वप्रथम चैत्र की नवरात्रि मे प्रथम दिन गुडी पडवा के दिन सुबह माता पूजन एवं नीम की डाली दरवाजो पर लगाते है एवं नीम व शक्कर का पानी भोग लगा कर पीते है।

मीठे मे पुरन पोली बनती है। ' गणगौर तीज के दिन भरी बाडी की पूजा व नारियल फोडा जाता है। गणगौर माता के दर्शन किये जाते है। रामनवमी के दिन बिना नमक का फरियाल से उपवास किया जाता है यदि रामफल मिले तो भोग लगाया जाता है वही खाया जाता है घर के सभी शादी शुदा पुरूष इसे करते है।

दशमी के दिन कुलदेवी अम्बे जो नदुरबार के पास है वहा पूजा अर्चना कि जाती है इस दिन छोटे बच्चो के जमाल निकाले जाते है और माता के चरणो मे रखे जाते है। इस दिन दाल बाटी चुरमा बनाया जाता है,

तिल संक्राती के दिन तिल्ली के लड्डू और दाल चावल की खिचडी का दान किया जाता है दुसरे दिन सुहागन सामान बटती है।

होली के दिन होली के जलने के पहले पूजा कि जाती है

बच्चे के जन्म पर 13 दिन जलवायु की पूजा कि जाती है,

मुंडन संस्कार – मुंडन साल के सिर्फ एक दिन रामनवमी के दुसरे दिन दशमी को ही होता है और महाराष्ट्र और गुजरात के पास जहा देवी का मंदिर है वही होता है

पूजा का सामान जो सामान्य हो बच्चे को नये कपडे पहन कर बच्चे की बुआ रोट (गेहूँ का) पर बाल झेलती है मामा घर के नये कपडे पहनाते है दाल बाटी बनाई जाती है

मृत्यु – होने पर बडा या छोटा बेटा अग्नि देता है बहु गोबर से रेक्टा खीचती है जहा उनको सुलाया जाता है, थाली में आटा लेकर ढकते है

अक्षय तृतीया के दिन पानी से भरी मटकी और खरबुजा गेहुँ रखकर पुजा कर मंदिर में रख कर आते है

बड़ पूर्णिमा के दिन बड़ पेड कि पूजा करते है और घर कि महिलाएं चने या चने दाल और आम से सुहागन महिलाओं कि गोद भरी जाती है।

नगपंचमी के दिन दाल बाटी बनाई जाती है और नाग देवता कि पूजा कि जाती है।

राखी के पहले इतवार को इरपस दी जाती है नारियल गोटा, हल्दी कुंकु चावल साडी ब्लाउज चूडी बहन को भाई देकर आते है, पोला अमावस को पूरन पोली बनाई जाती है और बेलो को (मिट्टी के) सजाकर राखी बांध कर पूजा कि जाती है भोग लगाया जाता है। खेत मे काम करने वाले को नये वस्त्र दिये जाते है।

गणेश चतुर्थी से अनतं चौदस तक गणेश जी की स्थापना पूजा कि जाती है अनंत चौदस को चुरमे के लड्डू का भोग अनंत भगवान (विष्णु) को भोग लगाया जाता है।

दीपावली पूजा

गोवत्स द्वादशी गाय केड़े की पूजा गाय को ग्वार चवले गुड़ खिलाये जाते है।

ज्वार की रोटी व चवले बनाये जाते है। धनतेरस को पूरन पोली बनाई जाती है बहन बेटी को घर पर खाना खिलाया जाता है। रूप चौदस को तिल्ली वे चिकसे से नहाया जाता है।

दीपावली के दिन सुबह से सफेद चौक व गेरू से चौक बनाये जाते है रंगोली बनाई जाती है। खाने के दाल चावल सब्जी मीठा हलवा खीर बनाई जाती है।

शाम में भी साधारण तौर पर लक्ष्मी जी की फोटो पाटे पर रखकर पुराने सिक्के एवं जेवरों की पूजा की जाती है पांच तरह की मिठाई पांच नमकीन व यक्ष शक्ति जो पूजा कर सके वो की जाती है।

देव उठना :– ग्यारस पर पाँच गन्ने की झोपडी बनाकर चौक बनाकर तुलसी व सालीग्राम पूजा की जाती है।

श्राद्ध पक्ष में पहले दिन खीर पूड़ी भजिये बनाकर बड़े हवन पात्र में अग्नि प्रज्वलित कर पितरों का आव्हान किया जाता है आखरी अमावस्या को समापन भी इसी प्रकार करके धूप को पवित्र स्थान पर विसर्जित किया जाता है।

नवरात्री (दूसरी)

नवरात्रि में साफ सफाई कर साधारण पूजा पाठ की जाती है, अष्टमी का उपवास बिना नमक का होता है घर के सभी सदस्य स्त्री पुरूष करते है।

नवमी को तवा नही रखा जाता दाल तुअर की पहले से बघार लगाकर बनाते है खीर पुड़ी भजिये बनाकर भोग लगाया जाता है।

नारियल हवन में डालते है और शाम को नीबू की बलि दी जाती है।

कुए पर या नल पर गीले कपडे से नहाती है पाटे पर 13 दिन तक फोटो रखकर सुबह चाय बिस्किट दोपहर को खाना और मीठी चीज का भोग लगाते है

शाम को गाय को खिलाते है, गरूड पुराण का पाठ रखते है। दसवे के दिन नदी के एवं घाटे पर नहाकर जो या चावल के ग्यारवे दिन की पूजा 48 पिंड बनाकर पूजा करना पत्तल में रखकर काली तिल्ली पूजा के सामान से पूजा करी अपने पितरो के नाम लेकर। गेहूँ के आटे को पाँच बाटी बनाते है। पतल में बाटी के 4–4 टुकडे करके पाँच कोनो पर रख कर पूजा की मृतक का नाम लेकर सारे पिंड 48 बाल्टी में डालकर नदी मे विसर्जित करना घाट पर पेड़ के निकट दीपक जलाना, तेरहवी के दिन – 1 किलो चावल को पकाकर 52 पिंड बनाकर काली तिल्ली से सफेद तिल से पूजा करना श्राद्ध का पूरा भोजन खीर, पूडी, बेसन के भजिये, और मूंग उड़द दाल के बड़े सब्जी कड़ी सारे भोजन का भोग लगाया जाता है

गरूड पुराण के आखरी अध्याय का पाठ होता है। बाकी सदस्यों के बाल दिये जाते है। पगड़ी या टोपी ससुराल वालो की तरफ से होती है। फिर जिसने आग दी है, वह सीधा लेकर मंदिर जाते है पालक भी ले जाते है। पन्द्रवे दिन श्राद्ध व छः मासी बरसी होती है, जिसमे पंडित द्वारा तर्पण करवाकर पिंड बनाये जाते है परिवार के सदस्य पूजन करते है। तेरहवी के दिन ही गवरनी और पित्तर दोनो को खाना खिलाया जाता है यथा शक्ति

दक्षणा दी जाती है। फिर साल भर की बरसी की जाती है। मृत्यु के पूरे श्राद्ध होने पर श्राद्ध में मिलाया जाता है।

शादी या ब्याह की देवी व विधि

सामान्यतः जैसे होती है वैसे ही। मोहरत सुबह में होता है उडद की दाल की बड़ी व पापड़ बनाये जाते है शाम में यदि होता है तो गेहूँ सूपड़े मे लेकर बहन बेटियों द्वारा मोहरत होता है

मंडप के दिन :– गणेश पूजा सामान्य होती है। पूजन के बाद मोहरत के दिन के बड़ी और पापड़ बनाये जाते सब्जी बड़ी की पूड़ी आदि भोजन का भोग लगता है।

लगन के दिन :– साधा खाना बनाकर भोग लगाया जाता है। बाकी सारी पूजा सामग्री एवं पूजन जैसे आपकी विधि वैसे ही होता है।

श्रीमती अनिता मोहता (गुप्ता)

मो. नं. 8319170520

।। जय महेश ।।

।। जय श्री गणेशाय नम : ।।

मार्गदर्शिका

संकलनकर्ता

सौ. सुधा नागोरी खण्डवा सौ. मालती नागौरी खण्डवा

मो. न. 9827013926

नागोरी गोत्र के रीति – रिवाज (त्यौहार)

सर्वप्रथम चैत्र की नवरात्रि से प्रथम दिन गुड़ी पड़वा के दिन सुबह पूजन के बाद कड़वा नीम व शक्कर का पानी पीते हैं व घर व भगवान मंदिर में कड़वा नीम की डगाल लगाते हैं। मीठे में पुरणपोली बनती है।

गणगौर तीज के दिन जहाँ गणगौर माता की बाड़ी होती है वहाँ पूजन कर नारियल फोड़ा जाता है दूसरे दिन गाँधी भवन प्रांगण में जाकर गणगौर माता की बाड़ी के दर्शन किए जाते हैं।

चैत्र की अष्टमी :– मुंग के छिलके वाली दाल, चावल, रोटी, कैरी का पना बल्लर के चार – पाँच टुकड़े कैरी के साथ उबाल लेना, हरी मिर्च, अदरक, जीरे का मसाला पीसना व दाल में डालना। बघार के सप्तमी के दिन बनाकर रखना पड़ता है, इस दिन (अष्टमी) के दिन बघार नहीं होता है। लाल मिर्च, धनिया एवं जीरे का बघार बनाना है। रोटी, दाल, चावल, पना, बल्लर का भोग लगाना। अष्टमी के दिन एक टाइम भोजन करते हैं। दाल में हल्दी न घी डालते हैं। गूगलरी धूप देते हैं।

चैत्र की नवमी :– खीर, रोटी, बल्लर की सब्जी, भोग के लिए गुड़ की खीर बनाना, इस दिन बघार कर सकते हैं। हल्दी डाल सकते हैं। बघार में जीरा, मिर्च, धनिया ही डालते हैं। अष्टमी नवमी के दिन भगवान की पूजा में कूंकू एवं चावल चढ़ाते है, चंदन नही लगाते हैं आरती की जाती है। गूगल, घी, धूप देते हैं। बच्चों की लाल रंग के रेशमी धागे की बेल सात गठान 1 गठान लगाकर (भैरू की) बनाई जाती है।

अक्षय तृतीया :– इस दिन पानी की मटकी भरकर उस पर खरबूजा या कोई फल रखकर मंदिर में देना चाहिए।

बड़ पूर्णिमा :– बड़ पूर्णिमा व्रत के दिन बड़ के पेड़ की पूजा की जाती है। घर की सारी महिलाएं आम व चने (भीगे हुए) से सुहागन की खोल (गोद) भरते हैं।

नागपंचमी :– नाग पंचमी के दिन नाग बाबा के मंदिर जाकर सिंदूर एवं नारियल चढाते हैं। इस दिन बेसन एवं आटे के ताए बनते हैं। बेसन के नमकीन और आटे के मीठे एव

फीके भी बनते हैं इस दिन चाकू से काटना पिटना नहीं चाहिए, नाँग देवता के जोड़े की पूजा करना चाहिए। एवं भोग लगाकर ताए उनको देना। तुवर दाल एवं भगर रादूल बनाते हैं दाल की रखते हैं।

पौथा चौदस :– रखी के एक दिन पहले चौदस को पोथा चौदस कहते हैं इस दिन दाल, चावल रोटी एवं तुरई की सब्जी बनती है, तुरई नहीं मिले तो गिलकी की सब्जी बना सकते हैं तथा तवा एक ही टाइम रखते हैं एक टाईम भोजन करना चाहिए।

पोला अमावस :– मिट्टी के बैलों की पूजा की जाती है। इस दिन पूरण पोली बनती है बैलों को भोग लगाया जाता है।

गणेश चतुर्थी :– गणेश जी की स्थापना करके मोदक का भोग लगाते हैं एवं चतुर्दर्शी तक पूजन आरती की जाती है।

शीतला सप्तमी :– शीतला सप्तमी के एक दिन पहले छट के दिन शाम को नहाकर खाना बनाते हैं, सप्तमी के दिन चूल्हा नहीं जलता है ठंडा भोजन करते हैं मंदिर में जाकर नारियल की भेंट चढ़ाते हैं। माता को भेंट चढ़ाते हैं एवं भैरूबाबा को नारियल फोड़ते हैं। कच्ची पूजपा (आटे की सात या पाँच बाटी बनाना) गुड, घी रखना कच्चे आटे के सात दिए बनाना, उन पर घी की बत्ती रखना (जलाना नही) दो सफेद ताव लेकर जाना दूध दही चढ़ाना चाहिए।

श्राद्ध पक्ष :– श्राद्ध पक्ष के पहले दिन दाल, चावल, सब्जी–पूड़ी, खीर भजिए बड़े बनाकर घी गुड़ की धूप दी जाती है। जिस दिन घर पर श्राद्ध होता है उस दिन पाट पर पित्तर बनाकर जौ एवं काली तिल्ली से पूजन किया जाता है व खीर, भजिए उड़द के बड़े, कढ़ी, दाल, चावल, सब्जी पुड़ी बनाकर भोग लगाते हैं। बहन बेटी को खाने पर बुलाते हैं। पित्तर एवं गवरी को भोजन कराते हैं। पित्तर (ज्वार के आटे) के बनाते हैं। थलोड़ी रखते हैं पितृ मोक्ष अमावस्या को आखिरी दिन की धूप देकर विसर्जित किया जाता है।

क्वार की अष्टमी :– सप्तमी के दिन सिंघाडा का आटा घी में सेककर रखना चाहिए अष्टमी को भगवान का पूजन करना कूंकू, चावल चढ़ाना एवं गुगल की धूप देना, सिंघाडा का थोडा आटा लेकर गुड मिलाकर भोग लगाना नवमी के लिए थोड़ा आटा फीका रख देना बाकी आटे में पीसी शक्कर मिलाकर अष्टमी के दिन लड्डू बनाना। इस दिन नमक नहीं खाना, उपवास के पापड़ आदि चीजें नही तलना, फल, फल्ली दाने खा सकते हैं।

बच्चों के लिए सप्तमी के दिन पुड़ी, पराठा, शाम को बनाकर रख देना चाहिए।

क्वार की नवमी :– इस दिन साबूदाना की खिचड़ी बनती है, इस दिन गुगल की धूप देते हैं। बचे हुए फीके आटे (सिंघाड़े के) में गुड़ मिलाकर लड्डू बनाकर भोग लगाते हैं। शाम को बच्चों के लिए चावल की खिचड़ी आदमी लोग बना सकते हैं। शादी–शुदा सभी उपवास करते हैं।

नवमी के दिन शाम को 4–5 बजे नींबू कोल्हा दिया जाता है घर के दरवाजों की देहली पर गूगल की धूप देकर। क्वार की अष्टमी (माता पूजन करते हैं)

सप्तमी के दिन चौका साफ करना और पोतना चाहिए। आटा इसी दिन पिसते हैं, गेहूँ अंदाज से घर के मनुष्य के अनुसार लेना। सिर पर से नहाकर आटा पिसना। (या गाइन्डर

में जाकर पिसवाकर लाना) आटे को ऐसी जगह रखना जहाँ पर कोई हाथ नहीं लगा पावे। आटा पिसने के बाद भी नहाना चाहिए। मेढ़ापाती (माताजी) को ढूँढकर पास ही के बगीचे या नदी किनारे रख देना चाहिए। और सुपारी पैसा रखकर माताजी को न्यौता कर देना चाहिए।

अष्टमी के दिन :– मुंग चावल रोटी बनाना, चावल मूंग परिवार के सदस्य के अनुसार लेना माता का श्रृंगार बनाना 32 लड्डू 32 पुडिया, 32 गोटी, 32 चोटी, 32 गुनी, 32 दिया एवं 5 रोटियाँ बनाना लड्डू गुड के बनाना। श्रृंगार के आटे में नमक नही डालना, टोकनी में नीचे पातल बिछाना फिर रोटी, पुडी लड्डू, चोटी, गोटी, गुनी, थोडी पूडी उपर से रखना पूडी के ऊपर दिये रखना। दियो में शुद्ध घी बत्ती रखना। पूजा करते समय दिये जलाना। गुगल की धूप देना। मेढ़ापाती तथा पांच पतवारी लाना, साथ में दो लौटा ताबें का में भरकर पानी लाना, एक पटे पर भगवान गणेशजी ठाकुर जी को रखना दो नारियल सामने रखना मेढ़ापाती सामने रखना और पथवारी रखना फिर पूजा करना, दिवार पर सिंदूर से त्रिशूल बनाना। सिंदूर को घी में घोलना दो थाली रखना एक पूजा की एक नेवैध की पूजा की थाली में कुंकु चावल गुगल रखना गुगल की धूप देना टोकनी के दिये जला कर पूजा करना। घर के बड़े सदस्य पहले पूजा करे आदमी लोग पहले पूजा करें। बाद में महिलाएं एवं बच्चे पूजा करें, सभी सदस्य पूजन करने के बाद टोकनी को बड़े सदस्य दो जन मिलकर एक ही बार टोकनी को घूमाना बाद में टोकनी को ढककर (पातल द्वारा) रखना, हरि मिर्च अदरक जीरे का मसाला बना कर मूंग में डालना । मेढ़ापाती पतवारी पानी दोनो दिन लाना। जो बच्चे बुटाते हैं उनके दो नारियल लगते हैं

बहुएँ जो माता से लगती हैं उनके भी दो नारियल लगते हैं। मुँग, चावल धोने का पानी, झूठा पानी (बर्तनों) अलग अलग रखना और गाय को पिलाना। नवमी के खिचड़े के लिए गेहूँ को एक घंटे पानी में भिगोकर रखना, फिर पानी निकालकर सुपड़े में सुखाना फिर मिक्सर या उखल में कूटना, पिसना छिलके निकले इतना ही झाड़कर रख देना।

अष्टमी के दिन ही नवमी के लिए रोटी बनानी है। नवमी के दिन रोटी नहीं बनती। तवा नहीं उतरे जब तक पूजन नहीं होता है। सौल्या पहनकर खाना बनाते हैं।

नवमीं :– खीर, खिचड़ा बनाना। खिचड़े के लिए चना दाल गेहूँ, बराबर लेना। खीर गुड़ की भोग के लिए बनाना। जिन बच्चों को बुटाना है उन्हें एक साथ नहलाते हैं, फिर पूजन कर आम के पत्ते पर खीर रखकर, आम के पत्ते की डंडी से सात बार खीर बच्चों को रकम (चाँदी ताँबे के कड़े) पहनाते हैं गले में तागली पहनाते हैं फिर मंदिर ले जाते हैं। नवमी के दिन दूसरी थाली (पूजा की) तैयार करते हैं कुंकु, चावल, गुगल रखते हैं एक थाली नैवैध की रखते हैं। खाना खाने के बाद पूरा काम खत्म होने के बाद आदमी लोग माता के दो नारियल पहले फोड़ते हैं। बाकी चढ़ाए गए नारियल बाद में फोड़ते हैं। नारियल की नट्टी, मेढ़ापाती, पतवारी , एवं पूजन सामग्री बची हुई नदी में ठंडा करने जाते हैं। दीवार के त्रिशुल को भी पानी लगाकर साफ करके कपड़े से पोछ देना चाहिए।

टोकनी का माता का प्रसाद दशहरे के दिन सुबह भगवान जी का पूजन करके खाते हैं। इस दिन भी गुगल की धूप देते हैं। परिवार के सभी सदस्यों को प्रसाद खाने के बाद में दूसरे खाने की व्यवस्था करते हैं।

अष्टमी के दिन माता का श्रृंगार बनाते समय तेल की कढ़ाई में थोडा सा घी का छींटा देना । माता के श्रृंगार का आटा एक या सवा किलो के अंदाज से लेना। रोटी का आटा गूंथने के पहले अटावन निकालकर रख लेना चाहिए।

आसन भरना :– शरद पूर्णिमा के दिन भूखे पेट गेहूँ आधा किलो, मूंग दाल अंदाज से पिसना। 30 पुड़ी, दीए आटे के बनाना, मुंग के आंटे में नमक, जीरा एवं मोयन तेल का डालकर आटा गूंथकर खुरमे बनाना। खीर गुड़ की बनाना, पाटे पर चारों कोनों में पाँच – पाँच पुड़ी व एक – एक सुखा एक दीया रखना। दीए में बत्ती रखना, दो थाली रखना, चन्द्रमा की थाली में पाँच रोटी रखना, खीर, खुरमा दीया, दाल, चावल रखना। भगवान के भोग की थाली में 5 पुड़ी, खीर, खुरमा, दीया, दाल, चावल रखना। बीच में ताँबे का कलश रखना, कलश के नीचे गेहूँ रखना, कलश को तागली पहनाना। कलश में सात बार घी की धार छोड़े। एक प्लेट में पाँच पुड़ी, दीया, खुरमा रखकर कलश पर रखना, दीयों का जलाना, चन्द्रमाँ की पूजा करना, आसन की पूजा करना, गुगल की धूप देना। चन्द्रमाँ को भगवान को भोग लगाना। खुट की पुड़ी प्रसाद सभी सदस्य को बाँट देवें। सुबह उठकर कलश का पानी व धूप बगीचे में डाल देवें।

जमाल मुंडल :– देवी से लगने के बाद पहले या तीसरे साल मुण्डन संस्कार किया जाता है। मुंडन के पहले अच्छा दिन देखकर दो गवरनी को भोजन करवाकर कपड़े भेंट करना। जिस बच्चे के जमाल निकालना हो उसका घर के गुलाबी कपड़े लगते हैं। जमाल निकालने के लिए 36 नाप गेहूँ लगते हैं, और यदि बच्चे की माँ भी आशा देवी से लगे तो उसके भी 36 नाप गेहूँ लगते हैं आटा भूखे पेट एवं सौल्या में पिसवाना चाहिए दोनों आटे अलग अलग रखना।

पूजन सामग्री :– नारियल 10, सुपारी 1 पाव छोटी पूजा की

हल्दी की गाँठ 1 पाव (32,32)

सिक्के 32, 32

कुंकु

हल्दी

गुलाल

अबीर

सिंदूर

चावल

कपूर

गुगल

माता का श्रृंगार (सुहाग पुड़ा)

माता की चुनरी, माला (फूलमाला)

दीया, अगरबत्ती

मेहंदी

मंदिर में ले जाने की सामग्री

गर्म पानी के लिए तपेला

लोटा 2

गिलास 2

थाली 2

लल कपड़ा (ब्लाउस पीस)

बाल्टी 1

कटोरी या दोना

आटा (जमाल की रोटी के लिए)

गुड़

कैची, दो झंडियाँ (सफेद एवं लाल)

नाड़ा

नारियल 10 में (2 बच्चे के आटे में)

2 (माँ के आटे में)

1 बस में जाते समय

2 तैलिया बाबा को (आते एवं जाते समय)

1 आशा देवी

1 भैरव बाबा

1 शीतला माताजी

तैलिया बाबा की दो चिंदी (सफेद) तेल में डूबो कर ले जाना।

असीरगढ़ जाने के पहले आटे में सब सामान 32 सिक्के, 32 सुपारी, 32 गठान हल्दी की रखकर गुगल की धूप देना एवं पानी फेरना (घर पर) इसके बाद आटा ले जाना। जिस बच्चे के जमाल निकालना है। उसको सिर पर से निहलाकर खुले बाल रखना। घर से निकलने पर एक नारियल बस या गाड़ी पर फोड़ना इसके बाद जमाल वाले बच्चे को बैठाना एवं बाद में सभी परिवार बैठे।

जमाल झेलने हेतु आटे की रोटी एक तरफ सिकी हुई बनाकर रखना।

माँ, बच्चे (दोनो आटों) को माताजी के सामने रखकर गुगल की धुप देना और तीन बार पानी फेरना। पहले सब परिवार माताजी का पूजन करें बाद में पानी फेरना एवं आरती करना फिर वही आटे में से थोड़ा निकालकर 5 या 7 बॉटी और चुरमा भोग लगाने के लिए बनाना। चुरमा गुड़ का बनाते हैं। पूजन एवं आरती के बाद बच्चे का मुंडन करते हैं, कैंची की पूजा करते हैं नाई को तिलक लगाते हैं एवं भेंट देते हैं। बहन बेटी जमाल लाल कपड़े में रोटी रखकर जमाल झेलती है। जमाल निकल जाने के बाद बच्चे को नहलाना फिर सिर पर हल्दी लगाकर सातियाँ बनाकर बच्चे को पाट पर बैठाकर बच्चे की माँ नारियल उतारती है फिर वह नारियल फोड़कर सब परिवार को प्रसाद देते हैं। बच्चे को घर के गुलाबी कपड़े पहनाते हैं।

जमाल निकालने के पहले एक व्यक्ति नीचे भैरव बाबा जी को सिंदूर लगाकर नारियल फोड़ना एवं दीपक लगाना इसके बाद जमाल निकालना।

जमाल के बाल रोटी सहित लाल कपड़े को वही मंदिर में छोड़कर आना है।

दाल बाटी चुरमा बनाने के लिए कंडे की व्यवस्था वहीं पर करें या एक व्यक्ति के साथ अलग से भेजे बच्चे के साथ कंडे नहीं जाते हैं।

जमाल के आटे को ठोकर नहीं लगे इस प्रकार रखना चाहिए। दाल चावल घर से बनाकर नैवेघ के लिए ले जा सकते हैं।

दाल बॉटी, चुरमें का भोग मंदिर में लगाना। चुरमें का प्रसाद सबको देना।

जमाल निकालने के तीसरे दिन या बार देखकर खूंटे निकालते हैं। जमाल का जो आटा बचा उसकी दाल – बॉटी बनाना। खूंटे के बाल भी नदी में ठंडे करना।

दीपावली पूजन

गोवत्स द्वादसी :– इस दिन गाय केड़े की पूजा की जाती है। पूजा में अबीर गुलाल, हल्दी, कुंकु, चावल तथा चौले ज्वार, गुड़ लिया जाता है। पहले गाय माता का पूजन किए केड़े का पूजन किया जाता है तथा हल्दी से हाथे लगाए जाते हैं और गाय को ज्वार, गुड़ चौले खिलाए जातें हैं। इस दिन एक बाद ही भोजन किया जाता है व ज्वार की रोटी चौले की सब्जी खाई जाती है।

धनतेरस :– धनतेरस के दिन पूरन पोली बनाई जाती है। तेरह दिए की पूजन करते हैं शाम में धनवन्तरी का पूजन होजा है। चाँदी के सिक्कों की पूजा की जाती है।

रूप चौदस :– रूप चौदस को सुबह जल्दी उठकर, तिल्ली, हल्दी, तेल का उपटन बनाकर नहाते हैं।

दीपावली :– दीपावली के दिन सुबह अच्छे मुहुर्त में चौक (गेरू एवं खड़ी) बनाते हैं। इस दिन तवा नहीं रखते हैं। शाम को लक्ष्मीजी का पूजन करते हैं, दीए जलाते हैं, फटाखे फोड़ते हैं, घर की महिलाएँ पूजन के बाद मंदिर में दीए लगाने जाती है।

देव उठनी ग्यारस :– देव उठनी ग्यारस के दिन भगवान की पूजा की जाती है व फरियाल बनाया जाता है, शाम को घर के बाहर चौक बनाकर उस पर तुलसी का गमला रखा जाता

है तथा सालीग्राम भगवान को उस पर विराजित किया जाता है, चारों तरफ चार गन्ने की झोपड़ी बनाकर तुलसीजी का पूजन अबीर, गुलाल, सिंदूर, चावल, कुंकु, हल्दी, शक्कर, फूल द्वारा किया जाता है। घर के भगवान को तुलसी के नीचे पाट पर रखकर उनका भी पूजन करते है, तथा बोर भाजी, आंवला, भटा, गन्ना से देव को उठाते हैं। घर के बड़े तुलसीजी की पाँच परिकृमा (बोर, भाजी, आंवला उठो देव सांवला) कहकर करते हैं। फिर घर से सभी सदस्य पूजा करते हैं।

तिल संक्रांति :– तिल संक्रांति के दिन गवरनी को भोजन करवाकर कपड़े देते हैं। तिल्ली के लड्डू और दाल, चावल की खिचड़ी का दान किया जाता है। उसी दिन सुहागन जो सामान बाँटती है उस पर लड्डू रखकर पानी फेरते हैं। फीकी खिचड़ी बनती हैं।

होली :– होली के दिन शाम को होली की पूजा की जाती है नैवैघ लगाया जाता है। कंडे की माला चढ़ाते है, नारियल चढ़ाते हैं। दूसरे दिन सुबह जाकर होली की परिक्रमा लगाकर पानी से ठंडी करते हैं वहाँ से झारे में होली की आग लेकर आते हैं।

जन्म से मरण तक का रिवाज

बच्चे का जन्म :– जिस दिन बच्चे का जन्म होता है उसी दिन एक बेल बनाकर नाड़े की सात गठान लगाकर बच्चे के गले में पहनाते हैं। पाँचवे दिन व छठवे दिन छठी पूजा होती है जिसमें कोरा ताव 2, खारिक 2, पीले धागे (हल्दी में किए हुए) कुंकु, चावल, हल्दी, दिया एक थाली में रखकर जच्चा बच्चा के पलंग के नीचे दीया जलाकर प्लेट में रात को सोते समय माँ बच्चे को गोद में लेकर ताव की पूजा करती है। दिए से कोरा का जल बनाकर बच्चे को लगाते हैं। छटी की पूजा कर पीले धागे बच्चे के हाथ व पैर बाँधते हैं।

बच्चे का नाला :– बच्चे का नाला खिर जाने पर सूतकाला पूजाते हैं। उस दिन बेटी रिश्तेदारों को बुलाकर गीत गाये जाते हैं और सूरज पूजा करते हैं। एक पाट पर चौक बनाते हैं जिसमें चाँद सूरज बनाते हैं।

सूतकाला मांडना

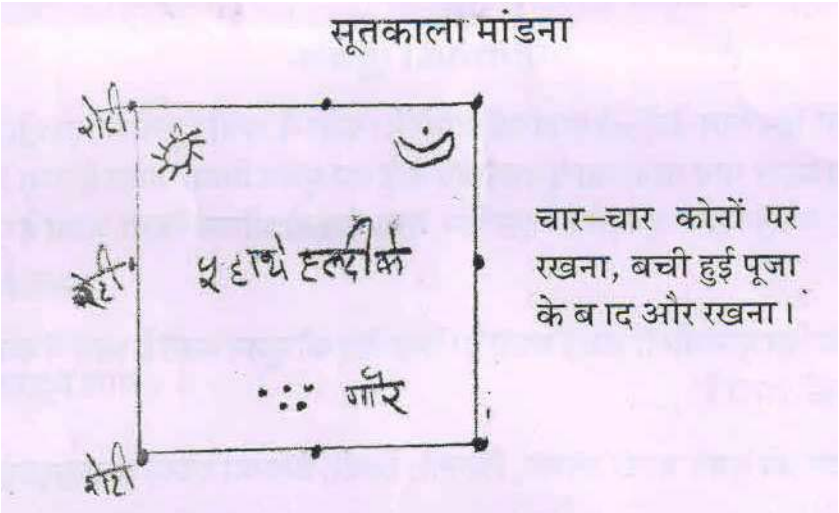

पीली चिंदी में पैसा, सुपारी बाँधकर रखते हैं और सूखा नारियल फोड़ते हैं। गौर को पीली चिंदी उड़ाते हैं। सुतकाले वाले दिन दिए और चाँद की बनाना 14 लड़की के लिए लड़के

के लिए 18 बनाना दोनों चीजें। बीच में कलश रखना। कलश पर प्लेट में दो रोटी रखना रोटी पर चावल दाल और दीया रखना।

जलवाय

जलवाय के दिन लड़की के 14 एवं लड़के के 18 दीए बनाना खारिक 2, पान 2, दूध, पीली चिंदी 3, 5 कंकड की गौर बनाना और गौर पर पीली चिंदी उड़ाना। दो चिंदी जलवायु मांडी उस पर उड़ाना। दो कलश रखना पूजा का लोटा अलग से रखना। जच्चा बच्चा को लेकर देहली तक आवे खारिक फोड़कर बच्चे को किसी को भी दे देवे फिर पूजन करना पूजन के बाद हल्दी से हत्थे लगाए। हत्थे की बीच में कुंकु की बिंदी रखना सुपड़े या थाली में गेहूँ लाना, कोई भी बहन बेटी या सुहागन जच्चा की पाँच बार खोल भरे गोद के गेहूँ में से थोड़े से दाने देहली पर डाले फिर दोनो कलश में पानी भरकर जच्चा के सिर पर उठाकर पूछेगी खाली की भरा तो जच्चा कहे भरा और थोड़ा सा पानी दोनों ओर डाले। फिर जच्चा का भीतर ले जावे। जच्चा जब पूजन करे तब उसके पलंग को खाली नहीं छोड़ना है कोई भी पलंग पर बैठ जावे।

जलवाय चित्र

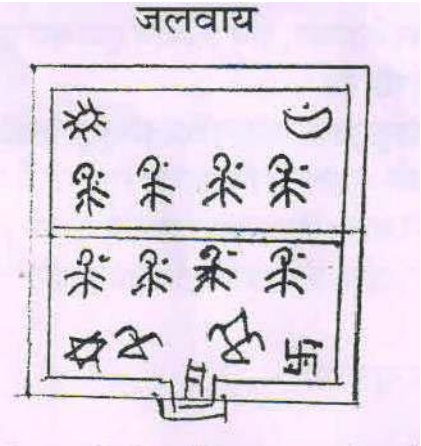

मृत्यु :– मृत्यु होने पर बड़ा या छोट बेटा अग्नि देता है। वह बहू गोबर से जिस जगह पर उनको सुलाया जाता है वहाँ गोबर से रेंकटा खिचती है और बिना पीछे देखे उनके कपड़े लेकर सबसे पहले चलती है। वह कुँए पर कपड़े गीले कर नहाती है और वही कपड़े लेकर उसी जगह पर रख देती है। वहाँ पर मायके से आये चावल, घी, गुड़ से चावल बनाकर कड़वा बनाते है और तीन कौल अग्नि देने वाले के मुंह में लगाते हैं।

दूसरे दिन साड़ी सिमटकर नदी में विसर्जित करते हैं और बाहर भीतर होता है मंदिर में होकर आते हैं। दूसरे दिन दोपहर को उठावना होता है उसमें भी मंदिर जाते हैं। वह हरी भाजी लेकर आते हैं और पानी, लड्डू पीपल के पत्ते पर रखकर छत पर नौ दिन तक रखते हैं। शाम को गरूड पुराण का पाठ होता है और रोज अंधेरा कर दीपक जलाते हैं नौ दिन तक।

दसवें दिन सुबह सुतक निकालकर पूरे घर का पोछा लगाया जाता है। वह घर के सभी छोटे लड़के बाल देते हैं। दसवां, ग्यारहवां घाट पर किया जाता है। (उज्जैन, ओंकारेश्वर में) बारहवें के दिन तवा नहीं रखते हैं सब्जी पूड़ी या दाल बाटी बनाना।

तेरहवें के दिन घर पर श्राद्ध का पूरा खाना बनाकर घर पर ही पंडित या गवरनी को जिमाते हैं। घर पर ही तेरहवीं की पूजा कर तर्पण कर सीधा देकर पूजन करते हैं और फिर पगड़ी की जाती है। धर्मशाला में गरूड़ पुराण का आखिरी अध्याय का पाठ होता है और बाकी सदस्यों जिन्होंने बाल दिए हैं की टोपी ससुराल द्वारा पहनाई जाती है फिर जिसने आग दी है वह सीधा लेकर मंदिर जाते हैं फिर जिसने रेकटा खींचा है वह महिला गेहूँ पैसा लेकर मंदिर जाती है फिर सबको भोजन कराया जाता है।

पन्द्रहवें के दिन श्राद्ध पर छः माही बरसी होती जिसमें पंडित द्वारा तर्पण करवाकर पिंड बनवाते हैं। परिवार के सदस्य पूजन करते हैं। उसी दिन से सुबह तुलसी को पानी व शाम को मंदिर में या घर पर तुलसीजी को दीया जलाया जाता है, बरसी आने तक (11 1/2 महिने तक) बरसी होने पर मृत्यु के पूरे श्राद्ध होने पर श्राद्ध पक्ष में उनका मिला दिया जाता है।

शादी का मुहुर्त

मुहुर्त के पहले अच्छे दिन देखकर या उसी दिन गवरनी को खाना खिलाते हैं तथा कपड़े भेंट करना। मुहुर्त के पहले अच्छे चौगड़ियों में सवा पाव कुंकू, हल्दी लाना और बहन बेटी को झिलवाना। यदि मूहूर्त दोपहर का हो तो सुबह जिस की शादी हो उसको नाड़े की आठ गठान वाली बेल (बेल बिजासरी माता की) पहना दो, लाल कपड़ा ब्लाउज पीस लेना, उसमें सुपारी, पैसे, नारियल, सवा किलो गेहूँ रखना। लाल कपड़े में सब सामान रखकर, दूल्हा दूल्हन को पाटे पर बैठाकर, सब सामान एक बार उसकि सिर से उतारकर नीचे रख दें। सब सामान व बेल निकालकर शीतला माता मंदिर में रख दें।

1. खलमट्टी – टोकनी मिट्टी लाने के लिये सात दुल्हन की, नौ टोकनी दुल्हे की, नाड़ा बाँधना।
2. सुपड़ा 2
3. नारियल 2
4. खलबत्ता, मुसली पर नाड़ा बाँधना
5. मिट्टी का दिया (तेल)
6. आरती – कुंकु, चावल, पैसे, सुपारी, पान, नाड़ा
7. गेहूँ आधा किलो
8. बताशे (एक किलो)
9. हल्दी की गांठ (10–15)
10. गणेश जी
11. मूंग की दाल (मूंगेड़ी बनाने के लिये)
12. पाट (पाटला) चौक के लिये आटा, कलश का लोटा।

प्रोसेस :– सबसे पहले टोकरियाँ, सुपड़ा, खलबत्ता, सब पर नाड़ा लपेट ले दुल्हा या दुल्हन को पाट पर चौक बनाकर बिठाना।

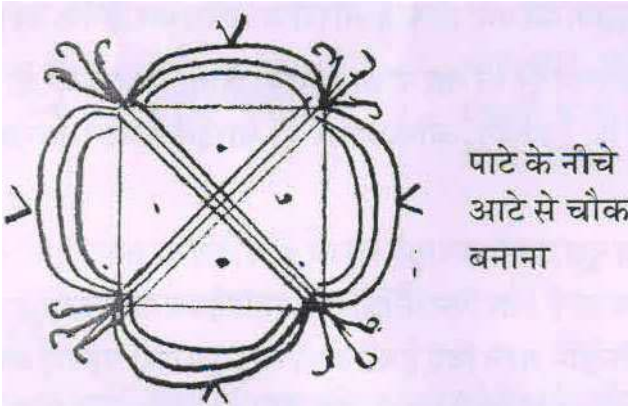

(गणेश के रूप में बालक को भी बैठाना)

पूजा की थाली में गणेश जी बैठाकर पूजा करना, कलश के नीचे थोड़े गेहूँ रखकर, उस पर कलश रखना, कलश में पान रखना और नारियल

गणेश जी की पूजा करके बहन – बेटी, दुल्हे को टीका लगावे। चार बेटी आपस में टीका लगाना एक दूसरे को नाड़ा बाँधना, मुहुर्त में चार बहन बेटी सुपड़ा करती है, सुपड़े में गेहूँ बताशे 4, पैसे 4 रखते हैं। दो बहन आमने सामने बैठकर सात – नौ बार सुपड़ा झाड़ना करती है इसके बाद चार बहन हल्दी की गांठ कूटती है। थोड़े गेहूँ और हल्दी लेकर चिक्सा पीसना। सुपड़े के सिक्के चारो बहन बेटी को दे देना।

खलमट्टी :–

1. गेट के पास मिट्टी रखना।
2. गणेश जी
3. पान, पैसा, सुपारी
4. मुसली
5. गुड़

प्रोसेस :– मिट्टी खोतदे समय पान पर गणेश जी रखकर पूजन करें। मुसली की पूजा करें, पैसा सुपारी गुड रखना, फिर गणेश सहित मिट्टी उचकाकर दुल्हे की माँ की खोल में डालना। दुल्हे की माँ बहन बेटी जिसने खोल में मिट्टी डाली, उसे नारियल पैसे दे। बाकी बची मिट्टी टोकरियों में डालकर घर के अंदर आ जावें। सब मिट्टी को एक जगह डालकर थोड़ा पानी डाल दें। खोल की मिट्टी, सुपारी, पैसा को अलग रखना यह मिट्टी मण्डप में मर्दली के लोटे में रखी जाती है।

गणेश पूजा सामग्री

1. आटा
2. बेसन
3. हल्दी
4. सुपड़ा
5. थाली
6. लोटा गिलास
7. हल्दी, कुंकु, नाडा, माचिस, मिट्टी का दिया
8. लिफाफे 2 1 रूपये या इच्छानुसार नेग

गणेश पूजन विधि :– आटे में थोड़ी हल्दी डालकर 2 1 या 2 3 गणेश बनाना, बेसन की भी 2 1 या 3 2 चानकी (पापड़ी बनाना) बनाकर सुपड़े में रखना या थाली में रखना। सब गणेश को नाड़ा पहनाना या पूरे गणेश पर एक साथ गोला बनाकर नाड़ा पहना दें एवं कुंकू लगा दें। माता के कमरे के बाहर दोनों गेरू से चौकोन लीपना, सुखने पर सीधे हाथ तरफ गणेश बनाना, उल्टे हाथ पर बानी चूनी बनाना। खड़ू से बनाना।

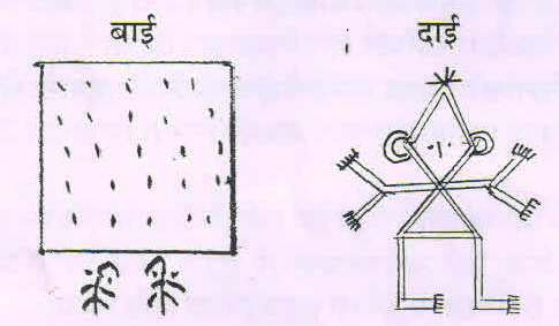

दुल्हा दुल्हन की माँ गणेश पूजा कर गुड़ का भोग लगावे फिर बहन बेटी सुपड़े में रखे गणेश जी बाहर लेकर खड़ी हो जावे दुल्हे की माँ उनकी पूजा कर अंदर माता के कमरे में ले आवे । सुवासिनी को नेक दे, फिर गणेश को भंडार गृह के सामान में डाली दें।

हल्दी की सामग्री :–

1. नारियल 5
2. चावज 10 नाप
3. गुड़, घी
4. पाट (पटिया)
5. कुकर या तपेला, चम्मच
6. गैस

4 नारियल पाटे पर रखना, 10 नाप चावल बनाना उसमें घी गुड़ डालना, नैवेघ लगाना, पानी फिरना, नारियल की पूजा करना फिर चार सुवासिनी दुल्हन को हल्दी लगावें, हल्दी के बाद माँ नारियल उबारे और नारियल को फोड़ लेना, सबको प्रसाद दे देना।

मण्डप की माता सामग्री

1) गेरू खड़ू
2) 32 सिक्के
3) 32 सुपारी
4) 16 नाप चावल
5) 16 नाप मूंग दाल छिलका
6) 2 नारियल सूखे
7) माता का कत्थई कपड़ा
8) छोटा पाट (भगवान के लिये)

मता के कमरे में जहाँ पूजन करना वहाँ पर गेरू से चौकोन लिपना, सुखने पर खडू से दो ऊंगली से बेटिये लगाना, चौकोन के बीच में थोड़ी जगह खाली छोड़ना, माताजी के लिये। दाल–चावल, सुपारी, पैसे, सबको एक परात में मिलाकर रखना। माता का कपड़ा तिकोना बनाकर बीच में दिवाल से सटाकर रखना फिर नारियल रखना, उसके बाद पाटे पर भगवान रखना। दुल्हे या दुल्हन से 5 बार माता भराना बाद में परिवार के सदस्य माता भरें माता का 10 नाप चावल बनाकर घी, गुड़ डालकर नैवैघ लगावें।

मण्डप बनाना :– 16 पूरियाँ बनाना, चार खंबे, आम के पत्ते, रस्सी (सुतली) नाड़ा, माणकखंब, कूंकू, चावल, छेद वाला दिया 4 गाड़गे, गाड़गो में सुपारी, पैसा रखना, नाड़ा बाँधना, चावल पीले करके रखना।

दामादों से हाथ लगवाना :– 4–4 पूरियाँ के बंडल बनवाना, नाड़े से बाँधना दामाद के हाथ में देना, फिर हाथे लगवाना, तिलक लगाकर उनका नेक देना नारियल और लिफाफा। छेद वाले दिये में कौड़ी बाँधते हैं, मण्डप में बीच में बाँधते हैं। ताँबे के छोटे लोटे या गिलास ताँबे का उसमें मोहरत की मिट्टी, सुपारी, पैसा रखकर लाल कपड़े से बाँधकर मण्डप में बाँधते हैं सीधे हाथ तरफ

कुम्हार के बर्तन

1. 24 मटकी (करवा)
2. 32 दीये छोटे
3. 1 बड़ा दिया 5
4. 1 छेद वाला
5. 1 मटकी बड़ी

सौज का सामान :– दो बेलन, दो लकड़ी डब्बी, कुंकू, मेहंदी, नाडा, गुड़, सुखा मेवा खोपरे की सात बाटकी, खारीक, बादाम, मकाना मिसरी, काजू, पिस्ता, काली पोत, चप्पल, दुल्हन का श्रंगार सामान कांच, कंघा, चार लाख चूड़ी, ओढ़नी, दो मोर, कपड़े साडियाँ।

लग्न की देवी :–

1. 36 नाप गेहूँ
2. 10 नाप चावल
3. 10 नाप चावल की पूरी के लिये
4. गुड़ 1 किलो
5. घी 1 किलो
6. तेल 1 किलो
7. जीरा, नमक, दही
8. बत्तीयाँ घी में डूबो कर रखना, लम्बी बत्ती 5
9. माता का फड़
10. कैची, टेप, माचिस
11. कढ़ाई 2
12. कुमर 1

13. तपेले 2
14. बाल्टी 1
15. घड़ा 1, लोटा 2 ताँबे के
16. थाली 2
17. ताँबे की परात
18. कंडा, गुगल, धूप देने का पात्र कुंकु, चावल

36 नाप गेहूँ और 10 नाप चावल दो दिन पहले भूखे पेटे पीसवा कर रखना, माता का फड़ भी बनवाकर तैयार रखना।

मनक खंब को हल्दी से पोतकर रखते हैं उसमें हल्दी से सफेद कपड़ा पीला करके सुपारी, पैसे बाँधते हैं। जो चौकोन जगह छोड़ी थी, उसे कच्चे चावल पीसकर लीपना सुखने पर कुंकु के पुतले बनाना फिर फड़ लगाना, टेप से चिपका देना ऊपर की तरफ।

चावल के आटे की खट्टी पूरी बनाना, दही को फेट कर पानी मिलाकर गर्म करना फिर उसमें जीरा चावल का आटा मिलाना, खिच्ची के समान घेरकर घीमी आंच पर बफाना फिर ठंडा करके रख देना, ठंडा होने पर हाथ से छोटी – छोटी पूरी बनाना। तेल में थोड़ा घी का छींटा डालकर तलना। गेहूँ के आटे में से लड्डू के लिये थोडा आटा लेकर घी में सेकना, गुड़ का पाक बनाकर ठंडा करके रखना। ठंडा होने पर आटे में मिलाना और लड्डू बनाना 32, ज्यादा हो तो कोई बात नहीं । आटे के 32 दिये बनाना बाकी आटे की पूरियाँ बनाना 10 नाप चावल बनाना।

ताँबे की परात में पूरी, लड्डू, खट्टी पूरी जमाना थोड़ी पूरी ऊपर से रखना फिर दिये रखना। दियों में बत्ती रखना, चावल में घी, गुड़, डालना।

माता की बे भरना :– मटकी (कडवा) में नाडा बाँधना 5 मटकी मे ंसुपारी पैसा रखना 4–4 करवे के 5 वें भराती है। सीधे हाथ तरफ तीन उलटे तरफ रखे भरते है। ऊपर वाले करवे में सुपारी पैसा रखते है बड़ी मटकी में चावल भरकर ऊपर दिया रखकर उल्टे हाथ की वे के पास रखते है।

खाना बनाने के बाद मानक खंब पीले चावल में निवतते है। रूकड़ी निवतने में बडे छोटे जो स्वर्ग सिधार गये उनका नाम लेकर उनको याद किया जाता है। चार सुवासिनी दुल्हन – दुल्हे को तेल चढ़ाती है उसके बाद हल्दी लगाते है। मण्डप में चारो कोनो पर 4 करवे रखना, उन में सुपारी पैसा डालना। पानी भरके रखना, हल्दी के बाद नहलाना फिर करवे का पानी डालना मामा जवल उड़ाकर जीजाजी ले जाते हैं। फिर 32 दियो को जला देना फिर दुल्हन को लान, माता पिता को माताजी के पास बैठाना, दुल्हन आकर सबसे पहले दियो को और देवी माँ देखे फिर मम्मी पापा को उसके बाद धूप देना ठाट धुमाना, फड माता के ऊपर तीन बार घी की धार छोडना और उदो–उदो बोलना। बे के ऊपर के सभी दिये भी जलाना।

लंच से पहले :– थाली का नैवैघ लगाना ।

बाने की तैयारी :– टोपी, टॉवेल, सूखा मेवा (मकाना, काजू बादाम)

घोड़े की तैयारी :– चना दाल, काजल, भाभियों का गिफ्ट।

बेड़ा :– घड़ा दो लोटे, साड़ी, नारियल, घड़ी चेन, अंगुठी।

लगन :– परघने का सामान।

सुजा, खई, एक सिक्का, मुसल, सुपड़ी।

चवरी का सामान :– लडकी वालों की ओर से समस्त व्यवस्था की जाती है।

विदाई :– साल की धानी, दही।

देवी उठाने के लिये मटकी का चावल बनाते हैं।

संकलनकर्ताः
भारती राजकुमार राठी,
पड़ावा, खण्डवा
मो. 94794 31007, 079999 36432
निवासः 0733–2223007

श्राद्धः परिवार में जब कोई शान्त होता है, देवी नहीं पूजना, क्योंकि लगता नहीं है 1 साल तक और श्राद्ध और किसी का हो वो नहीं करना। सिर्फ सीवा देना, धूप देना, भेरू बाबा भी नहीं पूजना। सोलह श्राद्ध में भी नहीं करना। और जो शान्त हुआ है उसका हर महीनें – 15 दिन जैसा भी होता है करना, 1 साल तक। 1 साल बाद श्राद्ध में मिलाना। पहले दिन पूनम के दिन पित्रृ को कहना और श्राद्ध करना, फिर तिथि का सोलह श्राद्ध में ही करना। इस तरह से तीन बार करना मिलाते हैं। पहले साल जब और आखिरी दिन भी इसी तरह करना। इसी तरह गुड घी की धूप, सीध, गाय को रोटी देना और आखिरी दिन पुरखे भी तीनों दिन बनाना आटे से और आखिरी दिन सब ले जाकर खमाना, डब्बे में ले जाकर। पानी लेकर आना और छींटे घर में देना।

सुबह बच्चों का टिफिन बना सकते हैं।

सेलह श्राद्ध पुरखेः

चौखुट लिपकर टिपकी पॉच, कुंकुं, चावल, दीया, अगरबत्ती।

आते–पुरखे पूनम के दिन नैवैद्य सब खीर, भजिये बनाना। सीधा सजाना। गुड घी की धूप देना। जब पितृ को बिठा देते हैं तो धूप पर गुड घी ही डालना और सब कोल धूप पर नहीं चढ़ाना। सीधे पर अलग से पानी फेरना। ब्राम्हण को खाना खिलाना। सीधा देना। दो पूड़ी गाय को देना, भगवान को नैवेद्य बताना।

तीर्थ में पुरखों को नहीं बिठाया हो तो थरोड़ी सजाना, दो पूरी, भजिये थोड़ा सा दाल चावल, खीर, सब्जी। ढाकना पानी फेरने के बाद दूसरे दिन गाय को देना। थाली सजाना, दो पूरी, गाय, कुत्ता, कौआ को देना। धूप पर गुड़ घी कोल डालना, पितृ को जिमाना।

चैत्र की अष्टमी–नवमीः दोनों दिन दालबाटी, चावल बनाना, एक ही टाईम सुबह बनाना। घी का बघार लगाना और चौखुट लिपकर टिपकी लगाकर गुड घी की धूप देना। कुंकुं चावल घी का दीया और एक एक नारियल फोड़ना। अष्टमी का उपवास करना।

देवी–देवताओं के नियम व विधिः

चैत्र की सप्तमीः घुंघरी, लापसी, चावल, मीठी पूरी, चरकी पूरी, चने की दाल भिगोना, सुबह से या शाम को। दो ताव, दो नारियल, एक नारियल खेलता छोड़ना, एक फोड़ना। कच्चे चावल दही में भिगोना, पूजा मिट्टी का दिया जलाना नहीं। अगरबत्ती तथा हल्दी के पांच–पांच हाथे कुकुं की टिपकी। माचीस, गैस नहीं जलाना।

आषाढ़ की आखिरी पूर्णिमाः भेरू बाबा की गुरू पूर्णिमा

सादी पूजाः तवा और हरी सब्जी छोड़कर सभी चीजें जैसे – रोटी, टापू, बाटी, खीर, घी की पूरी, घी का बघार। दाल बाटी चावल बनाकर। धूप घी गुड से देना और एक

नारियल फोडना और एक टाईम खाना बनाना। विट्ठल मन्दिर में पूजा की थाली, चिरोंजी और नारियल का प्रसाद चढ़ाना। दक्षिणा।

श्रावण की नागपंचमीः अमावस्या के पॉच दिन बाद – थोड़ा सा आटा, घी और गुड़ तीनों को मिलाकर कुलर बनाना। कच्चा दूध, अगरबत्ती, सिन्दूर, नारियल फोड़ना। रामेश्वर के नागबाबा के मन्दिर में। और घर पर दाल बाफले या फिर टापू बनाना और घी गुड की धूप देना।

नागपंचमीः दूसरी नागपंचमी कुलर, सिन्दूर, दूध, अगरबत्ती और देव राखी चढ़ाना ओर दाल बाफले, टापू वैसा ही बनाना। धूप देना।

ऋषिपंचमीः सभी खाना बनता है। यदि उपवास है तो सिंगाड़ा आटा, भगर या साबुदाना। घी में बनाना, खाना, चौखुटा लिपकर पाटा रखना।

पूजाः पाटे पर ऋषि चन्दन से बनाना। सीधा, जनवाई

चन्दन से

अतिझाड़ा

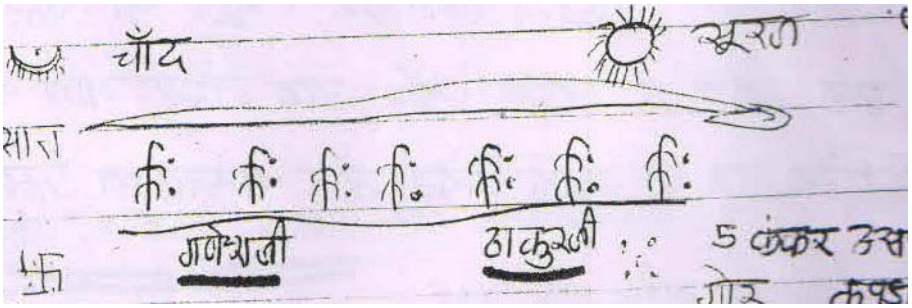

अतिझाड़ा सात डंडी, पत्ती सहित रखना। पाटे पर ऋषियों के थोड़े से ऊपर रखना। चॉद, सूरज बनाना। नीचे सातिया और गोर बनाना और सात ऋषि बनाना चंन्दन से और उसके पाटे के सामने गेहूँ रखकर कलश भी रखना। पूजी भी नीचे एक लाइन खींच देना। काड़ी से बनाना। गणेशजी और ठाकुरजी चावल के दाने रखकर बिठाना। पहली बार लेते हैं तो एक नारियल और एक पीस, पंचखोखा, जनवाई चढ़ाना। पीस अतिझाड़ा पर चढ़ाना और नारियल बाजू में रखना। पंचखोखा गणेशजी के सामने रखना। साइड में गोर कुंकुं की पॉच टिपकी रखना और सभी की पूजा करना।

सूखीः भगर, साबुदाना सब पर चढ़ाना। फल का नैवेद्य बताना और आरती करना शंकरजी की। पूजा, दूध, दी, फल सब रखना और बाद में पोथी सुनना और फरियाल नैवेद्य करना। दोनों टाईम करना और गोर धो लेना। गमले में डालना।

खाने काः इस दिन उपवास रहता है। भगर या साबुदाना, सिंघाड़ा आटा घी से बघारकर और तुराई की सब्जी भी खाते हैं और कुछ भी फरियाल कर सकते हैं। तेल भी ख सकते हैं।

नहानाः 108 अतिझाड़ा की पत्ती, 108 लकड़ी के दातून पहले करना। दही मिटटी सिर में लगाना, फिर 108 रखकर नहाना और यदि नहीं हो तो 21–21 भी ले सकते हैं। दोनों को एक साथ सिर पर 25 फिर कंधे पर 25, दोनों घुटने पर 25–25 और पैर पर 25–25 और एक से दातून और कुल्ला करना।

भादों की सेली सप्तमीः दो नारियल, दो ताव, सादी पूरी, चरकी पूरी, मीठी पूरी, चना दाल भिगोना। कच्चे चावल धोकर दही में भिगोना। सादी पूजा, कलश, दीया मिट्टी का। हल्दी ज्यादा हाथे के लिए ले जाना। पास पास गैस, माचिस नहीं जलाना। एक मुट्ठी दाल रात में भिगोना।

भादों की बारसः मूंग और रोट बनाना और दौरे छुड़ाना, सीधा ले जाना। 5 रोट एवं 5 दीये आटे के, घी की बत्ती और मूंग रखना और सूत रखना, घी का बघार लगाना, दोनों टाईम खाना बनाना। सिके हुए रोट, गाय बीज के। गेहूँ, मूंग, आरती की थाली लेकर जाना। दौरे छोड़ने ।

क्वारः श्राद्ध, चवत का, अष्टमी का माय का और चौदस दादा का गुड़ घी की धूप देना।

क्वार की अष्टमीः तुअर दाल, बाटी, चावल, घी का बघार और चटनी। गुड़ घी की धूप एक नारियल फोड़ना और एक टाईम खाना बनाना। चौखुट लिपकर दीया जलाकर एक नारियल भवानी माता के यहॉ फोड़ना। तेल का फरियाल नहीं, दोनों दिन नमक नहीं।

नवमीः तुअर दाल, घी का बघार, बाटी चावल, एक नारियल फोड़ना। चौखुट लिपकर धूप देना। कुंकुं चावल, दीया जलाकर दोनों टाईम खाना खाना। मन्दिर में नारियल चढ़ाना।

कार्तिक चवला बारसः ज्वार की रोटी और चवले घी का बघार दोनों टाईम खाना और पूजा गाय–बछड़े की और हाथे लगाना तथा कहानी सुनना।

दूल्हा देव की कार्तिक कीः दिन में उपवास करना और शाम को दालबाटी, चावल बनाना। घी का बघार लगाना। घी पूरी दाल खीर भी बना सकते हैं और सब्जी नहीं बनती है। शादी हो तो वो ही उपवास करें। कुंवारे बच्चे के लिए दिन में भी खाना बना सकते हैं। शाम को पहले भाई दूज का खा ले फिर खाना खाएँ। चौखुट लिपकर कुंकुं, चावल चढ़ाना और दीया जलाना, धूप देना, गुड़ घी की, नैवद्य फेरना, आदमियों ने ही पूजा करना, बाई ने नहीं। पूजा के बाद हाथ जोड़ना बाईयों ने। नारियल फोड़ना। सुबह दाल चावल, खिचड़ी घी से बघार कर सकते हैं।

फाल्गुन की होली की दूजः सुबह ही दालबाटी चावल बनाना, धूप देना। गुड–घी की और एक नारियल फोड़ना। एक टाईम बनाना और उपवास करना।

सावन की जीरोती अमावस्याः तवा नहीं रखना, कढ़ाई में रोटी बनाना, टापू, बाफले, पूरी, दालबाटी बनती है। सब्जी नहीं बनती है। खीर, घी का बघार, चावल दोनों टाईम बना सकते हैं। धूप गुड़ घी की। बासी एक दिन पहले की सब्जी खा सकते हैं और तेल का अचार भी।

पोला अमावस्याः इस दिन बैल लाना, पाटे पर रखकर पूजा करना, सींग पर राखी बांधना और धूप देना। पूरण या मीठे का भोग लगाना।

दीवाली पर गणेशजी बिठानाः धनतेरस से दूज तक तवा नहीं रखते। चतुर्थी के दिन उल्टे हाथ में गेहूँ पर पानी का कलश, उस पर नारियल टिपकी लगाकर गणेशजी बिठाना। जनवाई पंचखोखा, पॉच लड़डू, मोदक रखना, धूप देना, गुड़ घी की। आते जाते दोनों समय धूप देना। 5–5 लड़डू रखना। उनके साथ खमाना।

भेरू बाबा पूजना (पूर्णिमा)

थाली में रखना दीया, गुड़–शक्कर

लापसी, दालबाटी, घी की पूरी बनाना, कुंकुं, हल्दी चावल

विधिः शौल्या में गेहूँ, अंदाज से पीसना। ग्लाइडर में फिर उसी आटे की लापसी, 10–12 पूरी शुद्ध घी की। 10–12 बाटी बनाना। दाल चावल बनाना। और दीवार पर पहले पुताई करना। दीवार पर चौखुट लिपकर सिन्दूर घी में घोलकर और दीवार पर त्रिशूल बनाना। कुंकुं की टिपकी पॉच लगाना।

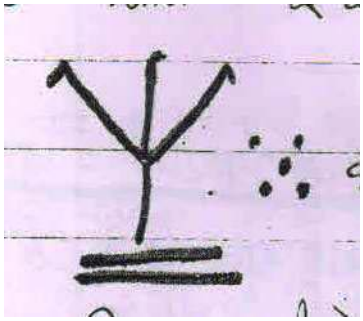

और नीचे चौखुट लिपकर पानी फेरना। उस पर कुंकुं की 5 टिपकी लगाना। फिर पाटला रखना। उस पर सवा कटोरी गेहूं सवा पाव रखना और उस पर बीच में एक पूजा की पैसा सुपारी रखना। 8 पथ्वारी कंकर रखना। चारो खूंट पर 8 बाटी रखना। नैवेद्य बताना। पूजा करना। एक नारियल फोड़ना। कुंकुं, हल्दी सभी दीया, दूध कटोरी में। चार–चार पूरी पर नाड़ा पैसा बांधना, फिर दो कन्या के पैर थाली में रखकर पानी और दूध से धुलाना और कुंकुं हल्दी लगाना। चार–चार पूरी में नाड़ा पैसा बांधकर दोनों कन्या के पहले पूजा के बाद डांडे की पूजा करना। फिर कन्या के पैर धुलाना। उन कन्या को दो को उधो–उधो बुलाना और खाना खिलाना। और इस पानी को घर में छिटना और गमले में खमा देना और दोपहर में गेहूँ और सुपारी गाय को खिलाना या पानी में खमा देना। और खूंट की बाटी उठाकर सुबह ही खा लेना। खमाने जाते समय उस जगह पर घी का दीपक जलाकर जाना और थोड़ा सा पानी लाना घर में छींटे।

देवी पूजने की अष्टमी–नवमी

गेहूँ इच्छानुसार 1 किलो या सवा किलो अलग–अलग पिसाना। ज्यादा–कम भी कर सकते हैं।

अष्टमीः 1 किलो या सवा किलो आटा पिसाना, दालबाटी बनाना और चावल अंदाज से। अष्टमी की पुताई करना या धोना, फिर आटा दोनों दिन का शौल्या की साड़ी से पिसाना। एक टाईम खाना खाना।

विधिः सबसे पहले चौखुट लिपकर कुंकुं की पॉच टिपकी लगाना या सातिया बनाना दोनों तरफ। अपन देवी करे तो दो नारियल अष्टमी दो नारियल नवमी के दिन। दूसरे घर देवी करे तो एक एक नारियल चढ़ाना।

दोनों तरफ पानी का कलश ऊपर। आम के पत्ते दोनों में

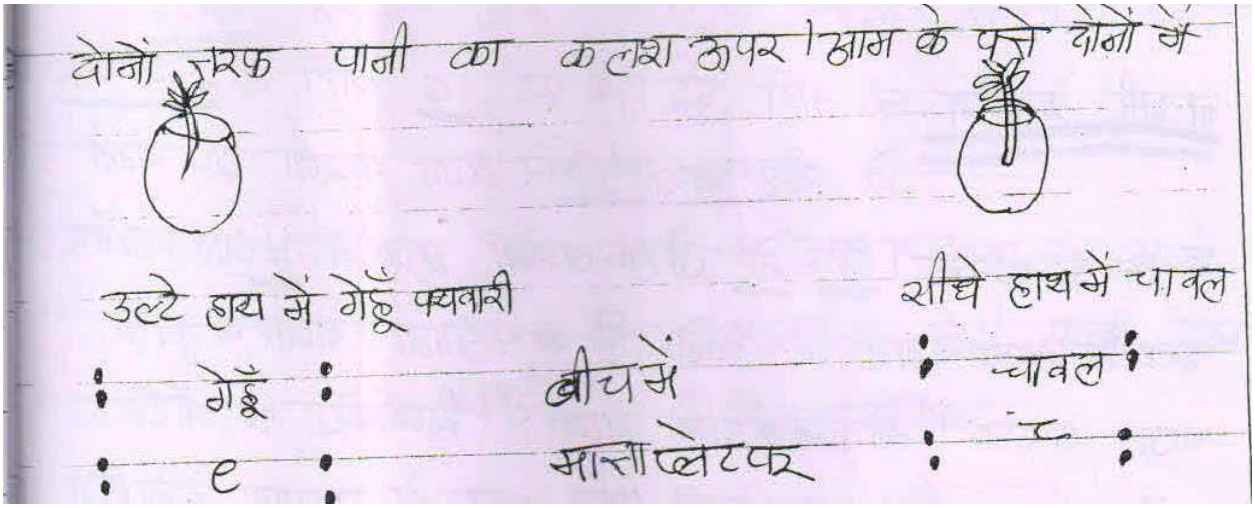

नवमीः पाव भर गेहूँ पर 9 पथवारी धोकर और पाव भर चावल पर 8 पथवारी धोकर रखना। माता दूध में धोकर बीच में प्लेट में रखना और दो–दो बाटी से चार–चार खूट 16 बाटी के दोनों तरफ भरना और कुंकुं चावल, शक्कर गुड़ रखकर पूजा करना। पहले धूप देना गुड़ घी से फिर अम्बेजी की आरती करना। फिर बाटी चावल दाल सब पर पानी फिर कर खा लेना। चावल दाल अंदाज से बनाना फेंकना नहीं रखना भी नहीं। नारियल फोड़ना पूजा के बाद। प्रसाद नहीं खाना। अष्टमी को नवमी को खमाने के बाद प्रसाद खाना।

नवमी के दिनः भरी हुई देवी पर 16 बाटी के 2–2–2–2 के खूंट भरना। और पूजा करना। धूप देनों आरती करना। दो–दो जेल बनाना, एक में 5 गठान और एक में सात गठान की दोनों ही पहनाना। माता में नया नाड़ा डालना। बाद में भी डाल सकते हैं। फिर खूंट की बाटी वगैरह उठाकर खा लेना। फिर बाद में प्रसाद दोनों दिन का खा सकते हैं। और देवी 5 बजे तक खमा देना। उस जगह पर चौखुट लिपकर 5 टिपकी लगाकर दीया लगाकर देवी खमाने जाना। बच्चे बुटाना हो तो दो–दो नारियल चढ़ाना, दूध भात खिलाना।

जन्माष्टमी

सुबह फरियाल और रात में खाना खा लो।

डोल ग्यारस

सुबह फरियाल और शाम के समय खाना खा सकते हैं। गेहूँ और फल या नारियल और पूजा की पेटी पानी लेकर जाना और यशोदा मैया की गोदी भरना।

भादौ

गणेश चतुर्थीः गणेशजी बिठाना।

विधिः जनवाई, पंचखोखा 5 पान, पानी भरा कलश, नीचे गेहूँ। चतुर्थी के दिन उल्टे हाथ में जनवाई पिनाना और पंचखोखा रखना। गेहूँ थोड़े से उस पर कलश पानी भरा कुंकुं की पॉच टिपकी, कलश में नाड़ा बांधना, उसपर 5 पान, नारियल पूंछ ऊपर। और घी गुड़ की धूप देना। 5 लड्डू बाजू में गुड़ के रखना और आरती करना। जाते दिन भी सुबह 5 लड्डू पूजा करके नैवेद्य रखना और बिना करना।

जमाल की या शादी

गवरनी जिमाना

खाजा – लापसी का मोटा पिसाना

सवा किलो गेहूँ जरा सा पानी का हाथ लगाना आटा पिसाना। खाजा लापसी के लिए शुद्ध घी, गुड़, मूंग की दाल चावल। पान एक डंडी वाले उसपर लोंग इलायची, टिकी पत्ता, पान–12 डंडी नोक वाले, 4 सिंघाड़े, नाड़े की आटी, 11 लोंग। मेहंदी भी घुलाना।

एक दिन पहले कपड़े डालना। सिर से नहाकर गीले आग से शाम को थोड़ी सी मेहंदी घुलाना हाथ में बोटे के लिए। शाम के बाद परी माजी के गीत गाना 5–10–15 जितने भी और मेहंदी लगाना, बोटे भरना। 10 गवरनी सुहागन दूसरे दिन खाजा लापसी चावल मूंग की दाल बनाना और दूसरा खाना अलग। सभी बाइयों को थोड़ा सा नैवेद्य परोसना और अलग का पानी। सब मिजने चालू कर दे तब दूसरा खाजा दाल, चावल पूरी सब्जी कड़ी मीठा नमकीन जो भी परोसना हो, वह सब मिजने के बाद सबको 1 टीकी लगाना। पत्ते में से मेहंदी पान वाला व्रत देना और पैर पड़ना। फिर देना, गीत गाना। गवरनी जिमना चालू कर और जमाल उतारना चालू करे फिर जरा सी हल्दी लगाये। सिर पर बच्चे के।

सगाई में: 5 नारियल लड़का वाला हो या लड़की वाला हो तो भी लेना। फिर गीत गाना। परिमाजी, दूल्हा देव, माता, छीक, सती, बधाई।

सवा महीने: सवा महीने बाद भूखे पेट सुबह तक भगवान के सामने 5 नारियल फोडना। प्रसाद खाना।

शादी: के 5 नारियल लगते हैं। पहले सोंज के पहले झेलना पल्ले में, देवी देवता का नाम लेकर फिर सोंज चढ़ाये।

गवरनी जिमाना: शादी या जमाल की एक जैसे जमीन पोता फेरना। कुकुं की 5 टिपकी लगाये। मेहंदी भी घुली हुई रखे। फिर पाट रखे उस पर बीच में दो पान पे लाख 4 सिंघाडे, 1 लोंग, 1 इलायची, 1 नाड़े की आटी, 1 टिकी रखे। सभी थाली में सजाये। 10 पान पर सब रखे, डबल पान पर भी सब रखे। डबल पान वाला पाटे पर बीच में रखे, फिर कोने खूंट भरे। 4 खाजे लापसी चारों कोनों में रखे 16 खाजे।

शादी में: मण्डप :

देवी: 10–10 गिलास याने पॉच किलो गेहूँ पीसाना। इस आटे के थोड़ी सी हल्दी मिलाकर आटे के 32 गणेशजी बनाना और खाजा लापसी बनाना और थोड़ा सा चावल और थोड़ी सी मूंग की दाल बिगर बघारे की सिर्फ हल्दी नमक डालना और खाना।

देवी भरना:

4 कुलिया ढाई कि. गेहूँ 1 दीया जैसे गेहूँ	खाजा लापसी और छटारना में खाजा लापसी और उसके उपर दीये रखना। बीच में बड़ी कुलिया और मिट्टी का दीया। तेल का जलाना।	ढाई किलो चावल

लगन के दिन: ढाई पाव आटे की खाजा लापसी और 14 रोटी कंडे पर बनाना। 32 दीये बनाना आटे के। थोडा सा चावल, मूंग की दाल बघार नहीं। सिर्फ हल्दी नमक की । पहले दिन की देवी पर उसी पर ढाई किलो गेहूँ, ढाई किलो चावल से भरना।

और आज के खाजा लापसी दूसरे दिन खाना। दीये और चावल, दाल, गाय को उसी दिन दोपहर छः के पहले खिलाना।

तीसरे दिनः देवी उठानाः थोड़ा सा पतला बेसन बनाना उसमें दही, मही के छीटे देना बेसन में और उकालना ओर बेसन के छींटे देकर देवी माता उठाना। देवी को छींटे देना।

लगन के दिन छटारने पर खाजे जमाना और 14 रोटी यानि 7 जोड़ी, उस पर लापसी रखकर जमावे। उस पर आटे के दीये लगाये और दूल्हा–दुल्हन जो भी नहाये और आखें बन्दकर लाये और दीये जलाये, आंखे खोले, पूजा करे, मां–बाप को देखे।

शादी में पहलेः जिस दिन माता सीतला पूजाती है उसके पहले दो जेल बनाना नाड़े की एक जेल में 5 गठान, दूसरी में सात गठान बांधकर लड़का हो या लड़की, रात में पहना दो या सुबह नहाकर और सवा पाव चावल और एक नारियल लाल कपड़े में रखकर जेल उतार दो। पाटे पर बिठाकर।

सीतलामाता की पूजाः सुबह ही करना। दो ताव, दो नारियल, पान, लाल–सफेद 1–1 झंडी बनाना। पंचखोखा, थाली में कुंकुं, हल्दी, गुलाल, सिंदूर, अबीर, चावल, दीया मिट्टी का। पानी का लोटा। लड़का–लड़की कोई भी। लाल–सफेद झंडी पकडाकर मंदिर जाना।

खलमिट्टी का मोहरतः सुबह दो गवरनी 1 सुहागन, 1 विधवा को जिमाना और दोनों को साड़ी पीस, बताशा और 5–10 रूपये, जो इच्छा हो। सुबह पहले 5 नारियल भगवान का यहॉ पानी फेर कर देवधामी के लिए रखना और सवा महीने बाद भूखे पेट फोड़ना। गीत गाना।

मेहरत में: कुकुं, हल्दी, चावल, एक नारियल, 10 पान डंडी वाले आरती में एक सीलक खीचे जिसको 1 नारियल सवा किलो गेहूँ। पहले मोहरत करे फिर सिलक खीचे। एक नारियल मिट्टी खोदने वाली को। लड़की की 7 हल्दी गठान, लड़की की नौ हल्दी की गठन। नौ टोकनी, 7 टोकनी खलमिट्टी के लिए। पहले टीका लगाकर पाट पे बिठाये, फिर हल्दी कूटे, फिर सिलक खीचे। सिलक के बाद उसकी गोद भरे। 1 नारियल आधा किलो गेहूँ से फिर खलमिट्टी लावे। चार सुहागन टीकी लगावे एक दूसरे को नाड़ा बांधे, दो सुपडे से धान झाडे, फिर हल्दी कूटे मिट्टी लावे।

आधी दीवार पानी से पोंछ लें।

मंगलवार पीसाकर गुरूवार जिमाये। खूंट भरने के बाद पूजा करे, धूप दे और सभी पूजा करे। फिर नारियल फोडे। कुंकुं लगाये सिर पर अपने घर गवरनी हो तो 2 नारियल या फिर एक गवरनी जिमले जब हाथ में मेहंदी दे। और टीका लगाये और भरा बांध दे। गीत गाये और सब होने पर नारियल की नट्टी निकाले। पाटे पर पान ये रखा हुआ खमाये और खाजे खा ले। सब पाटे का सब भर ले और पानी फेर कर दीया लगाये। जाते समय। और कुंकुं चावल साथ में ले जाये। वहॉ पड़े गोबर पर कुंकुं चावल चढ़ाये।

खूंट भरे 4–4–4–4 थोड़ी सी लापसी रखे। चारों कोने पर पाट पर बीच में पानी दो थाली सजाना। एक में कुंकुं चावल गुड शक्कर दीया घी का तैयार रखें। एक थाली में नैवेद्य खाजा 5 और दो पूरी रखे। चावल, मूंग कीदाल में बघारना नहीं। सब डाले हल्दी मिर्ची नमक और लापसी नैवेद्य। धूप रखे और पूजा करे और जेल बनाये और गवरनी जिमाये। गवरनी जिमाने से पहले पैर धुलाये और जिमाये। हाथ एक बर्तन में धुलाये। पत्तल उठाये और पहले घुली मेहंदी सभी को हाथ में दे, फिर

और एक टीकी पत्ता बांध हाथ में दे और पैर पड़े और परिमाजी का गीत गाये। पूजा होने के बाद नारियल फोड़े। एक–एक चिटक पान पर रखकर दे सभी। जमाल निकले तो घर से दो नारियल और सबने 1 नारियल चढ़ाये। आटे की रोटी बनाना कच्ची, हाथ से लाल कपड़े में रखकर जमाल झेले। मेहंदी सुबह भी घुलाये और एक दिन पहले रात में हाथों में लगायें।

परिमॉजी–1

1) ओ परी पॉच सुपारी न पान का बिड़िला आई हो सभी घर की मान हो मोटा की जायी। बात करा तनम न की। बात करा तो छतिया फटे भर–भर आए दोय–2 नैना हो मोटा की जायी (टेक) सभी नाम

2) हो परी चूला पे खिचड़ी खदकती मेली रादड़िया जिमायो क्योंनी आया हो। मोटा की .....

3) हो परी पलना में बालूड़ारोता छोड़ा बालूड़ा समझाई क्योंनी आया हो मोटा की जायी .....

परिमॉजी–2

1) मैं तो नारेला लेकर कबसे खड़ी बतला दो सखी परियों की गली–2, अरे इधर गली अरे उधर गली वो तो निंबुआ का पेड़ अनार की कली –2

2) नाड़ा 3) मेहंदी 4) टीकी 5) चूड़ियॉ 8) सिंगाड़ा 7) लौंग 8) इलायची

9) पान

परिमॉजी–3

1) धारा जाजो न सुन्नो लाजो। परिमाजी ओई की बम्भर घड़ाओ। हो मोटा की जायी चॉदी ऊॅजली न सुन्नो निर्मल।

2) झाला 3) हार 4) चूड़िया 5) पायल 6) बिछिया 7) शालू रंगाओ

8) थेली सिलाओ

परिमॉजी–4

अगर चंदन की नदी (धारा) बहे हो जो म्हारी परिमॉजी नाहवे नाहिव न धोयी परी मॉजी बाहर हो उब केश सुखावे। 1) आड़ा नाम फिरी रहा हो मॉजी म्हारो नेग चुकाओ। खाजो तो पीजो बेटा बिलसजो अम्मर टोपी तुम्हारी। 2) सभी का नाम

3) आड़ी सगली बहू फिरी रही हो मॉजी म्हारो नेग चुकाओ खाजो तो पीजो बहुअण बिलसजो अम्मर बालूड़ा तुम्हारा

4) अड़ि सगली बाई फिरी ..... बेटी अम्भर आरती तुम्हारी

परिमॉजी

1) ससराजी बरस रहा रतनार पड़ी बहुअण आज की रैना बसी जोओ की हो रतनार पड़ी। रात रेवांगा की ससराजी पहला पवा में रतनार पड़ी हमारी संग सहेल्या जोवे बॉट कि हो रतनार पड़ी।

2) घोड़ीला बैठन्ता ज्येष्ठजी बरस रहा रतनार पड़ी। लाड़ी आज की रैना बसी जाये की हो रतनार पड़ी। रात रेंवागा ज्येष्ठजी पहला पवा में रतनार पड़ी।

3) गेंद खेलन्ता देवराजी बरस रहा रतनार पड़ी। भाभी आज की रैना बसी जाओ की हो रतनार पड़ी रात रेंवागा देवराजी पहला पवा में रतनार पड़ी।

4) फॉग खेलन्ता नंदोइजी बरस रहा रतनार पड़ी। सालाहेली आज की रैना बसी जाओ की हो रतनार पड़ी रात रेंवागा नंदोइजी पहला पवा में रतनार पड़ी।

5) गेंद खेलन्ता पुत्रजी बरस रहा रतनार पड़ी। बहुअण आज की रैना बसी जाओ की हो रतनार पड़ी। रात रेंवागा पुत्रजी पहला पवा में रतनार पड़ी।

6) सार खेलन्ता साहेबा – गोरी

गीत गाना (बधाई)

परिमाजी : चलो परी चलो परी बागा में चाला। –2
बागा में जइने एली कई हो करोगा। तो

1) इल–मिल फूलड़ा तोड़ा ओय ली आज परि घर अनंद बधाओ। फूलड़ा तोड़ी न एली कई हो करोगा तो इल–मिल गजरा गूंथा ओयली आज परी घर – (टेक)

गजरा गूँथी न एली कई हो करोगा तो इल–मिल पोचा बांधा ओयली। (आज टेक)

पोंचा बांधी न ओयली कई हो करोगा तो हिल–मिल महल सिंघारा ओयली (टेक)

म्हल सिंघारा एली कई हो करोगा तो हिल–मिल लाल उपावा ओयली। आज परि घर अनंद बधाओ। लाल उपायने एली कई हो करोगा तो सुसरा रो वंश बढ़ावा ओयली। वंश बढ़इन एली कई हो करोगा तो छोटी–मोटी कुल बहू लावा ओयली। कुल बहू लइना ऐली कई हो करोगा तो छोटी–मोटी पकल्या सा दाबा ओयली आज (टेक) पगलिया दाबीने एली कई हो करोगा तो मुड़–मुड़ आशीष देवा ओयली। आज परी घर अनंद बधाओ।

1) छींक : जसी टूटी राजा की कंवर पे–2 जसी हमारा चून्नू सनी–2 टूओ मेरी माता–2 छींक भवानी का सांचा पडछया। साचा ओ पडछया, न खड़ा हो जंजीरा। जर–जर तोडू जंजीर मेरी माता छींक भवानी का सांचा पड़छया। जरी टूटी सभी नाम .....

2) म्हारी छींक– सारू अम्बर घड़ाव बेटी बन्जारी की। बन्जारा की ओ नायक खेड़ा की जा जंवर खेले छींग माता ओ राज बेटी बन्जारा की। चूड़िया, कुंडल, टीका, पायल, बिछिया, साड़ी रंगाव, थैली सिलाव।

1) दूल्हा देव – अगरचंद चाल्या देव क्या हो देव उनकी थाली में प्रसाद उनकी थाली में प्रसाद राजनी हो देव धर्मिक सवारना दुख जाय बाजत बाजे बंसुरी हो देव उड़ता सा आवे रे निशान मोटाराजनी हो देव धामिक .....

1) पहले परि 2) देव 3) भेरू बाबा 4) छींक 5) माताजी 6) सती

1) भेरू – ससरा मनावेरे भेरू सासू मनावे ज्येष्ठ मनावे रे भेरू जिठानी मनावे। नवी–नवी लगा तुम्हारा पाव रे म्हारा कुल का भेरू योगण गाजे योगण गाजे रे भेरू हम भी मनावे हम भी मनावा रे भेरू तुम भी मनावा। झांझर की पड़ी झंकार रे म्हारा कुल का भेरू नौबत बाजे।

<u>माता</u> 1) मैं सुमरू .....

2) पीले शेर .....

2) भेरू – ओटला पे बैठिया भेरूजी बंसूरी बजाय बंसुरी बजाय भेरूजी घुँघरू बजाये। आती सी सुतारन मोहे मत वाल – काला रे मतवाला भेरूजी लाडला हो राज। आती से लखेरन, कसेरन, सुतारन, कुम्हारन।

3) छींक– चीनी फथर का बनाया हनुमान चॉदी की बनाई छींक माता–2 ।

हमरा ससराली पूजे हनुमान सासूजी पूजे छींक माता।

ज्येष्ठ, देवर, नंदोई, पुत्र, नाती।

सती– सती माता हो सत कहयो ही न जाये हर हर बोयो ही न जाये लोग हसायी माता जनकरियो। शीशरा भम्मर घड़ाव कानरा कुण्डल घडाव लोग हंसायी माता जनकरी। गलरी माला घडाव हाथ रा चूडिया घडाव लोग हसायी।

सतीमाता – म्हारी सासूजी पागा धरियो होय सो लाव पागारो ऊपर सत करा। म्हारी गेली बहुआ मुरक अजान पागा सो उनका संग गया। कान रा कुण्डल धरियो होय सो लाव कुण्डल तो उनका संग गया कंठी–चूडिया। सती माता हो सत कहयो इन जाये। हर–हर बोयो इनज ाय लोग हंसायी माता जनक करा।

दुल्हा देव

1) दुल्हेजी– तुम्हारा शीश री पागा री पागा रोपेंच भारी छेजी राज म्हारा दुल्हादेव। हजारी दुलडो छोगो छेजी राज म्हारा दुल्हा देव।

2) देवजी तुम्हारा कान रा कुण्डल हो कुण्डल रो मोती भारी छे जी

3) गला–माला रो मोती भारी छेजी

4) दो हाथरी घडिया हो घडियारी चैन भारी छेजी।

5) देव पावरी पावडी हो पावडी की चाला भारी छेजी।

6) सदेव तुम्हारा अंगरा बांगा हो बांगा रो बंधो भारी छेजी।

7) देव जी तुम्हारी चाल हो चाल सवाई हो चाला रो डंको भारी छेजी।

8) देवजी तुम्हारा बैठनरो घोड़ी लोहो घोड़ी ला री चाला भारी छेजी राज म्हारा।

भेरूजी

जे भेरूजी तुमके टीको भी चाहिए। जोभेरूजी तुमको नारेला भी चाहिए। बनिया को बेटा हाजिर होय भेरू मेरा लाल सिंदूर बिंदली वाला हो।

2) कुण्डल–चौसर–सुनारिया 3) घड़िया–मोछी–पावडी–सुतारिया। बाजूटिया–सुतारिय। गजरा–माली को बेटो बागो–जामो–बजानी। कलशियो–कुम्हारिया।

भेरू– हाथ चटियो ने पावा रमझोल जहीं उतरियारे सुतारियारी पोल। नखराला भेरू छंदकाला भेरू छेड़ो म्हारी गागर ढुल जायेगी। ढुले म्हारी गागर फटे म्हारो चीर। उब–उब देखे भोली बाई जीरा वीर नखराला भेरू .....

2) सुनारिया 3) बनिया 4) मसेडी 5) कुम्हारा 6) बजानी

छींक माता–छुक–छक गाड़ी जेमे बेठी छींक माता धीरे स`चलयोरे कि छींक माता डर लागे।

1) शीश मैया को टीका सोवे कान कुण्डल सोवे धीरे से पिरयोरे कि छींक माता डर लागे।

2) गले–हरवा 3) हाथ–चुडिया 4) पैर–पायल–अंगली मैया बिहिल्या 5) अंग मैया चूनर

परी–5: महलों से दौड़ी चली आना सुहागन रानी।

सोने के डब्बे में टीका रखा – टीका लगाते चले आना सुहागन रानी।

सोने के डब्बे में झुमकी रखी है। झुमकी पहन चली आना ...

परी–6: कैसी बैठी मेरी परिमाजी झुण्ड करके –2

1) हमने टीका बुलाया तुम्हारे लिए। पहनो–2 मेरी परीमॉजी मन भर के।

परिमॉजी–6

इबलिया पे छिबलिया मंगाइदे म्हारी माय आज म्हारी परिमॉजी फूलवा तोड़न जाये। तोड़त–2 हुई बड़ी देर, आज म्हारी परिमॉजी गजरा गूँथी जाये। गूँथत–2 हुई बड़ी देर आज म्हारी परिमॉजी पोचा बांधी आय। बांधत–2 हुई बड़ी देर आज म्हारी परिमॉजी नाम घर जाये। रॉदूगी लापसी जिमाऊँगी भात। आज म्हारी परिमॉजी जिमी चूठी जाये। डोलूंगी डोलना बिछाऊँगी घाट आज म्हारी परिमॉजी सोयी बठी जाये। लाऊँगी चूँदड़ रगाऊँगी घाट आज म्हारी परिमॉजी पेरी ओढ़ी जाये।

आओ– आओ हमारा नाम सेवक तुम घर परिमॉजी पावना। पावना जो आया म्हारा मन भाया, फूल बताशा लाया जी। टाटी तोड़ पवन उड़ गया गले फूलन की मालाजी। सभी नाम लेना।

परिमॉजी–8

माथा रो भम्मर पेरीलेड परिमॉजी अन्नपूर्णा अन्नपूर्णा हो सदा पूर्णा।

छोटो माथो न छोटी घाटड़ी ओढ़ी हो परिमॉजी अन्नपूर्णा। चारो दिशा देवत बाजियो हो परिमॉजी अन्नपूर्णा–2 हो सदापूर्णा। कानरा–कुण्डल .....

परी–9– अपनी परी होन के टीको भी सोवे बिन्दी की छबी न्यारी परी होन के जाने न दूँगी। जाने न देऊँगी, आड़ी फिर जाऊँगी। पल्लो पकड़ ऊबी राखो परी होन के जाने न देऊँगी।

दूल्हा देव– दूल्हेजी तुम्हारा शीशरी पागा री पागारो पेंच भारी छेजी राजम्हारा दुल्हादेव। हजारी दुलड़ो चोगो छेजी राज म्हारा दूल्हा देव। 2) कान 3) गला

भेरू देव– जो भेरूजी तुमके टीको भी सोवे–2 बनिया को बेटो हाजिर होय भेरू मेरा लाल सिंदूर बिंदली वाला हो।

दूल्हा देव– एक इंधारी री ओवारी दूल्हा देव बालो सो रोय। कई हमारो नी रोवे म्हारा दूल्हा देव सासू का रोए।

1) कई हम तो किवांवा कुल में बांजोली एक इतरो अंदेशो कुल बहू तुम झनी मानो कई तुम घर बंधावा हो नवरंग पालनो।

दूल्हा– म्हारा दुल्हा देव की घुंघरी अजब बनी–2 अजब बनी छत्तर सोनी ने घड़ी। वा तो सुनारिया के बेटा बेटी चतुर सुझान। छत्तर लइन खड़ी। म्हारा बाजुटा सुतार बागों बजाजी – गजरा–माला–कलश–कुम्हा–त्रिशुल–लुहार ध्वजा–दर्जी नारेला–बनिया, काछी–घोड़िला।

कलश–कुम्हार–कलशियो लइन खड़ी।

परिमाजी

1) कैसी बैठी मेरी परिमाजी झुण्ड करके–2

1) मैंने टीका बुलाया तुम्हारे लिए पहनो–पहनो मेरी परीमॉजी दिल भर के पहनो–2 मेरी परीमॉजी मन भर के।

2) कुण्डल 3) माला 4) चूड़िया 5) पायल–बिछिया साड़ी बॉगा–थैली सिलाई–खोसो–खोसो

महलों से दौड़ी चली आना सुहागन रानी

1) सोने के डब्बे में टीका रखा है बिन्दी पहन चली आना सुहागन रानी। सभी जोड़ना।

परिमॉजी–10

सुता न सपनो दई गयो। हमारा नाम हो अच्छो बंगलो बनाओ परिमॉजी पावना। परिमॉजी बंगलो बनाओ बड़ी धूम से। हमारी पागा हो अक्खी भम्मर हो। हमारी गादी हो अक्खी भम्मर हो।

आखिरी– हमारी सगली बहू हो अच्छी रसोई बनाओ परिमॉजी पावना। परिमॉजी रसोई बनाओ बड़ी धूम से। हमारो चूड़िलो हो अक्खो अम्मर हो। हमारा बालूड़ा हो अक्खा अम्मर हो। हमारी सगली बाई हो अक्खी आरती सजाओ। परिमॉजी पावना। आरती सजाओ बड़ी धूम से।

अपनी परी होन के टीका भी सोवे बिन्दी की छबि न्यारी। परी होन के जाने न देऊँगी। जाने न देऊँगी। आड़ी फिर जाउँगी। पल्लो पकड़ ऊबी राखो परी होन के जाने न देउँगी।

भेरूजी

सत जनी मिल फूलड़ा हो बिने तो नौ जनी मिल गूथ्यो म्हारो हार। हार दो ओ म्हारा लाड़ला भेरू। 1) घर के कारण म्हारी सासूजी रिसाना। सासूजी रिसाना। ससूरजी देगा हमने गाल। हार दो तो म्हारा लाड़ला भेरू। ज्येष्ठ देवर, नन्दोई .....

आखिरी कड़ी– भरी दुपहरी म्हारा मढ़ आई, देजा म्हारी पूजा ने लइजो थारो हार। हार दो तो म्हारा

भेरूजी– जदे भेरूजी काकड़ आया काकड़ आसन माड़ियाजी। वही का आसन वही का माडन माडियाजी। वही भेरूजी रमिरयाजी। डाबी भुजा पे नागन झूले दुनिया देखन आया जी। दुनिया देखन आया भेरूजी हम भी देखन आया जी।

2) गोया में 3) फड़किया 4) गुआड़ा 5) उसारी 6) रखोई 7) पालना

———————————

भेरूजी सती ने लियो कृष्ण नाम बगीचा में बिलम रया

1) तॉबे के घड़े गरम रखा पानी अरे नाहवन में हो रही देर बगीचा में बिलम रया।

सभी देव का

परिमाजी तुम्हारा दिया बाला पुत्र परिमॉजी दूध पियो सूर्यागाय को।

दूल्हा देव तुम्हारा दिया बाला पुत्र दुल्हा देव दूध पियो सूर्याकाय को।

माता–भेरू–छींक–सती।

———————————

वे तो आज म्हारा परिमॉजी पावनी – परिमॉजी बालक वेश लंबा ओछा केश केसर छयोरी तुम्हारो देवरो। दूल्हा देव–माता–भेरू–छींक–सती।

पीर बाबा

1) झांडी–2 में बसे पीर बाबा – उनके रोका है जंगल का नाका

मैंने रोहश बुलाया अजमेर से मैंने टीका कुण्डल बुलाया अजमेर से कलमा पढ़–पढ़ बाबा को पिराया–2

माला–गजरा–बागा जूत्ती–चादर लुबान–प्रसाद–मलिदा जिमाया

———————————

पिरों तेरा सेहरा भेजू अजमेर पीरो तेरा कुण्डल भेजो अजमेर। छोटी अजमेर बसी चौफेर बड़ी अजमेर कुलन का ढेर।

खड़ी रखो म्हारी पालकी में जाउॅगा खाजा पीर का। जाउॅगा खड़ी खाजा पीर का मैं जाउॅगा, पी पठान को। म्हारी .....

1) टीका तो मैं पहन के आयी बिंदी रखी सुनार। खड़ी रखो म्हारी।

फिर सुपड़े में दीया मट्टी का जलायें। मिठाई–लड़डू रखें।

लड़की की शादी हो तो सगाई में कपड़े करें। और सास ससुर, दादा–दादी हो तो उन्हें भी और सीना टोपी रखे।

1) बिदाई के पहले सास की गोद 7 वाटकी चावल सेभरे और कपड़े करे। मण्डप करे पहले पहले हवन करे। दुल्हा या दुल्हान से ऊॅ भुर्भुवस्वःतत्स – 5–7 डाले और कांगन डोरा नाड़े में पान लपेट कर बांधे। मण्डप में बीच में दिया नाड़ा पहना के लटकाये। मण्डप में हाथे लगाये। जमाई को टीका लगावे। एक नाड़ा बांधे हाथ में । एक डंडे में 4 पूरी नाड़ा लपेट के रखे। चारों तरफ फिर हाथे लगावें, नारियल नेग देवें। फिर खखर्ड नीवरो चना दाल काकड़ा, हल्दी मिक्स करें। मानकखम रखे। सफेद कपड़े को पीली चींदी कर मानकखम बांधे। सुआ और पापड़ रखे। पहले मानकखम की पूजा करें, फिर चढ़ावे और शक्कर का घी डाले , छींटा नैवेध फेरे। प्रसाद खावे। 2) मण्डप में दुल्हे या दुल्हन तेल–चिकसा चढ़ावे और नहलावे, फिर चावल हाथ में देकर पीछे उठाले। मम्मी को फिर आंख बन्द करें देवी के वहॉ ऑखे खोले, मम्मी पापा को देखे, फिर पूजा करें।

फड

(काठी में रुई लगाकर "कुकु" में हल्दी पानी मिलाकर बनाना)

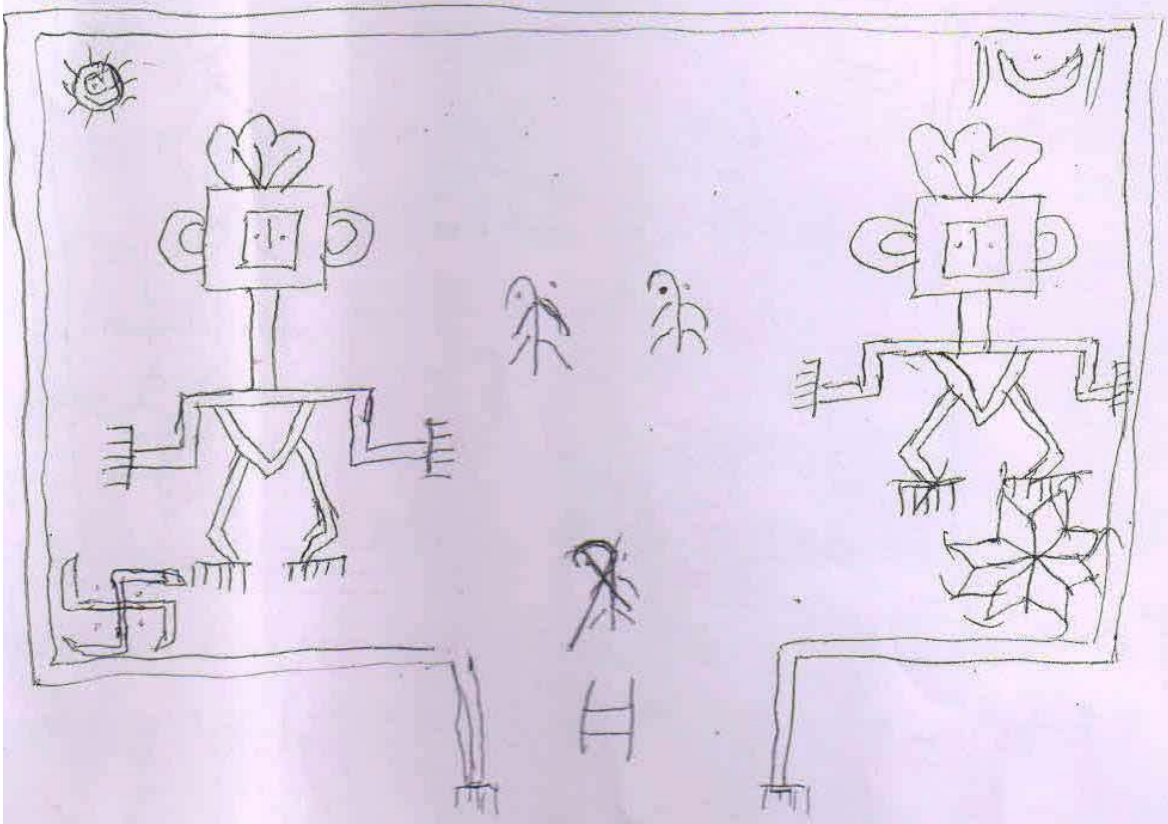

(गणेश कोठी पे बनाना) बेल से

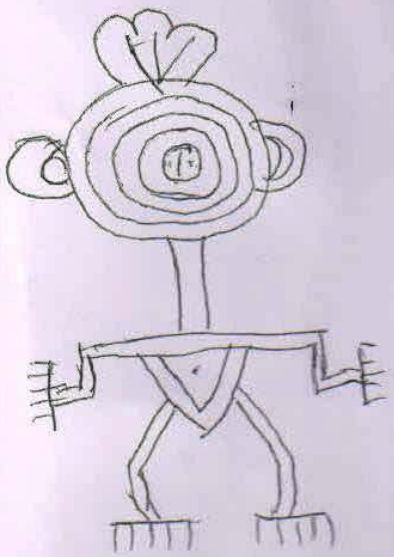

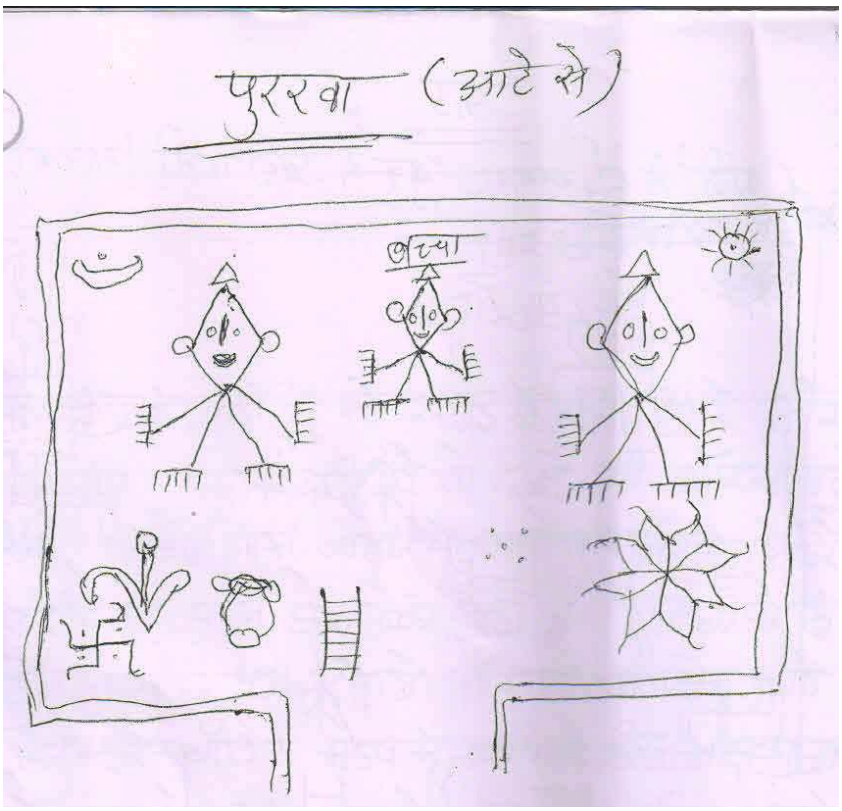

दीपवाली की रात घर के मुख्य द्वार पर सरसों के तेल का दीपक जलाकर इसमें काली गुंजा। जंगली बेल के दाने के 2–4 डाल दें। सुख शांति बनी रहेगी। दीपावली के दिन दोपहर के समय हल्दी की 11 गांठ को पीले कपड़े में बांधकर गणेश यंत्र की एक माला जप कर तिजोरी में रखने से व्यापार में वृद्धि होती है। दीपावली के दिन कांच की काली चुडियों को दुर्गा मंत्र से अभिमंत्रित करके उसके टुकडे घर की परिधि में बाहर डालने से विघ्न बाधाये समाप्त हो जाती है। दीपावली के दिन कच्चा सूत लेकर शुद्ध केसर से रंगकर कार्यक्षेत्र व तिजोरी में रखने से उन्नति होती है। डबल बनाना लाल से मांडना सफेद से भरना।

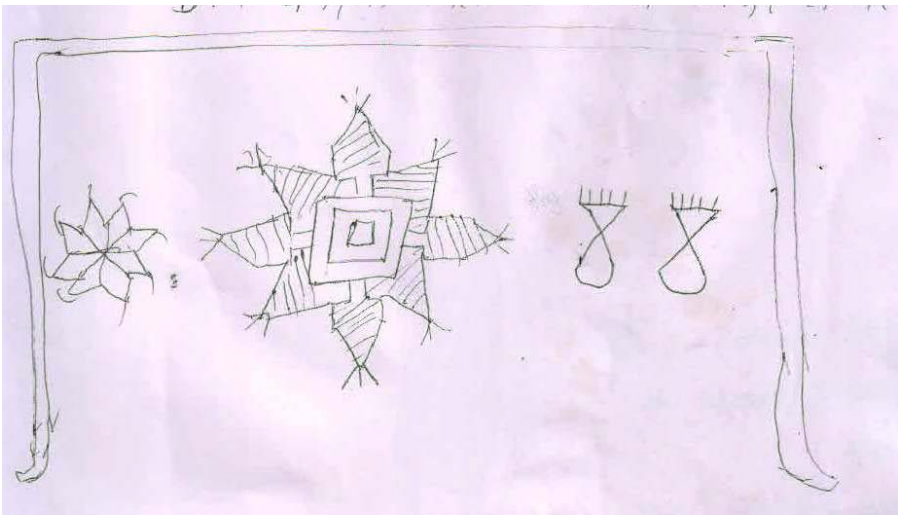

श्रीहरिनारायण राठी खंडवा

मो.न. 9406678334

देवी के बरतन

12 हंड़ली छोटी 3 हडली बड़ी 3 दिया बड़े 40 दिया छोटे 1 घटाना 1 मानक एवं दो सूपड़े यह सब आगे बुलाना नाड़ा दिया 1 वेद का

छोटी सुपारी सोप सुपारी गुलाक कुंकुं, यह सब आगे से बुला लेना 1 मीटर सफेद कपड़ा, 1 मीटर लाल

गेरू में थोड़ा सा पानी डालना थोड़ा सा गौमातीर, दोनों को मिलाकर उकाल लेना फिर उससे कवली करना

लड़की की 7 एक तरफ, 1 तरफ 5 मांडना

लड़के की 1 तरफ नौ, 1 तरफ 7 कवली

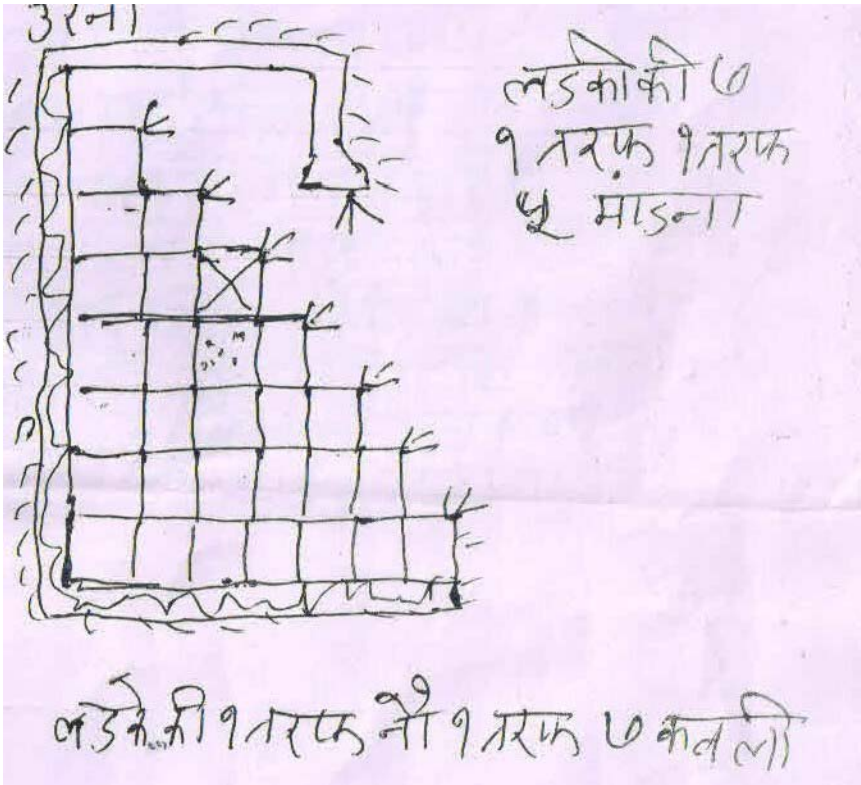

शादी के आगे अच्छा दिन देखकर कुंकुं हल्दी की गांठ, छोटी सुपारी 100 ग्राम, गुड़ थोड़ा–सा बुलाना, फिर सब सामान बुलाना

देव के आगे या एक जगह पानी का हाथ फेरना, 5 कुंकुं की टिपकी लगाना, 1 कलश, 1 नारियल रखना, 1 रू. की शादी अच्छी हो जावे हाथ जोड़ना, गणपति का नाम लेना। शादी बाद वह नारियल फोड़ना, सब खा सकते हैं।

पाड़वाली माता घर जेल उतारना, जेल गले में नहीं हो तो जेल बनाकर पहना देना, उताली में उतारना। कुछ अड़चन आवे तो 1 नारियल पर जेल लपेटकर रख देना। शादी बाद पहुँचा देना आगे भी उतार सकते हैं, कभी भी उतार आना। एक ओड़नी, दो

नारियल, एक आरती सजोना, एक नारियल खेलता छोड़ना, एक नारियल फोड़ना, थोड़ा सा खाकर आना, भूखे नहीं आना।

चोटी ओंकारजी के ऊपर चोटी उतारना

1 आरती कुंकुं, हल्दी, गुड़, 1 दिया, 1 वहन को ले जाना, गेहूँ के आटे की 1 रोटी कच्ची बनाना, लाल कपड़ा उस पर रोटी पे वह चोटी रखकर उसमें 1 रू. गुड मीठा रखकर नर्मदा में डाल देना। नाई नहीं मिले तो कोई से भी चोटी कटवा लेना, फिर खाना मिठाई कुछ भी खा लेना।

शादी के आगे 5 नारियल थोड़ी सी शकर पे पानी फेरना, पानी का हाथ फेरना, 5 कुंकुं की टिपकी लगाना, 1 थाली में नारियल रखना, कटोरी में शकर पीर का नाम लेना, सब बूढ़े होन का हाथ जोड़ना, नारियल शादी के बाद सवा महीना हो, जब उजाली में फोड़ना, अच्छा दिन देखकर।

सीतला माता

1 आरती सजोना, 1 लोटा पानी माला फूल, 2 झण्डी बनाना, 1 सफेद 1 लाल बनाना। रात को थेड़ी सी चना दाल भीगो देना, थोड़ा सा दही चावल, 100 ग्राम अन्दाज से 200 ग्राम बनाना। अलोना बनाकर डब्बे में रख लेना। घी, गुड़ उसके चावल के ऊपर रखना, पूजा सबने करना, आगे दुल्हन फिर मॉ–बाप, फिर सबने करना। 1 नारियल खेलता रखना, 1 नारियल फोड़ना, सबको बुलाना, पूजा करना, पैसे चढ़ाना, गीत गाना।

मोरीत

1 आरती 1 लोटा पानी दो पाटले लड़की की हो तो सात टोपली, लड़के की हो तो नौ टोपली सब में नाड़ा बांधना, 1 खलबत्ता, 1 मूसली, 2 सुपड़े, लड़की की जो तो हल्दी की पॉच गॉठ, लड़के की हो तो सात हल्दी की गॉठ। 4 सुहागन हाथ में नाड़ा बांधना, बहन–बेटी गेहूँ सुपड़े में रखना, पताशे डालना, पैसे डालना, दो–दो कर झाड़ना, हल्दी भी करना, दुल्हन को चौक मांडकर पाटले पे बैठाना। 1 कलश उस पर 1 नारियल रखना, एक गवरनी चवाचली हो उसकी गोद में सवा पाव गेहूँ अन्दाज से, 1 नारियल, 1 रूपया गोद में रखकर तिलक करना, 1 हल्दी की 1 कुंकुं की मोरीत की हल्दी बारीक कर लेना, एक तरफ 5, एक तरफ 7 लड़की की। लड़के की हो तो 1 तरफ 7 एक तरफ 9 घर के बाहर काली मट्टी डाल देना। 1 नारियल खोदने वाली को देना, वरमाय खोल में लेना, मट्टी की पूजा करना, 1 रूपया चढ़ाना। यह मट्टी पले की वह रू गणेश पूजा करते हैं वहॉ रखना। सात जन मट्टी पे पानी डालना, फिर गेहूँ पर भी पॉच जन पानी का हाथ लगाना, सुपड़े के गेहूँ में मोरीत की हल्दी का चिकसा बनाना। कलश का नारियल शादी के बाद फोड़ लेना, गेहूँ का आटा बनाना, सवा किलो गेहूँ, सवा किलो का मैदा उसके खाना बनाते हैं, वह सब आगे से तैयार कर लेना, ज्यादा कम भी ले सकते हैं।

गणेश पूजा

देवी की जगह लीपना, फिर 5 कुंकुं की टिपकी लगाना, फिर 1 पाटला रखना, उस पर लाल चौखटा कपड़ा रखना। 100 ग्राम चावल, 1 नारियल रखना, चारों तरफ 4–4 पुरी, पुरी के ऊपर लापसी रखना। 4 दिए आटे के बनाना, बीच में 5 खाने ऊपर लापसी रखना, पूजा सब कर ले, फिर बीज में के खजे नारियल की पोटली बांधकर 1 डब्बे में रख देना शादी बाद बहन को दे देना।

गणेश पूजा की रोटी

चावल 32 खाजे ज्यादा भी बना सकते हैं। लापसी थोड़ी सी मूंग की दाल बनाना, खाजे चढावे में रखना, नहीं मिले तो थाली में भी रख सकते हैं। 32 गणपति आटा बेसन हल्दी डाल लेना बनाना, डेल के बाहर बहन खड़ी उसको वरमाय पूजा करेगी।

मण्डप

मण्डप की रोटी चावल मण्डप बनाना। आम के पत्ते लगाना, बीच में 1 दिया लगाना। चार जवांई को बुलाना, चार पुरीयों में नाड़ा बांधना, 16 पुरी बनाना, 4 बांस, 2 वास पड़छने के, हल्दी के हाथे देना चार पुरियॉ नाडा हाथ में देना, टिका लगाना, बाद में 1 नारियल पैसे चारों जवई को देना।

फिर मामी से मण्डप लिपाना, पैसे देना, दुल्हन को हाथ में काकन बांधना, अगरबत्ती लगा देना, फिर मानक खम निवतना, रूई के काकड़े चना दाल से सब बड़े के नाम लेना, बाद में शकर थोड़ी सी खाना, मण्डप की देवी भरना, पानी का हाथ फेरकर कुंकुं की टीपकी लगाना। नीचे पातल या कागज उस पर 1 तरफ गेहूँ सवा किलो 1 तरफ सवा किलो चावल बीच में हडली, उसके ऊपर दिया।

लगीन की रोटी

देवी सवा किलो गेहूँ सवा किलो चावल से डालना, देवी के आगे भरना, चावल बनाना, लापसी मूंग की दाल, 32 रोटी 32 खाजा लापसी बनाना। रोटी खाजे सबके ऊपर लापसी रखना। चटाने में रखना, 32 दिए बीच में उलटे रखना, उस पर चटाना, उस रोटी के ऊपर खाजे बीच की हंडली के ऊपर का दिया, उसमें घी डालना जब तक लगन लगे जब तक बूझना नहीं चाहिए। चार–चार हंडली उस पर दिया दोनों तरफ बीच में पड लगाना।

पड़ बंधना बहन बाहर खड़ी रहेगी, वरमाय पूजा करेगी, बहन को पैसे देना।

देवी उठाय

चावल लापसी 32 रोटी, मूग की दाल बनाना नहीं तो मिठाइ का नवेत बना देना।

नाहने का गीत

मेलो सो बरस्यो री मेरी बाई आंगन कीचड़ मचीयो आज को हरिनारायण को बेटो ना बहन बैठियोरी म्हारी बाई आंगन में किचड़ मचीयो आज को बद्रीनारायण की नातीयों नावहन बैठियो सपजन बैठियो म्हारी बाई किचड़ मचीयो।

कुलदेवीः श्री सच्चियाय माताजी
ओसिंया जोधपुर (राजस्थान)

कुल भैरवः श्री काला भैरवजी मन्दिर
मण्डौर गार्डन, जोधपुर

———————————

श्री गणेशः नमः

संकलन कर्ता
श्रीमती चिन्ता माहेश्वरी
मो. नं. 96174044544

तापडिया गौत्र के रीति रिवाज

गुडी पड़वा को नया साल माना जाता है। और सवंत भी बदलता है।

चैत्र व कुँवार की देवी एक समान होती है सप्तमी के दिन गेहुँ को घट्टी व ग्राइन्डर में पिसवाते है। चौघर भी लेते है।।

अष्टमी के दिन चने की दाल, बाटी, चावल, लाप्सी, 16 पुरी, 2 पुरी, धुप की, 4 दिये आटे के उसमे घी की बत्ती रखना, 5 बाटी भेरू बाबा की अष्टमी, नवमी, भेरू बाबा की 3 की गेहूँ की मुटठी रखते है। दो नारियल अष्टमी नवमी को नवमी के दिन खीर पुवे बनते है, बहु और बच्चो की नाड़े की जेल होती है। और धुप देते

भेरू बाबा

आषाढ़ मैं अमावस्या के बाद इतवार बुधवार भेरू बाबा पुजते है। दाल, बांटी, चावल, लाप्रसी बनती है

नाग पंचमी

सावन की नाग पंचमी पर तुवरदाल, बांटी बनती हैं और आईफल से नाग बाबा मड़ते है गुंजा, पपड़ी भी बनती है।

मादो की नाग पंचमी पर दाल टापू बनते है और नारीयल की नंटी को जला कर नाग महाराज माड़ते हैं। उसको काले नाग महाराज कहते है।

दिपावाली

अमावस्या के दिन जंहा पुजा करते है। वहां पर गैरू से दिवाल पर पोत कर आप फल से गणेश जी माड़ते हैं फिर जब लक्ष्मी पूजा करते है। तो दूध चावल का भोग लगाते है और मिठाई का भोग लगाते है। और 16 दिप आटे के और 16 दिये मटटी की कलप

शादी मे

सगाई मैं 5 नारियल सुखे देव धामी के लेते है और सोज चढ़ाते है तब भी 5 नारियल देव धामी के नाम के लेते है और जब सोज चढ़ाते है बहु को तब पहले माता को नाड़े में डालकर बहु को पहनाते है। फिर जेवर चढ़ाते है।

माता पूजन 1.250 किलो चावल बनाकर ठड़ा करके उसपर घी, गुड़, धही डाल कर ले जाते है।

और आरती मे कुकु, चावल, हल्दी, अजीर, गुलाल, सुपारी, पान, सफेद, नीम की डगाल नारियल, ताप अगरबत्ती जल सभी चीजे आरती मे रख करं ले जाते है

मोरूत

लड़के के मोरूत मै 9 टोकनी व लड़की की सादी 7 टोकनी हल्दी की गठान 9 लड़के मैं 7 लड़की की शादी मै मोरीत मै जो हल्दी कुटने है उसी से सिलक खिचते है सिलक वही खीचमी है जिसके मॉ बाप, सासुर हो वही खीचती उसकी गोद मे नारियल व गेहू देते है, लडके की शादी में 9 और 7 और लडकी की शादी मैं 6 और 5 सीलक हल्दी की गांठ से खिचते है।

गणेश पूजा मैं :–

32 गणेश आटे के और खाजे अन गिनती और लापसी बनती है। 1.250 किलो चावल लाल कपडे मै सुपारी पैसे रखना और नारियज भी रखना।

मण्डप की देवी मैं :–

2 किलो गेहूँ और 2 किलो चावल आठ करवे दो दिये

लगीन की देवी :–

लगीन की देवी मै 32 जुड़ा रोटी के, लापसी, मुंग दाल, चावल, 32 आटे के दिये, 32 दिये मिट्टी के, 1 छठारना, 2 किलो गेहुँ, 2 किलो चावल, माता काकड भी कुवांर के बर्तन आठ करवे 2 दिये, लकड़ी का माडक रख उसमे 6 पिली चिट्ठी बाह्मा कर मंडप मै एक तरफ रखकर लकडी निपते है डंडे साने का नाम त्तेकर, पापड़, काकड़ा चना दाल, घुघरी, फिर सवा महीना बाद देवी उठाना,

बच्चा होता है तब

देव धामी के नारियल 5 रखना चाहिए, और नाड़े की जेल गठान 5 लगाकर देव धामी का नाम लेकर बच्चे के गले मै डालना चाहिए, नाला खिरता है जब सात हिन का सुतकाल पुजते है, 11 दिन की जलावय करते है। जलवाय मै पहले घर के कपड़े बच्चे को लगते है।

बच्चे के जमाल पहले साल मै या तीसरे साल में निकालते है।

बाई, बेन की 10 गवरनी को कहते है,

खाजे लापसी बनते है। और पान, सिंगाड़ा, लोंग इलायची, नाड़े की लटरी, लाख ओर फिर मैहंदी लगाते है और नारियल की चिटक से सब देते है फिर जमाल घर पर ही उतरते है।

संक्रांती

जनवरी महीने मै 14,15 जनवरी की संक्रांती आती है। उसमे तिल्ली का लडु बनाते है, और सुहाग का समान बाटते है। उसकी हल्दी कुकु कहते है।

बसंत पंचमी

बसंत पंचमी पर भगवान को मोर चढते है, इसमे भी होली का की पुजा करते है,

होली का त्यौहार

होली का त्यौहार रंग गुलाल का होता हैं, इसमे भी होलीका की पुजा करते है, और गोबर की सभी चीज बनाकर सुखाते है और फिर माला बनाकर होली का की पुजा करके चढ़ा के आते है। मीठा बनाकर होलीका को भोग लगाते है।

टुवानी परिवार के रीति रिवाज (त्यौहार)

संकलनकर्ता श्रीमती यशोदा वीरेद्रं टुवानी

मोबाइल नं. (9009809901)

(त्यौहार)

गुरूपूर्णिमा (भेरू बाबा की पूजन)

आषाढ़

पूजन की सामग्री :– चावल, चूरमा बाटी, पूरी, आम की डाली रोट मुररी, बाखलें लापसी

आरती :– कूंकू, गुलाल, सिंदूर, मेहंदी, हल्दी, चावल, दीपक, पान, सुपारी, नारियल बने चावल, चुरमा, गुड़, घी, चार पूरी, लापसी, अगरबत्ती, कपूर, पंचाग धूप, आटे के दीपक चार, 10 नारियल लगते है। शीतला माता, हनुमानजी गिलावनी माता, पीर मालिक, हरदमलाला, बाठी बडी भाभी के यहाँ, दूल्हा देव घर पूजन तुलसी सत्ती की पूजन भी होती है दो कन्या को लाल चूनरी ओढ़ा कर उन्हे सत्ती बनाया जाता है और उनकी पूजन करते है। उन्हे चार चार पूरी और लापसी देते है।

डांडे की पूजन :– दो पीली चिन्दी, गुड या लापसी से पूजन करते है। आरती की चार थाली लगाते है।

गिलावनी माता :– 4 पूरी, चावल, चूरमा, लापसी, रोठ–2 हरदम लाला की पूजन

हनुमान जी पूजन :– 4 पूरी, चावल, चूरमा, लापसी, रोठ 2–2 बाटी जनबाई जोड़े, गंगरी बाखले

शीतला माता :– 4 पूरी, चावल, चूरमा, लापसी, बाटी, 2 रोठ गुगंरी बाखले

सावन

हरियाली अमावस्या :–

पूजन सामग्री :– पूरन पोली, चावल, गुड़ घी दूध भात की धूप छोंडते है।

नागपंचमी :–

पूजन सामग्री :– चूरमा, बाटी, कूलर, दाल भात, नारियल नारियल की नट्टी को जलाकर नाग मांडते है।

रक्षाबंधन :– (श्रावण पूजन) गुंजा संजौरी कसार भात बनाना गुड़ घी की धूप छोड़ना

कजरी तीज :–रक्षाबंधन के बाद आती है। कजरी तीज में दशमी के दिन ज्वारे बोयंते है। इसमें चार छबड़ी में मिट्टी व शाल से पांच पांच बार करते है। व इसकी पूजन में कूलर

कूंकू, चावल, गुड़, घी से पूजन करते है व धूप छोड़ते है और गीत गाते है व बाद में आरती करते है। ज्वारे में किस की छांव नही पडना चाहिए।

भादो

जन्माष्टमी

बछ बारस

हरतालिका तीज

ऋषि पंचमी

राधाष्टमी

डोल ग्यारस

अन्नत चौहदस

पूनम (इस दिन श्राद्ध में लेते है)

अन्नत चौहदस :–

पूजन सामग्री :– एक पूरी जिम से चौदह टिपकी लगाकर तल लेते है तथा हलवा व लड्डू बनाते है। और चौदह पेड़ की पत्ती ला कर रखते है और उस पर विष्णु जी और गणपति जी को बैठाते है। और अन्नत कर पूजन करते है।

आरती :– कूंकू, हल्दी, गुलाल, मेंहदी सिन्दूर, अबीर, धूप, गुड़, घी, दीपक, जनेऊ, पान, सुपारी, लोंग, इलाइची, खारक, बादाम, रखते है। भोग के फल या लड्डू का लगाते है। तथा चौदह पेड़ की पत्ती ला कर उस पर भगवान को बैठा कर पूजन करते है।

क्वार (अश्विन)

सोलह श्राद्ध में धूप छोडते है। पूर्णिमा से

प्रथमा :– दादी मां का श्राद्ध करते है (खीर, पूरी, भजिया, बड़ा घी गुड़ धूप पर छोड़ते) दादा जी भाइसा.

द्वितीया :–

तृतीया :– सेवदा वाली माँ (द्वारका बाई)

चतुर्थी :– छोटी भाभी का (अन्नपूर्णा देवी)

पंचमी :– बडे दादाजी (श्री बाबल राम जी)

षष्टी :–

सप्तमी :–

अष्टमी :– श्री कुंवर लाल जी (श्रीमती चन्दु बाई) (भोजा खेड़ी वाली माँ)

नवमी :– छोटे दादाजी का (श्री जगन्नाथ जी)

दशमी :– ग्यारस बड़ी भाभी, चौदह बा का अमावस्या (मैना वाली माँ)

अमावस्या को झूठन निकाल कर रसोई घर की साफ सफाई व पोतते है

नवदुर्गा मे नौ दिनो तक गुड़, घी, गुगल की धूप छोड़ते है। और सप्तमी का मैदा लगाते है। अष्टमी के दिन पूजन करते है। इसमे अछूत कपड़ो से पूजन करते है।

पूजन सामग्री :– मैदे के खाजे बनाते है। तथा लापसी और बाटी बनाई जाती है। चावल चना की दाल तथा नवमी के नौ खाजे भी बनाते है। तथा नौ नेवेघ भी बनाते है। इसमे चावल को गला कर उन्हे बांटते है। फिर उसके और मैदे के बनाते है।

पूजन आरती सामग्री :– कूंकू, चावल, अवीर, गुलाल, सिंदूर मेहदी, आम के पत्ते, मेडा पानी, पान, सुपारी, चार खाजे, लापसी, नौ नैवेघ, चावल, गुड़, घी, पंचाग, धूप, चार नारियल

दशहरा :– दूध भात की और गुड़ घी की धूप छोड़ते है।

अष्टमी की पूजन (विधि)

मैदा छोटे नाप से एक नाप एक मुट्ठी मैदा गलाना दो जगह अलग 2 मैदे पे कपड़ा गिला करके ढाकना (बाद मे दोनो मैदे एक साथ पीस लेना) (घी का दीपक लगाकर मैदा गलाना)

आटा :– अंदाज से (एक किलो पिसना)

पूजा का बनाने का सामग्री :– मैदे के चालीस खाजे चोटी 6, पेढा 6, (चावल गलाकर पेढे बनाना) 6 चोटी, 6 गुथी, 6 अनगुथी ये सब मैदे की बनाना। आटे कि लापसी और 10 बाटी आटा के चार दिया, चना की दाल बनाना।

खुट भरना :– चार खुट पे चार–चार खाजा और लापसी के लड्डू और दीया, बीच मे नौ खाजा, लापसी के लड्डू, सब पे एक एक गुथी अनगुथी, चोटी, पेढा, गोटी सब रखना। खुट भरने से पहले गोली लगाकर बीच में गेहूँ कि मुट्ठी के ऊपर, पान, सुपारी, कंकड, पीछे अलग बगल चार चार बाटी बीच में दो बाटी रखना जिस पर आम कि ठगल लगाना दो नारियल चढ़ाना तथा दो धूप रखना।

नौमी के खाजे के पास बीच में पानी से भरी पच पातल रखना और एक अलग लोटे से पूजन करना, लोटे का पानी पूजन के बाद खमाना और पचपातल का पानी धूप के साथ खमाना।

पूजन की थाली लगाना :– चार खाजा, माल, लापसी का लड्डू और सब सामान (गुथी अनगुथी चोटी गोटी पेढा) चने की दाल और गुड घी पंचाग धूप आदि।

दूल्हा देव की पूजन

पीसना :– सवा किलो गेहूँ पीसना, सवा पाव उड़द की दाल सवा पाव चनाा की दाल पीसना।

बनाना :– एक गिलास एक मुट्ठी भात, एक गिलास एक मुट्ठी गेहूँ का आटा का सीरा, पूरी, बीस, भजीया, बीज, पाँच बडे, चार आटे के दीपक बनाकर तलना। सब समान शुद्ध घी मे बनाना।

खुट भरना :– चारो तरफ चार – चार पूरी, चार भजीया, एक बड़ा, एक हलवा के लड्डू, एक दीया बीच मे पान पैसा, सुपारी, पांच लोंग, पांच इलायची, पांच खारक, पांच बादाम, एक नारियल धूप भी छोड़ना, गुड़ घी की धूप छोड़ना। गुड़ घी की धूप छोड़ना।

आरती की थाली :– कूंकूं, चावल, पान का बीड़ा इत्र, मेहंदी, हल्दी, सिंदूर, दीपक पीतल का, चावल पूरी हलवा बड़ा भजिया।

भण्डारण :– पूजन के बाद नट्टी जलाकर भण्डारे तथा खुट उठा ले खाने के लिए, पूजन का सभी समान भण्डारण दे थाली वाले दीपक की जलती जोत को भी भण्डारे तथा पान का बीड़ा, खारक, बादाम, लोंग, इलाइची खा कर उनके छिलके गुटली भी भण्डारें।

छठ माता की पूजन

पीसना :– 1 गिलास एक मुट्ठी गेहू पीसना।

बनाना :– शुद्ध घी मे गुड का हलवा बनावें तथा गले की माता की पूजन करना, मालाओं को नयें नाड़े में पिरोकर उन्हें पटे पर जमावें तथा उनके सामने सात लड्डू (हल्वे के) रखकर धूप छोडे।

पूजन विधि :– माताजी को सिंदुर का टीका लगाकर उनकी कुम कुम चावल से पूजा करे थाली में दो लड्डू रखें। घी गुड़ व लड्डू से धूप छोड़ते है।

भण्डारण :– नारियल चढ़ाकर उसकी नट्टी वे एक एक माताजी को उठाकर उनके ऊपर का कुंकुं चावल आदी सब उठाकर भण्डार दे।

मोरना (सुहासिनी)

पीसना :– एक किलो आटा एक किलो मैदा।

बनाना :– 1/6 मैदे के खाजे (खुट के तथा 20 परोसने के लिए 2 खाजे व 2 पूरी बीज के खूट के तथा सभी खुटे पर एक लापसी व लड्डू तथा बीच के सूर पर मूँग की दाल भात व लापसी का लड्डू रखते है। दो पान उसके ऊपर चार सिंघाडे एक लौंग एक इलाइची नाडे की आटी, लास व टीकी रखतें है।

पूजन की थाली :– कुम कुम हल्दी मेहंदी, चावल, पीतल का दीपक, थाली मे चार खाजे एक लड्डू मूँग की दाल, भात, घी, गुड़।

धूप छोड़े तथा दो नारियल चढ़ावे एक मिट्टी का दीपक पटे पर जलावें।

एक थाली में दस पान दस नाड़े की आटी दस लौंग, दस इलायची, 40 सिंगाडे, दस बिंदी, दस लाख तथा नारियल की चिटक रखें और बाई बहन को टीकी लगाकर दे थाली पर देने पहले पूजन की जगह रखकर पानी फेरे।

मेहंदी गलाकर सबको मेहंदी लगाने को देवें। पान और सुपारी देवे।

तीज माता की पूजन

पीसना :– एक किलो आटा पीसना तथा थूली ढलना।

बनाना :– 15 पूरी मीठी, 15 की पूरी, थूली, मूंग की दाल, भात लापसी।

थाली आरती :– कुम कुम, हल्दी, मेहंदी, चावल, पीतल का दीपक, थाली मे दो दो पूरी फीकी व मीठी थूली भात, मूँग की दाल, लापसी, घी, गुड़ दो नीबू दो खारक, एक गोले की बाटकी का तोरण बनाते है।

पूजन करके तोरण बांधना और फिर धूप छोड़ना पांच गोरनीयों को तीज के दिन तीज माता के पास बैठाकर केले के पत्ते पर भोजन करावें और पूजन के लिए बने समान परोठे और अच्छे से भोजन करावें।

चतुर्थी के दिन :– दूध कुलर बनाकर पूजा करे व पानी पिलावें।

दशमी के दिन ज्वारे (गेहूँ व शाल) बोए तथा रोज सीचें तथा एक दिन छोड़कर पूजन करें पूर्णिमा के दिन राखी बांधे व शाम को झूला बांधकर झूले पर बिठावें।

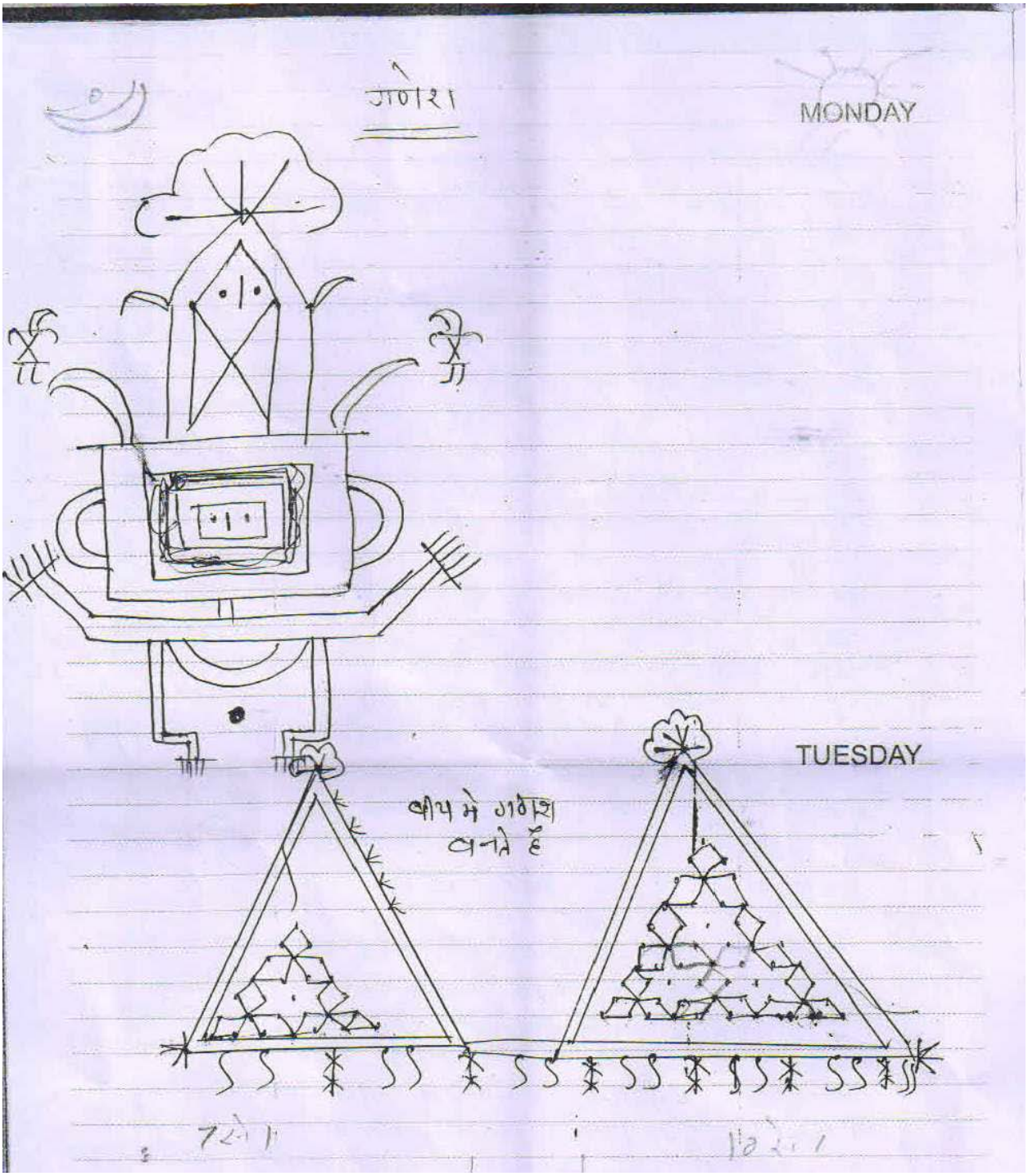

शादी के त्यौहार

शीतला माता जी की पूजन सामग्री :– 4 गिलास बहन का मैदा, ढाई गिलास भाई को आटे, मिठी गुनी गुना नो बाकी आटा की पूरी, सवा गिलास, गहना को और इसी मे से मीठी लापसी और इसी आटा मे से पुरण पोली सवा गिलास चावल बनाना 1 नारियल चड़ाने को 1 नारियल खेलतो छोड़ने को सवा गिलास चावल कच्चा रखना का सवा रूपया सवा पाव गेंहू सवा रूपया गेहूं में रखना कच्चा चावल पे गुड की खोडी और 2 ताव सफेद लौंग 6 इलायची 6 सुपारी 6 पान 1 खटोलनी और सुत से बनाना खटोलना पर पान रखकर पूरण पोली बिछाना और दो डंडा हठकड़ी बेड़ी माताजी का चांदी की रकम 9 कुडा पूजन दही गुड घी खटोलना पे 9 पान बिछाकर पुरण पोली बिछाना और आम के पत्ते का तोरण बनाना 2 कुंडा छोड आना 6 को ले आना 1 कुंडा पे 9 खाजा रखना और 1 कुंडा पे 9 गुली और इनके बही पर छोड़ कर आना और दही में कच्चा चावल डाल कर पूजन में

रखना पूजन करने के बाद आरती व हल्दी के हाथा भी लगाना। आम के पत्तो की बंदर बाल बनाना और ध्वजा लाल व सफेद भी बनाना।

पूजन का सामान :—खटिया, हथकड़ी, बेडी, डंडा, 9 कुलड मिटटी के गोलमा आंख, कंठ, लंबर बंद चांदी की 9 पान 9 इलाइची, खारक, बादाम, लौंग, सिघाड़ा, गोल सुपारी, सवा पाव गेहूं में गुड की बाटकी सवा पाव चावल में सवा रू. नारियल 2 नारियल ताव कच्चा चावल व दही आम की बंदर बाल बनाना, खटिया सुत से बनाना चाई पाई गेहू बहन का मैदा लगाना खाजा बनाना ढाई पाई आटा का गुना गुनी मीठी गुड़ की आधा किलो आटा का कसार और गेहनो पुरन पोली सवा पाव चावल बनाना घुघरी बाखला।

गणेश पूजन

सबसे पहले अच्छे मुर्हरत चुल्हा रखना चार जन मिलकर के चारों टिकी लगाना नाड़ा बंधाना और बनासा देना इसके बाद चुड़ी बिछुडी पहना, 20 खाजा बनाना और लपसी, चावल, मुंगदाल बनाना 20 खाजा बना कर आटा के दीपक 9 खाजा बीच में ओर 1 लड्डू लपसी को चारो खुट पे आटा के दीपक 9 खाजा बीच में और 1 लड्डू लपसी को और बीच में पीतल का गणेश जी रखना और गणेश जी के सामने पांच लड्डू लपसी के बना कर रखना पटला बिछाकर लाल कपडा आधा मीटर और उसपे सवा गिलास चावल कच्चा रखना बैसन के गणेश जी बनाना 32 गणेश बनाना और पटला पे रख कर पुजन करना थाली में चार खाजा, मुंग की दाल पके चावल लपसी लड्डू और गेहुं की की गुगरी लाल कपड़ा में सवा गिलास चावल रखना और 9 खाजा और 1 लड्डू लपसी का और 1 नारियल पोटली बना कर रखना कोंढी में दुध भात से दुल्हा दुल्हन कोई भी हो खिलाना गणेश जी बना कर कोई बच्चे को बिठाना बेसन के बनाये हुये गणेश को सब मिठाईयों में और सामान में रखना बाकी बचे हुयें गणेश की लाल कपड़े में पोटली बना कर कोढी में रखना और सीधा लगाकर मन्दिर में देना। और गणेश जी की पूजन घर के सभी सदस्यों को करना चाहिए।

पूजन सामग्री :— मैदा खाजा मुंग की दाल लापसी घुंघरी दूध भात, लाल कपडा, खूंट के उपर लापसी के लड्डू दीपक पांच लड्डू लापसी का गणेश के आगे रखने 9 खाजा पांच लड्डू 1 नारियल की लाल कपडे में रखकर पोटली बनाना और कोठी में रखना।

मानक खम

सबसे पहले मामी से मंडप लिपवाना और मामी को नेग देना। मंडप बनवाना फिर 4 जवाई को हाथ में 4—4 पुरी नाड़े से बांध कर देना और उन पुरी को मंडप के नीचे रखना। फिर घर की बहुओं से ज्वाईयों को हल्दी से हाथे लगाना। और जवाईयों को नेग देना। हवन ग्यारी कांकन डोर फिर मानक खम को सीधे हाथ तरफ रखना फिर उसको बंधवाना मानक खम पीला करना पिली चिन्दी मे चना की दाल और कांकड बांधना और मानक खम पर पापड और सुजा रखना और मानक खम की पूजा करना और काकड़ा और चना की दाल पीली कर के चड़ाना और घी शक्कर का भोग लगाना और घर के सभी लेडीज मिलकर मानक खम पुरखों को याद न्यौता देते है

मंडप मे लगन वाले दिन दुल्हा दुल्हन को चार लेडीज मिलकर तेल चढ़ाती है। और तेल चढानें के बाद हल्दी लगाकर मंडप में नहलाती है। नहलाने के बाद दुल्हा दुल्हन के हाथ मे चावल देते है। और वह चावल पीछे से उसकी मां झेलती है। चावल झेलने के बाद वर या वधु के जियाजी भुआजी कोई भी वर वधु को माय माता वाले कमरे में ले जाते है। वर वधु की आखे बन्द रहना चाहिए। वर वधु के दोनो तरफ मां बाप बैठते है। सबसे पहले वह अपने मा बाप का चेहरा देखती है फिर माय माता का।

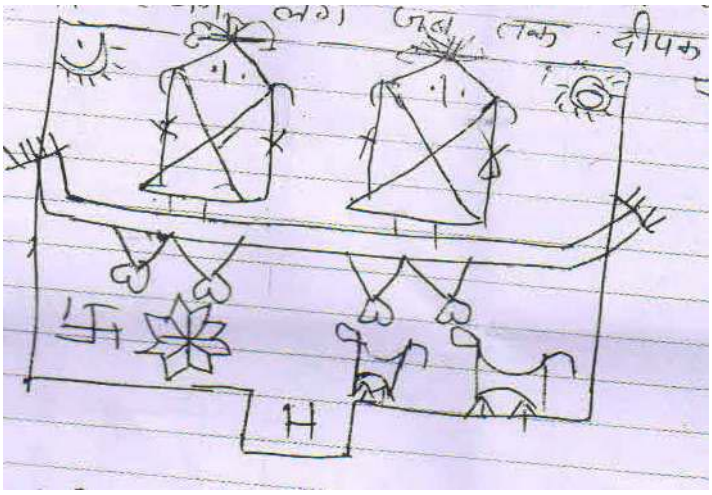

देवी पूजन (माय माता की पूजन)

1 किलो मैदा और 1 किलो आटा मैदा मे से छोटा से छोटा चार गिलास का खाजा बनाना 4 गिलास आटा मे से दूर दिया बनाना और छटारना पे 1 कड़ी रोटी रखना, छटारना पे खाजा रख कर लापसी बुरबुराना और छोटा नाप से 4 गिलास चावल बनाना दुध भात से माता को छींटा देना माता भरने की 4 गिलास गेहूं और चार गिलास चावल पाताल पे रखने और आधी माता मंडप के दिन मान खम्भ नौतने के बाद भरना और आधी लगन के दिन पांच पांच बर्तन दोनो तरफ रखना 32 दिया गारा का उल्टा रखने और उसपें छटारना रखना और सफेद कपडा पर माताजी की फड बनाना और बडा दीया मे घी का रूई की बत्ती लगाना लगन लगे जब तक दीपक जलना चाहिए।

देवी जी को उठाना में 32 जुड़ा रोटी का बनाना उसमें लापसी के लड्डू बनाकर रखना और चावल बनाना।

सौंज का सामान

माता चांदी की बना कर लाना पांच खोडी गुड़ सात बाटकी गोला की बेलन दो डिब्बी दो मेंहंदी थैली कुंकु शक्कर पुत्र खाव का सामान खारक,बादाम, मखाना,सिंघाड़ा, पताशा, ड्रायफुट डब्बा मोर, मोरनी काच कंघा मेपकप बाक्स, कलगी, 12 लाख बजरी 2 काली पोत चप्पल एक जोड चूडा लाल दरवाजे की साती

कलश सजा हुआ नरियल 2 चूडा 25 जोड बिछुडी 25 जोड

अफरनी चून्दरी का

फ्रूट डलिया सजी हुआ पेकिंग की थैली

पगलिया धूप रखते है जब

पूजन सामग्री :– खीर, पूरी, खाजा, मूंग दाल, लापसी, भजिया चावल बडा पे दही, गुड़, घी, पंचांग

धूप :– 15 दिन धूप के श्राद्ध मे 3 ब्राह्मण व तीन लोटे रखते है

6 माली व 12 माली मे 12 व 6 ब्राह्मण व रिश्तेदार को जिमाते है व 12 लोटे व 6 लोटे रखते है।

उज्जैन जाते है तो वहां से 5 5 तरबना अचबनी पचपाताल 13 आसन 13 माला 13 गीता जी लाते है।

मुंह मे रखते :– दही पेड़ा तुलसी पत्ते मूंगो मोती सोने का दाना व सफेद कपड़ा या कम्बल पर सुलाना और चारों बिखेरते जाते है। तथा जौ और तिल चौख पुराते है।

पगलिया बनाते है आटे के

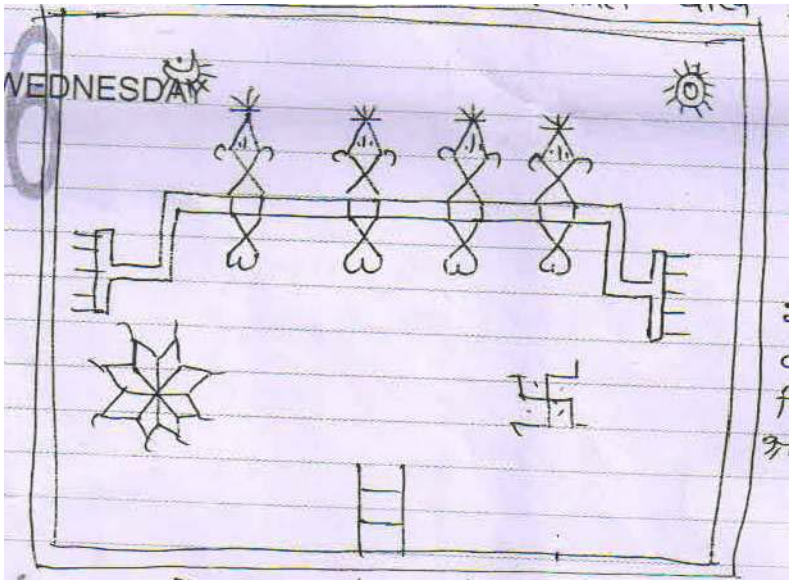

ग्यारवां व बारहवां के दिन व श्राद्ध मे

पहले दिन बेसन और रोटी बनाते है। तीसरा के दुध भात की की धूप रखते है। ग्यारवां व बारहवी के दिन 4 खूट पे 4 खाजा 4 भजिया 1 बड़ा पे 1 लापसी का लड्डू बीच में 2 पूरी 2 खाजा मूंग की दाल चावल चार भजिया खीर बडा पे उपर दही, तथा थाली में भी रखते है। दो थाली लगाते है। और दो ही धूप भी रखते है। और कौवा के देने को पूरी भजिया कुछ भी ऐसे ही डाल आते है थाली नही ले जाते है।

मनिहार गोत्र के रीतिरिवाज त्यौहार

सर्वप्रथम चैत्र की गुड़ी पडवा से स्तर सेम चैत्र की अष्टमी नवमी नवरात्री में होती है रेणुका चौदस के दिन केवल दर्शन करने जाते है।

श्रावण की नागपंचमी भाद्रो की नागपंचमी माडे जाते है हमारे परिवार में गणेशजी बीठाते है श्राद पक्ष पितर नहीं माडते।

नवरात्री के उपवास करते है मंदिर जाते है अष्टमी के दिन त्रिशूल बनाकर सामने गेहूँ रखते है उसके उपर माताजी का श्रृंगर गेहूँ के आटे से बनाते है और शुद्ध घी में तलकर रखते है स्टील के डब्बे में रखते है बच्चे का गोरा शर्ट रखते है हल्दी कुमकुम चावल सिंदूर कुल माता पूजन करते है कंडडे पर घी गुड धूप डालते है 2 नारियल देवी को चढ़ाते है। सभी जन मिलकर आरती करते है माताजी की ।

शीतला सतमी :–

चैत्र मास की सतमी और भातो की सतमी हलवा पुरी चरके मीठे सब्जी पुरी रायता केलवाना ठण्डा बनाना है। खाना है। भातो में कच्चे आटे 7 टापु आटे के बनाना है। घी और गुड रखकर माता जी के सामने रखते है

भैरो बाबा का :–

दाल, बाटी, चुरमा, घुघरी, चना, गेहूँ, एक कड़े की रोटी बाड़े की पूजा करते है सात रोटी छोटी – छोटी बनाना है।

अष्टमी नवमी में खाना बनाना (अलोना खाना बनाते है) दाल, चावल, पुरी, घुघरी, चना, गेहूँ उबालना लापसी मिठी घुली माता रानी के श्रृंगार अच्छे घी की पूडी बनती है। पांच बाटी छोटी – छोटी घी में बनती है। मातारानी के श्रृंगार घर, कंगा, कारतई, कडे तोड़े लोंग, गुलकी डडा, सुपारी 9–9 बनाते है। आटे में बनाना है। तलना है। डब्बे में रखना है दूसरे दिन खीर बनाना है।

नवमी :–

नौ पुए ओर के बनाने है। घी में खीर दाल चावल आलू की सब्जी दही छाछ घर का हो तो कड़ी चरके ताए फिके ताए फुड़ की रोटी

नागपंचमी के भादों की श्रावण की दोनो में दाल बाटी बनती हैं।

श्रीमती सुनिता माहेश्वरी मों न. 9424558009

श्री सिद्धेश्वर महादेवाय नमः

कुलुम परिवार के बारह महीनों के तीज़ त्यौहारो के रीति रिवाज

संपादक

श्री गणेश माहेश्वरी - 9893808924
श्री रवि माहेश्वरी
श्री हेमंत माहेश्वरी
श्री पराग माहेश्वरी
श्री चिराग माहेश्वरी
श्री आयुषी माहेश्वरी
श्री सार्थक माहेश्वरी
श्री पियूष माहेश्वरी
श्री भूमि माहेश्वरी

निर्माता

श्री मति कलादेवी माहेश्वरी

श्री मति पार्वती गणेश माहेश्वरी

श्री मति अनीता कमल माहेश्वरी

श्री मति उषा रवि माहेश्वरी

श्री मती उज्जवला हेमंत माहेश्वरी

अनुक्रमणिका

1. चैत्र मास के त्यौहार 5
   1.1. गुड़ी पड़वा 5
   1.2. अष्टमी 5
   पूजा की थाली 6
   1.3. नवमी की पूजा 6
2. वैशाख के त्यौहार 6
   2.1. अक्षय तृतीया 6
3. ज्येष्ठ के त्योहार 7
   3.1. निर्जला एकादशी 7
4. आषाढ़ के त्यौहार 7
   4.1. गुरुपूर्णिमा (भेरू जी की पूजा) 7
5. सावन के त्यौहार 8
   5.1. हरियाली अमावस्या 8
   5.2. नाग पंचमी 9
   5.3. रक्षाबंधन 10
6. भाद्रपद के त्यौहार 10
   6.1. जन्माष्टमी 10
   6.2. हरतालिका तीज 11
   6.3. गणेश चतुर्थी व्रत 11
   6.4. ऋषि पंचमी 11
   6.5. डोल ग्यारस 12
   6.6. बछ बारस 12
   6.7. अनंत चौदस 12
7. अश्वनी कुआर के त्यौहार 12
   7.1. कुंवार की अष्टमी 12
   7.2. नवमी की पूजा 13
   7.3. दशहरा 13
   7.4. शरद पूर्णिमा 14
8. कार्तिक मास के त्यौहार 14
   8.1. धनतेरस 14
   पूजा की सामग्री 14
   8.2. रूप चौदस 14

8.3. दीपावली 14
पूजा की सामग्री 14
पूजा विधि 15
लक्ष्मी जी की पूजा 15
8.4. पड़वा 16
8.5. भाई दूज 16
8.6. करवा चौथ 16
पूजा सामग्री 16
पूजा की विधि 16
8.7. गोपाष्टमी 16
8.8. आंवला नवमी 17
8.9. तुलसी विवाह देवउठनी ग्यारस 17
8.10. वैकुंठ चौदस 17
8.11. कार्तिक पूर्णिमा 17
9. माघ मास 18
9.1. सक्रांति 18
9.2. बसंत पंचमी 18
10. फागुन मास के त्यौहार 18
10.1. शिवरात्रि 18
10.2. होली 18
10.3. शीतला सप्तमी 19
पूजा विधि 19
10.4. होली दशा 20
10.5. गणगौर 20
11. नोट 21
12. जन्मोत्सव का रीति रिवाज 22
पूजा में लगने वाली सामग्री 22
13. जलवाय के रीति रिवाज 22
14. शादियों के रीतिरिवाज 23
14.1. लगन लिखाना 23
14.2. माता पूजन 23
14.3. गणेश पूजा 25
14.4. मामेरा 26

15. मृत्यु के रीति रिवाज 27
15.1. उठावना 28
15.2. श्मशान में ले जाने वाली सामग्री 28
15.3. दसवे दिन 28
15.4. गयारवे दिन 28
15.5. बारहवे दिन 28
15.6. नुक्ते के दिन 29
15.7. सवा महीने का कलश व धूप 29
15.8. छह मासी बारहमासी धूप 29
15.9. श्राद 30

1. चैत्र मास के त्यौहार

1.1. गुड़ी पड़वा

गुड़ी पड़वा पर पूरनपोली बनाई जाती है पड़वा पर - घर में हम साफ सफाई करते हैं नवरात्रि का श्रद्धा अनुसार हम व्रत करते हैं अपनी अपनी शक्ति के अनुसार निराहार या फलाहार करते हैं मां की स्थापना करते हैं पटा लगा गेहूं, चावल बिछाकर मां को आसन दिया जाता है कलश स्थापना की जाती है जवारे बोए जाते हैं नो दिन की अखंड ज्योत जलाई जाती है मां के पटे पर पूरा सुहाग का सामान नो की पूजा का सामान रखा जाता है रोज दोनों समय फल - फुल नैवेद्य चढ़ाए जाते हैं और आरती की जाती है इसी बीच अष्टमी आती है

1.2. अष्टमी

अष्टमी पर कुल की देवी की पूजा होती है उसमें पटा लगाया जाता है उस पर लाल कपड़ा बिछाया जाता है पट्टे के नीचे फुल या सातिया बनाकर पटे के ऊपर सीधे हाथ पर गेहूं की और उल्टे हाथ पर चावल की ढेरी लगाई जाती है उन ढेरी के बीच घी ,सिंदूर लगाकर कंकर रखे जाते हैं

कुलुम परिवार की कुल देवी - बिजासन माता (लसूड़ल्या माता जी)

कंकर के ऊपर शादियों में चढ़ी माता जी रखी जाती है(गले की) पटे पर रखने से पहले गंगाजल से नहला कर और आटी बदलकर माताजी को पटे पर रखते हैं 9-9 खारक बादाम लोंग इलाइची रखी जाती है (माता जी की पुड़िया) भोग में बिना नमक का आटा लगाकर (आटा नहाकर गेहूं धोकर पिसवाना चाहिए)शुद्ध घी की पूरी (25-30)बनाई जाती है और लापसी गुड़ की और घुघरी, बाखला ,चने की दाल और बाटी और चावल बनाते हैं पटे पर चार चार पूरी चारो खूंट पर रखते हैं पूरी के ऊपर लापसी के एक-एक लड्डू और आटे के दीपक रखकर जलाए जाते हैं दोनों ढेरी के बीच में एक के ऊपर एक 5 बाटी रखी जाती है पटे के ऊपर थोड़े से चावल रखे जाते हैं पटे के पीछे और आसपास आम के पत्ते रखे जाते हैं

पूजा की थाली

थाली में अबीर, गुलाल, अक्षत, रोली, कपूर, एक पान कलश में रखा जाता है एक पान कपूर के लिए घुँघरी, बाखला, पांच पूड़ी थाली में लापसी चावल दो बाटी रखते हैं घी, गुड़, धूप के लिए रखते हैं तीन नारियल रखते हैं दो अष्टमी पर चढ़ते हैं, एक अष्टमी और एक भैरू महाराज का और नवमी के दिन चढ़ता है। दीवार पर पटे के सामने पटा लगाते समय सिंदूर को घी में घोलकर त्रिशूल बनाया जाता है त्रिशूल के ऊपर आठ टिपकी लगाई जाती है

1.3. नवमी की पूजा

इस दिन भोग के लिए गुड़ की खीर और नो फीके पुए बनाते हैं अष्टमी की ही थाली में गुड़ की खीर और दो अलग से फीके पुए रखते हैं पटे पर चावल की ढेरी की तरफ सामने नो पुए और उन पर गुड़ की खीर रखते हैं नवमी पर एक रखा नारियल चढ़ाया जाता है गुड़, घी की धूप की जाती है अष्टमी पर रखे चारों खूट नवमी पर उठाकर भोग के रूप में खाए जाते हैं नवमी के दिन 4:00 बजे के बाद पटा उठाकर वहां पर स्वास्तिक बनाकर धूप खमाई जाती है स्वथिक के ऊपर दीपक जलाया जाता है। धूप खमाने जाते है तब आते समय जलभर कर लाते है और पूरे घर मे जल छिड़कते है ।

सलकनपुर माता जी मंदिर

2. वैशाख के त्यौहार

2.1. अक्षय तृतीया

अक्षय तृतीया पर बेओडा (मिट्टी का) कोरा पानी से चौक पर अनाज रखकर रखा जाता है, उसमें आटी बांधकर पूजा की जाती है, धूप दीप से शुद्ध घी के खाजा खीर बनाकर गुड़, घी की धूप की जाती है । उस दिन कोई भी नई चीजें मंदिर में चढ़ाई जाती है, और खाई जाती है, जैसे आम खरबूजा, सत्तू, सीमई बेओड़े के दूसरा दिन उठाकर उस जगह

पर स्वास्तिक बनाकर दीपक जलाया जाता है । और उसका उपयोग किया जाता है, इस दिन किसी भी दाल का खाने में उपयोग नहीं किया जाता है सब्जी बनाई जाती है ।

3. ज्येष्ठ के त्योहार

3.1. निर्जला एकादशी

निर्जला एकादशी के दिन उपवास किया जाता और आम, चिरौंजी बाटी जाती है ।

4. आषाढ़ के त्यौहार

4.1. गुरुपूर्णिमा (भेरू जी की पूजा)

फूल, सातिया बनाकर पटा लगाते है, उस पर लाल कपड़ा बिछाकर एक ढेरी के ऊपर रखते है । चारो खूट पर चार चार पूड़ी कसार रखते है, गेहूं की ढेरी के सामने पांच बाटी ओर उन पर चावल रखते है, थाली में अबीर , गुलाल ,रोली चावल, घुँघरी, बाखला , आटी, कपूर रखते है । थाली में चार पूड़ी , दो बाटी , कसार ,घी गुड़, दो मीठी पुरन पोली रखते है, दो नारियल रखते है एक नारियल भेरू महाराज को चढ़ाते है । थाली उठाकर डांडा भांडा पहले गेंडों की पूजा होती थी, गेंडे न होने के कारण किसी भी गेट पर सिंदूर की पांच टिपकी लगाते है, उनकी पूजा करते है, नीचे घी, गुड़ और पुरन पोली को धूप अलग से छोड़ते है ।

खाने में चने की दाल, चावल पूड़ी या बाटी बनाते है, खुट को उसी दिन उठाकर खाते है, और धूप खमाई जाती है । आते समय पानी लाकर पूरे घर मे छिड़कते है ।

कुलुम परिवार के भेरू बाबा - परिवार सामूहिक पूजन करते हुए।

5. सावन के त्यौहार

5.1. हरियाली अमावस्या

अमावस्या के दिन खीर पूरी बनाते हैं।गुलाबी रंग खोलकर दरवाजे के पास दोनों कमरों पर दो पुतली बनाते हैं घर के चारों कोनों में 1-1 पुतली बनाते हैं। पुतलियों को खीर पुरी का भोग लगाकर घी गुड़ की धूप की जाती है।

गांव बाहर भोजन बनाने का प्रसंग - सावन के झूले

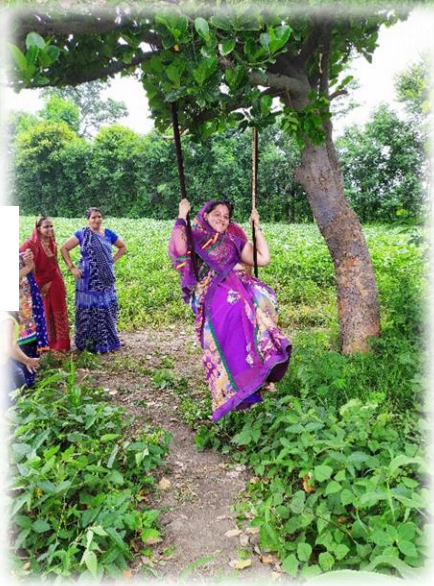

सावन सोमवार रुद्राभिषेक

5.2. नाग पंचमी

एक राखी, एक नारियल, कच्चा दूध, कच्चा कसार अगरबत्ती ले जाकर बमिले पर चढ़ाते हैं और नरेटी में दूध डालते हैं।

5.3. रक्षाबंधन

पंचक देखकर राखी के दिन हो तो 1 दिन पहले दोनों कऊलो पर श्रवण बनाते हैं। रात को दूध का भोग लगाते हैं खीर पुरी बनाकर श्रवण की पूजा कर राखी बांधकर गुड़ घी की धूप करते हैं। भगवान के पास नारियल, मिठाई, गोला, राखी 9 या 7 रखते हैं।भगवान की पूजा के बाद श्रवण की पूजा करते हैं यह पूजा मुहूर्त देखकर करते हैं।पहली राखी गणेश जी को चढ़ाते हैं, दूसरी राखी राधे कृष्ण को चढ़ाते हैं, तीसरी राखी शंकर गौरा को चढ़ाते हैं, चौथी राखी बड़े बूढ़ों को चढ़ाते हैं। इनका नारियल पैसा अलग से चढ़ाकर ब्राह्मण को देते हैं।पांचवी राखी सभी देवी देवताओं के नाम से चढ़ाते हैं बाकी राखियों को तिजोरी, दुकानों, दरवाजों पर बांधते हैं।

6. भाद्रपद के त्यौहार

6.1. जन्माष्टमी

इस पूरे दिन व्रत किया जाता है। शाम को कृष्ण जी की झांकी सजाई जाती है। भजन, कीर्तन उत्सव मनाया जाता है और रोहिणी नक्षत्र में रात्रि 12:00 बजे के आसपास जब कृष्ण को जन्म होता है पूजा आरती की जाती है भोग लगाया जाता है।भोग में सोठ हल्दी में तलकर गुड़ मिलाकर जापे का समान बनाया जाता है। एवं अजवाइन का अलग बनाते हैं। घी गुड़ में सोट मेवे का हरीरा बनाया जाता है।धने की पंजीरी बनाई जाती है माखन मिश्री सभी तरह के फल

मिठाईया दूध दही भोग पंचामृत बनाकर चढ़ाया जाता है। उसका कई दिनों तक वितरण किया जाता है सुबह नवमी में कृष्ण जन्म की बधाइयां बांटी जाती है, उत्सव मनाया जाता है।

यदि किसी को उद्यापन कराना हो तो 8 गर्भवती सुहागन स्त्री, दो चंदा सूरज की, एक भूलचूक की। गर्भवती महिलाओं को भोजन कराया जाता है उनको शक्ति के अनुसार दक्षिणा देते हैं इसमें फलाहार ही कराया जाता है।

6.2. हरतालिका तीज

हरतालिका तीज का व्रत महिलाएं सौभाग्य और पुत्र धन-धान्य प्राप्ति के लिए करती हैं। इस दिन निराहार व्रत रखती हैं शाम को मुहूर्त के हिसाब से कथा सुनती है। मिट्टी रेती के शंकर पार्वती बनाकर उनकी स्थापना कर सभी एकत्रित होकर पूजा करते हैं दही, दूध, फल ,फूल ,बेलपत्र, आंकड़ा धतूरा झाड़ियों को तरह-तरह की पत्तियां चढ़ाई जाती है। रेशमी वस्त्रों से झांकियां सजाई जाती है। अबीर, गुलाल, चंदन, नैवेद्य, मावा, मिश्री का भोग लगाया जाता है। गोरा मैया को सुहाग का सामान चढ़ाते हैं। इस दिन रात्रि जागरण भी किया जाता है। 5 बार पूजा आरती की जाती है सुबह-सुबह मूर्ति का विसर्जन किया जाता है। गोरा मैया को चढ़ा हुआ सुहाग बहू बेटियां सुहागन स्त्रियां पहनती है चीर बांधते हैं।

6.3. गणेश चतुर्थी व्रत

इस दिन गणेश जी की स्थापना की जाती है। मुहूर्त देखकर कलश रखा जाता है, गेहूं या चावल की ढेरी पर उनको बैठाया जाता है, अभिषेक किया जाता है। पान, गोल सुपारी, जनेऊ, अबीर, गुलाल, रोली, अक्षत, नेवेद्या, केला, ऋतु फल से पूजा की जाती है। दही, दूध, मेवा, मिठाई एवं दूर्वा चढ़ाई जाती है दूर्वा को नारियल कलश पर रखा जाता है एवं चढ़ाया भी जाता है। लड्डू बाटी का भोग लगता है एकासना की जाती है। 10 दिन तक सुबह शाम पूजा आरती करते हैं पितृ पूर्णिमा के दिन सुबह पूजा अर्चना कर भोग लगाकर इन का विसर्जन किया जाता है।

6.4. ऋषि पंचमी

इस दिन सुबह नदी में जो तिल से स्नान करते हैं। सप्त ऋषि की पूजा करते हैं आदिझड़ा से स्नान व दातुन किया जाता है। आज के दिन मोरधन का फलाहार किया जाता है।

6.5. डोल ग्यारस

दिन भर व्रत करते हैं शाम को डोल निकालते हैं तब यशोदा जी की गोद भरते हैं और पूजा करते है

6.6. बछ बारस

सुबह गाय केड़े की पूजा करते हैं जवार या मक्का की रोटी खाते हैं धार का कटा हुआ और गेहूं चावल कुछ नहीं खाते हैं हाथ का बोया हुआ अनाज खाते हैं भैंस के गोबर से औगड़ा बनाकर उसमें दूध पानी भरकर उसकी पूजा करते हैं बछबारस की कहानी की जाती है, रात को कुछ खाते नहीं है जितने बेटे हो उतने बेसन के लड्डू बनाकर पूजा में रखकर बेटों को तिलक लगाकर उनसे उठावाये जाते हैं

6.7. अनंत चौदस

इस दिन बिना नमक का खाना खाते हैं अनंत नारायण भगवान की पूजा करते हैं और कथा सुनते हैं

7. अश्वनी कुआर के त्यौहार

पित्र देव की 16 दिन तक पूजा की जाती है तिथि के दिन पंडितों को भोजन करवाया जाता है आटे से पगले बनाए जाते हैं इनके चारों और खुट पर गिलकी के पत्ते रखे जाते हैं गिलकी के फूल रखे जाते हैं पत्तों पर चार चार पूरी चारो तरफ रखते हैं पूरी के ऊपर खीर भजिये कद्दू या गिलकी की सब्जी रखी जाती है और इनकी पूजा की जाती है सारे कुटुंब के लोग पूजा करते हैं घी गुड़ की धूप करते हैं चारों फुट उठाकर दीपक जलाते हैं पूजा के बाद खुट उठा कर एक गाय को एक कुत्ते को एक कौवे को एक भिखारी को देते हैं 16 दिन करते हैं ऐसा यदि गया जी नहीं छोड़े हैं तो और यदि छोड़ दिए हैं तो ना पगलीय बनाते हैं कुछ नहीं करते हैं अपने अनुसार दान पुण्य करते हैं धूप करते हैं 16 दिन तक पितृ अमावस्या के दिन 20 पूऐ फिके खीर गुड़ की बनाते हैं पगलिया के ऊपर 16 पूऐ रखते हैं उनके ऊपर खीर रखते हैं चार पूऐ थाली में रखते हैं खीर पुरी की धूप होती है रोज जैसी विधि होती है वैसा ही अमावस्या के दिन करते हैं

शाम को 4:00 बजे 16 दिनों की धूप को पुरखे की विदा करते हैं आंख बंद करके गेहूं चने का बीज बोते हैं और बोलते हैं जितने पुत्र उनको बताना पानी लाकर पूरे घर में छिङकते हैं, दीपक और स्वास्तिक तो आखरी में सभी त्योहार पर बनाते हैं

7.1. कुंवार की अष्टमी

कुंवार की अष्टमी पर कुलदेवी की पूजा होती है, उसमे पटा लगाया जाता है, उस पर लाल कपड़ा बिछाया जाता है, पट्टे के नीचे फूल या स्वास्तिक बनाकर पट्टे के ऊपर सीधे हाथ पर गेहूं की और उल्टे हाथ पर चावल की ढेरी लगाई

जाती है, उन ढेरी के बीच घी सिंदूर लगाकर 17 कंकर रखे जाते हैं, कंकर के ऊपर शादी में चढ़ी माताजी रखी जाती है । गले की पाटे पर रखने से पहले गंगाजल से नहला कर और आटी बदलकर माताजी को पाटे पर रखते हैं, नो-नों खारक, बदाम, लोंग, इलाइची रखी जाती है, माता जी की पुड़िया भोग में बिना नमक का आटा लगाकर (नहा कर गेहूं को धोकर) शुद्ध घी की पूरी 20-25 बनाई जाती है, और गुड़ की लापसी और घूघरी बाखला चने की दाल बाटी और चावल बनाते हैं, पट्टे पर चार चार पूरी चारों खूट पर रखते हैं, पूरी के ऊपर लापसी के एक-एक लड्डू और आटे के दीपक रखकर जलाए जाते हैं, दोनों ढेरी के बीच में एक के ऊपर एक पाच बाटी रखी जाती है, भाटी के ऊपर थोड़े से चावल रखे जाते हैं, पटे के पीछे और आसपास आम के पत्ते रखे जाते हैं, पूजा की थाली में अबीर, गुलाल, अक्षत, रोली, आटी, दो पान, कपूर, एक पान कलश में रखा जाता है, एक पान कपूर के लिए गोगरी बाखला 5 पूरी थाली में लापसी, चावल, दो बाटी रखते हैं । घी गुड़ धूप के लिए रखते हैं, तीन नारियल रखते हैं, दो नारियल अष्टमी पर चढ़ाते एक अष्टमी का और एक भेरू महाराज का, और एक नवमी के दिन चढ़ाते हैं । दीवार पर पट्टे के सामने पट्टा लगाते समय सिंदूर को घी में घोलकर त्रिशूल बनाया जाता है त्रिशूल के ऊपर आठ टीपकी लगाई जाती है

7.2. नवमी की पूजा

इस दिन भोग के लिए गुड़ की खीर और 9 फीके पुए बनाए जाते हैं अष्टमी की ही थाली में गुड़ की खीर और दो फीके पूए अलग से रखते हैं पाटे पर चावल की ढेरी की तरफ सामने नो पुऐ और उन पर गुड़ की खीर रखते हैं नवमी पर एक रखा हुआ नारियल चढ़ाते हैं गुड़ घी की धूप की जाती है अष्टमी पर रखे चारों खूटो को नवमी पर उठाकर भोग के रूप में खाए जाते हैं नवमी के दिन 4:00 बजे के बाद पटा उठाकर वहां पर स्वास्तिक बनाकर धूप खमाई जाती है स्वास्तिक के ऊपर दीपक जलाया जाता है

यदि लड़का है या शादी होती है तो पहली बार चाहे चेत्र की हो या कुवार की हो नो नेवैध से पूछती है एक नारियल बढ़ोतरी का बढ़ता है

नो नैवैध का नाम गूंजा खाजा भजिया खीर लापसी पूड़ी चावल पापड़ चोटि-गोटि अगर बच्चे की पहली अष्टमी पड़ी है लड़का हो या लड़की खीर से बुटाते है (आम के पत्ते से तीन बार जीभ पर थोड़ा थोड़ा लगाना है उससे लालकोरा झबला बनाते हैं)

7.3. दशहरा

दशहरे के दिन सभी दशहरा जीतकर आते हैं, हनुमान जी के मंदिर जाकर नारियल चढ़ाते हैं घर आते हैं तो भाइयों को बहने तिलक लगाती हैं आरती करती हैं सभी बड़े बूढ़ों के पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं और मिठाइयां खाते हैं इस प्रकार दशहरे का उत्सव बनाया जाता है

7.4. शरद पूर्णिमा

शरद पूर्णिमा दिन चांदनी रात में ठाकुर जी को बैठाकर उनकी पूजा की जाती है इस दिन साबूदाने की खीर बनाकर चांदनी रात में बाहर रखी जाती है पूजा करके खीर का प्रसाद बांटा जाता है इस दिन कहा जाता है अमृत बरसता है और खीर में गिरता है इस खीर का सूबह प्रसाद बांटा जाता है

8. कार्तिक मास के त्यौहार

8.1. धनतेरस

धनतेरस के दिन हम साफ-सफाई बंद कर देते हैं जितना भी काम है बारस तक पूरा हो जाता है इस दिन मुहूर्त देखकर बहू बेटी पूजा करके नया चूड़ा बिछिया बदलती है शाम को मुहूर्त देखकर धनतेरस की पूजा की जाती है गादी की धन की दुकान की तिजोरी की पूजा की जाती है

पूजा की सामग्री

जल पान अबीर गुलाल रोली अक्षत अश्वगंधा फल मिठाई तोरण बंदरवाल बनते दूध दही गुड धना आदि से धनतेरस की पूजा की जाती है आज से तेरा दीपक जलाए जाते हैं

8.2. रूप चौदस

रूप चौदस के दिन सुबह जल्दी उठकर नहाते हैं और नए वस्त्र पहनते हैं और शाम को 14 दीपक जलाते हैं

8.3. दीपावली

दीपावली के दिन मुहूर्त देखकर लक्ष्मी जी का पटा लगाते हैं पट्टे के नीचे फूल स्वास्तिक बनाकर अनाज रखते हैं उसके ऊपर पटा रखकर लाल कपड़ा बिछाते हैं पट्टे के सामने गेहूं या चावल रखकर कलश की स्थापना की जाती है कलश में पैसा सुपारी रखना बा कलावा बांधना चाहिए कलश के ऊपर नारियल रखते हैं शाम को शुभ मुहूर्त में लक्ष्मी जी का पाना रखकर घी की ज्योत लक्ष्मी जी के सीधे हाथ पर जलाना चाहिए

पूजा की सामग्री

जल का लोटा उसमें पान थाली में अबीर गुलाल हल्दी मेहंदी रोली अक्षत पान कपूर फूल फूलों की माला गुड धना दो नारियल दही दूध धूप जनेऊ पैसा गोल सुपारी 5 गठान हल्दी 5 कमलगट्टा लक्ष्मी जी की पूजा की पुड़िया शक्ति अनुसार सुहाग का सामान चुंदड़ी मां को चढ़ाया जाता है कमल का फूल भी चढ़ाया जाता है झाड़ू कलम बहीखाता

कैलेंडर कांटा नए ला कर रखे जाते हैं, तरह तरह के फल मिठाई रखी जाती है लक्ष्मी जी भोग के लिए हलवा पूरी बनाई जाती है गणेश जी के लिए पांच लड्डू मोदक या मोतीचूर के रखे जाते हैं 21 या 16 दीपक नए कुलपे जाते हैं।

21 दीपक को थाली में रखकर इनकी पूजा की जाती है, चावल की फूली जल अक्षत रोली से उनको बहु पूरे घर में सभी दूर रखती है पूजा के समय पूरे दरवाजे खुले रखना चाहिए बन सके तो सारी रात जागरण कर दरवाजे खुले रखना चाहिये।

पूजा विधि

सबसे पहले गणेश जी स्थापना करते हैं एक पान पर स्वास्तिक बनाकर गोला सुपारी सिक्का रखकर गणेश जी की स्थापना की जाती है गणेश जी की पूजा जल से स्नान दूध दही से स्नान करवाकर कलावा चढ़ाया जाता है। दूर्वा चढ़ाते हैं अबीर गुलाल चंदन अक्षत पुल पर सभी चढ़ाया जाता है पांच लड्डू से उनका भोग लगाते हैं जल आचमन कर हाथ जोड़कर शुभकामनाएं दी जाती है

कलश की पूजा इसी विधि से कलश व दीपक की पूजा की जाती है

लक्ष्मी जी की पूजा

जल से नहला कर अबीर गुलाल चंदन हल्दी मेहंदी अक्षत रोली फूल माला चढ़ाई जाती है सारा सुहाग का सामान चढ़ाया जाता है सभी फूल मिठाई रखी जाती है

गणेश जी का नारियल चढ़ाकर लक्ष्मी जी का नारियल चढ़ाया जाता है साथ में गहने पैसे तिजोरी माया सब की पूजा की जाती है लक्ष्मी जी की पूजा के साथ कुबेर पूजा की जाती है वही खाते में स्वास्तिक बनाकर श्री गणेशाय नमः रोली से लिखा जाता है कलम दवात कांटा बाट की पूजा भी की जाती है। उसके पश्चात झाड़ू की पूजा भी करते हैं घर में गाय और गाड़ी भी है तो उनकी भी पूजा की जाती है दरवाजे पर शुभ लाभ लिखा जाता है लक्ष्मी मां सदा सहाय करना सिंदूर से लिखा जाता है दीपक की रोशनी में पटाखे जलाए जाते हैं लक्ष्मी माता से हाथ फैला कर प्रार्थना की जाती है लक्ष्मी मां हमारे परिवार पर सदा रिद्धि सिद्धि गणपति विष्णु भगवान सहित विराजमान रहना गुड जी की धूप भी की जाती

8.4. पड़वा

पड़वा के दिन गोवर्धन की पूजा नहाकर अच्छे वस्त्र पहनकर गोवर्धन बनाते हैं गोबर से उनकी पूजा हम सब परिवार एकत्रित हो एक जगह करते हैं इनकी पूजा में खीर पूरी बनती है भटे की सब्जी या मिक्स सब्जी वाकई तरह के व्यंजन बनाते हैं भूल जा खा जा शकरपारे पापड़ी फल मिठाई दही दूध से इनकी पूजा होती है गोवर्धन के सिर के ऊपर मोर पंख लगाया जाता है और गेंदे के फूलों की माला चढ़ाई जाती है मूली सिंघाड़ा केला सीताफल आदि चढ़ाए जाते सभी सदस्य परिवार के दूध की धार लेकर उनकी सात परिक्रमा लगाते हैं इसी तरह से थाली लगाकर सारे व्यंजन से भगवान और लक्ष्मी जी का भी भोग लगाया जाता है

किसी को बड़े रूप में छप्पन भोग लगाना हो तो गोवर्धन पूजा से ग्यारस तक लगा सकते हैं दीपक भी लगता है एक ग्यारस तक दीपावली के दीपक धनतेरस से लेकर ग्यारस तक लगते हैं

8.5. भाई दूज

भाई दूज पर भाई को बहन अपने घर बुलाती है और खाना खिलाकर तिलक लगाती है

8.6. करवा चौथ

करवा चौथ के दिन पूरे दिन निर्जला व्रत किया जाता है

पूजा सामग्री

एक करवा लाल कपड़ा लोंग इलाइची खारक बादाम पैसा सुपारी धूप के लिए गुण भी सुहाग का सामान

पूजा की विधि

शाम को करवा सजाया जाता है करवा में पैसा सुपारी खारक बदाम लोंग इलाइची डालते हैं उसमें पानी व दूध भी डालते हैं पूजा के समय करवे के दीपक पर शक्कर या मिठाई रखते हैं करवे की पूजा करके कथा सुनाते हैं इसके बाद चंद्रमा को अर्घ देकर पति के हाथ से करवे का पानी पीते हैं सास व ननंद काकल्पना निकालते हैं

8.7. गोपाष्टमी

इस दिन गाय की पूजा की जाती है

8.8. आंवला नवमी

आंवला नवमी के दिन आंवला की पूजा की जाती है 108 वस्तु चढ़ाकर परिक्रमा की जाती है वस्त्र फूल फल मिठाई सुहाग का सामान चढ़ाया जाता है और अवनी के नीचे ही भोजन किया जाता है

8.9. तुलसी विवाह देवउठनी ग्यारस

इस दिन गोवर्धन को उठाकर उस जगह को लेकर फूल स्वास्तिक बनाकर चार गन्नों की ज्वार के भुट्टो की झोपड़ी बनाई जाती है झोपड़ी पर लाल या पीला वस्त्र डाला जाता है! झोपड़ी के नीचे गेहू रखकर पटा बिछाकर लाल कपड़ा बिछाकर भगवान का श्रृंगार रखा जाता है! साथ में गणेश जी व तुलसी के पौधे को बिठाया जाता है गमला लिप पोतकर रखा जाता है भगवान व तुलसी जी को फूलों से व माला से सजाया जाता है तुलसी जी को चुंदड़ी उड़ा कर भगवान के दुपट्टे से गठान बांधी जाती है पटे के सामने गेहूं या चावल रखकर कलश रखा जाता है पूजा की थाली में पूजा का सभी सामान पान, पैसा, सुपारी, फल, फूल, मिठाई, मूली, भटा, भाजी चढ़ाया जाता है पूजा व आरती करके नारियल चढ़ाया जाता है शालिग्राम भगवान ओर तुलसी का विवाह किया जाता है इन सबसे पहले गणेश जी की पूजा की जाती है! घी गुड़ की धूप की जाती है! हलवा पूरी का भोग लगाते हैं पैसे व नारियल की भेंट कृष्ण भगवान को दी जाती है तुलसी का पेर पूजकर यथाशक्ति कुछ पैसे दिए जाते हैं दान दक्षिणा की जाती हे!

8.10. वैकुंठ चौदस

इस दिन 11 दिपक का नदी में दीप दान किया जाता है

8.11. कार्तिक पूर्णिमा

तुलसी का झूला डाला जाता है तुलसी की पूजा की जाती है मावे के पांच लड्डू चढ़ाए जाते हैं! व्रत किया जाता है! एक लड्डू बालक का, एक पति का, एक लड्डू मंदिर का, एक लड्डू खुद का, एक बराबर वाली सहेली का जो इस व्रत को लेती है ओर व्रत ना ले तो एक लड्डू गाय को देते हैं!

9. माघ मास

9.1. सक्रांति

इस दिन पर्व लिया जाता है अंधेरे से तिल्ली गंगाजल से स्नान किया जाता है नदी में स्नान करो तो और अच्छा है! तिल का दान किया जाता है खिचड़ी, गुड़, घी का भी दान किया जाता है सुहाग की 13 चीजें बाटी जाती है! मंदिरों में तिल्ली के साथ सुहाग का सामान दिया जाता है! ब्राह्मण बेटी को भोजन करवाकर दान पुण्य किया जाता है!

9.2. बसंत पंचमी

इस दिन भगवान की पूजा अच्छे से की जाती है नाहलाकर भगवान के वस्त्र बदलते हैं मुकुट बदलते हैं उनका श्रंगार किया जाता है! केसरिया भात का भोग व पीले फलों का भोग लगाया जाता है! संतरे, मोसंबी, बेर, आम के मोर, गेहूं के बाल चढ़ाई जाती है! केसरिया रंग छिड़का जाता है सब पीली वस्तुओं का भोग लगाकर पूजा आरती कर प्रसाद बांटा जाता है! अपने को भी पीले या केसरिया कपड़े पहनना चाहिए!

10. फागुन मास के त्यौहार

10.1. शिवरात्रि

इस दिन हम व्रत करते हैं! मंदिर जाकर या घर पर शिवरात्रि के दिन शंकर भगवान का अभिषेक करते हैं!

10.2. होली

होली की पूर्णिमा को शाम को हम मुहूर्त से होली की पूजा करते हैं! पूजा में अबीर गुलाल रोली अक्षत फल फूल मिठाई हलवा पूरी रखते हैं! सुबह होलिका दहन होता है! तब अग्नि लाकर घर में रखते हैं! उस अग्नि से उम्म्बी सेखते हैं! और तापते हैं! अपनी गोबर की माला (करसुले) चढ़ाकर दूसरी माला उठाकर लाते हैं! सुबह ही कलश लेकर उसमें रंग गुलाल डालकर शीतला माता ठंडी करने जाते हैं! साथ में होली भी ठंडी करते हैं यदि बन जाए तो सात दिन तक करते हैं नहीं तो होली के दिन ही करते हैं

10.3. शीतला सप्तमी

इस दिन नहाकर अछूता आटा पीसवाकर छठ के दिन रात को बसोड़ा बनाते हैं! सुबह शीतला माता के पूजन की जाती है पूजा में वीर महाराज का भात चावल ले जाते हैं मैया को पूरी, लापसी, राबड़ी, गली चने की दाल या कच्चे चावल मिलाकर पिसवा कर हल्दी मिलाकर उसका रेपन हाथ लगाने के लिए ले जाता है पूजा में सफेद ताव लाल ताव और सफेद वीर महाराज का लाल ताव मैया का जिस पर भोग रखा जाता है पीर महाराज को पूरे ही चावल चढ़ाते हैं बचाते नहीं हैं एक नारियल रुपया भेंट के रखे जाते हैं लाल ताव के ऊपर मैया का भोग रखा जाता है! चारों खुट पर दो दो पूरी रखी जाती है! गेहूं या ज्वार की आखोती रखी जाती है! एक नारियल मैया को चढ़ाकर फोड़ा जाता है!

पूजा विधि

जल, दुध, दही, चढाया जाता है हल्दी, मेहंदी, रोली,अक्षत से पूजा की जाती है चूड़ी,चुदड़ी यथा शक्ति सुहाग का सामान की (माता जी की पूडिया) चढ़ाया जाता है दीपक, अगरबत्ती ठंडा ही रखा जाता है पूजा करके पथवारी की पूजा की जाती है पथवारी के पास ही शीतला,पथवारी,गणेश जी और सूर्य देव की कथा की जाती है पूजा करने के बाद बाहर आ कर मंदिर के दरवाजे पर दोनों तरफ चार-चार हाथ व बीच मे एक स्वास्तिक बनाते है पूजा करके

लोटते समय होली की पूजा की जाती है जल से परिक्रमा ली जाती है वहाँ से थोड़ी दूर पर गेहूं चने के खेत बोए जिसमें आखं बदं करके पुत्रो का नाम लिया जाता है (बोल जाता है हमारे न होने पर हमारे पुत्र को बताना) शीतल सप्तमी से सोलह दिन की गनगौर शुरू हो जाती है

10.4. होली दशा

होली दशा के दिन बड़,पीपल की पूजा की जाती है इस पूजा में अपनी-अपनी थाली होना चाहिए किसी की भी थाली से पूजा नहीं करते हैं इस दिन दशा माता का डोरा लेकर उसकी भी पूजा करते हैं और पुराना डोरा पेड़ की डाल में डाल देते हैं दौरे को हाथ में रखकर कथा सुनी जाती है कथा सुनने के बाद डोरा गले में बांधा जाता है पीपल की पूजा के बाद पथवारी गाय के गोबर की ओर अकऊए की पूजा करते हैं इसके बाद खेत बोए जाते हैं भोग के लिए हलवा पूरी बनता है फागुन के महीने में होली के बाद पहला रविवार पड़ता है उसमें सूर्य चंद्रमा का उद्यापन किया जाता है इच्छा अनुसार

10.5. गणगौर

होली की पड़वा से कुंवारी लड़कियों की गणगोर शुरू हो जाती है कुंवारी लड़कियां तथा नई शादी वाली लड़कियां सभी मिलकर सुबह गणगोर पूजने लेने बगिया में जाती है पूजा कर कर कलश को फूल पत्तियों से सजा कर 16 दिन तक सिर पर रखकर गणगौर एक मुख्य स्थान पर रखकर पूजा करती हैं 16 दिन के बाद 17 दिन जो नई शादी वाली लड़कियां उद्यापन करती है शीतला सप्तमी से सभी महिलाओं की गणगौर शुरू हो जाती है सभी महिलाएं सज धज कर रोज नए-नए बगीचों तालाबों पर गणगौर लेने जाती है फूल पत्ती से सजा पर कलश की पूजा कर कर नाचती गाती हुई बाजों के साथ एक मुख्य स्थान पर लाकर रखती है यह काम तीज तक चलता है तीज के दिन मिट्टी के गणगोर लाकर उनका श्रंगार कर पूजा की जाती है इसमें सभी सुहाग का सामान और बेसन के पकवान व गहने चढ़ाए जाते हैं मीठे चरके गुने भी चढ़ाए जाते हैं कुंवारी लड़कियां 16-16 व महिलाएं 8-8 चढ़ती है (गुने) उनको वापस बदल कर लेते हैं उनको पहले खा कर फिर खाना खाते हैं पूजा में अबीर, गुलाल, रोली, चावल, बाथला, मेहंदी, काजल, हल्दी, चलाते हैं रोली, मेहंदी, काजल, की टिकप की लगाई जाती है कुंवारी 16 -16 वा सुहाग ने 8-8 टिपकी लगाती है हलवा पुरी का भोग लगाया जाता है पटा धोकर पानी पिलाया जाता है सोने की अंगूठी से गणगौर को झूला झुलाया जाता है पानी की भरी थाली में ईसर, गणगौर का मुंह देखा जाता है एक की एक उंगलियां पकड़कर सुहागन स्त्रियां गवर सुहागन स्त्रियां गोर गोर गोमती खेलती गणगौर वा गणेश जी की कहानी सुनते हैं हाथ में अक्षत लेकर उठकर सूर्य को अरग देते हैं गणगौर का उद्यापन भी किया जाता है उद्यापन में इसी तरह की थाली लगाकर गणगौर को घर लाकर पूजा करते हैं उस साल गणगौर को घर पर बैठ आते हैं सास-ससुर वा गणगोर के समान सुहाग सहित लगता

है और 16 सुहागने गणगोर की एक चंदा वा एक सूर्य की पूरी अट्ठारह सुहागने जीमाई जाती है उनको शक्ति अनुसार दक्षिणा दी जाती है

11. नोट

- 12 महीने की सभी चौथ का व्रत किया जाता है और सभी का उद्यापन भी किया जाता है
- आंवला नवमी, सोमवती अमावस्या, और बछवारस, का भी उद्यापन किया जाता है बछवारस के उद्यापन में गेहूं का खाना वा धार का कटा हुआ नहीं खाते हैं

12. जन्मोत्सव का रीति रिवाज

जब घर में भगवान खुशी देता है तो सातवें महीने में बहू बेटी की गोद भराई की जाती है! चोक पर बैठाकर कि चुंदड़ी उड़ाई जाती है! मेवे, फल से सात बार गोद भरी जाती है! बुलावा करके घेवर बांटे जाते हैं! यह सब मायके की तरफ से लगता है यदि शक्ति ना हो तो अपन खुद भी कर सकते हैं! उसको बहुत बड़े रूप में या सूक्ष्म रूप में भी किया जा सकता है! बच्चे का जन्म होता है तो सबसे पहले फुखा रखा जाता है उसका नेक सास का लगता है । 3 दिन की सूतक मुहूर्त से उठाई जाती है! जच्चा-बच्चा को दाई द्वारा नहला कर अपने को नहलाना पड़ता है! इसके बाद मुहूर्त देखकर उसको मेवा, मिष्ठान, हरीरा किया जाता है! मुहूर्त दिखाकर दूसरी शतक उठाई जाती है उसे 10 दिन की सूतक बोलते हैं! यह नावन द्वारा उठाई जाती है! इस रोज जच्चा को नया चूड़ा, बिछिया नए कपड़े पहनाकर सूरज पूजा की तैयारी की जाती है!

पूजा में लगने वाली सामग्री

चावल के चार लड्डू, राख के चार लड्डू, पूडी, लापसी, घुघरी, बाखला, दाल, कढ़ी बनाई जाती है! उसको छच पच बोलते हैं! पूजा की थाली में पांच सुपारी, बताशा, घुघरी बाखला, आटी, दीपक, अबीर, गुलाल, रोली, दही, दूर्वा से सूर्य देव की पूजा की जाती है! घर में चौक बनाकर जच्चा को बैठाकर बच्चे को गोद में बैठाकर बच्चे का मुंह ढककर (बच्चा दीपक की रोशनी ना देखें) रखते हैं! पटे के सामने कलश रखकर कलश कि दीपक की पूजा की जाती है! पति-पत्नी बच्चे को मायके के कपड़े किए जाते हैं यदि मायके वाले ना ला सके तो घर से ही कर सकते हैं! यह पूजा होने के बाद बच्चे को किसी को देकर सूर्य की पूजा बाहर आकर करते हैं जल दही से छिटे देकर सभी चीजों के छींटे देकर घुघरी बाखला छिड़ककर सूर्य से प्रार्थना करते हैं सूर्य मेरी पूजा स्वीकार करें चारों दिशा में चार राख के लड्डू डाले जाते हैं चारों दिशा में चावल के लड्डू भी डाले जाते हैं पूजा के बाद घर में आकर बड़े बुजुर्गों के पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं महिलाएं देवी देवताओं के गीत एवं मंगल गान करती है ! उसके बाद जच्चा को इस दिन से भोजन दिया जाता है! जेठानी को लड्डू का नेक दिया जाता है ननंद दोनो दरवाजे पर साथिया बनाती है जिसका भी नेक लगता है देवरानी पलंग बिछाने का नेक लेती है

13. जलवाय के रीति रिवाज

सवा महीने की मुहूर्त से जलवाय होती है जच्चा को सजाकर सभी रिश्तेदार को बुलाकर आस-पड़ोस बुलाकर चौक बनाकर जच्चा को बिठाते हैं इसमें भी पटा कलश रखा जाता है पति पत्नी बच्चे को लेकर जोड़े से बैठाते हैं मायके वाले शक्ति अनुसार सभी के कपड़े और बच्चे के लिए रकम, कपड़े, पालना लाते हैं वही कपड़े पहनकर जच्चा जलवा पूजन के लिए जाती है! थाली में पूजा की सामग्री पान, सुपारी, बताशा, अबीर, रोली, अक्षत, दीपक दो कलश घुघरी बाखला बच्चे का पोथड़ा घाट पर ले जाते हैं नावन थाली रख कर ले जाती है बाजे के साथ मंगल गीत गाते हुए जच्चा जाती है और कुआं पूजती है पूजा करके जच्चा के सिर पर पोथड़ा धोकर पोतड़े की चोमली बनाकर सिर पर कलश

रख कर लाती है! उस कलश को देवर उतारता है जिसका नेक लगता है घर पर आने के बाद बहन - बेटी दरवाजे रोकने का नेक लेती है उसी शाम को मुहूर्त से जच्चा से भाजी हरी सब्जी बनवाई जाती है! सवा महीने में जच्चा को चौके में जाने की अनुमति मिलती है

14. शादियों के रीतिरिवाज

सगाई- सगाई में चौक करके लड़की को बिठाते हैं पटा रखकर सामने कलश रखते हैं लड़की को पटे के सामने बैठाते हैं ब्राह्मण वेद मंत्र द्वारा लड़की से पूजा करवाता है महिलाएं देवी देवता के गीत व मांगल गीत गाती है ससुराल पक्ष के लोग पहले ससुर लड़की को चुंदड़ी उड़ाते हैं गोद भरते हैं बाकी सभी रिश्तेदार लड़की की गोद भरते हैं कपड़े करते हैं फल फूल मेवा मिष्ठान यथाशक्ति परिवार के कपड़े इसके बाद बहन ,बेटी आरती कर लड़की को उठा देती है इसी तरह लड़की वाले लड़के के यहां जाकर रिश्तेदारों सहित फलदान एवं कपड़े करते हैं सगाई में देवी देवता के पांच नारियल लगते हैं चौक से उठाकर देवी देवता के धोक दिलवाते हैं।

14.1. लगन लिखाना

लगुन में लड़की के यहां लड़के वाले 2 लोग आते हैं लड़की के कपड़े लाते हैं छोटे बहन भाई के लाते हैं पान बताशा, फल, मिष्ठान में भी लाते हैं यह मंगल गीत गाने वाली महिलाओं में बांटते हैं लगुन ब्राह्मण द्वारा लिखी जाती है उसे लड़के के पिता झेल कर ले जाते हैं उसी रोज लड़के वाले के यहां मुहूर्त खानागर का होता है और लड़की वालों के यहां भी होता है इसी दिन से रोज रात्रि को शादी के दिन तक मंगल गीत शुरू हो जाते हैं चौक से उठाकर देवी देवता के धोख दिलवाते हैं जो खानागार आती है उससे पांच चीजें बनती है दो चूल्हे, एक कोठी दो मुंह की, दो ढक्कन की कोठी के दो सिगड़ी बनती है मुहूर्त के दिन तिलक सिलक खीचते हैं एक रोली,एक हल्दी, एक तरफ पांच एक तरफ सात सिलक खींचते है वाली के सास- ससुर ,मां पिता होना चाहिए। बन्ना बन्नी को हल्दी चिकसा लगाकर सजाकर ही मां के दरबार में ले जाते हैं आगे पटा बिछाकर कलश रखकर जो लगून में आता है हल्दी चिकसा लगाते हैं।

14.2. माता पूजन

माता पूजन के एक दिन पहले शाम को शीतला माता को निमंत्रण देने जाते हैं वहां गोबर ले जाते हैं दीपक, हल्दी चिकसा, मेहंदी ,रोली, अक्षत ले जाते हैं जो चौक लिपकर दीपक रखकर सातीया बनाकर उस पर पैसा सुपारी रखकर रोली के छींटे अक्षत से मां को निमंत्रण देते हैं कि सुबह शादी में आपको आना है हमारा निमंत्रण स्वीकार करो।कलश भी ले जाते है वहां से आकर समस्त देवी देवता के गीत गाते हैं रात को ही ।और बसोडा बनाते हैं भोग में चावल, गुना, वीर महाराज के लिए गुड और तेल के दूसरी कढ़ाई घी की में पूडी बनती है घुघरी बाखला बनता है सफेद ताव पर चावल गुना रखना है चारों खूट पर दो दो गुना और बीच में चावल रखते हैं चावल थोड़े ही बनाते हैं बचाना नहीं है।

लाल ताव पर ऊपर दो दो पूडी चारो खूट पर पूरी के ऊपर लापसी के लड्डू बीच में मईया का पूरा श्रृंगार, (पुडीया माता जी की) लोंग इलाइची खारक बादाम 8- 8 ।

जल से नहला कर मैया और वीर महाराज को दही दूध से स्नान कराकर आटी कलावा चढाते हैं मैया को चुनरी उड़ाते हैं टिकी ,मेहंदी, अबीर, हल्दी गुलाल ,अक्षत चिक्सा सभी के छींटे देते हैं घुघरी बाखला चढ़ाते हैं माता-पिता के साथ में जिसकी बन्ना बन्नी शादी होती है ये सबसे पहले पूजा करते हैंएवं जो मां सिर पर सिगड़ी रख कर ले जाती है उसमें गुड़ घी की धूप करते हैं उसके बाद एक के बाद एक ताऊ ,ताई, चाचा, चाची, भैया ,भाभी जीजा ,जीजी सभी कुटुंब के लोग पूजा करते हैं कच्चे चावल से हल्दी डालकर रेपन से दोनों दरवाजे पर हाथ लगाते हैं घर आकर घर में भी लगाते है।

आरती कर मां से आशीर्वाद लेकर घर आते हैं। घर आकर बन्ना या बन्नी को चौक पर बैठाया जाता है दरवाजे पर राई नॉन्न भी किया जाता है। सबसे पहले रुपया नारियल मां देती है, उसके बाद जितने भी लोग हो सब देते हैं। बहन आरती कर हाथ में अक्षत देख कर चौक से उठाती है और अंदर ले जाकर सभी देवी देवताओं को धोक दिलवाती है। हल्दी चिकसा वाला काम शाम को 4:00 बजे भी कर सकते हैं।

14.3. गणेश पूजा

पटा बिछाकर लाल कपड़ा बिछाकर चावल की ढेरी लगाते हैं, उस पर पान फूल रखते हैं। गणेश मुहूर्त के दिन जो दाल चावल लेते हैं वही चावल गणेश पूजा में बनते हैं जो मूंग लेते हैं उसकी दाल बनती है जो चने की दाल लेते है उसके ही गणेश बनते हैं।उनमें आटी लपेटकर, तिलक लगाकर पटे पर बिठाते हैं। पीतल के गणेश जी बहन बेटी लेकर दरवाजे से बाहर खड़ी होती है उन्हें बनाकर मा लाती है, नेग देती है। उन गणेश जी को पान फूल के ऊपर बैठाते हैं। अछूते आटे के खाजे, लापसी बना कर गणेश जी को भोग लगाते हैं चारों तरफ पटे के 4-4 खाजे 1-1 लड्डू रखते हैं। साथ में बने हुए दाल चावल का भी भोग लगाते हैं। माता-पिता पहले पूजा करते हैं गणेश जी को ढेर सारी राखी चढ़ाते हैं, जो पूजा के बाद सभी महिलाओं को बांटते हैं। इसके बाद पूरे परिवार के सदस्य पूजा करते हैं।

मंडप छाया-मंडप में चार बांस, चारों तरफ आम की बंदरवाल बांधते हैं। इस कार्य को जमाई करते हैं उनको नेग दिया जाता है। चारों बांसो से चार चार पूरी, एक एक पोटली बिनौला और हल्दी की बांधते हैं। सफेद कपड़े को हल्दी में करके चारों तरफ बांधते हैं। बीच में एक बड़ा दीपक छेद करके बांधा जाता है। मामी मंडप लिपति है। चारों जमाई को हल्दी के छापे लगाकर नेग देते हैं। ब्राह्मण को बुलाकर हवन करवा कर मंत्रों के द्वारा बन्ना या बन्नी को कंकण बंधाया जाता है। एक खूट में मानकखम लगाया जाता है उसको बुजुर्ग महिलाये एवं बहू बेटियां न्योता देती है। कच्चे पापड़ मानकखम पर रखते हैं उसकी पूजा कर चने की दाल और बिनोलो से न्योता जाता है। कई पीढ़ियों के मृतक बुजुर्गों को, बच्चों को न्योता दिया जाता है उनका नाम लेकर उसके बाद शक्कर, घी का भोग लगाकर, पानी पिलाकर, हाथ जोड़कर प्रार्थना की जाती है। सब मृतक, बड़े- बूढ़े, छोटे शादी में पधारो ऐसी कामना की जाती है। उसी शक्कर का प्रसाद पूरे परिवार में बांटते हैं, पानी पीकर उठना चाहिए।

14.4. मामेरा

मायरे में सबसे पहले मंडप को कपड़ा उड़ाया जाता है। सभी भाइयों को बंधाया जाता है। सबके हाथों में रुपए नारियल दिए जाते हैं। जब मायरा शुरू होता है जब बड़े बूढो के नाम के 1 जोड आदमी और महिला के कपड़े ब्राह्मण को दिए जाते हैं इसके बाद शक्ति के अनुसार मायरा बन्ना या बन्नी और उसके माता-पिता पूरे परिवार को किया जाता है फिर शादी वाले घर से भाई भतीजे की विदा की जाती है खिचड़ी और कपड़ों से धोली कलश-सीधा सामान लगा कर ले जाते हैं उसमें नेग

रखकर पूजा की थाली साथ में ले जाते हैं उसमें पापड़ गुड सूजा रख कर ले जाते हैं कुमार के चाक को पूज कर उस पर सूजा पापड़ चढ़ाकर ब्लाउज पीस चढ़ा कर दो बेवड़े की पूजा करके नाचते गाते हुए सिर पर रखकर लाते हैं यहां एक तो भाभी और एक बहन बेटी रखती है इसको भाई जमाई उतारते हैं नेग लेकर यह माय माता के दोनों और रखते हैं

सोजं में कपड़े रकम आते हैं जिसकी शादी है उसे मंडप में बैठा कर सुहागन महिलाएं हल्दी उबटन चढ़ाते हैं और तेल चढ़ाते हैं उसको 4 कलश से नहलाती है उस कलश में रुपया सुपारी लौंग इलाइची एवं 1-1 लाख व पानी डालते हैं फिर मामा जबल उड़ा कर उसको आंख बंद कर माय माता के यहां जमाई लेकर आते हैं जब आख खोलते हैं तो जलते हुए दीपक को देखते हैं जो माय माता के यहां लगे होते हैं

मायमाता मैं अछूते आटे के खाजा लापसी चावल मूंग की दाल बनती है एक तरफ गेहूं से माय माता भराती है एक तरफ चावल से भराती है दो बार में भराती है आधी-2 (32) दीपक छटारने के नीचे औंधे (मिट्टी के) छटारने पर 32 खाजा और कसार रखते हैं उनके ऊपर 32 आटे के दीपक जलाए जाते हैं यही दीपक(बन्ना बन्नी) देखते हैं एक ज्योत बीच में घी की जलती है जो बहू आने तक जलती रहती है और दोनों तरफ 2-2 लोटा और उनके ऊपर नीचे एक एक

प्लेट रखते हैं पूरे परिवार माई की पूजा करता है माता-पिता और बन्ना बन्नी सबसे पहले पूजा करते हैं और धूप छोड़ते हैं बनी हुई माय माता दोनों के बीच में गुड रुपए लगाकर घी की धार लगाते हैं यह सफेद कपड़े पर बनाते हैं (चावल पीसकर हल्दी डालकर)

यदि लड़की की शादी है तो मां को दरवाजे पर जाकर दूल्हे को तिलक आरती सम्मान देना पड़ता है और परछती है और दूल्हे के मंच पर बैठने के बाद बहन बेटी बड़ बेउड़ा ले कर जाती है जो कुछ गहने देना होता है दिए जाते हैं परिवार की सभी महिलाएं नारियल देती है यदि लड़के की शादी है तो माँ लड़के को परछकर पर निकासी में विदाई करती है बहू आ जाने पर देहली पर सफेद कपड़े पर रोली के पैर बनवाना चाहिए एवं आरती करते हैं उसके बाद सभी दूर के सभी देवी देवताओं धुकाते हैं और बधावा मंगल गीत गाते हैं शादी में भी देवी देवता के पांच नारियल का लेना-देना करते हैं

सवा महीने बाद जिस रोज मंडप खुलता है माय माता उठती है उस रोज चढ़ाए जाते हैं देवी देवता के गीत गाए जाते हैं कंकण डोरा छुड़वाए जाते हैं यही प्रक्रिया लड़की वालों के यहां भी होती है (नारियल वाली) सत्यनारायण की कथा करवाई जाती है और 1 जोड़ कपड़े दूल्हा-दुल्हन को किए जाते हैं (मायके की ओर से)यदि लड़की की शादी है और विदा करके आते हैं तो काकड़ से बाहर बारात नहीं निकलने के पहले पानी का घड़ा भरकर घर पर लाते हैं लड़के की बारात की विदा करते हैं तब भी घड़ा भरकर लाते हैं और शादी के बाद से ही बधावा शुरू होते हैं दोनों पक्ष में

15. मृत्यु के रीति रिवाज

जब किसी की मृत्यु हो जाती है यदि अपने को पहले मालूम पड़ जाए कि मृत्यु होने वाली है उस प्राणी को पहले ही पलंग से नीचे लिटा देना चाहिए गोबर से लिप कर जो तिल्ली की कतार चारों और बनाकर लेटना चाहिए उसके मुंह में तुलसी दल चरणामृत दूध मावे की वस्तु रखना चाहिए भगवान का स्मरण करते रहना चाहिए भजन प्राणी को सुनाते रहना चाहिए दीपक और अगरबत्ती लगाना चाहिए आटे के चार लड्डू घी गुड़ डालकर बनते हैं उसमें से एक में एक रुपए रखते हैं जो मृतक के पल्ले में बांधते हैं यह लड्डू उतारे के समय काम आता है गायत्री संस्कार से मृत व्यक्ति को उठाना चाहिए पहला लड्डू संस्कार में जहां से मृतक को उठाते हैं वहां पर काम आता है दूसरा लड्डू देहली से बाहर निकालते समय काम आता है वहां पान गुलाल आटी स्त्री हो तो लाल कपड़ा आदमी हो तो सफेद कपड़ा ढाई मीटर लगता है मखाने मेवा रूपये पैसे नई थाली लोटा एक बतासे लगता है लोटे में घी भर कर ले जाते हैं थाली में अग्नि जाती है घर से नहला लाकर नए कपड़े पहना कर ले जाया जाता है घर के बहू बेटे और परिवार के सभी सदस्य

नारियल से परिक्रमा देते हैं जब प्राणी शमशान पहुंच जाता है वहां उतारा लिया जाता है एक लड्डू सें पिङं होता है और मृतक के साथ राई बांधना चाहिए वहां से आने के बाद नहा कर भोजन बनता है मूंग की दाल या बेसन बिना बघरा हुआ भोजन बनाने के पहले नहाने के बाद पांच कंकर व दुर्वा रखकर कुटुंब की सभी बहुएं मृतक को पानी देती है

15.1. उठावना

उठावने में मिट्टी का कलश जिसमें वहां आटा को उसनते हैं दो कुलिया नीम की डाल कुलिए में गोमूत्र लेकर नीम की डाल से छिङकते हुए जाते हैं

15.2. श्मशान में ले जाने वाली सामग्री

चावल गुड घी आटा दूध और बर्तन उठाने के बाद नहाकर घर पवित्र कर कर भोजन बनाया जाता है दाल चावल रोटी कडी बनती है और पटा बिछाकर जहां मौत होती है वहां पर धूप दी जाती है गौ ग्रास निकालते हैं सभी परिवार के सदस्य धूप देते हैं 12 दिन तक कोआ को गाय को भोजन दिया जाता है यदि कोई नाथ मिल जाए तो 12 दिन तक नाथ को भोजन कराते हैं मृतक स्त्री हो या पुरुष उस अनुसार से उठावने के दिन अस्थि विसर्जन का कार्यक्रम होता है शाम को उठाव ने के दिन से गरुड़ पुराण बैठाकर प्राणी को सुनाना और सभी को सुनना चाहिए इस दिन चावल में दूध डालकर थोड़ा-थोड़ा सबको देते हैं

15.3. दसवे दिन

दसवे दिन घर की साफ सफाई करते हैं सभी का शुद्धिकरण होना चाहिए, **दसे के दिन** उज्जैन भी जाते हैं अस्थि विसर्जन के लिए और कोई हरिद्वार इलाहाबाद भी जाते हैं नाथ की विदा कर उनको भी नए पुराने कपड़े, बर्तन, ओड़ना, बिछना, यथाशक्ति देना चाहिए रोज जिसमें खाते हैं वह बर्तन भी देते हैं

15.4. गयारवे दिन

11 तरह का भोजन बनता है उड़द के बड़े भजिए (बेसन के) खाजा, पूड़ी, मूंग की दाल, चावल, लापसी, दही, खीर, पापड़, मीठे भजिए, 11 जनों को भोजन कराया जाता है स्त्री हो तो स्त्री को, पुरुष हो तो पुरुष को पुरुष पुरुष को 11 जने ना हो पाए तो गाय माता को भोजन करवाते हैं

15.5. बारहवे दिन

यदि मृतक पुरुष हो तो 12 दिन में पगड़ी होती है और स्त्री हो तो 13 दिन में पगड़ी होती है

15.6. नुक्ते के दिन

12 पुरुष ब्राह्मण पहले जिम आए जाते हैं स्त्री की 13 ब्रह्माणी जी माई जाती है विधवा हो तो विधवा सुहागन हो तो सुहागन स्त्री जीमते हैं सुहागन को सुहाग के सामान साड़ी चूड़ा चप्पल शक्ति अनुसार दिए जाते हैं विधवा को सुहाग छोड़कर साड़ी चप्पल उनको हिसाब से सामान दिया जाता है गरुड़ पुराण उठती है इसके बाद पगड़ी होती है सीधा सामान लेकर मंदिर जाते हैं स्त्री व पुरुष बंधावे होते हैं ब्यान समधन रंग गुलाल करती है मायके वालों की तरफ से तेल, टीकी, मेहंदी लगती है, कुटुंब की स्त्रियों को इसके बाद मंदिर जाते हैं इस दिन कपड़े बिस्तर सैया गाय सोना-चांदी बर्तन व खाने का सामान दान करते हैं

15.7. सवा महीने का कलश व धूप

उन ब्राह्मणों को भोजन करवाया जाता है तीनों को दक्षिणा में लौटे दिए जाते हैं और भोजन वही बनता है जो सब 11वीं के दिन बनता है पगले बनते हैं गिलकी के पत्ते व चारों खूट पर 11 तरह की सभी चीजें रखते हैं। एक खूट गौ माता एक कव्वे को एक कुत्ते को और एक भिखारी को दिया जाता है

15.8. छह मासी बारहमासी धूप

दोनों धूप साथ में रख दी जाती है, धूप में वह बनता है जो ग्यारहवीं के दिन भोजन बनता है, और पगले बनते हैं, गिलकी के पत्ते रखते हैं, चारों खुद 11 चीजें रखते हैं, एक कौवे की, एक गौ माता, एक कुत्ते का, और एक भिखारी का |

छे मासी और बारहमासी के दो अलग-अलग पगलये यह बनते हैं। थाली भी अलग-अलग दो रखते हैं भोग व धूप भी अलग-अलग करते हैं ब्राह्मण द्वारा पूजा कराई जाती है 18 ब्राह्मण को भोजन करवाकर जो 18 लोग थे लाल कपड़े से बांध कर रखते हैं उनके अंदर ₹1 खारक बादाम लोंग इलाइची रखते हैं वही ब्राह्मण को दिए जाते हैं और यथाशक्ति दक्षिणा दी जाती है यदि कोई बारहमासी 6 मासी अलग अलग करना चाहे अलग अलग करना चाहे तो एक ही पगली बनते हैं, एक ही धूप रख आती है एक ही भोग की थाली लगती है, छह मासी के छह ब्राह्मण को, बारहमासी के 12 ब्राह्मण जीमते हैं

3 महीने की कलश के बाद बहु मंदिर में पानी भर्ती है, नए बेवड़ो से सुबह शाम को दीपक लगाने जाती है या प्रक्रिया 1 साल तक चलती है यदि किसी ने से ना बने तो सवा महीने तक ही कर लेना चाहिए आखरी दिन भरा बेवड़ा मंदिर में ही रख आते हैं वापस नहीं लाते हैं और शाम को दीपक भी वही रख आते हैं यह सब करने के बाद हर महीने की स्थिति पर एक ब्राह्मण को भोजन करवाना चाहिए साल भर तक स्त्री हो या स्त्री को पुरुष तो पुरुष को दक्षिणा भी देना चाहिए उसके बाद साल में एक बार तिथि के दिन ब्राह्मण को भोजन करवाना चाहिए या हमेशा करना चाहिए

15.9. श्राद

शुरु साल श्राद में मिलाने मैं ब्राह्मण द्वारा पूजा पाठ पिंड तर्पण कराकर 11 तरह की चीजें बनती है, उड़द के बड़े, भजिए, खीर, चावल, लापसी, पापड़, दही, मीठे भजिए, मूंग की दाल, खाजा, पूरी बनती है। पगल्या बनते हैं, चारों खूट भरते हैं, गिलकी के पत्ते व 11 तरह की चीजों से एक खूट कौवे को, एक गौ माता को, एक कुत्ते को, व एक भीखारी का होता है। ब्राह्मण भोजन, बहन, बेटी, ननंद, भांजी रिश्तेदारो को बुलाया जाता है।

ब्राह्मणों को जीमा कर दक्षिणा दी जाती है भोजन में सभी के लिए खीर पूरी भजिए सब्जी बनती है हर पूजा में प्राणी के पसंद के अनुसार भोजन बनाते है। 12 दिन तक (मौत के दिनों में भी) प्राणी के पसंद के अनुसार तरह-तरह के भोजन व मिठाई बनाकर भोग लगाना चाहि। श्राद में पूरे परिवार के सदस्य धूप ध्यान करते हैं।

कुलुम परिवार कुरावर मंडी